॥ श्रीरामोजयति ॥

श्री बाल्मीकीय रामायण

—— ※:※:※:※:※ ——

अरण्यकाण्ड ।

भाषाछन्दों में

जो

साहित्य सहायिनी सभा प्रयाग के बिचारानुसार

प्रयाग निवासी पण्डित देवकीनन्दन त्रिपाठी के द्वारा

अनुवादित हुआ

और

बाबू श्यामलाल

मेनेजर साहित्यसहायिनी सभा की आज्ञानुसार

अनुबादकर्त्ता पं॰ देवकीनन्दन त्रिपाठीके निजप्रबन्धसे

॥ प्रकाशित किया गया ॥

——·····※※:0:※※·····——

सम्बत् १९५४ सन् १८९७

॥ प्रयाग ॥

बिद्याधर्मबर्द्धकयंत्रालयमें छपी
पहिली बार ११०० पुस्तक

दाम प्रति पुस्तक १॥)
डाक महसूल ≈)

श्रीवाल्मीकीय रामायण का भाषा छन्दों में अनुवाद

अरण्य काण्ड प्रारम्भः

—·····:※:※0※:※:·····—

मंगलाचरण ॥

कुंडलिया छन्द

दंडक बन बासी ऋषिन, सहित लखन सिय राम ।
ध्याइ हृदय गुनि मुनि कबिहि, रचौं छन्द गुण धाम ॥
रचौं छंद गुण धाम, भारद्वाजहि शिर नाई ।
ज्यहि आश्रम बसि आस, तासु की निते लगाई ॥
टीका सरल अरण्यकांडकी, कबि मति मंडक ।
बालमीक कृत कथा जोइ, पूरित बन दंडक ॥

—0—

पहिला सर्ग ।

श्री रामचन्द्र जी का दंडक बन में पैठना और ऋषियों से सत्कार पाना ॥

सोरठा

स्वबश चित्त श्री राम, दंडक बन महँ पैठि तब ।
तपसिन आश्रम ग्राम, देख्यहु सब थल अभय है ॥१॥

॥ चौपाई ॥

जह कुश चीर इतै उत फेंके । बेद नाद संपति से छेंके ॥
ज्यों प्रदीप्त लखि नैन जलावे । नभ रविमंडल त्यों भुवि भावे २
सब जीवन कर शरण सुबासा । सदास्वच्छ आंगन छबिभासा ॥
बहु प्रकार मृग जंतुन पूरा । बिबिध पखेरु झुंड से रूरा ३
ज्यहि पूजहिं नृप देव अप्सरा । नाचैं चहुंदिश गणयुत सुघरा ॥
अग्नि होत्र बहु बडे अगारन । कुश मृगचर्म स्त्रुवादिक धारन ४
समिध काठ जलकलशनि सोहे । फल मूलनि से संयुत जोहे ॥
अरु बन बिटप मोट पै ऊंचनि । स्वादु पुण्यफल लसे समूचनि ५
बैश्वदेव बलि होम सु पूजित । बेद पुनीत नाद से गूंजित ॥
अरु नानाबिध बिखरित फूलन । कमलतडाग नलिनयुत कूलन ६
फल मूलाशन दांत तपस्विन । कृष्णाजिन पटचीर मनस्विन ॥
सूर्य अनल सम तेज प्रकाशिन । युत प्राचीन मुनिन गुणराशिन ७
पयकर्म अरु नियत अहारिन । शोभितपरमऋषिनब्रतधारिन ॥
सो जनु ब्रह्मलोक विख्याता । बेदनाद नादित शुभ दाता ८
ब्रह्मज्ञान युत भाग्य सुशालिन । शोभितब्राह्मणगणश्रुतिमालिन ॥
अस लखि त्यहि राघव श्रीमानू । तपसिन आश्रम मंडल थानू ९
महा तेज पैठ्यहु तहँ जाई । गुण धनु से उतारि रघुराई ॥
दिव्य दृष्टि से ते ऋषि ज्ञानी । लख्यो रामकहँआगतजानी १०
तब सब प्रीति सहित सोहाये । यशिनि सियाप्रति उठिर धाये ॥
धर्म चारि रामहि पुनि भाये । जनुत्यहिसोम[1]उदयलखिपाये ११

---

१ "सोमो स्माकं ब्राह्मणानां राजा" इस श्रुति के अनुसार सीता से अपनी प्रजा जान चंद्र उदय सी देख के हर्षे ॥

फिर लक्ष्मणहि लख्यो चलि आगे। तथा सियहिय शिनिहि अनुरागे॥
मंगल साज जोरि अगवानी। किहो सबै दृढ़ब्रत मुनि ज्ञानी १२
कांति स्वरूप लजावनु वारी। अरु सुबेषता अँग सुकुमारी॥
देखि राम बन बासिहु केरी। बिस्मित रहे बाइ मुह फेरी १३
वैदेही लखनहि अरु रामहि। इकटक नैन रहे जनु ठामहि॥
अति अचरज तिन कहँ ते मानी। देख्यो बन बासी सब प्रानी १४
इन्ह रामहिं करि अतिथि निवासी। त्यहि ऋषि आश्रम मंडल बासी॥
महा भाग सब जीव हिते रत। पर्णकुटी मधि कीन्हत बैथित १५
पुनि रघुबर कौ करि सत्कारा। बिधिवत मुनि पावक सम[1] सारा॥
ल्यायहु महा भाग ते चारू। धर्मचारि जल बन उपहारू १६
मंगल चार कीन्ह सब भांती। परम अनंद मोद रस मांती॥
मूल फूल फल जो शुचि पाये। अरु आश्रम मधि थान बताये १७
मुदित निवेदन करि ते ज्ञानी। बोल्यहु जोरि सुअंजुलि पानी॥
धर्म पाल तुम इन्ह जन केरे। अरु इक शरण महायश हेरे १८
पूजनीय अरु मान्य सदाही। दंड धारि नृप गुरु दुख दाही॥
हे राघव! जो प्रजा सुरक्षक। चौथाई मख फल सो भक्षक १९
ताहि हेतु बर रम्य सुभोगा। भोगै भूप नमैं सब लोगा॥
याते हम सब बिषय हुलासी। तुम्हते रक्षणु योगु प्रबासी २०
नगर रहो चहु हो बन बासी। तुम हमार नृप जन सुखरासी॥
नृप! हम दंड गहे सन्यासी। क्रोध जीति करि इंद्रियदासी २१
रक्षणीय तुम से यहि काला। थित तुव गर्भ तपोधन लाला!॥
यह कहि राघव कहँ संतोषे। मूल फूल फल औरहु चोषे २२
बिबिध अहार जु बनमहँ जाये। लखन सहित कौ पूज्यहु थाये॥

[1] यज्ञ की आग के समान पूजा किया।

॥ दोहा ॥

राम अनल सम तेजसिहि, अपर सिद्ध मुनि शीश[1] ॥
न्याय सुचारी न्याय जस, तृप्ति किहो जग ईश ॥ २३

इति श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणे अरण्य कांडे पं० देवकीनंदन त्रिपाठि कृत भाषा छंदानुबादे प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

———:-:※:※:※:※:※-:———

दूसरा सर्ग

मुनियों से बिदा हो रामचंद्र का बन में बिचरना, बिराध का मिलना तथा बिराध कृत सीता का उठाले चलना, उस को राम से माराजाना ॥

॥ दोहा ॥

राम अतिथि ह्वै निशि बसे, पुनि सूर्योदय पाइ ॥
लै आयसु सब मुनिन से, बिचर्यो त्यहि बन जाइ ॥१॥

॥ चौपाई ॥

बहु प्रकार जहँ मृग चहुंओरा । भालुक व्याघ्र फिरैं करि शोरा २
मर्दित बृक्ष लता अरु झांडी । नदी तलाव कीच जल मांडी ॥
चुहचुहाइ नहिं चिडी चुरूंगू । झींगुर झनक नाद निहिंसंगू ३
लक्ष्मण भाइ संग तहँ लाई । देख्यो राम मध्य बन घाई ॥
अरु सीतहि ककुत्थ अगुआई । त्यहि भयंक पशु युत बनजाई ४
लख्यो अग्र गिरिशृङ्ग समाना । निशिचर गर्ज्यो नाद भयाना ॥
गहिरी आँख और मुख भारी । बिकट रूप अरु उदर पहारी ५
घृणित लंब तन अधिक गठीला । बिकृत अकार घोर दर्शीला ॥

१ मुनियों के शिरताज ॥

ओढ़े बाघ खाल भय कारी । चरबी मेद रुधिर छिड़कारी ॥
सब जीवन को जो दुख दाई । कालांतक सम मुह फैलाई ६
तीन सिंह अरु बाघहु चारी । दुइबृक दश चित्रितमृगधारी ॥
सींग सहित, बस मांस लपेटी । बड़ गयंद शिर बगल समेटी ७
लोह शूल दोनहु कर ताने । अति चिंघार रव करत महाने ॥
सो तहँ राम लखन कहँ देखी । औ सीता मैथिलिहि बिशेखी ८
करि अतिक्रोध सुमुख सो धावा । जनु कालांत प्रजा कर आवा ॥
सो पुनि करि अति भैरव नादा । मनहुं कँपावत भूमि प्रमादा ९
कूदि सियहि कनियां लै भागा । दूर जाइ बोला अघ पागा ॥
र दोनों ! तुम नारि समेता । चीर जटा धरि मरण सुनेता १०
पैठ्यहु दंडक बन अब आई । धनु शर कर तरवारि दिखाई ॥
कैसे हो तुम तापस दोऊ ? । बसो नारि सह कपटिहु कोऊ ११
अति पापी पुनि अधरम चारी । कहो कौन तुम? मुनि मगहारी ॥
मैं तो नाम बिराध धराऊं । निशिचर यहि दुर्गम बन भाऊं १२
फिरों नित्य लै कर हथिआरा । खाहुं ऋषिन कौ मांस पिआरा ॥
यह नारी जो चढ़त जवानी । ह्वैहै मोरि बहू सुख खानी १३
तुम दोनों पापिन कर अबहीं । पीहों रुधिर युद्ध महँ सबहीं ॥
जब अस बोल्यो दुष्ट बिराधू । जो पापी अरु कर्म असाधू १४
सुनि सिय तासु गर्बयुत बानी । जनकनंदिनी जिय घबड़ानी ॥
भई भयाकुल कंपित गाता । जनु कदलीदल पाइ प्रबाता १५
त्यहि सीतहि लखि रघुकुलनाथा । गई बिराध अंक छल साथा ॥
बोले लखन भाइ कहँ बैना । सूखिगयो मुख बिलुलित नैना १६
देखो सौम्य ! नरेंद्र कुमारी । जनक राजकी परम दुलारी ॥
पुनि हमारि शुभ सती सुनारी । है बिराध के अंक मझारी १७

अति सुख पाइ बढीं जो प्यारी । नृप नंदिनि यश जगत पसारी ॥
वह हममहँ जो बर अभिलासा । सो भौ पूर ठीक अब खासा १८
कैकेई मांगन फल भाये । तुरतहि आजु लखन! प्रगटाये ॥
जो न राज्य लै केवल तुष्टा । दूर दर्शिनो सुत हित इष्टा १९
जो हम सब जीवन के प्यारे । गये पठाइ बनहि धिधकारे ॥
आजु सवहिं सो भई सकामा । जो मम मध्यम मातु निकामा २०
पिता मरण से लखन न तैसा । राज्य हरण सेहू पुनि वैसा ॥
पै जु सियहि परस्यो पर पुरखा । तातेअधिक न कौन्वहिंदुःखा२१

॥ दोहा ।

अस बोल्यो दृग आंसु भरि, राम शोक मन राग ॥
उससि क्रोध भरि लखन कह, मन्त्र रुद्ध जनु नाग ॥२२॥

॥ चौपाई ॥

इन्द्र उपम जीवन के नाथा ! होहु अनाथ सरिस? इकसाथा ॥
हे ककुत्थ ! सँग रहतहि मौरे । कस अस ताप भयो? मन तोरे२३
देखो अबहिं क्रोध करि भारी । शर से खलहि गिरैहों मारी ॥
कटे बिराध तासु संहारा । पीहै भूमि रुधिर की धारा २४
राज्य छुटन हित जो मम क्रोधा । भयो भरत पर प्रबल बिरोधा ॥
सो बिराध पर डारिहों आजू । गिरि पर मनहुं बज्र सुरराजू२५

खंड छप्पै छन्द ।

मम भुज बल अति बेग, जबहि धरि धनुष चढैहै ।
ताके उर घन घोर पैठि, शर-शिखर ढहै है ॥

खंड खंड तन अंड बंड, ह्वै जीव गवै है ।
घुमरि घुमरि तब भूमि मांहि, गिरि नाच दिखै है २६

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० चि० कृ० भा० छं० द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

——....:*:*0*:*:....——

तीसरा सर्ग

रामचन्द्र की चिन्हारी को बिराध का पूछना, रामचन्द्र का कहना, राम लक्ष्मण को कांधे पर लेके भागना ॥

॥ दोहा ॥

पुनि बिराध बोल्यो बचन, बन पूरित चिक्कार ॥
को तुम ह्वौ कहँ जाहु कहु? मैं पूछहुं ललकार ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

जब पूंछ्यो अस निशिचर नाहा । मुख से भभक तपन अङ दाहा ॥
ता सन राम तेज तप भाये । कुल इक्ष्वाकु निजहि बतलाये २
पुनि बोले हम क्षत्रिय जानो । कर्म युक्त बन फिरें सुहानो ॥
जानन चहैं तुम्हैं हम दोऊ? । दंडक बन बिचरहु जो कोऊ ३
पुनि बिराध तिन रामहि टेरी । सत्य पराक्रम प्रति हुक हेरी ॥
अहो राज राघव! म्वहिं जानो । तुमसे कहूं सांच सो मानो ४
मैं तो जव राक्षस कर पूता । शतन्हुदा मम मातु प्रसूता ॥
नाम बिराध कहैं पुनि मोरा । जे महि के निशिचर सब घोरा ५
कीन्ह तपस्या बर यह पाये । ब्रह्मा के प्रसाद सन भाये ॥
अस्त्र शस्त्र से नहिं बध होई । छिन्न भिन्न करि सकै न कोई ६

याते यहि नारिहि तुम त्यागो । ज्यहिपथआयहुत्यहिपथभागी॥
तुरत जाहु तजि आशहु जोई । लै जीवन, नतु डारहु खोई ७
ताहि राम पुनि उत्तर दीन्हे । कोप सहित लाले दृग कीन्हे ॥
बिकट अकार निशाचर पाहीं । जो बिराध पापिहु चितमाहीं ८
धिकत्वहिखल! पुरुषारथहीना! । ढूंढसि मरनु अवश्य मलीना ॥
सो पैहे रण महँ रहु ठाढो । ममकर जीव मोक्ष अतिगाढो ९

॥ दोहा ॥

तब पुनि सानित बान लै, राम धनुष बर तानि ॥
ताकि तमकि तुरतहि हने, निशिचर उर संधानि॥१०

॥ चौपाई ॥

धनुष फिता बर डोरि चढाई । सात बान छोड्यो झमकाई ॥
कंचन पंख बेग अति जाके । गरुडपवनगति सनकसुबांके११
ते सब बिंधे बिराध शरीरा । मोर पंख पट बेधि सुतीरा ॥
झरे सकल भरि रुधिर लपेटे । जनु अँगार महि पवन झपेटे१२
जबबिराधतजिसियहिसुहावा । बेधित शर कर शूल उठावा ॥
सो करि कोप प्रबल सौंहावा । राम लखन के सन्मुख धावा१३
पुनि सो महानाद करि घोरा । इंद्र धनुष सम शूल कठोरा ॥
गहि असोह तब मुह फैलावा । जनुअंतक निजरूप दिखावा १४
तब पुनि द्वौ भाई हरखाई । बरस्यौ शर जनु अनलजलाई ॥
त्यहि बिराधनिशिचर महँधाई । जो कालांतक यम उपमाई १५
सो राक्षस अति रौद्र दिखाई । हँसि ठठाइ बैठ्यो जमुहाई ॥
जमुहाततहि ताके सो बाने । तुरतहि अँगसे निसरि पलाने१६

लगे बान तिसरै नहिं प्राना। राक्षस पाइ ब्रह्म बरदाना ॥
पुनि बिराध कर शूल उठाई। राघव प्रति धायो दुखपाई १७
तासु शूल सो वज्र समाना। चमकी गगन अनल उपमाना ॥
ताहि राम द्वय शरन्हि बिदारे। शस्त्र चलैयन मधि हुशियारे १८
राम शरन्हि से तासु त्रिशूली। पडी भूमि कटि दोटुक झूली ॥
मनहुं वज्र गिरि से भहरानी। मेरु शिला फटितल अररानी १९
पुनि द्वौ भाइ खड्ग द्वय ताने। मनहुं नाग कालो लपटाने ॥
तुरतहि तापर तमकि चलाये। ताहि समय सो कुदकि बचाये२०
लगी जबै सो गह्यो तुरंता। इक इक भुजन दुहुन बलवंता ॥
निडर दोउ नरब्याघ्रन्हिजंतहि। चलनुउठाइ चह्योखल अंतहि २१
तासु मनोरथ रामहु जाने। लक्ष्मण से बोले मुसकाने ॥
अच्छहि चलै लाहि कछु दूरी। यह राक्षस तव तक मग पूरी २२
चहै जहां यह खल लै जावै। लखन! सुनो याके मन भावै ॥
इहै हमार अवसि मग ठीको। ज्यहिपथजाइनिशाचरनीको२३
सो पुनि निज बल बीर्य बढाई। उछलि निशार लीन्ह उठाई ॥
जनु बालक क्षौ काँध चढाई। तैसहि उद्धत बल दरसाई २४
जब तिन द्वौ रघुराइन्ह सोई। लीन्ह चढाइ काँध खल जोई ॥
तब बिराध करि घोर चिकारा। बन सों हाय गयो महि मारा २५

छप्पै छन्द।

जौ बन बहुबिध बिटप, लतन से छाइ अंधेरो।
महा मेघ सम स्याम अधिक, घन चहुंदिश घेरो ॥
बहु प्रकार खग झुंड उडाहिं, अरु करहिं कलोलैं।
चित्र बिचित्र दिखाहिं बिबिध बानी पुनि बोलैं ॥

धावहिं चहुंदिश बिबिध मृग, स्याल आदि बन जंतु जहँ।
खल सो बिराध पठैयहु तबहिं रह्यो मनुजनहिं काक तहँ २६

इति श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणे अरण्य कांडे पं० देवकीनंदन त्रिपाठि कृत भाषा छंदानुबादे तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

——:-:※:※:※:※:※-:——

चौथा सर्ग

बिराध से राम लक्ष्मण का हरे देख सीताका घबडाना, राम लक्ष्मण केद्वारा बिराध का काटा जाना, और उसको गढ़े में गाडना ॥

॥ दोहा ।

राम लखन दूौ हरि गये, यह लखि सिया सकानि ॥
ऊंचे सुर रोई तबै, गहि दोनो निज पानि ॥१॥

॥ चौपाई ॥

ये मम प्रिय दशरथ के लाला । राम सत्य शुचि शील भुआला॥
रूप भयंकर निशिचर हाथा । हरे गये लक्ष्मण के साथा २
म्वहिंअब ऋच्छ भच्छ करि डैहैं । बाघ सिंह ता बिधि धरि खैहैं ॥
राक्षस देव ! नमहुं मैं तोहीं । रामलखनतजि गहुअबमोहीं ३
तासु सिया की करुना बानी । रामलखन सो सुनि दुखसानी ॥
कीन्ह बेग बध करन निमित्ता । तासु दुरातम कर दै चित्ता ४
तासु रौद्र कर लखन दुलारे । बाम बाहु धरि झपटि उपारे ॥
रामहु दक्षिण भुज तुर ताये । तासु अधम को नोचि बहाये ५
सो पुनि कटो बाहु बिकलाई । पड्यो तुरत मूर्छित भहराई ॥
धरा मध्य सम मेघ भयंका । फट्यो बज्र से ज्यों गिरि अंका ६

मूठिन टिहुनि ह लातन रौंदे । त्यहि राक्षसहि भाइ द्वौ खौंदे ॥
उछलिउछलि पुनि २वहि मारी । पकडि ढकेल्यो टिला मझारी ७
सो बहु बान खाइ तन बेधा । अरु खड्गन्हिकटि भौ अंगत्रेधा ॥
कुचलिगयो बहु बिध महिलोटा । मर्यो न तबहुं निशाचर खोटा ८
तब त्यहि राम अबध्य निहारी । पर्बत सम ह्वै चकित खलारी ॥
अभय देन हारो श्री मानू । यह बोले भय छिन अनुमानू ९
सुनहु लखन! यह तप फल हेतू । नहिं मरि सकै किह्यउ बहुनेतू ॥
अस्त्र शस्त्र से जीति न जाई । याते खनि गाडब भल भाई!१०
यह कुंजर सम औ बिकराला । लखन! निशाचर रूपनिराला ॥
यहि बन मधि गड्हा बडभारी । खनहु तीक्ष्ण लेजिहि दैं डारी ११

॥ दोहा ॥

राम इहै कहि लखन से, "खनहु गर्त" तुरताइ ॥
चढि बिराध पर ठाढ भे, पावन कंठ दबाइ ॥ १२ ॥

॥ चौपाई ॥

यह सुनि राम कथन अघचारी । शाप बिमोचन बचन सुधारी ॥
तब ककुत्थ नर ऋषभहि जानी । यह बोल्यो बिराध शुभ बानी १३
पुरुष सिंह! मैं मर्यो अबाहीं । इंद्र तुल्यबल प्रभु! तुव पाहीं ॥
प्रथम मोह बस मैं नहिं जान्यों । मनुजऋषभ!तुमकहँपहिचान्यों१४
तात! कौशिला के सुत नीके । राम बिदित तुम हौ मम ही के ॥
पुनिसीतहि जान्योंभगमानिहि । लक्ष्मणलालमहायशखानिहि १५
मैं, तो शाप पाइ यहि घोरहि । पैठेयों राक्षस तनुहि कठोरहि ॥
हौं तुंबुरु नामक गंधर्बा । शाप्यहु मोहिं बैश्रवण सगर्बा१६

पुनि मैं कीन्ह्यों वाहि प्रसन्ना । सोऊवहिं बोल्यहुजानिप्रपन्ना ॥
जब दशरथ सुत मरिहैं तोही । लडि संग्राम तोरि गति जोही १७
तब तुम धरि गंधर्ब स्वदेहा । जैहो स्वर्ग न कछु संदेहा ॥
पहुंचि सभा मधि सक्योंन गाई । ताते क्रोधित शाप सुनाई १८
भूलि गयों रंभा रस माती । नृप बैश्रवण कह्यो यहि भांती ॥
सो अब तुव प्रसाद से मोरा । कठिन शाप छूटो तन घोरा १९
मैंतो अब जैहों निज धामा । तुव मंगल हो अरितप रामा! ॥
सुनों इहां से बसहिं विदूरे । ऋषि सरभंग धर्म तप पूरे २०
तात! कोश छह है पथमानू । ऋषि प्रताप जाहिर जस भानू ॥
तासु समीप तुरत तुम जाहू । सो दैहै बर तुम्हैं उछाहू २१
राम! मोहि गड़हा मधि फेंको । जाहु कुशल अब नहिं को छेंको ॥
मरे राक्षसन कर यह धर्मा । गाडे जाहिं सनातन कर्मा २२
जो समाधि मधि जाहिं सुथापे । ते सुर लोक लहैं निहिपापे ॥
कहि अस बैन राम से सोई । शर पीड़ित बिराध चुप होई २३
गयो स्वर्ग तब सो बलवाना । छोडि निशाचर तन हरखाना ॥
तासु बचन सुनि कै रघुबीरा । लखन भाइ सन कह्यो सुधीरा२४
सुनो लखन!यह गज सम भारी । है कराल निशिचर तन धारी ॥
गर्त क्रूर कर्मी के लायक । यहिबनमधिखोदहुबडभायक२५
यहै कह्यो लक्ष्मन से रामू । खनहु गर्त तुरतहि यहि ठामू ॥
आपु बिराध कंठ पर ठाढे । पावन दाबि रहे बल गाढे २६
तब तुरतहि खंती लै भैया । लखन खन्यो तहँ गहिर गढैया ॥
पद्यो बिराध तासु अति पासा । भयोमहामति गतिबिनु त्रासा२७
कठिन बज्र सम कर्णहि ताही । उछलि कंठ छोड़यो अवगाही ॥
त्यहि बिराध कहँ गर्त मझारी । फेंक्यहु नाद भयङ्कर कारी २८

खंड छप्पै

त्यहि दारुण राक्षसहि महा भय कारि बिराधहि ।
रण महँ जीति पछारिआपुमुद युत तहँथिररहि ।
चटकीले बल ,म लखन दृढ चित द्वौ कर गहि ॥
बिल मधि दीन्ह ढकेलि बेग युत रुत धुनि करतहि २९
तासु महासुर मरण तीव्र शास्त्रन्हि दुस बारी ।
तब दोऊ नर ऋषभ, असंभव मनहिं बिचारी ॥
सब बिधि यत्न सुजान भाइ मिलि मति अनुसारी ।
बिल मधि मूंदि तुरंत बिराधहि डारयहु मारी ॥३०॥
आपन मरण बिराध निजै रामहि समझायो ।
चहत मरण जो बेगि यथारथ यतन बतायो ॥
बनचारी सो बार बार अपने मुख गायो ।
"नहिं बध मोर कदापि शस्त्र से" इहै जनायो ॥३१॥
सोइ राम सुनि तासु बचन मन महं हरखाई ।
कीन्ह बिचार सुचारु ताहि बिल प्रबिशन भाई ॥
ताते अति बल बेग लाइ राक्षसहि सुहाई ।
डार्यो बिल मधि जबहि घोर रव बन अरराई ॥२३॥

हरिगीती छन्द

जब त्यहिबिराधहि भूमि खनि तहँ गडह मधि गाड्यो सही ॥
तब राम लखन सुजान द्वौ जन, रूप रँग हर्षित गही ।
पुनि भयउ अधिक अनंद दुहु मिलि, महा बन मधि भय दही ॥
जनु नील नभ महँ शशि दिवाकर, दिव्य बपु शोभा लही ॥३३॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० चि० कृ० भा० छं० चतुर्थः सर्गः ॥ ४

पाचवां सर्ग ।

श्री रामचन्द्र का शरभंगाश्रम का जाना, वहां इन्द्रादि देवतों को गगन में देखना, तथा शरभंग से भेंट होना और शरभंग का ब्रह्म लोक जाना ।

॥ दोहा ॥

मारि बिराधहि भीमबल, रजनिशचरहि वन माहिं ॥
तब सीतहि उरलाइ प्रभु, समुझायो गहि बांहिं ॥१॥

॥ चौपाई ॥

बोले राम लखन से बैना । दीप्त तेज जो भाइ सुनैना ॥
यह बन दुर्गम अति दुखदाई । याकी गति जानैं नहिं भाई ! २
याते तुरत इहां तजि जाहीं । मुनि शरभंग तपो धन पाहीं ॥
यह कहि द्वौ राघव तुरताई । सरभंगाश्रम गये सिधाई ३
देव प्रभाव तासु मुनि केरे । तप अरु आतम ज्ञान घनेरे ॥
मुनि शरभंग समीपहि हेरे । अद्भुत कला जाइँ नहिं टेरे ४
मुनि तन से अति तेज उदारा । सूर्य अनल सम प्रभा पसारा ॥
उत्तम रथन्हि चढे चहुं पासा । गगनमध्य सुरगण ज्यहिआसा ५
छुये न भूमि अधर महँ जोहे । इंद्रहु तहां सगण पुनि सोहे ॥
भूषित भूषण तेज बिराजे । चर्मांकित बसन धरे छबिछाजे ६
तासु इंद्र सम बहु करि सेवा । पूजहिं ऋषिहि महामति देवा ॥
हरित बरण हय रथ महँ नाधे । अंतरिक्ष बिच उडहिं अबाधे ७
ताहि दूर से देखत भयऊ । मनहुंबालछबिरबि करउयऊ ॥
श्वेत सघन मेघन सम ज्योती । पुनि ज्योंचंद्रबिम्बद्युतिहोतीद

देख्यो विमल छत्र तहँ तानो। बहु बिचित्र माला छबिछानो॥
पंखा चमर सुघर तिन्ह आगे। कंचन दंड अमोल सुहागे ९
तिन्है गहे सुंदर दो नारी। शिर पर ढुरै प्रेम अनु हारी॥
मुनि गंधर्ब सिद्ध सुर राजैं। औरपरमऋषिनिकटबिराजैं १०
अंतरिक्ष थित इन्द्रहि देवहिं। वेदगिरा से स्तुतिकरि सेवहिं॥
जोइ इंद्र शरभंगहु संगे। भाषण करहिं सुखद बहु रंगे ११
देखि इंद्र कहं तहँ यहि भांती। राम लखन से कह्यौ सुहांती॥
रथहि अंगुली से दरसाये। भाइहि अभ्दुत कार्य दिखाये १२
किरिणसहित शोभाश्रियसाना। अभ्दुत लखहु लखन! बलवान!॥
मनहुं तपै रबि किरिण पसारी। गगन मध्य रथ की उजियारी १३
ये हय हरित इन्द्र के जानें। प्रथम सुने हम कह्यो सयानें॥
अंतरिक्ष गत दिव्य सुहावें। निहिंचै पुरहूतहि म्वहिं भावें१४
पुरुष ब्याघ्र! ये जे चहुंओरा। खडे पुरुष जिनकी नहिं छोरा॥
सो सो झुण्ड कुंडलन्हि धारे। युवा खड्ग कर गहे उभारे १५
कंध बिसाल बक्ष जिन्ह केरा। लंबे कर बर अस्त्र घनेरा॥
स्वर्ण किरिणसम सब कर बासा। ब्याघ्र सरिस दुर्जय गत त्रासा१६
सबके गले लटक उर हारा। मनहुं अनल कर तेज पसारा॥
हे सौमित्रि! धरे ये रूपा। बर्ष पचीसहुं बयस अनूपा १७
इहै देवतन की नित होई। बयस पचीस बर्ष छय खोई॥
जो ये इन्है लखहिं नर नाहर! प्रिय दर्शन शुभ करम सधाहर१८
इहैं सिया सह लखन पिआरे! ठहरहु छिन भर है रखवारे॥
जब तक मैं आवहुं सब जानी। को यह रथ पर है? द्युतिमानी१९
त्यहि लखनहि यह कहि रघुराई। "ठहरो तनिक इहां तुम भाई!"॥
गये ककुत्थ तुरत सोंहाई। मुनि शरभङ्ग आस्रमहि धाई २०

॥ दोहा ॥

सन्मुख आवत रामही, देखि इन्द्र तब ताहि ॥
आयसु लै शरभंग से, सुरन कह्यो यह बाहिं ॥२१॥

॥ चौपाई ॥

आवहिं इहँ ये राम भुआला । दर्श योगु मम नहिं यहि काला ॥
जबतकमोसन करहिं न बाता । तब तक चलहु अंत लै ताता! २२
जब बिजयी दनुजन से ह्वै हैं । तबकछु दिन महँस्वहिंदरसैहैं ॥
ये करि हैं बहु कर्म महाना । जो कठोर करि सकै न आना २३
तब पुनि इन्द्र वज्र धर सोई । तप सिहिपूजिबिदा द्रुत होई ॥
तुरग युक्त रथ पर चढ़ि धाये । अरि मर्दन मधिगगनदिखाये२४
तब मघवा तहँले चलिगयऊ । राघव लखन सियासँग रह्यऊ
अग्निहोत्र जो करत प्रदीपा । राम गयो शरभंग समीपा २ ॥
तासु चरण जा गह्यो सुरासू । अरु सीता लखनहु गुण धासू ५
आयसु पाइ किहो बिश्रामा । सुखद निमंत्रण सुंदर ठामा २६
तब इंद्रहु कर आवनु हेतू । पूंछ्यहु पुनि सो रघुकुल केतू ॥
शरभंगहु सो सब मन लाई । किहो निवेदन निज प्रभुताई २७
ब्रह्मलोकत्यहिकठिनप्रतीत्यों । राम उग्र तप करि मैं जीत्यों ॥
त्यहि बरदान हेतु सुर आवैं । बिनुसाधनज्यहिअधम न पावें२८
मैंनरब्याघ्र!निकटअलिजानी । योग युक्ति से समय सुहानी ॥
ब्रह्मलोक नहिं गयों बिशेखे । अतिप्रियअथितितुम्हैंबिनुदेखे२९
पुरुष व्याघ्र! तुम धर्म सुजाना । तथा महामति सुगति प्रधाना ॥
तुव सतसंग पाइ मैं जैहों । स्वर्ग मँझाइ ब्रह्म पुर पैहों ३०

नर शार्दूल ! अखय शुभ लोका । जीत्यों तिन्हमैं अवगत शोका ॥
ब्रह्म लोक मधि अरु नभ पीठा । अर्पहुं गहो तिन्हैं लखि डीठा ३१

॥ दोहा ॥

सर्व शास्त्र बिद राम से, अस बोले शरभंग ॥
तिन ऋषि वर सन राम पुनि, कह्यो बचन श्रुति संग ३२

॥ चौपाई ॥

सुनों महामुनि ! मैं सब लोकन । लैहौं इहां करहु अवलोकन ॥
तुव आश्रम मधि यहि बन माहीं । चहौं दिखावन संशय नाहीं ३३
जब बोले अस राम सुजाना । इंद्र समान महा बलवाना ॥
तब शरभंग महा मुनि ज्ञानी । बोले बचन फेरि सुख खानी ३४
सुनो राम ! तुम तेज प्रतापी ! । इहैं सुतीक्ष्ण इक धर्म कलापी ॥
बसै महा बन मधि तप कारी । सो तुव मंगल काज सँवारी ३५
यहि मंदाकिनि नदिहि किनारा । चलो बहाउ धार अनुसारा ॥
बहैं फूल ज्यहि मग उतराई । तहँ ह्वै जाहु तहैं तुम धाई ३६
यह पथ नरहरि ! देखहु ताही । एक मुहूरत समय निबाही ॥
तब तक तजौं जीर्ण यह देहा । जस केंचुलहि उरग करि नेहा ३७
तब सो चिता अनल सुलगाई । मंत्र सहित घृत होम कराई ॥
महा तेज शरभंग मुनीशा । पैठ्यहु अग्निमध्य नत शीशा ३८
तासु रोम अरु जटा समूहा । जीरण चाम हाड़ तन सूहा ॥
मांस और रग रुधिर समेता । अनल देव सब दह्यो सुचेता ३९
सो पुनि ज्वलित अनलसमरूपा । ह्वै कुमार बय बिमल अनूपा ॥
अग्नि चिता से उठ्यो तुरंता । शोभित मुनि शरभंग अनंता ४०

छप्पै छन्द ॥

सो पुनि आहित अग्नि (कर्म कर पितरन्हि लोका) ।
करत प्रदक्षिणा चंद्रलोक, ऋषि लोक बिशोका ॥
जहां महा मति जाइ बसैं, करि पुण्य प्रचारा ।
सूर्य प्रदक्षिणा करत, देव लोकन्हि है पारा ॥
करत प्रदक्षिण लोक ध्रुव, ब्रह्मलोक प्रति उड़ि चले ।
तब मुनि शरभंग महानऋषि, योगशक्ति अरु तपबले ४१

हरिगीती छन्द ॥

सो पुण्य कर्म सुधारि महि मधि, बिप्र बर तुरतहि गये ।
जहँ ब्रह्म रूप त्रिदेव गण सुत, पिता मह देखत भये ॥
पुनि पितामह त्यहिद्विजहिलखि, अति प्रीतियुत आदरदये ।
कह बचन सुंदर ऋषि सु आगत, भुवन भरि आनंद लये ॥
इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० चि० कु० भा० छं० पञ्चमः सर्गः ॥५॥

छठां सर्ग ॥

शरभंगाश्रम में और २ दंडक बन बासी तपस्वी मुनियों का रामचंद्र के निकट आके राक्षसों से प्राप्त दुखको कहना, रामचंद्र कृत राक्षसों के मारने की प्रतिज्ञा करना ॥

॥ दोहा ॥

गये स्वर्ग शरभंग जब, मिलि आयहु मुनि बृंद ॥
पहुंचे राम ककुत्स्थ जहँ, ज्वलित तेज रघुनंद ॥१॥

छप्पै छन्द

बैखानस मुनि नाम प्रजापति नख उपजाये।
बाल खिल्य पुनि रोमन्हि से प्रगटे ऋषिराये॥
सं प्रक्षाल्य मुनीश ब्रह्म पग धोवन जाये।
अपर मुनिहु रविचन्द्र किरिणि पी २ हरखाये॥
बहुतक कूटि पखान से, खाहिं अन्न कच्चहि सदा।
पुनि पत्र अहारी बहुत मुनि, रामनिकट आये मुदा॥२॥

॥ चौपाई ॥

क्षौ दांतहि ओखलि करि खाहीं। जलमधि डूबि सदा क्षौराहीं॥
क्षौ अंग सेज कोउ नहिं सोवैं। तप से क्षौ फुरसत नहिं होवैं ३
केवल जल अहार क्षौ करहीं। क्षौ क्षौ पवन खाइ मन भरहीं॥
क्षौ छाला बिन रहैं उघारे। टिकुरन्हि क्षौ पग परैं पसारे ४
ऊंच शिखर बसि क्षौ बहु मीलै। क्षौ इन्द्रिय जित क्षौ पट गीलै॥
जपैं रात दिन क्षौ तप निष्ठा। पंच अग्नि बहु तपैं बरिष्ठा ५
सब क्षौ युक्त ब्रह्म श्रिय पाई। परम योग दृढ करि मन लाई॥
शरभंगाश्रम महँ मुनि राई। राम सुमुख सब गये सुहाई ६
सब धर्मज्ञ राम पहँ जाई। बडी प्रीति से मिले सुहाई ७
परम धर्म ज्ञानी सन बोले। आगत मुनिबृन्द हियखोले॥
तुम इक्ष्वाकु बंश जन पालक। महारथी धरणी अघ शालक॥
नाथ तुमहिं अरु परम प्रधाना। जस देवन मधि इंद्र महाना ८
तीनि लोक मधि तुम विख्याता। यश अरु बल बिक्रम से ताता॥
पिता बचन सत पालन हारे। तुम महँ धर्म अगाध अपारे ९

तुव मतिमान निकट हम आई । धर्म सुजान धर्म रुचि भाई ॥
कहन चहैं कछु अर्थ लगाई । सुनहु क्षमा करि सो रघुराई!१०
होइ अधर्म बड़ो एहि नाथा । जो भूपति अपन्यहि रँग गाथा[1] ॥
पै कर गहै झपटि खट भागा । प्रजहि पुत्र सम रक्षनु त्यागा११
जो नृप निज मन प्राण लगाई । मित्र पुत्र प्राणहु सम भाई ॥
नितहि युक्तहू करु रखवारी । जे जग बिषय बासना[2] कारी१२
सुनो राम सो नृप यश पावै । बिनु अंतर बहु बर्ष गवाँवै ॥
अंतहु ब्रह्म लोक महँ जाई । तहाँ बसै निज महत बढाई१३
परम धर्म जो मुनि जन करहीं । फल अरुमूल खाइ तप भरहीं ॥
ता मधि भूप चौथई पावै । रक्षहि प्रजा धर्म पथ धावै१४
सो यह बहु ब्राह्मण गण बृन्दा । बान प्रस्थ आश्रमिन्ह अनंदा ॥
तुव सुनाथ लहि मनहुं अनाथा । पुनि २ मरहि राक्षसन हाथा१५
आवहु लखहु मुनिन के हाडा । आतम ज्ञानिन के भरि गडा ॥
जिन्है हत्यो राक्षस गण घोरा । बहुतन सदा बनहि चहुंओरा१६
पंपा नदी तीर के बासिन । अरुमंदाकिनिकूलनिवासिन ॥
चित्र कूट जे कुटी बनाये । तिनसबगुनिनमुनिनधैखाये१७
यहि बिधितपसिनकोदुखभारी । नहिं सहि सकैं सबै हम धारी ॥
बन मधि घोर कर्म जिन्ह पाहीं । करैं निशाचर ह्वै बर बाहीं१८
तब तुव शरण लेन हित आये । हम शरणय दुख इहै सुनाये ॥
राम ! करो हमरी रखवारी । जाहिं निशिचरनसे जोमारी१९
सुनो बीर ! तुम से पर होऊ । नहिंपृथिवीमधिअरुगतिकोऊ॥
याते हम सब कौ परि पालो । निशिचारिनसेसुअनभुआलो२०

1 जो राजा अपने रङ्ग में मस्त रहता है प्रजा की ओर ध्यान नहीं रखता।
2 जो संसारीजन धन पुत्र चाहने वाले हैं उनकी रक्षा।

॥ दोहा ॥

यह सुनि राम ककुत्थ जब, मुनि तपसिन के बैन ॥
तब बोले यह धर्म धर, सब ऋषियन दै चैन २१

॥ चौपाई ॥

नहिं अस कहनयोगुतुमस्वामी! । हौंतपसिन आयसु अनुगामी ॥
मैं केवल निज काज लगाई । पैठ्यहुं बन नृपतन सुधिलाई२२
यद्यपि तुम अरि दमन समर्था । यहजो खलजनकृतदुखब्यर्था ॥
पै मैं पितु निदेश लहि आयों । यहिबनमधिमुनिदर्शनपायों२३
तुम्हरो ही हित दैव संयोगा । पूरन करन चल्यों तजि भोगा ॥
सोइ मोर बन बासहु केरा । ह्वै है अबहिं महा फल हेरा२४
रण में तपसिन के अरि बृन्दन । मारन चहों निशाचर भुंडन ॥
देखहिं भाइ सहित कर मोरा । बलहुतपोधनमुनि चहुंओरा२५

हरिगीती छन्द

तप धनिन मुनि जन कौ बचन दै, बधन रजनीचरन कौ ।
जो धर्म मधि तन मन धरे, उठि लखन युत द्रुत गवन कौ ॥
पुनि तपोधन मुनि जनन लै संग, परम पूजि सुब्रतन कौ ।
सोहाइ धायहु बीर रघुबर, मुनि सुतीक्षण भवन कौ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० चि० कृ० भा० छं० षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥

———:-:※:※:※:※:※-:———

सातवां सर्ग ।

सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में रामचंद्र का जाना, उनसे मिलना,
और रहने की आज्ञा मागना ॥

॥ दोहा ॥

रामहु अरि तप भाइ युत, अरु सिय सहित उमङ्ग ॥
मुनि सुतीक्ष्ण आश्रमलहि, गये मुनिन तिन सङ्ग ॥१॥

॥ चौपाई ॥

सो पुनि जाइ कछुक पथ दूरी । नदी पार ह्वै बहु जल पूरी ॥
देख्यो अति पवित्र गिरि एका । महा मेरु सम ऊंच बिबेका २
तदनंतर इक्ष्वाकु कुमारू । सियासहित द्वौ राघव चारू ॥
पैठे त्यहि कानन मधि धाई । जहँ प्राचीन बिटप सघनाई ३
पैठत ही बन बिपुल भयाना । बिबिधफूलफल द्रुमघननाना ॥
देख्यहु आश्रम परम इकन्ता । स्वच्छ चीर माला लटकन्ता४
तहँ तापस मुनि बैठ सुहावा । अमलहेत धरि कमल बिछावा॥
त्यहि सुतीक्ष्ण तपधन के संगा । बिधिवत भाख्यहु राम सुढंगा५
हे भगवन ! मैं रघुकुल रामा । तुव दर्शन लगि आयहुं धामा ॥
याते म्वहिं आशिष करि नेहू । सत्य परा क्रम! ऋषिबर! देहू६
सो निहारि तब धर्म सुधीरा । राम धर्म धर को उठि बीरा ॥
द्वौ बाहुन से हिय लिपटाये । यह बोले पुनि वचन सुहाये७
तुव आगमन राम! शुभ ही को । हे रघु श्रेष्ठ! सत्य ब्रत नीको ॥
तुव पग पड़े इहै लघु आश्रम । याछिनभयो सनाथ सफलश्रम ८
परखे रहेउं तुम्हैं मैं बीरा ! । महायशी ! तन तजि महिभीरा ॥
देव लोक नहिं गयों इहाँ से । तुव निमित्त सेयहुं बन बासे ९
भ्रष्ट राज्य पद से तुम आये । चित्र कूट मधि मैं सुनि पाये ॥
कहेउ आइ इहँ मोसन रामा ! । देव राज इन्द्रहु तजि धामा १०

मैं जो किहों पुण्य बहु कर्मा । जीत्येंसकललोकनिजधर्मा ११
आइ सुरेश्वर जो बड देवा । कह्योचलनम्त्रहिंतहँकरिसेवा ॥
करि तप मैं जीत्यहु जे लोका । बसैं देव ऋषितहँ गतशोका ॥
त्यहि प्रसाद से नारि समेता । बिहरो राम! लखनयुत चेता! १२

॥ दोहा ॥

उग्र तपस ऋषि तेज बर, सतबादी त्यहि कांहि ॥
ज्ञान वान रामहु कह्यो, मनहुं इन्द्र विधि पाहिं ॥१३॥

॥ चौपाई ॥

मैं तो सब लोकन मन भाई । सुनोमहामुनि! बसिहों जाई ॥
आछिन यहि बनमधिसुखदाई । जहों बास जो देहु बताई १४
"आपु कुशल इह पर सब ठाईं । सर्व भूत हित निरत गुसाईं" ॥
कहेउ इहै शरभंग सुजाना । गौतम गोत्र महामति माना १५
अब अस कहेउ राम शुचिबानी । लोकबिदित ऋषिकहँसनमानी ॥
तब पुनि मधुर बैन सो बोले । महाहर्ष युत हिय भ्रम खोले १६
सुनो राम! यह परम पुनीता । आश्रम गुणयुत्त रम्य सुभीता ॥
ऋषि मण्डल से चहुं दिश पूरा । सदा मूल फल संयुत रूरा १७
यहि आश्रम महँ मृग बर पुंजा । आइ बडे छोटे मद गुंजा ॥
निर्भय फिरैं हतैं नहिं काहू । चित डराइ भगिजाहिं उछाहू १८
नहिं कछु अपर दोष इहँजानो । मृग जन से इतनै अनुमानो ॥
सो सुनि बचन तासु यहि भांती । लखनजेष्ठ मुनिबरकी शांती १९
बोले धीर बचन गहि चापा । बान चढाय कान लगि दापा ॥
महा भाग! तिन मृग के झुंडन । आवत देखि पसारित तुंडन २०

भारहुं आये मृग खर साना । तानि चोख बिनुनतफलबानन॥
तामधि आपु मलिन मन होउ । याते पर दुख नहिं जग कोऊ२१
ताते यहि आश्रम मधि बासा । बहुदिन नहिचाहों करिआसा॥
यह कहि राम गये चुप साधी । संध्या करन समय अनबाधी२२
पश्चिम मुख संध्या करि आये । उचित बास पर आसन लाये ॥
मुनि सुतीक्ष्ण के आश्रम माहीं । सिया लखन युत रम्य सुठाहीं२३

छप्पै छन्द ।

तब सुन्दर शुचि बिमल अन्न, तपसिन के लायक ।
निज सुतीक्ष्ण मुनि बाछिबाछि, दीन्ह्यो मन भायक ॥
पुरुष सिंह द्वौ राम लखन कहँ, जो सुख दायक ।
करि सत्कार सुजान महा मति, सो ऋषि नायक ॥
संध्या बंदन कर्म करि, अरु निबृत्त ह्वै सकल से ।
जब रैन भई संचार लखि, अतिथि मानि गुरु सबल से२४

इति श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणे अरण्य कांडे पं० देवकीनंदन त्रिपाठि कृत भाषा छंदानुबादे सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥

—⁂—

आठवां सर्ग ॥

सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में रैन बिताय प्रात समय नित्य क्रिया कर और २ आश्रम देखने की आज्ञा ले रामचंद्र का गमन करना ॥

॥ दोहा ॥

मुनि सुतीक्ष्ण सनमान लहि, रामहु लखन समेत ॥
तहँ बिताइ निशि जगे पुनि, प्रातहि कृपा निकेत ॥१॥

॥ चौपाई ॥

जस नित उठैं उठे त्यहि भांती । सिया सहित राघव गुणमांती ॥
न्हाय धोइ शुभ शीतल बारी । जा मधि कमल सुगंध पसारी २
तबपुनि अगिन और सब देवन । सियाराम लखनहु करिसेवन ॥
बिधिवत पूज्यहु समय सुधारी । बनमधितपसिनशरणसुखारी३
उदय होत रबि किरण निहारी । है पवित्र निशि कल्मषहारी ॥
गये सुतीक्ष्ण निकट करि प्रीती । मधुर बचन बोले जस नीती ४
हे भगवन ! हम सुख करि बासा । है तुव पूजन पूजित खासा ॥
पूछहिं तुम्है चहैं अब जाना ।मुनिगणत्वहिंतुरतावहिंआना५
हमहुं सबै जिय महँ तुरताहीं । सब आश्रम थल देखन चाहीं ॥
पुण्यशील ऋषियन कौ सोई । बसहिं सदा दंडक बन जोई ६
नित्य धर्म तप इंद्रिय जीतन । ये ज्यों पावक ज्योति प्रतीतन॥
इन मुनि पुंगव युत्थ समेतू । आयसु चहैं गमन के हेतू ७
ज्यों कठोर अकुलहु धन पावे । करि कुन्याव कु धूम मचावे ॥
त्यों रबि घाम असह तन भावे । जब तक सोउ अथै नहिं जावे ८
तबहि तलुक हम चहैं सिधारा । यह कहि मुनि पग गहे उदारा ॥
बंद्यो चरण लखन सिय संगा । राघव अतिशय प्रेम उमंगा ९

॥ दोहा ॥

गहत चरण तिनकौ मुनी, लीन्ह्यो तुरत उठाइ ॥
प्रीति सहित दृढ लाइ उर, बोले बचन सुहाइ ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

राम ! जाहु निर्बिघ्न सु पंथा । लखन सहित हे अरिमद मंथा !॥
अरु इन्ह सिया प्रियहि सँग लाई । जस छाया पुरुषहि ढिग जाई १२
देखहु आश्रम पद रमणीया । इन्ह तपसिन के अति कमनीया ॥
दंडक बनहिं बसैं जे बीरा ! । तप करि भये आत्मबिद धीरा १३
जहँ उपजैं सुन्दर फल मूला । पुष्पित बन सब ऋतु अनुकूला॥
अरु अगिनित जहँ हैं मृग बृंदा । शांत सुभाउ बिहग निरद्वन्दा १४
प्रफुलित कमलन ताल तलैया । मन प्रसन्न कर लज बिमलैया ॥
चक्र बाक हंसन से पूरे । भरे हजारन ज्यहि बन रूरे १५
लखि हो दृष्टि रमण के योगू । गिरि झिरना बहुतर सुखभोगू॥
बन रमणीय खंड बहु खंडा । कलमयूरम् दुध्वनि श्रुतिमंडा १५
जाहु बत्स सौमित्रि ! अनन्दे । तुमहुं राम ! चलि जाहु अमन्दे ॥
तिन्हैं देखि पुनि उचित तुम्हारो । मम आश्रम मधि करनु पधारो १६
असजब कह्यो महामुनि स्वामी । राम लखन सह कहि भल नामी ॥
मुनि के कीन्ह प्रदक्षिण सोई । चलन लगे संशय सब खोई १७
तब सीता उठि आयत नैनो । शुभ तरकस अरु धनुशर पैनो ॥
दिहो दोउ भाइन तिन्ह धाई । बिमल खड्ग पुनि हर्ष बढाई १८
पुनि सोऊ तरकस कसि नीके । झनकत चाप गह्यो शुभ हीके ॥
निसरे आश्रम से द्वौ भाई । लक्ष्मण राम गमन मन लाई १९

सोरठा ॥

ते द्वौ रूप निधान, ऋषि आयसु लै द्रुत चले ॥
धरे चाप असि तान, राघव सिय सँग पंथ लै २०

इति श्रीमद्वा० रा० रा० कां० पं० दे० नं० चि० कृ० भा० छं० अष्टम: सर्गः ।८।

नवां सर्ग ॥

मुनियों से राक्षस बध की प्रतिज्ञा किये रामचंद्र को बनमार्ग में जाते देख सीता जी कृत अहिंसा धर्म के कहने में इंद्र और एक मुनि की कथा का कहना ॥

॥ दोहा ॥

आयुस पाइ सुतीक्ष्ण से, रघुनंदन मग जात ॥
सिय भर्ता सन नेह युत, यह बोलीं हरखात ॥१॥

गीती छन्द

तुम महान यद्यपि हो स्वामी! तदपि सूक्ष्म बिधि देखो।
करो बिचार अधर्म बडो यह, जो मृग बध क्रम लेखो॥
हृदय कामना से उपजत है, जो अति दुःख बिशेखो।
तजन योगु तुम सन सो राघव! याछिन मो मन पेखो ॥२॥
या जग मैं बड तीन पाप हैं, निहिचैं करि हम मानैं।
जो उपजैं हिय काम कर्म से, मनहिं कुपथ धरि तानैं॥
झूंठ बचन इक पाप बडो, ज्यहि छोट बडे सब जानैं।
ताते बडे और दो अघ हैं, आगे तिन्है बखानैं ॥३॥

॥ चौपाई ॥

पर तिय संग रमण दुज पापा। तजो बैर बिनु रारहु थापा ॥
मिथ्या बचन राम! तुम पाहीं। भयो न ह्वैहै काहु छिन माहीं ४
फेरि कबहुं वह टुक अभिलासा? पर तिय लखनु धर्म को नासा ॥
तुम महँ नहिं है हे नरनाथा!। पुनि न भयो कहु पाइ कुसाथा५

मन महुं या बिधि राम! तुम्हारे । आयहु पाप न कहुं संचारे ॥
सदा निरत निज नारि मझारी । नृप नंदन! तुम रहे सुखारी ६
धर्म इष्ट अस सत्यहु धारी । पितु निदेश बिनु संशय कारी ॥
तुम महँ धर्म और सच भाऊ । तथा सकल शुभगुण गरुआऊ ७
जो सब महा बाहु! दृढ रूपा । इंद्रिय जितधरि सकैं अनूपा ॥
तुम महँ सो इंद्रिय बस कर्मा । जीवन मधि शुभ दर्शन धर्मा ८
तीसर जो यह रुद्र प्रभावा । प्राण पराउ नाश मन भावा ॥
करहु बैर बिनु भ्रमबस प्यारे! । तुम महँ सो याछिन निरधारे ९
कीन्ह प्रतिज्ञा तुम बड़ि बीरा! । दंडक बनबासिन से धीरा! ॥
रक्षा करनु ऋषिन मन लाई । राक्षस बध कर साज बनाई १०
या लगि बचन कह्यो प्रनबांधी । भाइ सहित कर धनुशर साधी ॥
चले धाइ जो है बन धामा । सुनो जाइ "दंडक" अस नामा ११
तब तौ देखि तुम्हार पयाना । मोमन लहि चिंता अकुलाना ॥
सत्य प्रतिज्ञ चरित चित ध्याऊं । क्यहिबिधितुवकल्यानहु पाऊं १२
धीर! रुचै नहिं म्वहि यहिभांती । दंडक बन पैठनु मद मांती ॥
ता मधि कारण कहूं अनेका । सुनो मोर शुभबचन बिबेका १३
तुम तौ धनुष बान कर ताने । भाइ समेत बनहि संधाने ॥
देखि सकल बनचर खल बृन्दू । करिहो कबहुं निशान अनंदू १४
इहां धनुष क्षत्रिय कर जानो । ज्वलितअनलकौ इंधनमानो ॥
जाके निकट रहल छबि छावे । ताकौ बल अरु तेज बढावे १५

॥ दोहा ॥

पूर्व काल की तापसी, रहे सत्य शुचि मान ॥
काहु पुण्य बन मध्य जहँ, खग मृग बिचरु महान १६

॥ चौपाई ॥

इंद्र सची पति इरपि पधारे । करनु बिघ्न तप तासु बिचारे ॥
लै तरवार हाथ भट बेशा । मुनिआश्रममधिगयउसुरेशा१७
त्यहिआश्रम थलमहँ पुनिसोई । उत्तम खड्ग धस्यो नत होई ॥
दीन धरोहर कहि मुनि पाहीं । करत पुण्यतप जोथित ताहीं१८
सो मुनि पाइ दिव्य हथिआरू । रक्षा करत धरोहर भारू ॥
करगहित्यहि बिचरनबनलागे । निज रक्षा करतहि अनुरागे १९
जहँ जहँ जाहिं लेन फल मूला । बनमधिमुनिबरनिजअनुकूला॥
तहँ तहँ खड्ग तजैं नहिं नेका । बस्तु धरोहर जानि सुटेका २०
नित्य शस्त्र धारन के हेतू । क्रमशः बदलन लग्यो सुचेतू ॥
तपसी तजि तप महँ बिश्वासा । रुद्र सुभासु धस्यो दृढ भासा २१
तब सो रौद्र कर्म रति लाई । खींच्यहु रुद्र भाव त्यहि धाई ॥
तासु शस्त्र संगति गुण पाई । गयोनरक महँमुनि बिकलाई२२
इतनै है पुरान इतिहासा । कारण शस्त्र सँयोग प्रकासा ॥
अग्नि सँयोग सरिस त्यहि जानो । शस्त्र धरन योगहु तसमानो२३
नेह सहित करि अति सनमानू । सिखवहु सुधि दै तुम्हैंसुजानू!॥
सो पुनितुम धनु धर सन प्यारे! । करन योगु नहिं नेकुसँभारे २४
बुद्धि बैर बिनु निशचर मारनि । दंडक बन बासिन संहारनि ॥
बिनु अपराध लोक बध हेतू । बीर! मनहु मधिकरो न नेतू२५
क्षत्रिय बीर सु संयम कारी । बन बसि धरै धनुष जोभारी ॥
इतनै कारज है तिन केरा । दुखी जनन रक्षण चहुं फेरा २६
कहां शस्त्र कहँ बनबन बिचरन । क्षात्र धर्म कहँ तपकौ अचरन ॥
हमरे ब्रत से एहु बिरोधा । पूजहु धर्म देश अनुरोधा २७

निंदित पाप मिलित बुधि होवै । जो जन अस्त्र शस्त्र नित सेवै ॥
जब जैहो फिरि अवध मझारी । सेयहु क्षत्रिय धर्म खरारी ! २८
जौ तुम राज्य कर्म सब त्यागी । मुनिमग माँहिं रमहु अनुरागी ॥
तौ मम श्वसुर और सब सासू । अखय प्रीतियुत होहिं सुबासू २९
धर्महि से उपजैं बहु अर्था । धर्महि से सुख होय न व्यर्था ॥
धर्महि से सब कछु मिलि जावैं । धर्म सार यह जग बुध गावैं ३०
तिनश्रुतिकथितनियमसमुदाई । करिनिजमनहिंखींचिलखलाई ॥
निपुन मनुज पावहि सुठि धर्मा । नहिं सुखसेसुखमिलैसुकर्मा ! ३१
याते सौम्य ! शुद्ध करि ही को । बन बासि करहु धर्म तप ठीको ॥
तुम सन बिदित सबै मैं जानूं । तीनहु लोक तत्व परमानूं ३२

हरिगीती छन्द ॥

मैं चपल नारि सुभाउ से यह, कह्यों जो शुभ जानि कै ।
वह कौन जो समरत्थ ? धर्म हु कथन ? तुमहिं बखानि कै ॥
यहि हेतु निज बुधि लाइ सोचहु, भाइ युत अनुमानि कै ।
जो रुचै करहु सुजान ! सो तुम, तुरत निजब्रत ठानि कै ३३

इति श्रीमद्वा० रा० अ० कां० पं० दे० नं० चि० कृ० भा० छं० नवमः सर्गः ॥९॥

····:※:※:※:····

दशवां सर्ग ॥

सीता जी की अहिंसा शिक्षा को अच्छी मान कर भी दुखी मुनियें की रक्षा दुष्टों को मार के करना बड़ा धर्म है यह बाणी रामचंद्र के मुख से कहना और सीता जी को प्रीति से समझाना ॥

॥ दोहा ॥

पति भक्तिनि बैदेहि जब, यह बोलीं हित भीन ॥
राम धर्म थित ताहि सुनि, सियहि सु उत्तर दीन ॥१॥

॥ चौपाई ॥

सुनो देवि! तुम हितहि बखाने । जस सनेहि के बैन प्रमाने ॥
निज कुल उचित भाव दरसाई । धर्मिनि! जनकभूप गृह जाई! २
का मैं कहूं देवि ! तुव पाहीं । कहेउ बचन तुम येहु अबाहीं ॥
"क्षत्रिय धरैं धनुष यहि हेतू । होय न आर्त शब्द इति नेतू" ३
ते दंडक बन के मुनि राई । दुखी तपस्वी व्रती सुहाई ॥
सीते ! मो समीप निज आई । शरणागत ह्वै बैन सुनाई ४
सदा बसैं जे बन महँ प्यारी! । कंदमूल फल नियत अहारी ॥
लहैं चैन नहिं हिय भय भारी । क्रूर कर्म निशिचर सन न्यारी ५
तिन्हैं भीम निशिचर भखिजाहीं । मनुज मांस जे सततहि खाहीं ॥
जे सब भखे जाहिं मुनि नाथा । दंडक बन बासी इक साथा ६
ते द्विजबर मोसन यह बोले । हम पर करहु कृपा धनु तोले ॥
मैं पुनि सुनि ऐसी दुख बानी । तिनकेमुख सेनिसरित जानी ७
तिनके बचन मान्य करि सीता! । मैं बोल्यों यह बचन बिनीता ॥
"होहु प्रसन्न आपु सब स्वामी! । अतुललाज यह मोहिं निकामी ८
जो मैं ऐसे दुखित द्विजन से । भयों उपसिथत प्राप्त सुजनसे ॥
काह करों उपकार तुम्हारा ?" । यह तिननिकट कहेयों ललकारा ९
ते सब आइ मिलित मतिठानी । यह बोले दुख संयुत बानी ॥
"दंडक बन महँ राक्षस आवें । जे बहु बिध निज रूप बनावें १०

तिन से राम महा दुख पावें । रक्षहु हमैं इहैं मन भावें ॥
होम काल अरु पर्ब मझारी । अनघ ! करैं उतपातहु भारी ११
देहिं बिगारि बडे बल धारी । राक्षस रुधिरहु मांस अहारी ॥
मुनिन निशाचर पीडित जानी । तपसिन तपब्रतठानिन्ह ज्ञानी १२
पुनि जो शरण ढूंढने बारन । आपुहिएक शरण कुलतारण ! ॥
यदपि कामना तप बल आशा । हमकरिसकैं निशाचरनाशा १३
पै बहु दिनकर संचित जोई । चहैं न हम तप खंडित होई ॥
बहुत बिघ्न सहि ज्यहि हमठाने । राघव ! नितदुखकरिसंधाने १४
हमतो शाप देहिं टुक नाहीं । यदपि निशाचर धरि २ खाहीं ॥
मुनिन दुष्ट दंडक बन बासी । करैं सबैबिधिनिशिदिनत्रासी १५
तुम रक्षक हौ भाइ समेता । तुमहि नाथ हमरे बन हेता" ॥
मैं ! प्रिय ! सुनियहबचनदुखारी । कह्यो सकल पालन ब्रतधारी १६
दंडक बन महँ मुनिजन पाहीं । कीन्ह प्रतिज्ञा गहिशर बाहीं ॥
अंगीकृत तजि सकों न वाही । जनकनंदिनी ! जियतहिताही १७
मुनि जन संग न दूसर बाता । करूं सदा सच मम मन भाता ॥
प्राण तजौं बरु मैं सुनु प्यारी ! । लखनसहित वा तुम्हैं सुनारी १८
पै नहिं तजों प्रतिज्ञा कोई । करि बिशेष बिप्रन सँग जोई ॥
तातें अवसि मोर भव काजा । ऋषिगणरक्षणमंधिमनभ्राजा १९
बिनुहिकहे[1] सिय!का जबकह्यऊ? तापर मोसन आशहु लह्यऊ ॥
जो तुम कह्यो नेह बस बानी । सुहृद भाव मंगल अनुमानी २०
मैं संतुष्ट सिया ! तुव पाहीं । तुमकछु अशुभसिखायहुनाहीं ॥
जस तुम्हार कुल है सुकुलीना । वैसहिबचन कह्यो मतिभीना ॥
धर्म चारिणी तुम मम प्यारी । प्राणहुं से अतिशय पुनिभारी २१

१ बिना कहे रक्षा करनाहमारा कामहै पर जब उन्हों ने कहा तब तो और भी

त्रोटक छन्द

कहिबैन सियाप्रिय को मिलिसें। पुनिराम महागति मैथिलिसें ॥
धनु बान धरे संग भाइ लही। चलि रम्य तपोवन बाटगही २२

इति श्रीमद्वा० रा०आ० कां० पं० दे० नं० त्रि० कृ० भा० छं० दशमः सर्गः ॥१०॥

—:०:—

ग्यारहवां सर्ग ।

(राम लक्ष्मण के बन देखते जातेर रास्ते में गीत बाद्य ध्वनि का सुनना,
उसे एक मुनिसे पूछना, मुनिके मुखसे पंचाप्सर तलाव की कथा,
फिर आगे बढ कर सुतीक्ष्ण के आश्रम में जाना,
वहांसे अगस्त्य आमको पधारना)

॥ दोहा ॥

आगे रघुनंदन चले, बीच सिया शुभनारि ।
पीछे धनुसर कर गहे, लखन लला अनुसारि १

॥ चौपाई ॥

ते देखत तहं बिबिधि बिशाला। महा शैल थल बन बिकराला ॥
नदी अनेक परम रमणीया। चले भाइ द्वौ लै सँग सीया २
चक्र चाक्र सारस अरु हंसा। फिरें नदी तट झुंड प्रसंसा ॥
तथा कमल युत ताल तलैयां। खग समेत जल के उपजैयां २
जुरे चित्र मृग गजा के झुंडा। मद उन्मत्त शींग बर तुंडा ॥
महिष बराह फिरैं बहुभांती। अरुगज बिटपबिदारक माती ॥

ते सब थके दूर पथ धाई । अथवन चलै जबहि रवि राई ॥
देख्यहु हितकर रम्य तडागो । जोजन लौ बिस्तार सुभागो ५
लालकमल तहँ सघन फुलाने । गज के झुंड पडे अकुलाने ॥
सारस राज हंस कल हंसा । अरु जल जन्तु अनेक सुवंसा ६
मन प्रसन्न कर रम्य सुबारी । ता मधि गीत वाद्य सुखकारी ॥
महानाद तहं सुन्यो अनूपा । पै नहिं देखि पडै को रूपा ७
तदनंतर कौतुक लखि रामू । महारथी लखनहु त्यहि ठामू ॥
तहं मुनि एक धर्मभृत नामू । तिनसन पूछन लगे सकामू ८
सुनो महा मुनि! अद्भुत एहू । हम सब सुनि मन भये सदेहू ॥
यहि कौतुक की कहो कहानी । है यह काह ? सत्य ततु बानी ९

॥ दोहा ॥

तिन राघव द्वौ जब कह्यो, तब मुनि धर्म सुजान ॥
तुरतहि सरस प्रभाव सो, कहन लगे सविधान ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

यह पंचाप्सर नामक ताला । बहु पुरान जल रह सब काला ॥
याको मांडकर्ण मुनि राई । तप प्रभाव से दीन्ह बनाई ११
मांडकर्ण मुनि सोइ महामति । तप्यो तीव्रतप योग सुसम्मति ॥
दश हजार बर्षहु इंद्रियजिति । बायुभक्षि जलमध्यकीन थिति १२
तबअतिव्यथितभयो सबदेवा । अग्नि सहित प्रथमहि जिनसेवा ॥
बोले बचन एक से एका । ह्वै इकत्र करि यतन बिवेका १३
"हम सब मध्य काहु की थाना । यहमुनि चहैमनहिं करि ध्याना" ॥
इहै बिचारि मनहि घबडाने । तिन सब देव वृंद बिलपाने १४

करनु विघ्न तदनंतर धाई। सब देवन से गईं पठाई ॥
पांच अप्सरा रूप प्रधाना। बिजुली समजिन की चमकाना १५
तिन अपसर गण से मुनिराई। देखन हार भलाइ बुराई ॥
मदन फन्द में पडे भुलाई। देवन काज सिद्ध हित लाई १६
ते सब पांच अप्सरा नारी। मुनि की पतिनी भईं पिआरी ॥
तिनके गेह तडाग मझारी। त्यहि जल भीतर केलि पसारी१७
तहां पांच अप्सरा सुंदरी। सुख से बसैं सनेह बुंदरी ॥
तप अरु योग प्रभाव युवातन। मुनिहिकरावहिंरमणमोदमन १८
क्रीडा करहिं सोइ रस माती। तिनकी बादन धुनि यह आती ॥
सुनियमिली भूषण झनकारा। गीत मनोहर नाद अपारा १९
यह आश्चर्य लासु मुनि बानी। याबिधि सुनि राघव यशखानी ॥
जो कारण कह आतम ज्ञानी। भाइसहिज त्यहि सांचहिमानी २०

॥ दोहा ॥

यहि विधि कहत मुनीशके, देख्यहु आश्रम एक ॥
कुश चीर चहुं दिशपडे, श्रुतिघन सोह बिबेक१२

॥ चौपाई ॥

तहँ पैठे सिय संग लगाई। आश्रम मण्डल महँ तब जाई ॥
श्री शोभा जहँ अति छबिछाई। राम ककुथ अरु लक्ष्मण भाई २२
बसे सुसहित तहां रघुराई। महा मुनिन से पूजन पाई ॥
पुनि क्रमसे तिन तपसिन केरे। जाइ सबन सँग आश्रम हेरे २३
जिनमुनियनआश्रमबसिआये। प्रथम अस्त्र बिद राम सुहाये ॥
पुनि कहुं बसे मास दश नीके। कहुं इक बर्ष सहित सुख होके २४

कहुं चौमास मास पँचकाला । कहुंछमासकहुंअधिकहुशाला ॥
अपर कहूं कछु अधिकहु मासा । छेढमास कहुंकोन निवासा २५
तीन मास कहुं आठ महीना । राघव सुखसे बसे प्रवीना ॥
तहँ तिन राघव बास करंते । मुनिजनआश्रम बिमलरमंते २६
तासु रमत्र मधि रहत निरोगा । दश संवत्सर गयो सुभोगा ॥
फिरि सब मुनिआश्रम धर्मज्ञा । सियासहित रघुबरहु गुणज्ञा २७
पुनि सुतीक्ष्ण आश्रमथलमाहीं । गये राम राघव शुभ बांही ॥
सो त्यहि आश्रम महँ रघुराई । पूजित भये मुनिन से भाई २८
तहां बसे कछु कालहु रामा । जो अरिदमन करनु सुखधामा ॥
तदनंतर आश्रम के बासिहिं । प्रनयेनीतिसहितमुनिरासिहिं२९
सो काकुत्स्थ सुतीक्ष्ण समीपा । थित है यह बोले कुल दीपा ॥
यहि बनमाहिं सुनो भगवाना! ।मुनिमधिश्रेष्ठअगस्त्यसुजाना३०
बसहिं नित्य हम यह संबादा । कहत नरन सन सुने सुनादा ॥
पैनहिं जानहिं हम त्यहि देशा । यह बन सघनज्ञान करक्लेशा ३१
कहँ वह आश्रमथल रमणीया ? ता बुधिबरमुनिकौ कमनीया ॥
त्यहि भगवानहिं करनु प्रसन्ना । सिया लखनयुत होहुंप्रपन्ना३२
वहां अगस्त्य समीपहु जाना । करनुप्रणाम मुनिहिहरखाना ॥
है मनोरथ मोर महाना । हृदय बीचउपज्योबलवाना ३३
जाते मैं त्यहि मुनि बर काहीं । सेवा करहुं निजै चलि ताहीं ॥
यह श्री राम बचन सुनि काना । सोइ महामुनि धर्म सुजाना ३४
दशरथ सुतपरकारिअति प्रीती । कह्योसुतीक्ष्णबचन यहनीती ॥
मैं हूं तुम्हैं याही मन लाई ! । कहनचहों युतलखन सुहाई ३५
जाहु अगस्त्य निकट रघुराई । सीता सहित बिलंब न लाई ॥
भै भइ नीक बात यहि काला । तुमहिकह्योनिजमोसनलाला ३६

मैं यह कहूं तुम्हैं समझाई । जहँ अगस्त्यमुनि बास बनाई ॥
मम आश्रम से योजन चारी । जाहु लाल! पुनितहं अनुसारी ३७
दक्षिण दिश आश्रम श्रीमानू । बसैं अगस्त्य भाइ बुधिखानू ॥
नहिंगिरि लाबन बहुथलदेशा। पीपल बन सोहत शुभ बेशा ३८
बहु प्रकार फल फूल मनोहर । नाना बिहग नाद करि जोहर ॥
बिबिध पद्म युत ताल तलैयां । तहँ प्रसन्न मन बारि धरैयां ३९
हंस टिटिहिरी कुक्कुट बारी । चक्र वाक छबि छटा पसारी ॥
तहां एक निसि दिह्योबिताई । जैयो प्रात राम पुनि धाई ४०
दक्षिणदिशपथ पर चहिनीके । बन खंडहि के लगन जढी के ॥
तहंअगस्त्यआश्रम पदजानो । चलि योजन पथ एक प्रमानो४१
रमणकबन मुनिजाहि बनाये । बहुबिध बिटप सोह समुदाये ॥
रमिहैं तहां बिदेह कुमारी । तुव सँग लखनलला धनुधारी४२
सोअति रम्य अरण्य बनावा । बहुबिध सुंदर बिटप लगावा ॥
जो तुव मन देखन लगि धायो । महा मुनीश अगस्त्यहि भायो४३
तौपुनि अबहिंगवनमनमानो । सुनो महामति! करि संधानो ॥

॥ दोहा ॥

यह सुनि मुनि से भाइ युत, रामहु कीन्ह प्रणाम ॥
चले अगस्त्याश्रम पथहि, सिया लखन सह स्याम ४४

॥ चौपाई ॥

देखन बन छबिबनी बिचित्रा । पर्वत मेघ प्रकाश पवित्रा ॥
नदी तड़ाग बिबिध जल पूरे । मिले मार्ग बिच जो अतिरूरे४५

मुनि सुतीक्ष्ण जो पंथ दिखाये। ता मग जाइ परम सुख पाये॥
अति हर्षित ह्वै लखनहि टेरी। यह बोले शुभ बचन निबेरी ४५
अवसि इहै आश्रम हम जान्नैं। तासु महामति को अनुमानैं॥
मुनि अगस्त्य के जो लग भाई। पुण्य कर्म सो हमैं दिखाई ४६
जस सुतीक्षण कह तस बन येहू। पथ मधि जानि पडै सुचि नेहू॥
फूलन गुच्छ झुके फल भारन। चहुं दिशलंबितबिटपहजारन४८
पीपल पके फलनि शुचि गंधा। याहि बन से आवहिं प्रतिबंधा।
बारहि बार पवन के झोंके। तथा कटुक रस अनुभव रोके ४९
जहं तहं देखि पडैं बड ढेरा। सूखे काठ पडे चहुं फेरा॥
नरम कुशा पन्ना मणि रंगे। देखि पडैं चहुं ओर निसंगे ५०
बनआश्रम मधि अनलहु जोई। तासु धूम यह उडि रह सोई॥
देखि पडै शिख गगन प्रचारी। नील मेघ गिरि ऊपम वारी ५१
विमल बिलग घाटन महँ देखो। स्नान करहिं द्विजगणशुभबेखो॥
पूजन करहिं पुण्य फल हेतू। निजकर चुने कुसुम लै नेतू ५२
सुनो लखन! मैं सुन्यों जु बानी। मुनिसुतीक्ष्णको शुभ पहिचानी॥
सोइ अगस्त्य भ्रातु कौ याही। आश्रम अवसि होयगो गाही ५३
मृत्यु समान निशाचर मारी। बास योग्य कीन्हे यह भ्मारी॥
जासु भाइ जग हित बलधारी। पुण्य कर्म युत रचेउ सँवारी ५४
एक समय इहं द्वौ सठ पूरे। बातापी अरु इल्वल कूरे॥
मिलि द्वौ भाइ रहे बसि शूरे। ब्राह्मणबधक असुर छल रूरे॥५५
इल्वल धरि ब्राह्मण को रूपा। बोलत संस्कृत बैन अनूपा॥
सो बिप्रन कहँ न्योति बुलाई। निर्घिन श्राद्ध बहानहु लाई ५६
बनै मेष बातापि हु भाई। ताहि काटि रुचि मांस बनाई॥
तिन न्योते द्विजबरन्हि खवाई। श्राद्ध कर्म महँ प्रीति दिखाई ५७

तदनंतर जब ते द्विज खाये। इल्वल छली तुरत गुहराये ॥
"निसरहु हे वातापि" सुहाये। इह बानी स्वर भरि चिचिआये५६
सब सुनि भाइ बचन वातापी। मेष सरिस बोलत वह पापी ॥
फोडि फाडि बिप्रन कौ देहा। निसरि पडत माया कर गेहा ५९

॥ दोहा ॥

यहि विधि माया रूप ते, बध्यौ हजारन बिप्र ॥
नितहि मांस खादक दूऊ, नाश किये जग छिप्र ॥६०॥

॥ चैापाई ॥

यह चरित्र देवन लखि पाये। कीन प्रार्थना ऋषिहि जनाये ॥
सोअगस्त्यमुनिश्राद्धमभारी। बातापिहि खायो ललकारी ६१
"भयो पूर अब श्राद्धहमारी"। यह कहि इल्वल दे कर बारी ॥
"निसरहु भाइ"इहै पुनि बोला। महा असुर करि शब्द कलोला६२
अब सो पुनि बोल्यो छलकारी। बिप्र घाति भाइहि बल भारी ॥
तबहंसिकह्यो परमबुधिमाना। श्रीअगस्त्यमुनिज्ञानसुजाना६३
कहँ निसरनकी शक्ति हुताही ? गयो सुपचि मम उदरहिं माहीं ॥
तुव भ्राता जो मेष स्वरूपा ॥ गयो अधम यमलोक अनूपा ६५
तद नंतर सुनि मुनि कौ बैना। भाइ मरण शंकित भौ नैना ॥
मुनि से क्रोध सहित ललकारी। चह्यो लडन निश्चर, भैहारी ६६
त्यहि द्विजेंद्र प्रतिदौडयहु रेंगी। दीप्त तेज मुनि देख्यहु बेगी ॥
ज्वलित अनल सम आंखपसारे। जोनिश्चर कहँ मारयहु जारे६७
ता अगस्त्य के भाइहि केरा। आश्रम थल तडाग से घेरा ॥
जिनकरि कृपा बिप्र पर भारी। कीन्ह कठोर कर्म व्रत धारी६७

यहिबिध कहत रामगुणगाथा। चले जात लक्ष्मण के साथा ॥
भये अस्त दिनकर रँगलाला। संध्या समय आव त्यहिकाला ६८
पश्चिम मुख संध्या करि बंदन। भाइ सहित बिधिवत रघुनंदन ॥
पैठयहु आश्रम थल सुखकंदन। बंदयहुत्यहि मुनिबरहि निदुंदन६९
सो मुनि रामहिं मान समेता। लीन प्रेम युत कृपा निकेता ॥
तहाएक निशि कीन निवासा। खाइ मूल फल पाइ सुपासा ७०

॥ दोहा ॥

जब बीती निशि सोइ अरु, रबि मंडल परकास ॥
त्यहि अगस्त्य भाइहि तबै, पूछयहु राम हुलास ७१

॥ चौपाई ॥

करौंप्रणाम तुम्हैं भगवाना! । सुखसे बसे रैन यहि थाना ॥
आयसु लै तुव चहैं पयाना। देखन तुव बड़ भाइ महाना ७२
"जाहुवत्स!" यह सोमुनिबोले। गये राम राघव दृग लोले ॥
जो मारग तिन्हदीन्ह बताई। देखत ता बन की प्रभुताई ७३
जल कदंबअरु पनस अशोका। शाल खैर द्रुम धव अवलोका ॥
बहु करंज महुआ भौंराने। तेंदू बेल सघन बनताने ७४
बिबिध लता सोहैं चहुंओरा। कछौ फूली कछौ कलिन गुछोरा ॥
देख्यो राम सैकड़न पांती। तहंबन बिटपनिबिड़ अरुभ्रांती७५
कछौ गज शूंडन पड़े ढहाये। कछौ बानर झुंडन छबि छाये ॥
मत्त बिहंग समूहनि कोऊ। कूकनि सहित सैकड़न जोऊ ७६
तब बोले राजीव बिलोचन। राम भाइ से तन दुख मोचन ॥
जो निकटहि जाते पहुआये। बीर लखन छबि कहा लहाये ७७

बिटप सुने जस पात रसीले । क्षमा गुणहु युत खग मृग मीले ॥
याते आश्रम नहिं अब दूरो । ऋषि कर जो आतम रति पूरो ७८
जो "अगस्त्य" अस जग बिख्याता । निज सुकर्म से मंगल रांता ॥
देखि पडै आश्रम वह तासू । थकी परिश्रम की करु नासू ७९
घृतआहुति धूमन्हि बनपूरा । माला चीरन्हि बिमल बरूरा ॥
शांत फिरैं बन जंतु समूहा । बहु प्रकार खग बोलत जूहा ८०
बड प्रताप से मृत्युहि बांधे । सकल लोकहित धरि निज कांधे ॥
दक्षिण दिश देशहि जिन कीन्हे । बास करनु लायक मन दीन्हे ८१
तासु जु यह आश्रम पद स्वच्छा । देखि पडै दक्षिण दिशि अच्छा ॥
जयहि मुनिके प्रभाव से भीता । निशिचरहूँ न सकैं उपनीता ८२

॥ दोहा ॥

पुण्यकर्म मुनि जबहिसे, यहि दिशि कीन्ह चढाउ ॥
सबहों से बिनु बैर है, निशिचर शांत सुभाउ ८३

॥ चौपाई ॥

सोअगस्त्य मुनिकी गहिनामा । यह दक्षिण दिश भई सुधामा ॥
जोइ प्रथम तिहु पुर बिख्याता । क्रूर राक्षसन से दुख दाता ८४
सदा सूर्य मग रोकन हेतू । बिंध्य हिमालय सम करि चेतू ॥
बढन चह्यो नहिं बढ्यो गिरेशा । ता आवनु कर पाइ संदेशा ८५
सोयुग युगआयुषमुनि ज्ञानी । लोक बिदित सुभकर्म कहानी ॥
ता अगस्त्य आश्रम श्रीमानू । इहै शांत बन जंतु सुहानू ८६
यहमुनि लोकपूज्य सुचिसाधू । सज्जन हित रत सदा अबाधू ॥
जो कौ जाइ तासु ढिग ताही । मंगल सीख देहिं सुभ गाही ८७

इहँ अगस्त्य मुनि की मैं जाई । सेवा करिहों अति सुखपाई ॥
सुनो लखन! बसिहों प्रभुपासा । करिहों अंत उहैं बनवासा ८८
यहां देव सिद्धरु गंधर्बा । तथापरमऋषि मुनिजनसर्बा ॥
मुनि अगस्त्य कहं सेवहिं आई । सदा नियत भोजन जलखाई ८९
नहिं इहँकौ मिथ्या कहि जीवै । पुनि शठ क्रूर जु तहं जलपीवै ॥
नरघाती अथवा रत पापी । सोउ शांत गुण कला कलापी ८०
यहां देव अरु यक्ष बसाहीं । मिले नाग गरुड़हु संग माहीं ॥
नियत अहार न्याय से पूरे । धर्म अराधहिं हर्षित रूरे ८१
इहं तप करि ह्वै सिद्ध सुयोगी । देहत्यागि ऋषिगण जगभोगी८२
रबिसम चमकितचढे बिमाना । जाहिं स्वर्ग नवतन धरि प्राना ॥
इहां देव जो पूजित होवैं । पुराय कर्म प्राणिन्ह बर देवैं ८३
यक्ष भाव अरु अमर अनूपा । बिबिध राज्य दै करहिं सुभूपा ॥

सवैया छन्द

हम आइ गये त्यहि आश्रममें, जहँ बैठि अगस्त अनंद भरे।
तुम आगयहि लक्ष्मण! पैठिकुटी, मधि जाहु अभैनिहि शंकधरे॥
कहि देहु इहां मम आवनु यो सिय संग लिये मुनि बेष धरे।
ऋषि सों कर जोरि निवेदन कै पुनि लौटि समीप चलो हमरे॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० चि० कृ० भा० छं० एकादशः सर्गः ॥११॥

—····⁂····—

बारहवां सर्ग

अगस्त्य जी के आश्रम में जा लक्ष्मण जी का मुनि शिष्य से रामागमन कहना, मुनिशिष्य का मुनि के पास जा निवेदन करना और फिर लौट के रामचन्द्र को मुनि के पास ले जा मिलाना और मुनि कृत राम का सत्कार पाना।

॥ दोहा ॥

राम अनुज तब लखन सो, पैठ्यहु आश्रम जाइ ।
मुनि अगस्त्य के शिष्य सन, यह बोले हरखाइ ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनो सौम्य ! दशरथ नृप नामी । तासु ज्येष्ठ सुत बल गुणधामी ॥
मुनि दर्शन लगि आयहु रामू । सिया नारि युत हैं यहिठामू २
लक्ष्मण नाम तासु मैं भाई । लहुरो रहूं सदा हित लाई ॥
भक्ति तासु अरु आयसु कारी । तुम जौ सुन्यो होय बनचारी ३
ते हम यहि कठोर बन माहीं । पितु निदेश ले पैठे ताहीं ॥
दर्शन चहैं सबै हम भाई ! । मुनिहितनिक तुमदेहुजनाई ४
तासु लखन के सुनि सो बैनो । परम तपो धन प्रफुलित नैना ॥
"बहुत नीक" कहि कहन सँदेशा । यज्ञ अनल गृह कीन्ह प्रवेशा॥
सोतहंजाइमुनिन मधिश्रेष्ठहि । तपप्रभावसबबिधिबरनेष्ठहि ५
जोरि पानि तब बोलन लागे । राम आगमन युत अनुरागे ६
जस कछु लखन कह्यो समझाई । शिष्य अगस्त केर मतिलाई ॥
ये दशरथ के सुत बर दोऊ । राम लखन निहिचैं कह सोऊ ७
प्रविशे आश्रम थल महँआजू । सीता नारि सहित रघुराजू ॥
देखन हेत आपु कौ आये । सेवनु पुनि अरिदमन सुहाये ८
अब जो कछु तुम आयसु देहू । कहहुं सोइ तिन्ह परम सनेहू ॥
तबमुनिसुनीशिष्यमुखबानी । आये राम लखन अस जानी ९
पुनि सीतहु आई भगमानी । कह्यो बानि यह प्रेम सुसानी ॥
अहोभाग्य म्वहि देखनआजू । चिर बांसिहि आयौ रघुराजू १०

मन महँ रही लालसा मोरी। इन कर आवनु दृष्टि अगोरी ॥
जाहु जाहु सत्कार समेता। रामहि नारि लखन युत नेता ११
ल्यावहु मम समीप तुरताई। कस नहिं साथहि ल्यायहु भाई! ।
ऐसहि कह्यो महा मुनिराई। धर्म सुजान प्रगटि प्रभुताई १२

॥ दोहा ॥

हाथ जोरि मुनि शिष्य सो, करि प्रणाम भल भाखि ॥
निसरि मान युत लखन से, बोलयो यह अभिलाखि १३

॥ चौपाई ॥

कहां राम मुनि दर्शनकारी?। आवहिं आपु चलें गुणधारी ॥
तब सहशिष्य लखन तहँजाई। जहां राम बैठे बड भाई १४
शिष्यहि राम रूप दरसायो। अरु सीतहि करि सैन लखायो ॥
त्तिःहै शिष्य कहि माधुरि बानी। मुनि अगस्त्य आज्ञा संधानी १५
चले लिवाय न्याय करिआदर। जो सत्कार योग्य गुणआगर ॥
पैठगहु राम तबै मुनि पासू। सीता लखन सहित गतत्रासू १६
शांत हरिण बन जंतुन पूरो। आश्रम थल देखत छबि भूरो ॥
लखयो राम तहं ब्रह्म निवासा। अग्निभवनशुभज्योतिप्रकाशा १७
बिष्णु भवन अरु इंद्र सुथाना। रवि कर मंदिर बन्यो प्रधाना ॥
चंद्र गेह अरु भग कर ऐना। तथा कुबेर भवन सुख चैना १८
धात बिधाता सदन बिराजैं। वायुभवन अद्भुत छबिछाजैं ॥
वरुण निवास बनो रमणीया। लिये पास जो खल दमनीया १९
तैसहि गायत्री गृह राजै। अैार आठ बसु सदन बिराजै ॥
शेष नाग कर भवन सुनीको। गरुड गणेश केर गृह ठीको २०

स्वामकार्तिकहु की सुभथाना । कर्मथान पुनि देख्यहु नाना ॥
तदनंतर शिष्यन से घेरे । उठे मुनीश राम बपु हेरे २१

॥ दोहा ॥

स्यहि बरतेजहि मुनिन मधि, आग्यहि देख्यहु राम ॥
लक्ष्मी बर्द्धन लखन से, बचन कह्यो बलधाम २२

॥ चौपाई ॥

लखो लखन! बाहर भगवाना । मुनिअगस्त्यनिसरहिंगुणवाना ॥
ये तप के हैं परम निधाना । तिन पहंभ्रकटहमकरहिं पयाना २३
यह कहि महा बाहु रघुराई । रविकरद्युतिअगस्त्य पहंधाई ॥
आवत तासु गह्यौ द्वौ चरना । रघुनंदन हू तिनकी शरना २४
तबहि राम लक्ष्मण के संगा । सीता जनक लली मृदु अंगा ॥
खडे भये कर जोरि सलोने । मुनि धर्मज्ञ आशिषहु दीन्हे २५
सादर रामहिं मिले मुनीशा । आसन जल से पूजि बलीशा ॥
कुशलअनंद पूछि पुनि सोई । "बैठहु" यह बोले शुचि होई २६
होम अनल करि अर्घ प्रदाना । पूजि अतिथि ऋषिराजमहाना ॥
बानप्रस्थ धर्म धरि ध्याना । दियो तिन्है सो भोजन पाना२८
पहिले आपु बैठि मुनि राई । धर्म सुजान कर्म निपुनाई ॥
कह्यो राम सन बैठनु पाछे । धर्म सुजान जोरि कर आछे २९
सुनो राम ! तपसी दुख्यारी । जो न अतिथि पूजै सत्कारी ॥
भूठसाखि सम लोक बिकारी । खाइ जु सो निज मांस अहारी२९
नृप जो महारथी कहलावे । सकल लोक कर धर्म चलावे ॥
पूजनीय सो मान्य महाना । आयहुअतिथिप्रियप्राना३०

॥ दोहा ॥

अस कहि रामहि फूल फल, मूल बस्तु बहु भांति ॥
पूजि अगस्त्य जु चह्यउ चित, तब बोले त्यहि रांति ३१

॥ चौपाई ॥

महा चाप यह दिब्य बनाऊ। कंचन मिलित बज्र छबिछाऊ ॥
पुरुष ब्याघ्र है बैष्णव नामा। बिशुकर्मा निर्मित गुणधामा ३२
गति प्रचंड रबि तेज प्रकाशा। ब्रह्मदत्त नामक शर खासा ॥
दिहो महेंद्र मोहि कर छोहू। अखय बान दो तरकस ओहू ३३
भरे पूरि शर पैन ज्वलंता। मनहुं अनलशिख उडतअनंता ॥
यह चमकित चांदी कर म्यानू। हेम मूठ तलवारि सुसानू ३४
यहि धनुषहि लै राम! महानन। रणमहमारि असुरबलवानन ॥
एक समय हरि बिष्णु खलारी। देवन्हिदीन्हदीप्तश्रियभारी३५
सोइ धनुष अरु तरकस दोई। बान खड्ग पुनि संयुत होई ॥
बिजय हेतु मानद! तुम लेहू। गहैं इंद्र जस बज्र सनेहू ३६

सोरठा।

यह कहि तेज महान, सकल बरायुध राम कहँ।
पुनि अगस्त्य भगवान, दै बोले अति मृदुबचन३७ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० अ० कां० पं० दे० नं० त्रि० कृ० भा० छ० द्वादशः सर्गः १२ ॥

—:※:※:※:—

तेरहवां सर्ग ।

अगस्त्यजी से धनुष बान श्रो खड्ग पाय उन्हीं मुनि के बताये हुये पंचवटी आश्रम को रामचन्द्र का जाना ॥

॥ दोहा ॥

राम लखन मंगल लहो, मैं प्रसन्न तुम पांहि ॥
जो सिय सहित प्रणाम म्वहिं आयहु करन सुहाहिं ॥१॥

॥ चौपाई ॥

तुम्है चले मग भौ श्रम भारी। ताते दुख तन थकी प्रचारी ॥
म्वहिंलखाइ कछु जनक दुलारी। चहैं ठहरि सहुंतान बिचारी २
सकल श्रृष्टि की जेतिक नारी। इहै प्रकृति राघव कुल तारी ! ॥
बिभव युक्त पति पर अनुरागैं। निर्द्धनअरु रोगिहि झट त्यागैं३
यह सुकुमारि नारि बय बाला। कबहुं न पाइ रही दुख लाला ! ॥
सासु दोष लहि बन मधि आई। पति सनेह प्रेरित बहुलाई ४
ज्यहिबिधिथकीनिवारहिरामू ! सिया बिरमि इहँ करहु सुकामू ॥
कठिनकर्म करि यह तियसीता। तुव संग बनहि चली उपनीता ५
बिजुली छटा चमक दमकाऊ। पौन शस्त्र सम तीख सुभाऊ ॥
गरुड पवन सम झट पट काजा। नारिन चाल पाट जग भ्राजा ६
यह तो सती आपु की भार्या। इन सब दोषन रहित स कार्या ॥
योगु सराहन सुमिरन लायक। अरुंधती जस सुरन सुभायक ७
अति पबित्र यह रम्य सुदेशा। जहँतुम लखनसहित मुनिवेशा ॥
अरु यहि बैदेही संग लाई। अरिंदम बसहु राम! चितलाई ८

जब अस कह्यौ महा मुनिराई । जोरि पानि राघव मन भाई ९
मधुर बचन बोले ऋषि पाहीं । दीप्त अनल सम जो बन माहीं१०
मैं बड धन्य कृपा तुव पाई । जो म्वहिं मुनि पुंगव! हरखाई ॥
भाइ नारि युत मो पर जोई । गुरु! निज मुख प्रसन्न किन होई ११
पै अब म्वहि थल देहु बताई ? बहु कानन जल बिमल सुहाई ॥
जहं आश्रम थल रुचिर बनाई । बसों निरत है सुख हियलाई १२

॥ दोहा ॥

तदनंतर मुनि श्रेष्ठ सो, सुनि राघव के बैन ॥
एक मुहूरत ध्यान करि, तब बोले शुभ ऐन १३

॥ चौपाई ॥

इहं से आठ कोस के दूरे । तात! मूल फल जल भर पूरे ॥
बहु मृग युत शोभा बर देशा । पंचबटी जग बिदित हमेशा १४
तहां जाइ आश्रमथल रोपी । लखन सहित वहं नहिं भै कोपी ॥
रमहु जाइ पितु कह्यो जु बानी । पालहु ताहि धर्म दृढ मानी १५
तुव वृत्तांत मोर है जाना । अनघ! सकल इह हेतु पयाना ॥
कछु तपयोग प्रभाव सुधारी । अरु दशरथ पर प्रीति हमारी१६
तुम्हरे हृदय माहिं जो लीला । तप प्रभाव से जानहु शीला ॥
अथवा इहैं रहो मम साथा । बनमधि करहु सुदृढतपनाथा!१७
याते मैं तुम सन यह बोलूं । पंचबटी जावहु हिय खोलूं ॥
सोइ रम्य बन सुंदर देशा । सिया रमहिं तहंधारि निजबेशा१८
सोइ सराहित देश पुनीता । नहिं अति दूर राम! मननीता ॥
गोदावरी नदी के तीरा । तहं रमिहैं सीता धरि धीरा १९

मिलैमूलफल अतिशय जहवां । बहुविध खगकूजनियुत तहवां ॥
है एकांत पुण्य रमणीया । महाबाहु! सब बिध कमनीया १९
आपु सदाचारी अरु ताही । रक्षहु करन योगु निबांही ॥
पु निसहैंबसितपसिन रखवारी । करिहो जो तुम है प्रण भारी २०
इहै बीर ! जो सौंह लखाई । महुआ बट रुचि कर सघनाई ॥
याके उत्तर चाहिय जाना । लखिबट मार्गहिकिहोपयाना २१
तदनंतर लहि निर्थन ठाऊं । पर्वत के निकटहि अगुआऊं ॥
पंचवटी विख्यात सुदेशा । नित पुष्पितकानन छवि वेशा२२

सोरठा ॥

राम लखन युत ताहिं, मुनि अगस्त्य अस कह्यो तब ।
ऋषि सतबादिहि वाहिं, लै आयसु सत्कार करि ॥ २३ ॥
ते द्वौ आयसु पाइ, पग शिर नाये मुनिहु के ।
गये सिया संग धाइ, पंचवटी त्यहि आश्रमहि ॥ २४ ॥

हरिगीती छन्द ॥

धरि चाप दोनहुं भूपनंदन, करन्हि शर संधानि कै ।
कसि कमर तरकस पीठ लटकन, समर निर्भय मानि कै ॥
जस पंथ मुनि दरसाउ तिन सों, श्री अगस्त्य बखानि कै ।
तस गये चित्त लगाइ चीन्हत, पँचवटी अनुमानि कै ॥२५॥

इति श्रीमद्वा० रा० भा० कां० पं० दे० नं० त्रि० कु० भा० छं० त्रयोदशः सर्गः १३॥

चौदहवां सर्ग ।

जटायु और रामचन्द्र का मिलन, जटायु का कुल रामचन्द्र से पूछा जाना, सब जीवों की उत्पत्ति जटायु के मुख से कहना ॥

॥ दोहा ॥

पंचबटी मग जातही, पंथ मध्य रघुराज ।
लख्यो भयानक गीध इक, महाकाय बल बाज ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

ताहि देखि दोनहु भगमानी । बनधितराम लखन बर ज्ञानी ॥
मानि निशाचर खग के बेषा । बोले को तुम ? कहो सुकेशा! २
तब सो मधुर बचन यह बोला । बिनयप्रीतिसे जनु हिय खोला ॥
जानहु बत्स ! मोहिं तुम नीके । परम मित्र आपुन पितुही के ३
सो त्यहि सखा पिता कर मानी । रघुनंदन पूज्यहु गहि पानी ॥
अरु पुनि राम अभय ह्वै ताकौ । पूंछेउ कुल अरु नाम बलाकौ ४
राम बचन सुनि सो खगराजू । कहन हेत आपन कुल काजू ॥
तिन राघव से लगे बखानन । सबजीवनकी उपजबिधानन ५
सुनो महाभुज ! पूरब काला । जे सब भये प्रजा प्रतिपाला ॥
तिन सब कर अब इहै हवाला । मैं जो कहूं सुनो रघुलाला! ६
कर्द्दम[1] नाम प्रथम तिन माहीं ।तदनंतरऋषिबिकृत[2] लखाहीं ॥
पुनि मैं शेष[3] रुसंश्रय[4] नामी । तब बहु पुत्र[5] बीर्य बलगामी ७
स्थाणु[6] मरीचि[7] अत्रि[8] ऋषिजाये । फेरिमहाबल! क्रतु[9] उपजाये ॥
मुनिपुलस्त्य[10] अंगिरा[11] मुनीशा।तथाप्रचेता[12] पुलह[13] सुशीशा ८

दक्ष[14] भयो अरु विवस्वान[15] मुनि। पुनि अरिष्टनेमी[16] राघव गुनि ॥
महातेज कश्यप[17] मुनि जाये। तिन सब से पीछे जग भाये ९
दक्ष प्रजापति के ये सूनू। भये प्रसिद्ध जगत यश दूनू ॥
कन्या साठ भईं सुन रामा!। महा यजस्विनहे यश धामा! १०
तिन मधि आठ सुघर कटिनारी। कश्यप मुनि ब्याहे कुलतारी ॥
अदिति[1] और दिति[2] कौ करि प्यारी। दनु[3] अरु तो कालका[4] वारी ११
ताम्रा[5] क्रोधवशा[6] पुनि ब्याहे। मनु[7] अरु पुनि अनला[8] कर ग्राहे ॥
तिन कन्यन्हि से कश्यप बोले। करि अति प्रीति लबै हिय खोले १२
तीनलोक के पूरन योगू। मो सम सुतन्हि जनो तुम लोगू ॥
अदिति ताहि मन मानि सुरामा। दिति अरु दनु हिय पूरब हु कामा १३
तथा कालका मनहिं सुमानी। और नारि बहु बाहु! लजानी ॥
तैंतिस देव अदिति से जाये। हे अरिदम! जग सुयश बढाये १४
बारह[12] रवि बसु आठ[8] उचारू। ग्यारह[11] रुद्र अश्विनी ग्रारू ॥
अरितप! सुनो जनी दिति सूनू। तात! दैत्यगण जिन्ह यश दूनू १५
तिन के कर बसुधा यह आई। बन पर्वत समुद्र समुदाई ॥
अश्वग्रीव तनय दनु केरा। भयो सुनो अरिदमन! निबेरा १६
नरक और कालक सुत दोई। जनी कालका लाज बिगोई ॥
क्रौंची[1] अरु भासी[2] पुनि श्येनी[3]। धृतराष्ट्री[4] अरु शुकी[5] बिटेनी १७
ताम्रा जनी पांच बर कन्या। जानैं सकल लोक ये धन्या ॥
उपजे क्रौंची कोखि उलूका। भासी से खदेरात कुलूका १८
श्येनी बाज गीध सुत दोये। उपजाये बड तेज सँजोये ॥
धृतराष्ट्री सन उपज्यो हंसा। अरु समस्त कलहंस सुबंशा १९
चक्रबाक जनि भामिनि सोई। सुनो राम! तुव मंगल होई ॥
शुकी जनी इक नता कुमारी। नता सुता बिनिता भै प्यारी २०

अपर नारि बहु क्रोधहु धारी । राम! जनीं तनया दश न्यारी ॥
मृगी[1] और मृगमंदा[2] नामा । हरी[3] रु भद्रमदा[4] वनधामा २१
मातंगी[5] शार्दूलि[6] दुलारी । श्वेता[7] अरु सुरभी[8] सुख कारी ॥
सब लक्षण युत सुरसा[9] बेटी । अरु कद्रू[10] बहु गुणन्हि लपेटी २२
अरु कुमारसब मृगन्हि सुमानें । मृगाया योग्य नरोत्तम! जानें ॥
मृगमंदा के ऋक्षहु जाये । चमरासृमरन्हिपुनि उपजाये २३
भद्रमदा तदनंतर कन्या । जनी इरावति नामक धन्या ॥
तासु पुत्र ऐरावत हाथी । लोकनाथ बड गज गुणगाथी २४

॥ दोहा ॥

हरी केर सुत सिंह भे, अरु कपि गोलांगूल ।
शार्दूली के व्याघ्र सुत, भे मनुजन प्रतिकूल ॥२५॥

॥ चौपाई ॥

मातंगी के गज मातंगा । मनुज ऋषभ! जानें सुत ढंगा ॥
दिग्गजसुतन्हिककुथ!पुनिजाये । श्वेता नाम कुमारिहु भाये २६
तदनंतर दो परम प्रवीना । सुरभी कन्या जनी नवीना ॥
सुव मंगल हो, प्रथम रोहिनी । पुनि गंधर्वी सुयश सोहिनी २७
जनी रोहिणी पुनि गोजाती । गंधर्वी घोटक सब भांती ॥
सुरसा जनी विगत विष सर्पा । कद्रू पन्नग विशाल सदर्पा २८
मनु तिय जनी मनुज समुदाई । कश्यप मुनि पत्नी बिलगाई ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सुहाई । शूद्रहु राम! सुभेद लखाई २९
मुख से ब्राह्मण निज वपु लयऊ । तथा बाहु से क्षत्रिय भयऊ ॥
द्वौ जंघन से वैश्यहु जाये । पग से भये शूद्र श्रुति गाये ३०

सकल पुष्प फल धारक वृच्छा। अनला जनीजासुमतिस्वच्छा॥
विनता शुकी केरि जो पोती। कद्रू सुरसा वहिनिहु होती ३१
सो कद्रू सहस्र वड नागा। जनो धरा धारक अनुरागा॥
विनिता के दो भये सुपूता। गरुड औरअरुणहु गुणभूता३२

॥ दोहा ॥

तासु अरुण से मैं भयों, मम अग्रज संपाति।
अरिंदम! जानु जटायु म्वहि, श्येनीसुत यहि भांति ३३॥

॥ चौपाई ॥

सो मैं तुव वनवास सहाया। ह्वै हों जो तुम चहो अमाया॥
करिहौं तात! सिया रखवारी। तुम लक्ष्मणयुत गये पधारी ३४

नगस्वरूपिणी

जटायु को सुपूजि राम मान्य कै अनन्द से।
सुमीत तात को सुन्यो कह्यो जटायु छन्द से॥
लियो लगाइ अंग में प्रणाम कीन्ह ढंग से।
सुधीर वीर ज्ञान वान वार वार संग से॥ ३५॥
सिया बिदेह नंदिनीहि पीठि लादि कै चलो।
जटायु सोइ पक्षिराज संग ही अती वलो॥
गयो सु ताहि पंचवटी भाइ संग लालते।
सुरारि वैरि मारते अरण्य वास पालते॥ ३६॥

इति श्रीमद्वा० रा० छ० को० पं० दे० नं० त्रि० कृ० भा० छ० चतुर्दशः सर्गः १४॥

—:※:※:※:—

पन्द्रहवां सर्ग

राम लछमण का पंचबटी में आना, आश्रम पर्णकुटी बनाना और फल फूल से बलिदान कर निवास करना ॥

॥ दोहा ॥

पंचवटी सधि जाइ तब, जहँ मृग ब्याल अपार ।
कह्यो राम पुनि लखन से भाइहि तेज उदार ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

आये हम जहँ कीन्ह प्रसन्ना । मुनिअगस्त्यज्यहिकह्यो असन्ना॥
सो यह पंचवटी शुभदेशा । लखो सौम्य! पुष्पितबन वेशा २
इहँ चहुं ओर चलावहु आंखी । हौकाननगति निपुणसुभाखी!॥
कौन जगह आश्रमहु हमारा । ह्वैहै उत्तम कहहु बिचारा ? ३
जहां रमै चित सीतहु केरा । अरु मम तुवकरि सुखहु घनेरा॥
तैसहि देखहु थल शुभ कारी । पासहि होइ जलाशय भारी ४
जहां रमणता बन की होवै । जल बिलास निरखत मल धोवै॥
जहँ निकटहि बहु मिलें तुरंता । समिध फूल कुश जल गुणवंता ५
जब अस कह्यो राम शुभ बानी । लखन तुरत जोर्यो युगपानी ॥
निरखत सिया राम सन बोले । यह बानी हिय अंतर खोले ६
हे ककुत्थ ! मैं रहत तुम्हारे । वर्ष सैकड़न ह्वै बस चारे ॥
याते तुम निज रुचि थल देखी । कुटी रचनहिं कहो बिशेखी, ७
तासु लखन के सुनि अस बैना । भयेप्रसन्न महाद्युति ऐना ॥
करि बिचार पायो रुचि थाना । सबगुण युक्त अरामनि धाना ८

॥ दोहा ॥

सो त्यहि रुचिर सुदेश महँ, आस्रम हेतु सुधाम ।
जाइ कह्यो तब लखन से, कर से कर गहि राम ॥९॥

॥ चौपाई ॥

इहै भूमि सम थल स्रो मानू । पुष्पित बिटपनि घिरी सुहानू ॥
इहँ आस्रम पद रम्य मुनीको । रचहुलखन! तुमकरिसबठीको१०
रबिसमचमकित पंकज फूलन । उडत सुगंधि प्रेम अनुकूलन ॥
यह निकटहि रमणीय लखाई । पुष्करणी कमलनि छबि छाई ११
जसअगस्त्यमुनिकोन्हबखाना । आत्मज्ञान नित जो रत ध्याना ॥
गोदावरी इहै रमणीया । पुष्पिततरुन्हि छाइकमनीया १२
हंस बकुल जल कुक्कुट पूरी । चकूबाक से शोभित भूरी ॥
नहिंअतिदूर नअधिकसमीपा । मृगन्हि झुंडभरि रही न छीपा १३
रम्य मोर कूकनि से राजै । ऊंच कगारनि बहु तट भ्राजै ॥
देखि पडैं गिरिवर सुखदाई । प्रफुलित तरुन्हि रम्यसघनाई १४
सोन रूप तावें की खानी । जहँ तहँ देखि पड़ैं महरानी ॥
बिलग बिलग सोहहिं सो कैसे । खँचित्त ताखगजाचिन्हित जैसे १५
शाल ताल अरु बिटप तमालन । पनस खजूर कदंब रसालन ॥
पुनिनिवार अरु तिनिशनिकाये । पुन्नागनि छबिछटाबढाये १६
आम अशोक तिलक घनवारी । केतकि चंप फौरि रहि भारी ॥
बहुबिध फूल लता अरु झांडी । तिनलिनबिटपनिरही सुमांडी १७
चंदन नीब लकुच से पूरे । भिरनन्हि भर भर बहतसुनीरे ॥
धव कनई अरु खैर भँकोरे । शमी शिहोर पाटलहु जोरे १८

यहँ पुण्य थल इह रमणीया । इहै अधिक मृगयुत खगनीया ॥
इहैं बसब हम हे सौमित्रे ! । इन्हपक्षिण सँग मनहिपवित्रे१९

॥ दोहा ॥

बीर धीरि दम लखन से, राम कह्यो यहि भांति ।
महाबली सो भाइ हित, आश्रम रच्यो सुहांति ॥ २० ॥

॥ चौपाई ॥

पर्णकुटी तहँ बिपुल बनाये । चौरस मही ढेर लगाये ॥
ऊंचे बांसनि खंभ गड़ाये । बांस कमाचिन छाजन छाये २१
शमी शाख तिरछाइ बिछाये । दृढ बंधन कसि बांधि धराये ॥
कुशा काश सर्पत की पाती । लै छाये शुचि कुटी सुहाती २२
भीतर सम तल धरा सजाये । महाबली त्यहि रम्य बनाये ॥
राघव हेतु निवास पुनीता । देखन योग सु उत्तम नीता २३
तब सो जाइ लखन श्रीमानू । गोदावरी नदी तट थानू ॥
न्हाइ धरे लै कमल सुनीले । लाये बन फल रुचिर रसीले२४
पुनि सो करि फूलन बलिदाना । देव शांति बिधि नूतन थाना ॥
तब रामहि त्यहि जाइ दिखाये । निजकृत आश्रमपद समुदाये २५
त्यहि आश्रमहि बनो शुभ देखी । सो सीता सह हर्ष बिशेखी ॥
रघुबर पर्णकुटी मह जाई । कीन्ह प्रवेश परम सुखपाई २६
तब अति हर्षित बाहु बढाये । राम लखन कहँ हिय लिपटाये ॥
अति सनेह अरु अर्थ गभीरा । यहबोले पुनि बचन सुधीरा २७
"अति प्रसन्न मैं तुव कृत काजा । यहलखि हे सुबिज्ञ! गृहछाजा ॥
त्यहिनिमित्ततवहिदेउँबहुलायक । देहुं अंगपरसनि हिय भायक २८

कृत उपकारहु जानन हारे । लक्ष्मण! तुम धर्महु व्रत धारे ॥
त्वहि सुपूत मम पिता सुधर्मा । पाइ मनहुं हैं जियत सुकर्मा २९

॥ सोरठा ॥

लक्ष्मी बर्द्धन राम, यहि बिधि कहि धुनि लखन से ॥
बसे सुखी सुखधाम, त्यहि बहु फल युत देश महं ॥३०॥
कछुक काल सिय संग, धर्म धीर अरु लखन लै ॥
थिर ह्वै बसे सुढंग, मनहुं इन्द्र सुरलोक महं ॥३१॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० त्रि० कृ० भा० छं० पंचदश: सर्ग: ॥१५॥

—※:※:※—

सोलहवां सर्ग

लक्ष्मण जी के मुख से हेमन्त ऋतु की शोभा का वर्णन और भरत का तप स्मरण करते रामचन्द्रादि का गोदावरी नहाने को जाना ।

॥ दोहा ॥

तासु महा मति राम के, बसतहि तहं सुख सेहु ।
गयो शरद ऋतु आव पुनि, हेमंतहु सुठि नेहु ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

एक समय सोई रघुनंदन । रजनी प्रात होत सुख कंदन ॥
उठि धाये अभिषेक निमित्ता । गोदावरी नदी रम चित्ता २
कलश हाथ सिय साथ हकारे । महा बली रघुराज दुलारे ॥
पीछे चलत भाइ सौमित्रा । रामहि यह धुनि कह्यो पवित्रा३
प्रियबादी राघव! यह काला । मिलोतुम्हैं सो अतिप्रियलाला! ॥
जनु भूषण लहि भूषित सोहे । ऋतु हेमंत सुवत्सर जोहे ४

पाइ ओस से कठिन सुपर्शा । पृथिवी सस्य पूरि लखि हर्षा ॥
लगै प्यार अति पीवत बारी । अनल ताप तन परम सुखारी ५
नव अग्रहण नवान्न निधाना । पूजि देव पितरन धरि ध्याना ॥
करि गृह कर्म याहि ऋतु माहीं । भये बिशुद्ध पाप दुक नाहीं ६
प्रजा सकल बहु अनधन कामी । दूध दही घृत पूरन धामी ॥
दौरा करहिं भूप चहुं ओरा । जीतन बैरि हुलास न थोरा ७
यम सेवित दक्षिणदिशि पासा । दृढ प्रभाव रबि करें निवासा ॥
तिलक ललाट हीन जनु नारी । उत्तर दिशा उदास बिचारी ८
निज स्वभाव हिम जग भौपूरी । रबि मंडल याकिन अति दूरी ॥
याते सांच नाम हिमवानू । गिरि हिमवान प्रगट परिमानू ९
अति सुख बढै दुपहरी पाई । लगै घाम जल बिमल सुहाई ॥
रबि कर पर्श तनहिं सुखदाई । छाया अरु जल भय उपजाई १०
सूर्य ताप मृदु पडै कुहासा । शीत प्रचंड प्रभाव बिकासा ॥
पाला पोइ झुलसि बन सूना । याकिन दिन दिखाइ छबि ऊना ११
बाहर शयन छूट बिनु छाया । पुष्य नखतयुत हिम धुधुंराया ॥
बढै शीत नित निशि यहि काला । होय बड़ी बीतब दुखहाला १२
रबिछबि ढक्यो तुषार बढाऊ । मंडल धूसर बर्ण बनाऊ ॥
जिमि निसास से दर्पन अंधी । वैसहि चंद्र ज्योति मल बंधी १३
पुनमासी की पूरन चंदा । मलिन तुषार न देहि अनंदा ॥
जस बन घास लगै तन स्यामा । देखिपडैं सिय सोह न बामा १४
जो सुभाउ से शीतल पर्शी । बायु बहै पछिआत अकर्षी ॥
सो याकिन पाला भरि आवै । प्रात काल तन दून जडावै १५
ओस बूंद छाये बन घासू । गोहूं जव युत स्वेत प्रकासू ॥
सोहैं सूर्य उदय के काला । कूजहिं सारस क्रौंच मराला १६

पीत खजूर फूल आकारन । बाली तंडुल भरीं कलारन ॥
सोहहिं कछुक फुकी छिटकारन । शाली धान कनक रुचि वारन १७
ओस कुहास बाफ से छाई । उठी प्रात रबि किरिण ललाई ॥
दूर उदय रवि देहिं दिखाई । मनहुं चन्द्र मण्डल बिलगाई १८
प्रथम पहर दिन उष्ण सुग्राही । परसि दुपहरी सुख अवगाही ॥
किंचित धूसर बर्ण सुघामू । सोहत जहँतहँ पड़ि महि घामू १९
ओस बूंद टपकनि से भीगे । घास बिटप किंचित रह डीगे ॥
बन की भूमि छटा छबि कारी । तरुण घाम से शोहत न्यारी २०
बन गयंद अति सुख से नीरा । सुण्ड लफाइ पिअन चह बीरा ॥
अति शीतल जल छुअत हटावैं । अरु पिआस पूरित रहि जावैं २१
ये सब चहुंदिश करैं कलोला । जल बासी बिहंग बन लोला ॥
लहिं शीतल जल सांझ डुबाहीं । जस कादर रण लड़नु डराहीं २२
पाला बूंदन से छबि छाये । अरु कुहास अँधिआर ढपाये ॥
बन के बिटप फूल से हीना । जनु सोवत लखाहिं छबि छीना २३
बाफ धूम से जल ढपि गयऊ । सारस रव से ज्ञानहु भयऊ ॥
हिम से भिगी बालुका तोरन । या छिन नदी जनाहिं समीरन २४
पाला पड़नि संगमहु पाई । अरु रवि कर की कोमलताई ॥
यद्यपि धारि थित पर्वत आगे । पै लहि शीत परम रस पागे २५

॥ दोहा ॥

जीर्ण पुरान झरि कमल दल, केशर कलिका कीन ।
नाल मात्र रहि ध्वस्त हिम, पंकज शोभा हीन ॥ २६ ॥

॥ चौपाई ॥

पुरुष व्याघ्र! यह समय सुपाई। अवध मध्य दुखयुत तुव भाई ॥
करहिं परम तप धर्म सुधारी। भरत तुम्हारि भक्ति अनुसारी २७
छोडि राज्य अरु मान बड़ाई। बिबिध बिलास भोग बहुताई ॥
ह्वै तपसी करि थोर अहारा। सोवहिं शीतलभूमि बिचारा २८
सोउ प्रात यहि समय सुजागी। अभिषेकार्थ अवसि अनुरागी ॥
मन्त्री सुजन टहलुअन घेरा। नितहि जाइ सरयूनदि ओरा २९
वह सुख बर्द्धित भोग बिसाला। है सुकुमार बयस पुनि बाला ॥
कैसे बड दुख शहि महिपाला। प्रात नहै है ? सरयू लाला ३०
पंकज दल दृग तन घनस्यामा। नहिं तुंदिल श्रीयुत गुणधामा ॥
धर्म सुजान कहैं पुनि सांची। लज्जा हीन जितेन्द्रिय रांची ३१
मधुरबचन पुनि कथन पिआरा। लंबित भुज अरिजीतनवारा ॥
बिबिधसौख्यतजिसबहिंप्रकारा। तोसम श्रेष्ठ सुभ्रातमप्यारा ३२
भरत महामति जो तुव भाई। जीत्यो सुरपुर फल समुदाई ॥
घरहि बैठि तपकरि बिधिलाई। तुव बनबासिहु सरिस सुहाई ३३
लोक बिदित यह कथा प्रबादा। भरत कीन्ह त्यहि मिथ्यावादा ॥
"नहिं नर पितहि अनुहरैं कोई। पै सब चलहिं मातुसम होई" ३४
जासु पूज्य पति दशरथ राजा। अरु सुत साधु भरत गुणभ्राजा ॥
पै कैसे ? सो कैकइ माई। या बिधि कुटिलदरशिनी भाई! ३५

॥ दोहा ॥

लखन धर्म धर बैन ये, कह्यो नेह के धाम ॥
सुनि निंदा तव मातु की, नहिं सहि बोले राम ॥ ३६ ॥

॥ चौपाई ॥

कबहुं लखन! तुवमुख सुनु ताता! । निंदनु योग न मध्यम माता ॥
पै सो कथा कहो पितु केरी । और भरतकी जो सुख टेरी ३७
अब बनबास मांहि मति मोरी । भै निश्चित दृढब्रत चहुंओरी ॥
पुनि प्रिय भरत नेह संतापा । लहि चंचल जनु होइ सथापा ३८
तासु भरत की वह प्रियबानी । सुमिरहु मधुर प्रेम रसखानी ॥
हियग्राही जनु अमृत प्रबाही । मन प्रसन्नकर सरस उमाही ३९
कब धौ मैं मिलिहौं तिन्हजाई । भरत महामति कौ हियलाई ॥
बीर शत्रुहन कह छपटाई । सुनो लखन! तुवसहित सुहाई ४०

॥ सोरठा ॥

यहि बिधि करत बिलाप, गोदावरी समीप गे ॥
कर अभिषेक कलाप, राम अनुज सिय सहित तहं ॥४१॥
लै जल तर्पण दीन्ह, पितरन्हि अरु देवन्हि तबै ॥
उदितरबिहि स्तुति कीन्ह, भये अनघ सुरबंदि सब ॥४२॥

॥ त्रिभंगी छंद ॥

करि रुचि अभिषेका, न्हाइ बिबेका, राजित राम कृपाल मुनी ।
सियसँगगळजोरी, नहिं छबि थोरी, लखनसहित मन बैठिगुनी ॥
जनु गिरिनृप क्वारी, युतत्रिपुरारी, रुद्ररूप धरि असुर अनी ।
क्षयकर ढिग नंदी, युक्ति अमंदी, शोचि रहे त्रैलोक्य धनी ४३

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० चि० कृ० भा० छ० षोडशः सर्गः १६ ॥

—:*:*:*:—

सत्रहवां सर्ग

राम लछमण सीता का गोदावरी नहा पर्ण कुटी में आना
और पुरान की कथा का कहना, उसी समय में
सूर्पनखाका आना और परस्पर विन्हारी कर
कामकला की बातों का कहना ॥

॥ दोहा ॥

न्हाइ धोइ रघुनाथ तब, अरु सिय लखन सुजान ।
त्यहि गोदावरि तीर से, निज मठ कियो पयान ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

त्यहि आश्रम मधि पहुंचे जाई । लखन समेत राम रघुराई ॥
तहँ करि प्रातकाल के कर्मा । पर्ण कुटी पैठे शुभ धर्मा २
बसे तहां सुख सन कछु काला । ऋषिगण पूजित राघव लाला ॥
सोइ राम पुनि पर्णकुटीरे । सिय सह बैठे शोच गभीरे ३
महाबाहु सोहे रघुनन्दा । चित्रा नखत युक्त जनु चन्दा ॥
लखन भाइ के साथ सुहाई । बहु बिधि कथा कहत हरखाई ४
तदनंतर बैठे जहँ रामू । लगी कथा साधिचित त्यहि ठामू ॥
ता छिन कोउ निशाचर नारी । आई निज इच्छा अनुसारी ५
सो तो सूर्पनखा धरि नामा । दशकंधर की बहिनि निकामा ॥
राक्षसकुलघालिनि श्री रामहिं । आइ लखी सुर सम बन धामहिं ६
दीपतबदन द्वैभुजा बिशालहिं । पङ्कजदल सम बड़दृग लालहिं ॥
——— सम गमनगभीरहिं । धरे जटा मंडल छबि पूरहिं ७

गंजाबक्रम ...

वपु सुकुमार डील सुठि भारिहि। राज चिन्हयुत सबगुणधारिहि ॥
रामहिं इंदीवर तन श्यामहिं। कामस्वरूपसरिसदुतिधामहिं८
महा इन्द्र उपमा छवि देखी। काम बिबस राक्षसी बिशेषी ॥
सुमुख राम से दुर्मुखि नारी। सुघर उदर से भोम्भर भारी ९
दृगबिशालसेबिकटकुआंखिनि। भूरलटिनि सुठिकचसेभाखिनि॥
प्रिय रूपहु से रूप भयंका। मृदु स्वर से भैरव धुनि अंका१०
तरुण राम से बृद्धि कराला। शुभ भाषी से टेढ़ि बचाला ॥
न्यायकारि से परम कुन्यायिनि। प्रिय दर्शी से अप्रिय भाइनि ११
काम बिबस ह्वै रामहु सेहू। कह्यो निशाचरि परम सनेहू ॥
"तापस रूप जटा शिर देशा। नारि सहित कर धनु शर बेशा १२
कैसे तुम आयहु? यहि खण्डा। जहाँ निशाचर बसहिं प्रचण्डा॥
इहँ आगमन केर काहे तू ?। कहो तत्व निज काज सुनेतू" १३

॥ दोहा ॥

सूर्पनखा राक्षसी जब, अस राघव से बोलि।
सहज बुद्धि से तासु प्रति, कहन लगे सब खोलि ॥ १४ ॥

॥ चौपाई ॥

होत भये दशरथ नृप नामी। देव सरिस बिक्रम शुभ गामी ॥
तासु जेठ सुत मैं सुनु प्यारी!। राम नाम जन कहैं पुकारी १५
यह मम भाइ लखन अस नामा। है जवान पै अनुगत कामा ॥
यह मम नारि बिदेह दुलारी। सीता नाम सुन्यो जग भारी १६
पितु नरेन्द्र अरु मातहु केरा। लहि आयसु श्रुतिवचन निबेरा॥
धर्म हेतु इहँ धर्म उछाहिनि। आइबने सतब्रतहु निबाहिनि१७

जानन चहौं तोहि कहु नामा । केकरि सुता कौनकी बामा? ॥
तूतोमनमानितबपुधारिनि । जानपड़सिम्वहिं कोनिशचारिनि १८
इहं केहि हेतु कहो तुम आई ? ठीक बात सब देहु बताई ॥
सो बोली सुनि बचन प्रवीने । निशिचरि मदन बानसे खीने १९
सुनहु राम! जो कारन ठीको । कहूं बचन मैं तो सन नीको ॥
मैं हूं सूर्पनखा बर नामिनि । धरोंरूपनिजरुचि बड़कामिनि२०
यहि बनमधि मैं फिरौं अकेली । सबहिं डरावहु करि बहुकेली ॥
रावण नाम मोर सग भाई । जो तुम सुन्यो होइ प्रभुताई २१
बढ़ी नींद सोवै दिन राती । कुंभकरण बलधर सब भांती ॥
भाइ बिभीषण धर्म धरैया । नहिं वह राक्षस कर्म करैया २२
अरु खरदूषण हैं दो भैया । जाहिर जगबिच समर लड़ैया ॥
तिन सब से मैं अधिक बरिष्ठा । राम! निकट तुव भई प्रबिष्टा २३
पुरुष अपूरब तोहि निहारी । चहों होहु पति तुम मैं नारी ॥
मैं संपन्न गूढ शृंगारा । शक्ति प्रबल स्वाधीन अचारा २४
बहु दिनतक मम होहु भतारू । सीतहि लै का करिहो? प्यारू ॥
मो सन्मुख भद्दी कुदुरूपा । सो न तोरि सम यह तिय भूपा!२५
मैं तो अवसि तोर सम नारी । भार्या भाव लखो स्वहिं प्यारी ॥
यह बिरूप असती तुव सीता । पातलउदरलखतअतिभीता २६
यहि तो मैं तुव भाइ समेता । भखि जैहौं दोउमनुज अचेता ॥
तब पुनि पर्वत शृंगन कूदी । बिबिधमहाबन चहुंदिशरूंदी २७
सब देखत मोसँग मद माती । दंडक बन फिरिहो दिन राती ॥

कुंडलिया छन्द

बोली अस जब राक्षसी, राम ककुथ से बैन ॥
हंसे तासु बपु निरखि के, मद पूरित रहि नैन ॥

॥ चौपाई ॥

त्रिशिरा तीन बान पुनि मारे। लगे राम के ठीक लिलारे॥
रोष सहित रामहु तब कोपे। झपटि कह्यो यह बैन सचोपे ११
अहो !! याहि बिधि बिक्रम भारी। शूर निशाचर कौ रणचारी ?
जाके शर लघु फूल समाना। मैं परस्यों ललाटमधि आना १२
अब मोरहु गहु हे बलबीरा !। धनु गुण से छूटे खर तीरा ॥
यह कहि राम झपटि शर मारे। अहिबिषउपम जो फुफकारे १३
त्रिशिरा के उर क्रोध समेता। चौदह हन्यो तुरत शुभ चेता ॥
हन्यो चारि से तासु तुरंगन। फुर्केफाल बानानि सब अंगन १४
राम तेज बल मारि गिराये। तासु तुरग चारहु भहराये ॥
आठ शरन्हि सारथिहि घवाये। रथ से तुरत भूमि लुढ़काये १५
पुनि राघव बानन से काटे। बांके ध्वज अति ऊंच उपाटे ॥
तब पुनि टूट रथहुं छरु ताते। उछल गिरयो निश्चर रणमाते १६
ताहि राम छेद्यो फनि बानन। लग्यो हृदयबिचभौ जड़प्राणन॥
फेरि अचल आतम करि रोसा। शरनि कीन्ह राक्षसहि बेहोसा १७
पुनि अतिवेग तीनि शर साधे। काटे तीन तासु शिर बाधे ॥
उठे धूम युत रुधिर फुहारा। राम बान से जब सो मारा १८
प्रथम गिरे शिर पीछहु सोऊ। समरमध्य निशिचर हत जोऊ॥
शेष बचे जोउ घायल भागे। राक्षसगण खर शरणहि लागे १९
दौड़ि चले नहिं पग ठहराये। मनहुं व्याघ्रभय मृगहु पलाये॥
खरहु तिन्हैं भागत लखि पाये। क्रोध सहित उठि तुरत फिराये॥
राम सुमुख दौड्यो भहराई। मनहुं राहु चंदहि चह खाई २०

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन चि०कृत भा० छं० सप्तविंशः सर्गः ॥ २७

अट्ठाइसवाँ सर्ग ।

दूषण राक्षस को मरा देख खर राक्षस का दौड़ना
और रामचंद्र से घोर युद्ध करना ।

॥ दोहा ॥

देखि मरो दूषण तथा, त्रिशिरा सह रण माहँ ।
डरप्यो खरहु बिलोकिकै, रघुबर को बल बाहँ ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

सो लखि कटक राक्षसी भारी । अतिबलपूरित खपितबिचारी ॥
एकहि राम सबहि संहारे । दूषण औ त्रिशिरहु हत न्यारे २
सो हत सैन्य रही अब थोरी । लखिनिशाटअनमन मुखमोरी ॥
पहुंच्यो खर रघुनन्दन पासू । जैसे नमुचि इंद्र ढिग आसू ३
खींचि चढ़ायहु बल से चापा । बान रक्तचोषक भरि दापा ॥
खर फेंक्यहु रघुनन्दन ओरा । जनु क्रोधितअहिगणबिषजोरा ४
बार बार धनु गुण फटकारी । अस्त्र शीख दरसाइ सुरारी ॥
समर माहिं धनु फेंकन रीती । शरचालन रथ चढ़ि खरनीती[1] ५
सो पुनि बानन सब दिश पूरे । अरु बिदिशन महरथी[2] बिदूरे[3] ॥
ताहि देखि रामहु धनु ताने । महा बली मारनु हरखाने ६
दुसह सायकन्हि बरसन लागे । जनु चिनगारि अनल से त्यागे ॥
कियो गगन बिनु संधि अंधेरा । जनु घन बरसि बारि बहुतेरा ७
खर अरु राम दोउ शर छोडे । चमकित तबहिं भौंहयुग मोडे ॥
भयो सकल नभ बिनु नभ थाना । सबतर शर समूह फहराना ८

१ तेज नीति है जिस खर राक्षस की । २ महारथी । ३ निकटही ।

शरजालन से दिनकर छाये । ता छिन नाहिं प्रकाश दिखाये ॥
दोउ परस्पर मारन हेतू । जोरि शरन्हि कीन्ह्यो निज नेतू ९
तबखर फेंकि नलीमुखबानन । पैन मुनी[1] टेढी, खर आनन ॥
रण महं रामहिमारयहु तानी । जनु अंकुशनि गजहिअभिमानी १०

॥ दोहा ॥

बैठे रथ त्यहि राक्षसहि, धनुपाणिहि रिसिहान ।
लख्यो मनहुं करपाश यम, सब प्राणी भय मान ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

रामहिं निज सब सेनसँहारक । खरपुनिजानि थकित बलधारक॥
तथा विजयसुख माहिं भुलाने । महाबलिहि गाफिल अनुमाने १२
पै त्यहि सिंहसरिस बलवानहि । अरु सिंहहि समगमनु विधानहि ॥
देखि राम नहिं नेक सकाने । जस सिंहहु लघु मृग पहिचाने १३
तब पुनि सूर्यचमक रथ भारी । जा पर खर बैठो धनुधारी ॥
ताहि राम प्रति द्रुत दौड़ाये । जनु पतंग पावक लखि धाये १४
तब तिन राम महामति केरा । शर युत चाप मूठ मधि हेरा ॥
कोट्यहु खर बर बान चलाई । निज करकी फुरती दिखलाई १५
पुनि सो औरहु सायक साता । लै ताकि मारयहु मर्म अघाता ॥
रणमधि क्रोधअधिकउपजाये । इंद्र बज्र सम दमक बढ़ाये १६
तदनंतर लै बान हजारा । राम अतुलबल पर हनि मारा ॥
मारि फेरि अतिघोर चिघारा । खर चिघरहु समर ललकारा १७
जब खर के सुंदर फरवारे । छुटे बान रघुबर पर न्यारे ॥
तब ते लगि महि कवँच गिराये । राम अंग से, रविद्युति भाये १८

1 नोक ।

पै तिन शरन्हि राम सब अंगा । क्रोध भरे छादित बरढंगा ॥
समर मध्य रघुबर कस सोहे । जस निर्धूम अनल जलि जोहे १९
तदनंतर गभीर धुनि कीने । रामहु अरि मर्द्दन मय हीने ॥
त्यहि बैरिहि मारन मन लाई । दूसर धनु लै बान चढ़ाई २०

॥ दोहा ॥

बैष्णव धनु सुंदर बड़ो, ज्याहि अगस्त्य मुनि दीन ॥
तानि तमकि त्यहि खरसुमुख, दौड़े राम प्रबीन ॥ २१ ॥

॥ चौपाई ॥

तब पुनि कनकपुच्छ शर रोपी । झुकी नोक जिनकी बलओपी ॥
राम कोप करि खर पर बारे । समर मध्य ध्वज तासु प्रहारे २२
सो कंचन ध्वज देखन योगू । गिर्यो टूटि जब बान संयोगू ॥
मनहुं धरनितल रबि भहराये । देवन कौ आयसु शुभ पाये २३
त्यहि रामहिं पुनि चारि सुबानन । खरकरिक्रोध हन्योकसितानन॥
हृदय मध्य बेध्यो हिय झानी । ज्यों गजमत्तहि अंकुश शानी २४
सो पुनि राम बहुत शर खाई । खर के धनु से लग्यो जु धाई ॥
बेंधे अंग सब रुधिर नहाये । ताते पुनि बहु रोष बढ़ाये २५
सो धनु धारिन मध्य प्रबीना । गहि धनु रथ महँ ढंग नबीना ॥
लगे बान बरसावन चोखे । षटशरसोधि निशान अनोखे २६
एक बान से शिरहि घवाये । पुनि दुइ बानन बाहु दुगाये ॥
अर्द्धचंद्र मुख तीनि नराचन । छाती माँधि मार्यो नभनाचन २७
ता पीछे पुनि अति बल तेजा । रबिकर ऊपम बानन्हि भेजा ॥
क्रोध सहित राक्षस को मारे । तेरा शर शिल शान सँवारे २८

रथ के चक्र एक शर तोडे। चारि बान हनि बल युत घोडे॥
छह बानन पुनि रथके बीचे। शीश सारथी कौ करि नीचे २९
तीन बान से रथ युग डांडी। बली बान दो हनि धखु मांडी॥
द्वादश बानन खींचि उचाटे। धनुष सहित खर कौ कर काटे ३०
छेदि बज्र सम शर चमकाई। हँसि राघव बहु बान चलाई॥
तेरह खर निशिचर पर घाले। इंद्र समान दमकि त्यहि काले ३१
टूट्यो धनुष भयो रथ हीना। मरे तुरग सारथि बपु छीना॥
गदा पाणि लै कूदि तुरंता। खडो भूमि खर तबहि दुरंता ३२

।हरिगीती छन्द।

बिनु रथ महारथ कर्म राघव के, सबै अस देखिकै।
मुनिबृन्द सब मिलि और सुरगण, मनैमन शुभ लेखिकै॥
अति हर्ष संयुत जोरि अंजुलि, बिनय कीन्ह बिशेखिकै।
ते तब बिमाननिह अग्र झुकिर, झमकि झांकहि पेखिकै॥ ३३॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन चि०कृत भा० छं०अष्टाविंश: सर्ग: ॥ २८

—····※※※····—

उन्तीसवां सर्ग।

गदा लिये बिरथ खर राक्षसको खड़े देख रामचंद्र का नीति सिखाना,
उसे सुन नीति पूर्बक खर का भी कठोर उत्तर देना,
और क्रोध से रामचंद्र पर गदा फेंक कर मारना,
उस आई गदाको रामचंद्र का बानसे काटना।

॥ दोहा ॥

गदा पाणि लै बिरथ खर, खडो देखि तेहि ठाम॥
महातेज बानी कडी, मृदु पूर्बक कह राम॥ १॥

॥ चौपाई ॥

हे खर! गज तुरंग रथ भूरी। महा सेन मधि बैठि गरूरी ॥
कीन्ह महा दारुण तुम कर्मा। सकल लोक निंदित हठधर्मा २
जो जग जीव सतावन हारा। नर घाती बहु पाप पसारा ॥
करै पाप कोउ अस इक साथा। रहै न यदपि त्रिलोकहु नाथा ३
हे निशिचर! जो लोक विरुद्धा। करै कर्म ह्वै जगत प्रसिद्धा ॥
त्यहि तीच्छनहि सबै जन मारैं। ज्यों आगत खलसांपहि दारैं ४
लोभ हेतु वा काम लगाये। पाप करत जो ध्यान न लाये ॥
तासु नाश लखि जन हरखाहीं। बँभनबिच्छु ज्यों करकभखाहीं[1] ५
दंडक बन बासिन मुनि राइन। धर्मचारि तापसिन गुसाइन ॥
महा भाग्य शालिन को मारी। का फल नाहिं पैहो? बिबुधारी! ६
पाप कर्म कारी अरु क्रूरा। लोक बिनिंदित जन बरु शूरा ॥
रहैं न लहि बिभूति बहु काला। गिरै मूल सडि ज्यों द्रुम डाला ७
अवसि करन वारो फल पावै। पाप कर्म करि दुख अनुभावै ॥
पै सो काल पाइ ढिग आवै। ज्यों अपनी ऋतु बिटप फुलावै ८
नहिं बहु दिन महँ लोक मझारी। पाप कर्म फल मिलै प्रचारी ॥
हे निश्चर! ज्यों बिषयुत अन्ना। खातहि देखि पडै प्रति पन्ना ९
पाप भयानक कारक जोई। अरु जग अप्रिय चहै जु कोई ॥
तिनके प्राण हरन हित राजा। नियतभयों मैं निश्चर! आजा १०
कंचन भूषित मम शर छूटे। अबहिं जाहिं तुव तन से फूटे ॥
फाडि घुसैं पुनि धरा मझारी। ज्यों बांबिहि क्षौ सांप बिदारी ११
जिन दंडक बनबासि महानन। खायहु धर्मधरन्हि भरि आनन ॥
आजु निहत रण तिन के पासू। जैहो कटक समेत बिनासू १२

१ जैसे बँभनबिछिआ के लिये ओलाभक्षण बिष है वह खाते समय नहीं बिचारती।

मरे आजु तोहो बर बानन । देखहिं ऋषि सब चढे बिमानन ॥
तुवसन प्रथम तज्यो जे प्रानन । तथा नरक मधि पडो लुकानन १३
अब करु यत्न जु इच्छा तोरी । हे कुलअधम ! प्रहारु बहोरी ॥
आजुहि तोर गिरैं हों शीशा । मनहुं ताल फल भरैं खबीशा ! १४

॥ दोहा ॥

खर से बोले राम अस, तब क्रोधित दृग लाल ॥
रामहिं प्रति उत्तर दियो, हँसत भौहँ बिकराल १५

॥ चौपाई ॥

हे दशरथसुत ! रण बिच आजू । मारि निबल राक्षसन्हि समाजू ॥
अपने मुख आपनी बडाई । कैसे करहु ? जु परम खुटाई १६
जे अति बिक्रम वा बलवानू । हैं नरऋषभ शूर मतिमानू ॥
वे नहिं कछुक कहैं ललकारी । अतिगर्बित निज तेज पसारी १७
नीच निकाम कलुष जग माहीं । क्षत्रिय कुल नाशक दुर बाहीं ॥
कहैं निरर्थक बात अबाधी । राम ! तुहुं बैसहि बकवाधी १८
कुल अरु गोत्र उचरि को बीरा ? समर माहिं ललकारहिं धीरा ॥
मरण काल लहि निज बडरीझी । अनप्रस्ताव करहिं युध रीझी १९
सब प्रकार से तोरि छुटाई । तुव भाषण से पडत लखाई ॥
सोन सरिस ज्यों पीतल रूपा । कुश अनल से[1] तप्त कुरूपा २०
याते तू इहँ मोंहि न देखसि । लिये गदा कर ठाढ बिशेखसि ॥
धरे धरनि लहि धातु अनेका । जस पर्बत नहिं कंपित नेका २१
मैं रण प्राप्त गदा लै हांथे । तोर प्राण नाशन इक साथे ॥
तिहु लोकहु मैं करों सँहारा । पाश हस्त जिमि काल उदारा २२

१ फूस की आग से तपाया

है अभिलाष विषय महँ तोरे। यदपि कहनु बहु कहों न कोरे॥
अस्त होहिं रबि कहत बिडंबा। युद्ध बिघ्न तब होहि बिलंबा २३
चौदह सहस निशाचर वृन्दा। तुव कर मरे रहे जे मन्दा॥
तुव बिनाश से तिनकर आजू। पोछहुं आंसु सफल करि काजू २४
अस कहि परम क्रोध सो बीरा। कनक बंद युत गदा गभीरा॥
फेंक्यहु खर राघव पर तानी। जनु चमकित बज्रहु धुरधानी २५
खर के प्रबल भुजन से छूटी। भारी गदा चमकि सो कूटी॥
झाडी बिटप चूर करि धाई। राम समीप गई भहराई २६

॥ सोरठा ॥

आवत लखि त्यहि राम, मृत्यु पास ऊपम गदहि॥
उठी प्रबल नभ धाम, काट्यहु बहु शर मारि कै॥ २७॥
सो बानन से चूर, टूटि गदा महि मधि गिरी॥
जनु मंत्रौषधि पूर, गिरी नागिनी पटकि फन॥ २८॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन चि०कृत भा० छं० उनचिंश: सर्गः॥ २९

—:※:※:※:—

तीसवां सर्ग।

खरको खिझाते श्रीराम का भाषण, खीझे खरका उत्तर औ शाल वृक्ष फेंक मारना, उसे रामचंद्र का काटना और घोर युद्धके पर खर का बध, देवोंकी स्तुति, अगस्त्य युत मुनियों कृत श्रीराम की पूजा और सीताजी का हर्ष॥

॥ दोहा ॥

काटि बान हनि त्यहि गदहि, धर्म बछल रघुनाथ॥
हंसत बचन बोले इहै, खरहि खिझावनु साथ॥ १॥

इहै तोर बल सर्बस देखे । निश्चर अधम! जाहि बड लेखे ॥
निपट गरूर शक्ति से छीना । गर्जसि बृथा तु मोसन हीना २
यह तुव गदा कटी खर बानन । पडी भूमितल चूर बितानन ॥
तोरि ढिठाइ कथन प्रण केरी । करि बिश्वास नाश गै हेरी ३
जो तू कहे मरे जन केरा । पोंछन आंसु इहै सुनिबेरा ॥
जे राक्षस तुव संग बसेरा । सोउ बचन तुव झूठहि हेरा ४
नीच क्षुद्र आकर है शीला । निशिचर! झूंट सुभाव रँगीला ॥
ता कर प्राण काढिहों अबहीं । जैसे गरुड़ अमी रस सबहीं ५
अबहीं तोर कटे गल केरी । फेन और बुल्लिहि छवि हेरी ॥
जो मम बान बिदारित ढेरी । पीहै धरनि रुधिर चहुं फेरी ६
धूलि धूसरित भरि सब अंगा । भुजा पसारित दोउ कुढंगा ॥
पकड़ि भूमि स्वैहै त्यहि भांती । दुर्लभ नारि पाइ रस मांती ७
बढी नींद सोये पर तोरे । राक्षसकुल नाशन! हत जोरे ॥
ह्वैहै शरण योगु मुनिजन की । दंडक बन महि शरण जनन की ८
तुव जनथान निशाचर बासा । मम बानन जब जैहै नाशा ॥
तब निर्भय ह्वै फिरिहैं आई । बनमधि चहुंदिश मुनि समुदाई ९
आजुहि सकल निशाचरनारी । हत कुटुंब भगिहैं पट झारी ॥
आंसु भीग मुख दुख से खीना । जग भयकारिनि ह्वै भयभीना १०
आजु शोकरसकी सबज्ञानिनि । ह्वैहैं निपट निरर्थ निकामिनि ॥
तुव कुलके सम पतिनि गवांरी । जिनको तू पति अस अघचारी ११

॥ सोरठा ॥

ब्राह्मणकंटक! क्रूर! नरघातन पटु! क्षुद्रमन!
होमहिं अनल जरूर, तुव डर डरपे मुनि सदा ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

कहत खिझावनु बचन जो, आवत सन्मुख राम ॥
त्यहि खर निंदहु रोष भरि, अतिस्वरस्वरहु निकाम ॥१३॥

॥ चौपाई ॥

निहिचैं तू अब भये बिलापी । भय रहतहु निर्भय हुठ थापी ॥
ताते बाच्य कुबाच्य कहाऊ । जानसि नाहिं काल बस भाऊ १४
काल फांस महँ जे जग प्रानी । आइ बँधहिं धरि खींचि बितानी ॥
काज अकाज तेउ नहिं जानैं । इंद्रिय बिषय न तुक पहिचानैं १५
अस कहि तब पुनि रामहिं देखे । भौहँ तानि घुड़रनि भय लेखे ॥
पुनि सो निकटहि नैन फिराये । निशिचर साल बृक्ष लखि पाये १६
रण मधि प्रबल प्रहारन हेतू । चारहु ओर लखत मद चेतू ॥
ताहि उखारि लियो सो धाई । निज दांतन पुनि ओंठ चबाई १७
ताहि उछलि द्वौ भुजन उठाये । अतिबल से पुनि बहु चिल्लाये ॥
राम ओर फेंक्यहु करि जोरा । "अब तू मरा" इहै करि शोरा १८
आवत त्यहि सालहि श्रीरामा । शर झुंडनिह काट्यो बलधामा ॥
पुनि अति रोष हृदय उपजाये । खरहि समर मधि मारनु लाये १९
तबहिं रामतन बह्यो पसीना । रोषित नैन कोर रँग भीना ॥
भेद्यहु बान अनंत चलाई । समर मध्य खर कहँ रघुराई २०
तासु बान के घावन सेहू । बह्यो रक्त बहु फेन कुदेहू ॥
मानहुं गिरि झिरनन की धारा । बहै घड़ा घड़ वार न पारा २१
सो खर बिकल रामके बानन । समर मध्य भौ बिकटहु आनन ॥
रुधिर गंध से भौ मतवाला । दौड़्यहु राम ओर द्रुत चाला २२

त्यहि अतिक्रोधित आवत देखी । लिये अस्त्र तन रुधिर बिशेखी ॥
हटे राम दो तीनहिं फाला । भांजि पैतरा तुक बल चाला २३
तदनंतर इक अनल प्रकाशी । गह्यो राम शर जो अबिनाशी ॥
समर मध्य खर के बध हेतू । ब्रह्म दंड जनु दूसर नेतू २४
सो अगस्त्य मुनि दत्त सुबाना । दीन्ह्यो जाहि इंद्र मतिमाना ॥
साधि सोइ पुनि धर्म धुरीना । छोड़नहुं खर ऊपर लवलीना २५
छूट बान सो परम महाना । बज्र अघात शब्द घहराना ॥
राम जबै धनु तानि चलाये । खरके उर पर चुभ्यो दराये २६
अनल तेज शर से फुलशाई । सो खर भूमि गिरयो घबड़ाई ॥
श्वेत अरण्य मध्य जनु धौसा[1] । अंतक असुर रुद्रकृत झौंसा[2] २७
सो जनु बृत्र बज्र से चूरो । नमुचि मर्‍यो ज्यों फेन सुपूरो ॥
ज्यों बल इंद्र कुलिश से धूरो । वैसे खर पड़ि मरो जरूरो २८
यहि अंतर मधि मिलि सब देवा । चारण युत कीन्हे हरि सेवा ॥
अति घनघोर नगाड़ बजाये । चहुंदिश फूल बर्षि झरलाये २९
राम चंद्र के ऊपर बर्षे । है अतिबिस्मित तब बहु हर्षे ॥
तीन घड़ी तक भई लड़ाई । राम पैन शर खूब चलाई ३०
चौदह सहस निशाचर वृन्दा । कामरूप धारी मति मन्दा ॥
खर दूखण मुखिआ बलधारी । मरे महारण माहिं सुरारी ३१
अहो अचंभित कर्म महाना । राम बिदित आतम को जाना ॥
धन्य धीर्य अरु धन्य दृढ़ाई । बिष्णु सरिस सब पड़ै दिखाई ३२

॥ दोहा ॥

यह कहि ते सब देव गण, गे आये ज्यहि राह ॥
तदनंतर सब राजऋषि, परम ऋषिन संग गाह ॥३३॥

१ काबेरी तीर बनमें मार्कंडेय का बैरी अंतकासुर महादेव से भसम के। २ जला ।

॥ चौपाई ॥

पुनि अगस्त्य युत रामहिं पूजे । सब मुनि यह बोले अरु दूजे ॥
महा तेज सुर राज महेंद्रा । यहि लगि इहँ आये गुणकेंद्रा ३४
अरु शरभंग सुआश्रम माहीं । आयहु इंद्र बीर बर बाहीं ॥
अरु तुम राम! ऋषिनके ल्याये । यहि देशहि बहु यतन कराये ३५
इन शत्रुन के मारन हेतू । पाप कर्म जे निशिचर केतू ॥
सो तुम कीन्हौ हमार सुकाजा । हे दशरथनृप सुत ! गुणभ्राजा ३६
अब स्वधर्म से बिचरन करिहैं । दंडकबन महँ ऋषि मख पुरिहैं ॥
निसरि दुर्ग गिरि से हर खाने । पैठे निज आश्रम सुख माने ३७
तब पुनि बिजई राम सुजाना । ऋषिन सुपूजित पाइ सुमाना ३८
पैठे निज आश्रम मह बीरा । लखन तिन्है पूज्यहु लै नीरा ॥
तिन्ह रामहिं लखि बैरि हनैया । अरु ऋषिगणको सबसुख दैया ३९
हर्षित ह्वै तब जनक दुलारी । लपटि गईं पीतम अंग वारी ॥
परमप्रेम युत बीर सु नारी । देखि निशाचर मे हत भारी ४०
पुनि रामहिं लखिगातनिदागा । तुष्ट जानकी हिय अनुरागा ४१

॥ सवैया छन्द ॥

तदनंतर रामहिं राक्षसको दल मर्द्दक, जानि सिया सुख पाये ।
अरु पूजित दंडकबासि महात्मनि के करसे, मुदमंगल छाये ॥
पुनि तापर बारहि बार गले लगि, मोद भरी मुखकंज सुहाये ।
तब चौगुन हर्षवती भइ भामिनि, जाहि बिदेहसुता जग गाये ४२

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छं० त्रिंश: सर्ग: ॥ ३०

—····※※※····—

मद पूरित रहि नैन सुपनखा जो वन डाइनि ।
रूप भयंकर जासु बेष रुचि कीन्ह सुहाइनि ॥
लागति राम सुजान जानि छवि कपट कलोली ।
कहन लगे यह वचन रचन अति माधुरि बोली ॥ २१ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० भा० क्रां० पं० हे० नं० त्रि० कृ० भा० छं० सप्तदश: सर्ग: ॥ १७

अठरहवाँ सर्ग

रामलक्ष्मण से सुपनखा की बात चीत और लक्ष्मण जी के हाथ से उस डाइन की नाक कान का कटना ॥

॥ दोहा ॥

काम पाश से बँधी त्यहि, शूर्पनखहिं श्रीराम ॥
स्मित पूर्वक मृदु बैन कह, निज हुलास रसधाम ॥१॥

॥ चौपाई ॥

हे शुभगे ! मम भयो बिआहा । यह भार्या अति प्रिय हियगाहा ॥
पुनि तुम सरिस तियन दुखदाई । सवतिभाव नहिं तुम्हहु भाइहई २
यह मम छोट भाइ गुणवंता । शीलवान देखत प्रियकंता ॥
है शोभा युत अरु बिन व्याहा । लखन नाम बलबीर्य अगाहा ३
यांहिते प्रथम नारि बिनु परसी । लखहु अहै तियसँग प्रियदरसी ॥
यह तुव रूप केर अनुरूपा । ह्वै है दुलह तुमहिं कौ भूपा ४
याहि मम भाइहि सेवहु चैनी । करि दुल्लह हे बड़बड़नैनी !
हे बरत रुचि ! सवति से हीना । जस सुमेरु छवि रविकर लीना ५
जब अस राम कह्यो त्यहि बानी । काम बिबश सो निश्चर रानी ॥
तबहिं राम कहँ तजि तुरताई । लक्ष्मण से बोली पुनि जाई ६

कुमर ! रूप तुव यह जस नीको । मैं बरवर्णिनि दुलहिनि ठीको ॥
मोरे सँग सब विधि सुख पाई । दंडक बन फिरिहो समुदाई ७
सुनि यह कथन सुमित्रानंदन । निशिचरि बैन सुजान सुकंदन ॥
तब मुसक्याइ लखन सो बोले । सूर्पनखा से सच बच खोले ८
कस मम दास केरि तुव दासी । भार्या होनि चहै ? दुखरासी ॥
मैं तो हौं बड़ भाइ अधीना । कमलबरणलनु ! परबसभीना ९
जो धन धान बढ़ो अरु श्रेष्ठा । तासु नारि हो सुवलिगरिष्ठा ! ॥
हे विशालनैनी ! तुव कामा । ह्वै है पूर अमल तन दामा ! १०
यहि कुरूप असती सियप्यारिहि । तन कराल कृशउदर कुनारिहि ॥
बृद्धि तियहि तजि अवसि सु तोही । करिहैं सुघरघरैतिनि जोही ११
को अस पुरुष तोर यह रूपा । तजि अति सुंदर रंग अनूपा ॥
सुनु नवयुवति ! मनुजतियमाहीं । करैं भाव रस चातुर चाहीं १२

॥ दोहा ॥

कह्यो लखन अस व्यंग्य जब, डाइनि पेट फुलानि ॥
साँच बचन त्यहि मान्यहू, सो परिहास अजानि ॥१३॥

॥ चौपाई ॥

सो पुनि अरितप पँह तुरताई । पर्ण कुटी जहँ रहु रघुराई ॥
सिया सहित निर्भय हरखाई । तिन्है कह्यो मन्मथ बस जाई १४
यहि कुरूप असतिहि खलनारिहि । अरु कराल कृषउदर गँवारिहि ॥
बृद्धि अहि बाम भाग बैठाई । मोहिं न बहु चाहो रघुराई ! १५
अबहिं याहि तुरतै भखि जैहों । देखत तुव मानुषिहि चबैहों ॥
तोरे साथ सवति से हीना । बनैं बिचरिहों सबसुखभीना १६

यह कहि सिय मृगसावकनैनिहि । आंख महावरि देखि सुबैनिहि ॥
झपटी रोष भरी खिसिआई । जिमि उल्का रोहिणप्रति धाई १७
त्यहियमफांससदृशबिरूप निहि। पड़तहि लख्योरामयतुधानिहि ॥
महाबली गहि करि अतिकोपा । कह्यउ लखन से तब पगरोपा १८
क्रूर अनारिन से सौमित्रा ! । कबहुं न करिय हँसीकरिचित्रा॥
देखहु सौम्य ! तासु फल याही । कछुक जिऐ सियभक्षहि ताही १९
इहै कुरूपिनि असतपरायिनि । अतिमदमत्त महोदरि डाइनि ॥
कुटिल राक्षसी चरित अनूपा । पुरुषसिंह! यहि करहु बिरूपा २०
कह्यउ राम जब लखनहि ताकी । सो अतिक्रोधभृकुटि करिबांकी॥
लखत राम के खड्ग निसारी । नाककानबिनु त्यहिकरिडारी २१
कटी नाक अरु कानहुं सोई । झपकिचली कुत्सितस्वर रोई ॥
ज्यहि मग आई त्यहि मग भागी । बनहि घोर सुपनखा कुरागी २२
ह्वै बिरूप पुनि भै अति घोरा । निशाचरी शोणित सरबोरा ॥
बिबिधभांति कीन्ह्यसि चिक्कारा । जिमि वर्षाऋतु घनघहरारा २३
पुनि सो बहतहि रुधिर पनारा । लखत भयंकर कोटिन धारा ॥
उछलि कूदि गर्जति बहुबारा । गहि बन बाटघुसी अघभारा २४

। सवैया छन्द ।

तदनन्तर सो श्रुति नाक कटी, खल डाइनि गांउँ घुसी भजिकै ।
जहँ राक्षस झुंड घिरो खर नाम, तहँ पहुंचो अरि को तजिकै ॥
खल भाइ करालहु तेज बसो, उहँ जाइ गिरी रँग सों रँजिकै ।
छिति माहिँ छटाक फटाक मनों, कहुं बज्रगिरो नभसे सजिकै २५
तब तौ पुनि भै अरु मोह स्वरै, कछु मूर्छित गात बतान लगी ।
खर की भगिनी बड़ि डाइनि सो, तन रक्त भरी अति दुःख पगी ॥

बन आवनु नारि समेत तथा, सँग लक्ष्मण भाइहु योगिमगी ॥
सब भाख्यहु औ निज रूपगती, रघुनंदन हाल बिहाल पगी ॥ २६ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० भा० कां० पं० दे० नं० चि० कृत भा० छं० अष्टादशः सर्गः ॥ १८ ॥

—※※※—

उन्नइसवाँ सर्ग

सूर्पनखा को बिरूप देख के खर राक्षस का कोप और दांत पीस २ पूछना कि किसने तेरा यह हाल किया ? सूपनखा का निज हाल कहना, तब १४ राक्षसों को राम लक्ष्मण के मारने के वास्ते खर का पठाना ॥

॥ दोहा ॥

स्वहि भगिनिहि तब गिरी लखि, सगबग रुधिर बिरूप ॥
खर निशिचर जलि कोप से, पूंछहु गर्जि अनूप ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

उठु उठु कहु सब कारन दीदी ! तजि डर अरु मुर्छागत नींदी ॥
अस बिरूपकै जोरि कहु खोली । कीन्ह कौन ? समझाउ सुबोली २
करिआ नाग कौन हुसकायो ? जो बिष दंत बैठ गुड़िरायो ॥
सन्मुखथित स्वहिमानि सुखेला । अंगुली अग्र भाग से ठेला ३
काल फांस निज कर गल डार्यो । मोहबिबस व्है नाहिं बिचार्यो ॥
जो तोहि पाइ आजु हत भागी । पियो तीब्रबिष व्है अनुरागी ४
तू अति बल बिक्रम संपन्ना । मनमानित गति रूप प्रछन्ना ॥
यह दुर्गति तुव किसने कीन्ही ? आयहु काल सरिस इहँ चीन्ही ५

सुर गंधर्ब प्रेत गण माहीं । ऋषी महात्मनि सध्य दुबाहीं ॥
को यह अस भारी बलवाना । तबहि बिरूप कीन्हेसि द्रुत प्राना ६
नहिं मैं देखहुं लोक मझारी । जो मम अहित करै ललकारी ॥
सहसनयन शुचि शासन वारो । केवल नाधि महेन्द्र से न्यारो ७
अबहिं जीवघातक कलखानन । हरिहों तासु अधम के प्रानन ॥
जैसे जल बिच मिश्रित छीरहि । खींचि हंस पीवै तजि नीरहि ८
रण माँधि शरन्हि मर्म के काटे । मम कर लखिहै अंग उपाटे ॥
को अस? जासु रुधिरकुल फेना । पिअनु चहै महि परम सुखेना ९
बधहि कर काय मांस निजधौंचन । नोचि मुंड खग बिनु संकोचन ॥
आजि होहिँ हर्ष भरे महराई । रणमांधि समकर हतहु जुडाई १०
तयहि नाहिं देव और गंधर्बा । नाहिं पिशाच नाहिं राक्षस सर्बा ॥
रण माँझि रक्षनु योगु जो ह्वैहैं । जब मम करन्हि घसीटो जैहै ११
सुनो बहिन! तुक होस सँभारी । क्रम से मोसन कहो प्रचारी ॥
कौन दुष्ट तोहि यहि बन माहीं । जीतलिह्यौ सिकल व्है बरयाहीं १२

॥ दोहा ॥

अस भाई के बचन सुनि, जो बिशेष युत क्रोध ॥
सूर्पनखा तब रोइ यह, बोली बचन बिरोध ॥ १३ ॥

॥ चौपाई ॥

हो नर तरुण रूप छबि धारी । हैं सुकुमारहु पै बल भारी ॥
अरुण कमल दृग नैन बिशाला । पहिरे चीर कृष्णमृग छाला १४
इंद्रिय जित फल मूल अहारी । ब्रह्मचारि तीक्ष्ण तपकारी ॥
दशरथ नृप के हैं सुत प्यारे । राम लखन द्वौ भाइ सँवारे १५

जनु गन्धर्वराज बर साजा । नृप लक्षण संयुत तन भ्राजा ॥
वे हैं देव दनुज वा कोई । नहिं मैं चीन्हि सकौं छवि टोई१६
अरु वय तरुण रूपसी बाला । सकल अभूषण भूषित आला ॥
मैं देख्यों तहँ इक सुठि नारी । तिन के बीच सुघर कटिवारी १७
त्यहि प्रमदा निमित्त यह भारी । तिन दोउन से भई हमारी ॥
हा!! दुर्गति श्रुति नाक बिहीना । जस अनाथ नारी तस हीना १८
तासु कठोर कारिनी केरी । अरु द्वौ भाइ मृतक दृग हेरी ॥
टाटक रुधिर पिअन मैं चाहूं । फेन सहित रणभूमि सुचाहूं! १९
इहै एक पहिला मम कामा । तहँ तुव कृत हूँ है गुणधामा !॥
तासु नारि कर अरु दुहुकेरू । पियों रुधिर घनरण महँ घेरू२०

॥ दोहा ॥

ता कहतहि अस क्रोध करि, खर तब आयसु दीन ॥
कटक चतुर्दश राक्षसनि, यम सम प्रेरण कीन ॥२१॥

॥ चौपाई ॥

द्वौ मनुष्य बांधे हथिआरा । पहिरे चीर चर्म मृगकारा ॥
महाघोर दण्डक बन माहीं । पैठे नारि सहित भय नाहीं २२
तिन दोउन हतिकै त्यहि ठाहीं । त्यहिनारिहि धरिल्यावहु याहीं ॥
यह हमारि भगिनी तिन केरी । पीहै रुधिर दाउँ निज फेरी २३
इहइ मनोरथ इच्छु भारी । मम यहि बहिन केर सुखकारी ॥
राक्षसगण ! तुत पूरहु जाई । तिन्है मारि निज की प्रभुताई२४
तुम से निहत देखि रण बीचे । द्वौ भाइन को जो मति नीचे ॥
यह प्रबला करि हर्ष अनन्दा । पीहै रुधिर लड़त स्वच्छन्दा २५

॥ सोरठा ॥

यहि विधि आयसु पाइ, ते चौदह राक्षस चली ॥
गये ताहि सँग लाइ , जनु घन बात उड़ाउ तहँ ॥२६॥

श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० है० नं० चि० कृ० भा० छ० ऊनविंशः सर्गः १९ ॥

—※:※:※—

बीसवांसर्ग ।

श्री राम लक्ष्मण के समीप खर प्रेरित सूर्पनखा के साथ कटक सहित चौदह सेनापति राक्षसों का जाना । वहां चौदहों का मारा जाना और फिर सूर्पनखा का खर के पास लौट कर समाचार देना ॥

॥ दोहा ॥

तब सुपनखा भयावनी, आई राम कुटीर ॥
तिन राक्षसनि लखायहू, सिया सहित द्वौ बीर ॥१॥

॥ चौपाई ॥

ते सब पर्ण कुटी मधि देखे । रामहि बैठे बहु बल बेखे ॥
सीता सहित अभय हिय भाये । लखन भाइ सेवा रति लाये २
उत तिन निशाचरन को आना । सूर्पनखा सह लखि श्रीमाना ॥
कह्यउ राम लक्ष्मण भाई सन । दीप्त तेज जोहे रघुनन्दन ३
हे सौमित्रि ! मुहूरत एका । सियलग रहिये साधि विवेका ४
मो मारनु सुपनखा सपच्छी । आये मरिहों इन्ह इहँ गच्छी[1] २
सुनि यह बचन राम के नीके । कार्याकार्य विदित के ठीके ५
"बहुत नीक,, यह लक्ष्मण बोले । राघव बचन मानि अनमोले ॥

---

१ जाय के

रामहु महा चाप संधाने । जो कंचन भूषित चमकाने ॥
बान चढ़ाइ धर्मधर बारे । तिन राक्षसन्हि डाटि ललकारे ६
हे दुष्टो ! हम दोनहु भ्राता । राम लखन दशरथ के जाता ॥
सिया सहित इहँ कीन्ह प्रवेशा । जो दंडक वन दुस्तर देशा ७
इंद्रिय जित फल मूल अहारी । ब्रह्मचारि तापसवपु धारी ॥
बसैं महा दंडक बन मांझू । क्यों उत्पात करो तुम बाँझू[1] ८
तुम सब पापिन के बध हेतू । ऋषिगण दुखलहि किहो सुनेतू ॥
मोहिं इहाँ सब लाइ बसाये । हौं नियुक्त शर चाप चढ़ाये ९
ठाढ़ रहो नहिं जाहु पलाई । करौं तुष्ट इहँ ठानि लड़ाई ॥
चहौ लोक महं जो तन धारी । तौ तुम भगो निशाचरझारी १०

॥ दोहा ॥

तासु रामके सो बचन, सुनि चौदह ते बीर ॥
ब्राह्मण घाती शूल कर, कह्यो क्रोध करि ईर ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

लालि आंख चितवनि बड़िघोरा । कर्कश धुनि मुखभाख कठोरा ॥
भरे हर्ष बिनु पौरुष देखे । रामहि अरुण कमलदृग लेखे १२
स्वामि हमारयहि क्रोध कराई । जो खर नाम महामति राई ॥
तुम निश्चै अब प्राण गँवैहो । तुरतहि लड़ि हमसे हति जैहो १३
काह तोर है शक्ति ? अकेलो । बहुतन्हि संग युद्ध बिच खेलो ॥
हम सब आगे सकसि न ठाढ़ा । पुनि कारण लड़िहे? मनबाढ़ा १४
देखु लिये आयुध हम कैसे ? पटा त्रिशूल परिघ बड़ ऐसे ॥
तजिहै प्राण और बल जोई । धनुष चढ़ी कर दैहै खोई १५

१. जिस से तुम को कुछ फल नहीं है।

इतना कहि अतिक्रोध बढ़ाई । ते चौदह राक्षस चलिआई ॥
गहि हथिआर तानि लै धाई । राम सुमुख दौड़े भहराई १६
फेंक्यहु तिन शूलन्हि धरि खींचू । दुर्जय राघव प्रति सब नीचू ॥
तिन चौदह शूलन्हि रघुराई । एकहि बार लख्यो सब आई १७
छतन्यहि शरन्हि काटि महिडारे । जो शर कंचन रंग सँवारे ॥
पुनि बर तेज लखतही रामू । रबिकरचमकबान त्यहि ठामू १८
परम क्रोध करि गह्यो चिराये । चौदह शिल जनु शान धराये ॥
खींचि धनुष महँ तुरत चढ़ाये । सब राक्षसनि निशान बनाये १९
छोड़यहु बान बली रघुनायक । मनहुं इन्द्र बज्रन्हि धबरायक ॥
ते सब बान राक्षसन्हि जोरे । छाती फाड़ि रुधिर सरबोरे २०
गिरे भूमि पर तब यहि भांती । मनहुं बाँबि से पन्नग साती ॥
बानन्हि गिरे भूमि फटि छाती । जनु उखड़े जड़ बिटप अघाती २१
गिरे रुधिर से अंग नहाये । कटे कुटे अरु प्राण गँवाये ॥
तिन्है भूमि पर गिरे निहारी ! क्रोध बिकल सो निश्चर नारी २२
लौटि भगी सो खर के पासा । कछुक रुधिर सूखी बिनु नासा ॥
गिरी तहैं पुनि आरत भारी । गोंद लशी जनु श्री द्रुम डारी २३
आइ समीप शोक बिकलानी । छोड़ि चिकार महादुख वानी ॥
तब रोई स्वर आंसु बहाई । मुख बिकार छाई पिअराई २४

। हरिगीतीछन्द ।

रण में मरे सब राक्षसनि लखि, बिकल व्है खल निशिचरी ।
सो सुपनखा अति बेग से गइ, दौड़ि खर पहँ दुख भरी ॥
तब तासु पुनि सो बहिन डाइनि, सकल दुर्गति उच्चरी ।
चौदह निशाचर बलिन को बध, आदि से बृत अनुसरी २

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० चि० कृत भा० छं० बिंशतिमः सर्गः ॥ २० ॥

इक्कइसवाँ सर्ग

खर के पास सूर्पनखा का दुबारा मूर्छित हो गिरना उसे गिरी देख खरका कोप और गिरने का समाचार पूछना फिर चुनौती दे सूर्पनखा के मुह से राम लक्ष्मण का प्रताप कहा जाना और पेट कूट कर रोना ॥

॥ दोहा ॥

सो खर त्यहि सुपनखहि पुनि; गिरी देखि दुखआरु॥
आगतही कुलनाशिनिहि, क्रोधित व्यक्त उचारु ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

मैं तो अबहिं निशाचर जोरा । ते चौदह नरभक्षक घोरा ॥
तुव प्रिय हेतु दिहों अगुआई । कसपुनिअबरोवसिचिचिआई२
वे सब मोर भक्त अरु प्यारे । अरु मम नित हितकारनुवारे ॥
बधनु योग्य स्यहु जाहिं न मारे । कोन्ह न धौं? उन वचन हमारे ३
काह भयो ? मैं सुननु चुहाहूं । अति कारण त्यहि कारज माहूं ॥
"हा हा नाथ !,, इहै चिल्लाई । लोटसि सांपसरिस महि आई? ४
रोवसि जनु को परम अनाथा । मोहिं नाथ रहते इक साथा ॥
उठुउठु याविध करुमति शोका । छोडु बौरहीपन लखु लोका ५
यहिबिध सो दुखिनि खर सेहू । कहि कर शांत भई लहि नेहू ॥
मींजि नयन द्वौ आंसु समेता । खर भ्राता से कह्यो सचेता ६
मैं तो या छिन हे वर भूपा ! नाक कान बिनु भयूं कुरूपा ॥
रक्त धार से तर भर पूरी । तुमसे पुनि लहि धीरज भूरी ७
फेरि पठायहु तुम बड शूरा । ते चौदह रण बंकट सूरा ॥
लखन समेत भयानक रामहिं । मारन हेतु मोर प्रिय कामहिं ८

ते बल क्रोध भरे उहँ जाईं । शूल पटा गहि कीन्ह लड़ाईं ॥
सबै राम से गे पुनि मारे । मर्म बेधि खर बान प्रहारे ९
तिन्हैं छिनहिमहँ मैं लखिप्यारन । गिरे भूमि मधि बड बलधारन ॥
राम केर यह काज महाना । भयउपज्यो ममहिय बलवाना १०
सो मैं अति भय सों हिय काँपी । हे निश्चरपति ! शिर दुख थापी ॥
फिर मैं आइउं शरण तुम्हारे । चहुं दिश लखि डर केर पहारे ११
जहँ बिषाद घड़िआल निवासी । चौमुख डर तरंग की रासी ॥
शोक समुद्र उमहि गंभीरा । मग्न माहिं रक्षहु किनु? धीरा! १२
जे राक्षस नर मांस अहारी । मम सँग गये मोहिं अनुसारी ॥
ते ये सब खर सोनित बानन । मरे राम कर भूमि लुटानन १३
जौ मो पर तुव करुणा होई । हे राक्षस ! अरु जूझो जोई ॥
अथवा शक्ति राम सँग तोरी । लड़नु होइ वा तेज बहोरी १४
तौ तू दंडक बन के बासिहि । मारु निशाचरकंटक घासिहि ॥
जौ तू आजु शत्रु बधकारिहि । नहिं मरिहै रामहि बनचारिहि १५
तौ मैं तोरे आगयहि भाई ! तजिहौं प्राण लाज बिसराई ॥
मैं तो देखहुं बुधि फैलाई । तोरि न लड़नु राम समताई १६
सन्मुख ठाढ़ होब कठिनाई । यद्यपि सबल युद्ध प्रभुताई ॥
नहिं तू शूर शूर निज मानी । झूंठहि छल भाखी अभिमानी १७
भागु तुरत तजि गाउँ गिराऊँ । कुटुम समेत महाबन ठाऊँ ॥
अथवा मारु जंग बिच दोउन । बिनु मारे कुल नाशक होउन १८
राम लखन द्वौ मनुज बलीशन । जौ नहिं मारसि कहुं तू रोसन ॥
तौ तुव निबल नपुंसक केरा । कैसे ह्वै है? निपट बसेरा १९
राम तेज चहुं ओर प्रकाशा । ह्वै है तोर तुरत अब नाशा ॥
सोइ राम दशरथ कौ लाला । तेज युक्त ह्वै है नरपाला २०

तासु भाइ पुनि अति बलवाना । जिन काटेउ मम नासा काना ॥
यहि प्रकार बहु कीन्ह बिलापा । उदर गभीर राक्षसी पापा २१
भाइ समीप शोक भरि देहा । मूर्छित भई पड़ी त्यहि गेहा ॥
दोनहुं कर से पेटहु कूटी । रोई सो दुख भरि रस घूटी ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० वि० कृ० भा० छं० एकविंशः सर्गः ॥ १०

—※:※:※—

बाइसवां सर्ग

सूर्पनखा का दुबारा घोर बिलाप सुनि खर का महा क्रोध और दूषण नामक सेनापति राक्षस को साथ ले रथ चढ़ि राम लक्ष्मण पर चढ़ाई करना ॥

॥ दोहा ॥

यहि विधि खर सुपनखा से, पाइ चुनौती शूर ॥
तब खरबुधि राक्षसन मधि, तीव्र बचन कह भूर ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

हे भगिनी ! तुव सुनि अपमानू । उपज्यो मम यह क्रोध महानू ॥
अतुल अनूपम सकों न रोकी । लवणसिंधु जनु पवन कुझोंकी २
गनहुं न रामहि कछु बलहेतू । सो नर क्षीन जीव गत चेतू ॥
निज कुकर्म से मरो अवांहीं । जो प्राणन्हि तजिहै पल माहीं ३
पोंछु आँसु अब धरु मन धीरा । यह डर छोड़ु बिसारु सुपीरा ॥
मैं तो रामहि भाइ समेता । तुरत बनैहों यम घर नेता ४

आजु परसु सो हतो राम को । मंद प्राण महि गिरे ठाम को ॥
लाल रुधिर अरु टाटक गाढ़ी । पीहै हे भगिनी ! मन बाढ़ी ५
सुनि बानी अतिशय हरखानी । खर मुख से निसरी मदसानी ॥
पुनि जड़ता बस अधिक सराहे । निश्चर वर भाइहि उच्छाहे ६
ताते प्रथम जु निंदा पाये । फेरि बड़ाई सुनि हरखाये ॥
बोल्यो खर सेनापति पाहीं । जासु नाम दूषण बरबाहीं ७
चौदह सहस बीर बड़ बांके । मम मनमानित लेहु सुआंके ॥
भीम बेग राक्षस को झुंडा । फिरैं न रणमधि जो पिचुतुंडा ८
श्याम मेघ सम वर्ण भयंका । नरहिंसा बिहार निःशंका ॥
सब प्रकार की युक्ति करैयन । जोरहु कटक सौम्य! लै सैयन ९
हे दूषण ! तुरतहि तुम ल्यावो । ममरथ औ धनुबिबिधसजावो॥
शर बिचित्र अरु खड्ग अनेका । पैन शक्ति बहु भाँति अटेका १०
मुनि पुलस्त्य कुल भूषण माहीं । जान चहों मैं आगयहि वाहीं ॥
राम दुष्ट के मारन हेतू । हे रणपंडित! सुनो सुचेतू ११

॥ दोहा ॥

ल्यहि खर के अस कहतही, सूर्य बर्ण रथ आनि ॥
नाधि तुरग कबरे बली, दूषण बोल्यहु बानि ॥ १२ ॥

॥ चौपाई ॥

जो सुमेरु के शिखर अकारा । तापित कंचन खँचनि सवाँरा ॥
चक्का लगे हेम के भारी । मणि बैदूर्य पिंडि रतनारी १३
मंगल चित्रन्हि रचित अनूपा । मीन पुष्प द्रुम शैल स्वरूपा ॥
चंद्र कांति कंचन झलकाऊ । तारा चमक पक्षि छबि छाऊ १४

ध्वज अरु अस्त्र शस्त्र से पूरा। घुघुरुन भूषित भ्रनक बरूरा ॥
उत्तम तुरग नधे त्यहि माहीं। चढ़यो क्रुद्ध सो खर तब ताहीं १५
खर दूषण लखि सेना भारी। जा मधि रथ ध्वज ढाल कतारी ॥
निकसत पुर से हाहा कारी। ललकारे द्वौ "चलो,, पुकारी १६
तदनंतर निशिचर की सैना। ढाल घोर ध्वज अस्त्र सुपैना ॥
निकसो खर पुर से भर्राई। महानाद गूंज्यो अर्राई १७
मुद्गर पटा शूल बहु भाला। पैन परसु कर चमकन वाला ॥
खड्ग चक्र युत रथनिह चढ़ैया। बरछी चमकि रहीं कड़कैया १८
शक्ति और सोंटा बड़ घोरा। बड़े बड़े धनु धार कठोरा ॥
गदा मुशल बज्रहु तरवारू। गहे भीमदर्शन भरमारू १९
बड़े भयंक राक्षसनि वृंदा। चौदा सहस परम आनंदा ॥
निसरे पुर से करि बहु शोरा। खर मनअनुगामी चहुं ओरा २०
पुनि तिन सबन चलतभय देखो। निश्चर भीम दर्श रणबेखो ॥
खरहु केर रथ तिन्ह टुक पीछे। चल्यो अनंतर बनमग खींछे २१
औपुनि तिन चितकाबरघोड़न। तप्तस्वर्णभूषित वर जोड़न ॥
खर अधीश की अनुमति पाई। तुरत सारथी दीन्ह बढ़ाई २२

॥ सोरठा ॥

खर रिपु घाती केर, शीघ्र बेग प्रेरित रथहु ॥
पूरयहु रव चहुं फेर, दिश अरु बिदिश भयावनी ॥ २३ ॥

छप्पै छन्द

खर पिशाच खरस्वरनिह कह्यो, पुनि पुनि ललकारी।
महा काल सम झटपटाइ, द्वौ बाँह पसारी ॥

अतिशय कोप बढ़ाइ, नैन मुख भौहँ बिकारी।
रिपु बध अर्थ लगाइ, सारथिहि कह्यो पुकारी ॥
तब कडक नाद अति ऊंच स्वर, पड़त कान मुहनाइ रह।
शो महाप्रबल जनु श्याम घन, लडपि उपल बर्षहु अगह २४

इतिश्रीमद्वा०रा० आ० कां० पं० दे० नं० छि० कृ० भा० छ० द्वाविंश: सर्ग: २२ ॥

—※:※:※—

तेइसवांसर्ग।

राम लछमण के साथ लड़ने को खर का पयान और यात्रा में असगुनों का होना, तथा राम समीप बेग से खर की सेना का पहुचना ॥

॥ दोहा ॥

घोर कटक खर को चल्यो, अशुभ रुधिर भरि बारि ॥
गदह वर्ण घन धूसरे, भरुयहु तुमुल धुनि कारि ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

गिरे तासु घोडे घबड़ाई। रथ समेत अति बेग बढ़ाई ॥
सम अरु फूलयुक्त छिति माहीं। आपु हि सकड़ स्वच्छगति जाहीं २
लिये श्याम अरु वर्ण ललाई। रबि समीप मंडल रह छाई ॥
मनहु महावर चक्र गुलाई। गह्यो दिवाकर तेज गँवाई ३
तबपुनि ऊँचध्वजन उडिआये। स्वर्ण दंड पर जो फहराये ॥
महा काय बैठे उडि गिद्धा। दारुण देखि परशो शुभविद्धा[1] ४
गाउं समीप कूदि चहुं ओरा। गर्दभ नाद करैं अतिघोरा ॥
बिबिधप्रकारबिसुर चिल्लाऊ। मांसभखी मृग खगनिह सुनाऊ ५

१ शुभ के नाशक।

रवि के रहतहि दिशा भयंका । पूरित रव से उपजि कुशंका ॥
रोवहिं डाइनि और शिआली । महा अमंगल धुनि भयवाली ६
मेघ फाटि व्हे गज आकारू । रुधिर बारि धारक भरमारू ॥
भयो गगन बिनु देख अपारा । छाइ मेघ कीन्हे भय भारा ७
पुनि भौ अधिक घोर अँधिआरा । सघन रोमहर्षण अतिकारा ॥
दिश अरु बिदिश न देइ सुझाई । पुरब पछिम नहिं पडै जनाई ८
मनहुं रुधिर रँग रंजित बासा । सांझसमय बिनु भयो अभासा ॥
खर के सन्मुख पुनि चिचिआने । खग मृग बहुत भयंकर ज्ञाने ९
कंग गोह अरु गीध चिघारे । अशुभनाद कीन्हे बहु बारा ॥
जो नित रणहि अमंगल कारी । सोइशिआलिन नची हंकारी १०
कटक सोंह मुहँ बाइ सुरोई । लपट उठत मुह से जलि जोई ॥
पुनि बिनु शिर नर देह अकारा । देखिपड्यो रवि निकट उजारा ११
ग्रस्यो राहु ग्रह सूर्यहि धाई । बिनु प्रतिपदके योगहु पाई ॥
बहैं पवन अति स्फाटित झँकोरा । दिनकर प्रभाहीन जग घोरा १२
बिना रात बहु पडैं उलूका । तारक जुगनू सम जन मूका ॥
बिनु मछली खग ताल ललैया । सूखे कमल पडे मुरझैया १३
ता छिन भये सकल बनबृच्छा । बिन फल फूल न लागहिं अच्छा ॥
उडी घायु बिन पुनि बहु धूली । जलधर जाल रंग रह झूली १४
चैं चैं चौं चौं पालित मैना । करैं तहां धुनि नहिं गुणऐना ॥
पडैं उलूक तडपि बहु बारा । दर्श भयानक वार न पारा १५
डोलन लगी धरा महराई । बन कानन पहाड़ समुदाई ॥
जब खर रथ पर बैठि चिघारे । सो धीमत बहुअशुभ निहारे १६
सूख कंठ स्वर मुखहु न रागे । खर को कँप्यो बाम भुज भागे ॥
देखत चहुंदिश पुनि दृग ताके । अस्त्रशस्त्र आँखन बिच आँके १७

भई लिलार माहिं अति पीड़ा। मोह बिबश नहिं मिटै सक्रीड़ा ॥
तिन उत्थित उत्पातन्हि देखी। रोमखड़े कारकन्हि बिशेखी १८
बोल्यो सब निशिचरन पुकारी। हँसिकै सो खर तबहिं सुरारी ॥
उठे महा उत्पातहु सर्वा । ये सुघोरदर्शन पै खर्वा १९
मैं नहिं गनहुं इन्हैं कछु बाला। ज्यों दुर्बलहि बली मलि लाला ॥
अति तीच्छन शर कसि नभरेहू। देउं गिराइ तरैयन नेहू २०
जौ मैं करौं क्रोध रण माहीं। तौ मारहुं मृत्युहु तुरताहीं ॥
पुनि बलवढ़ो काह त्यहि रामहि। तासु भाइ लक्ष्मण रणधामहि २१
बिनु मारे तीखे बर बानन। नहिं मैं चहों फिरनु निजकानन ॥
ज्यहि सुपनखा निमित्त लगाई। राम लखन की बुधि उलटाई २२
सो मम बहिन मनोरथ पूरी। तिनकौ रुधिर पान करि भूरी ॥
नहिं कहुं भई हार रण मोरी। पूर्ब काल महँ लड़िहु कुजोरी २३
तुम सब कहँ प्रत्यक्ष दिखाऊं। नहिं कछु झूंठ कहूं यहि ठाऊं ॥
क्रोध करौं पै इन्द्रहु होई। चढ़ो मत्त ऐरावत सोई २४
वज्र हाथ धारिहि रण बीचा। का कठोर पुनि मनुजन्हि मीचा ॥
तासु गर्ब सुनि सो सब सैना। महारजनिचर की भतिपैना २५
अतिशय हर्ष निशाचर पाये। मृत्युफाँस से फँसि समुदाये ॥
ता छिन आइ महात्मा ज्ञानी। देखन युद्ध मनोरथ ठानी २६
ऋषि अरु सकल देव गंधर्वा। सिद्ध सहित चारणगण सर्वा ॥
आइ परस्पर मिलि कह बानी। पुण्यकर्म कारी शुभ खानी २७

॥ दोहा ॥

गो ब्राह्म हित स्वश्ति हो, अरु जे लोक सनेहि ॥
लड़ि पुलस्त्यकुल राक्षसन्हि, जीतहिं राम उमेहि ॥ २८ ॥

॥ चौपाई ॥

चक्र हाथ धरि हरि ज्यहिभांती । जोलहु महाअसुर की पांती ॥
यह आशिष अरु बहुत प्रकारू । बड़े बड़े ऋषि कीन्ह पुकारू २९
अति कौतुक जिय तहँ सबमयऊ । चढ़ि विमान सुरगणछबिलह्यऊ ॥
लख्यो चलत तिनकी कठकाई । बिगत आयु राक्षस भरराई ३०
रथचढ़िपुनि खर अतिबलवेगा । गयो फौज आगयहि करतेगा ॥
लै सँग श्यामगामि १ पृथुग्रीवा २ । अरुमखबैरि३ विहंगमजीवा४ ३१
दुर्जय ५ परवीराक्षहु ६ नामी । परुष७ कालकार्मुक ८ सँगठामी ॥
हेममालि ९ महमालिहु १० संगा । सर्पबदन११ रुधिराशन१२ रंगा ३२
ये द्वादश भारी बलवान् । खर के बगल खड़े असितान् ॥
महाकपाल १ थूलदृग २ जाके । अरु प्रमथा३ त्रिशिरा४ द्वौ बांके ॥
ये चारहु सेना के आगे । धायहु दूषण के पछुलागे ३३

। हरिगीतीछन्द ।

सो अति भयानक बेग धावति, समर चाह चमू अनी ।
दारुण कठोर सुघोर निशिचर, बीर शूरन्हि से घनी ॥
दुहु राजपुत्र समीप सहसा, आइ पहुंची बन ठनी ।
जनु राहुग्रह गुंथि माल ह्वै गल, गह्यो शशि अरु दिनमनी ३४

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० त्रि० कृ० भा० छं० त्रयोविंशः सर्गः ॥ २३

—※:※:※—

चौबीसवां सर्ग

खर राक्षस की सेना का राम समीप पहुंचना, उसे देख श्री राम का लड़ने का उत्साह और सीता जो को साथ ले लक्ष्मण जी को दुर्गम स्थान में रहने की आज्ञा का देना॥

॥ दोहा ॥

प्रखर बली खर राम के, आश्रम पहुंच्यो जाइ ॥
तिन उत्पातन भाइ सह, राम लख्यो तुरताइ ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

तिन अति घोर महा उत्पातन । देखि राम चौंके भरि गातन ॥
प्रजा अनिष्ट अधिक पुनि जानी । बोले लखन संग शुभ बानी २
महाबाहु ! इन्ह सबन्हि निहारो । सब जीवन क्षयकर निर्द्धारो ॥
उठे महा जो बहु उत्पाता । सो सब निश्चय करनु बिधाता ३
रुधिर धार ये बरसहिं भारी । खर धुनि झर्झराइ भयकारी ॥
नभ महँ मेघ उठे अति रूखे । गर्दभ वर्ण धूसरहु रूखे ४
धूम धूसरित मम सब बाना । युद्ध हेतु अति आँनद माना ॥
स्वर्ण खचित बरपीठ कमानन । चहैं लखन! चढ़ि२ कसि तानन ५
जा बिध इहँ कूजहिं बहु भांती । खग अरु बनचरजीवहु माती ॥
याते प्रथम हमैं डर लागै । अरु जीवन संशय हिय जागै ६
ह्वै है मार काट अति घोरो । नाहिं या मधि कछु संशय थोरो ॥
पै मम दक्षिण भुज यह भाखै । फरकि बारबहु बिजय सुलाखै ७
शूर ! याहि छिन बिजय हमारो । तथा पराजय रिपु कर न्यारो ॥
सुंदर प्रभा प्रसन्न तुम्हारो । मुख लखाइ शुभलक्षण वारो ८

युद्ध हेतु जो आतुर होवें। प्रभा हीन जिनकी मुख गोवें॥
तिनकी आयु छीन पहिचानू। सुनो लखन! यह बैन प्रमानू ९
राक्षस गणन केरि धुनि नादा। जो सुनाइ यह बहु बहु बादा॥
अरु नगाड गर्जनि घहराई। क्रूर कर्म राक्षन्हि बजाई १०

॥ दोहा ॥

आवनु हानि अनिष्ट कर, रोकनु केर उपाय॥
शंकित नर से चेत करि, करनु सदा सुखदाय॥ ११॥

॥ चौपाई ॥

हे लक्ष्मण! ताते बैदेहिहि। लै सँग जाउ गुहागिरि येहिहि॥
धनुष बाण कर कसि संधाना। रहो द्रुमन्हि जहँ दुर्गम थाना १२
हे लक्ष्मण! तुम मम यह बानी। नहिं टारहु मैं चहों सुमानी!॥
मम चरणन की सपथहु तोही। जाहु बत्स नहिं बिलमहु कोही १३
तुम हो शूर बीर बलवाना। मरिहो इन्है न संशय आना॥
पै मैं निजहि चहों अब मारन। निश्चै सब निश्चरकुल भारन १४
जब अस कह्यो लखन कहँ रामू। तब सीतहि लै सँग शुभकामू॥
शरन्हि और चापहु गहि बाहीं। दुर्गम गुह पैठे भय नाहीं १५
त्यहि गुहमधि पुनि सियासमेता। पैठे लखन जयै शुभ चेता॥
"बहुत नीक मैं होहुं तयारा,,। यह कहि राम कवच अँग धारा १६
सो पुनि पहिर कवच अतिसोहे। अग्नि समान चमक त्यहि जोहे॥
वा छिन राम अंग छवि छाये। जनु अँधेर महँ अनल जलाये १७
महा चाप सो पुनि बर लीन्हे। अरु शरविविध बीर कर कीन्हे॥
दीन झनक गुण भैरव पूरी। चहुंदिश गर्जि घुमडि रहि भूरी १८

तबहिं देव गंधर्वहु धाये । चारण सहित सिद्ध भुकि आये ॥
बडे बडे मतिमान गुणीशा । देखन युद्ध उमगि हिय शीशा १९
ऋषिहु महात्मा जे अधिकारी । तीन लोक ब्रह्मर्षि जु भारी ॥
ते सब बहुरि परस्पर बोले । पुण्यकर्म बाणी हिय खोले २०
गो ब्राह्मण कर मंगल होऊ । अरु लोगन उपकारक जोऊ ॥
रावन लडि जै पावहिं भारी । मुनि पुलस्त्यकुल निश्चर मारी २१
जैसे चक्र हाथ हरि धारी । युद्ध माहिं मार्यो खल भारी ॥
अस कहि फिर बोले बरबानी । देखि परस्पर सम्मति ठानी २२

॥ दोहा ॥

चौदह सहस निशाचरी, भीम कर्म कटकाइ ॥
राम धर्म धर एकही, व्है है किमि सुलडाइ ॥ २३ ॥

॥ चौपाई ॥

यहि बिध राजऋषी सब सिद्धा । अरु गण सहित द्विजर्षभ निद्धा ॥
पुनि बिमान चढ़ि रहे जु देवा । कौतुक परम अचंभित ठेवा २४
रामहि तेज भरे त्यहि काला । खडे समर शिर भौ तन लाला ॥
देखि सबै प्राणिहु अकुलाने । भै से तब अतिदुख हिय आने २५
तासु राम कर अनुपम रूपा । करत कठोर कर्म सुत भूपा ॥
भयो ठीक जनु रुद्र महाना । धर्यो क्रोध करि बेष भयाना २६
ऐसहि कहत रहे सब जबहीं । सुर गंधर्व सुचारण तबहीं ॥
भयो गभीर शोर अति घोरा । ध्वज फर्फर ढालनि भनकोरा २७
निशिचर कटक भयंकर भारी । चहुंदिश फैलि गई हुंकारी ॥
बीरन की बानी ललकारी । एक एक की प्रति गतिवारी २८

तिनकी विपुल शब्द चहुं ओरा । यहि बन माहिं भरो खर जोरा ॥
तासु शब्द से अति भय पाये । बनचारीगण मन अकुलाये ३०
भगे जहां नहिं शब्द सुनाई । फिरि पीछे नहिं तकैं चुपाई ॥
फौजहु सो अति बेग बढ़ाई । रामहि घेरि लई भहराई ३१

॥ दोहा ॥

धरे बिबिध हथिआर सब, सागर अगम समान ॥
रामहु नैन फिरायहू, चहुंदिश युद्ध सुजान ॥ ३२ ॥

॥ चौपाई ॥

देख्यो खर की फौज फरक्की । सन्मुख जूझन आइ झमक्की ॥
तानि धनुष रघुनाथ भयाना । तरकस से निसारि शर नाना ३३
ता छिन क्रोध लाइ तन माहीं । सब राक्षसन्हि हनन बरबाहीं ॥
भयो बिकट बपु लखत दुरंता । जनु युगांतपावकहु ज्वलंता ३४
देखि तिन्है तन तेज अबेशा । व्यथित भये बनदेव घरेशा ॥
तासु राम कर रुष्ट स्वरूपा । पुनि देख्यो तब सब रहि चूपा ॥
मनहुं दक्ष को यज्ञ बिनाशन । प्रगट उठ्यो शंकर बिनु त्रासन ३५

। हरिगीति छन्द ।

धनु बान झमकहिं दै चकामक, चमक भूषण अंग से ।
रथ और तिनके बर्म कबचहु, ज्वलित अनल सुरंग से ॥
त्यहि समय निशिचर सेन शोभित, भई अंग उमंग से ।
जनु उदित दिनकर छिटिकि जालन, नीलघनन सुढंग से ३६

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० न० चि० कृ० भा० छ० चतुर्विंशः सर्गः २४ ॥

—※※※—

पच्चीसवांसर्ग ।

श्री राम के सन्मुख खर का जाना और सारथी को रथ बढाने कह के सेना समेत राम पर टूटना और बड़ी भारी लड़ाई के उपरांत बड़े २ राक्षसों का मारा जाना ॥

॥ दोहा ॥

खर रामाश्रम जाइ कै, सगण लख्यो निज काल ॥
लखहि रामहि रिपु घातिहो, धनुधारिहि बिकराल ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

देखि तिन्है गुण युत धरि चापा । तानि रहे जो खर धुनि थापा ॥
तिन राघव सन्मुख निज सूतहि । कह्यो "बढाउ तुरंग,, प्रभूतहि २
सो सारथी तुरंग बढाये । जब खर कौ आयसु अस पाये ॥
जहां राम ठाढे महबाहू । धरि धनु तानि अकेलहि नाहू ३
देखि राम कौ झपटि पडे सब । चहुंदिश से रजनीचर तहँ तब ॥
अति चिघार छोड्यो ललकारे । लडन बिधान सिखावनु वारे ४
तिन निश्चरनि मध्य खर सोई । रथ पर बैठ सजुग भय गोई ॥
जनु तारागण मध्य सुहावा । मंगल ग्रह तन क्रोध जगावा ५
तब पुनि बान हजारन जोडे । राम अमोघ बली पर छोडे ॥
महानाद से पुनि चिग्घारी । समर माहिं खर अद्भुतचारी ६
तब तिन भीम धनुषधर रामहि । सब निश्चर करि कोप सुठामहि ॥
बहु बिध अस्त्र शस्त्र बरसाये । पै राघव दुर्जय न डराये ७
लोह मुद्गरन्हि शूल प्रहारन्हि । फरसा खड्ग पास तरवारनि ॥
राघव घोरहि रण मधि जोसा । हन्यो निशाचरगण करि रोषा ८

ते सब मेघ सरिस फहराई । महाकाय बल बिपुल बढ़ाई ॥
राम ककुत्थ ओर सौंहाये । रथ तुरंग बर संयुत धाये ९
पर्वत शृंग सरिस गज लीन्हे । लड़ि रामहि मारन मन दीन्हे ॥
पुनि ते राम ओर शर बर्षा । करन लगे निश्चर गण हर्षा १०
जनु सुमेरु पर झर्झर धारन । बर्षहिं महा मेघ भभकारन ॥
सब राक्षन्हि घिरे श्रीरामू । जे खल देखत नैन निकामू ११
ताछिन ज्यों प्रदोष तिथि पाये । महादेव पार्षदन्हि सुहाये ॥
पुनि तिन जतुधानन के छोड़े । शस्त्र अस्त्र राघव से मोड़े १२
निज बानन से लीन्हो आडो । नदी बाढ़ ज्यों सागर खाड़ो ॥
याते तिनके तीव्र प्रहारन । लगे गात नहिं बिधे न धारन १३
चमकित बहुत बज्र सम आवें । राम महा पर्वत सम भावें ॥
देखत मनहुं बिँधैं खर पातन । पै खत मात्र राम के गातन १४
ताछिन राम घेरि गे कैसे ? मढे सांझ मेघन रबि जैसे ॥
सो तब डरे देव गंधर्वा । सिद्ध और नामी मुनि सर्वा १५
एकहि बहु सहस्त्र से घेरे । देखि प्रजा दुख कीन्ह घनेरे ॥
तब पुनि रामहु क्रोध बढ़ाई । खींचि धनुष कसि गोल बनाई १६
छोड़यो बान तुरत खर साने । सौ अरु सहस एक सँग ताने ॥
जिन्हलडि रोकिसकै नहिंकोऊ । असह कालफाँसी सम जोऊ १७
छोड़यो पुनि जैसे नट लीला । बकपंखी शर स्वर्ण खँचीला ॥
ते शर शत्रु सैन बिच छूटे । जिन्है राम खेला करि कूटे १८
लिहा प्राण राक्षस गण केरे । ज्यों फांसी यमराजहु प्रेरे ॥
तिन राक्षनि देह पुनि फारी । ते शर रुधिर भरे खर धारी १९
उडे गगन सोहैं चमकीले । तेज अनल ज्वाला जनु मीले ॥
अगिनित धनुमंडल से चापा । जिन्हैं राम कीन्हे खर दापा २०

झरन लगे अति उग्र उमंगा । निशिचर प्राण हरन के ढंगा ॥
तिनसे धनु अरु ध्वज फहराऊ । ढाल और बहु कवच बनाऊ २१
बाजू कंकन सहित सुबाहू । जंघा करिकर ऊपम ताहू ॥
काटेहु राम समर महँ बानन । सौ अरु सहस असंख्यविधानन २२

॥ दोहा ॥

कंचन सज्जित बाजि रथ, नधे सारथिन संग ।
गज आरोहिन सहित गज, सहित सवार तुरंग ॥ २३ ॥
छेद्यो अरु बेध्यो बहुन्हि राम बाण गुण त्यागि ।
पैदल दल रण माहिं हति, पठयो यमपुर रागि ॥ २४ ॥

॥ चौपाई ॥

तब पुनि नलीमुखन्हि नराचन । तीक्ष्ण अग्र देह बहु ढांचन ॥
छेदि बेधि निशचर समुदाई । भीमनाद रोयो चिल्लिआई २५
सो खर की सैना गै मर्दी । मर्मबेधि बहु बानन अर्दी ॥
राम संग लड़ि नहिं सुख पाये । सूखो बन ज्यों अनल दहाये २६
कौ कौ महा भीम बल शूरा । फरसा शूल फांस गहि ढूरा ॥
फेंक्यो परम क्रोध करि न्यारे । रजनीचरहु राम पर वारे २७
महाबाहु से अति बलवानन । तिनशस्त्रनि काटे निजबानन ॥
पुनि तिन के प्राणहु संहारे । छेदि शीश अरु बाहु विदारे २८
ते सब शीश कटे महि लोटे । गिरी ढाल धनु अलगहि बोटे ॥
मनहुं गरुड़ पख पवन झपेटे । गिरे बिटप महि धूलि लपेटे २९
रहे शेष जे तहँ रजनीचर । ते व्याकुल घायल ह्वै बहुतर ॥
खर समीप धाये घबड़ाने । शरहत शरणनिमित्त पलाने ३०

॥ दोहा ॥

तिन्है सबन्हि दै धीर पुनि, दूषण लै धनु बान ॥
धायहु क्रोधी क्रुद्ध अति, जनु अंतक बलवान ॥ ३१ ॥
लौटे सब पुनि अभय ह्वै, दूषण आस्रय पाय ॥
शाल ताल शिल आयुध लै, चले राम मुख धाय ॥ ३२ ॥

॥ चौपाई ॥

मुद्गर शूल हाथ बहुतेरे । पाश लिये कर बली घनेरे ॥
प्रगट करत बानन की बर्षा । शस्त्र झरी त्यागहु रण हर्षा ३३
पुनि वर्षत बहु बिटप उखारी । शिला वृष्टि निश्चरन्हि प्रहारी ॥
भई सोइ अद्भुतहु लड़ाई । घमासान लखि रोम ठढ़ाई ३४
महा घोर इन रामहु केरी । अरु तिन निश्चर गण की भेरी ॥
पुनि ते निश्चर करि हिय क्रोधा । चहुंदिश रामहिं मारहिं योधा ३५
तदनंतर सब दिशन्हि निहारी । अरुबिदिशन्हि पूरित चहुंबारी ॥
सब थल भरे निशाचर ढेरे । निजहु बान वर्षा से घेरे ३६
सो रामहु करि नाद भयाना । परम तेज यम अस्त्रहि ताना ॥
नाम जासु गांधर्व महाना । हन्यो राक्षन्हि तब बलवाना ३७
पुनि शर सहस चाप महँ जोरी । तानि तज्यो कसि २ चहुं ओरी ॥
दशो दिशा बानन्हि सब ठाईं । पूर कियो भरि खल जहँताईं ३८
अति द्रुत घोर बान कर लैनो । तथा तान त्यगाव शर पैनो ॥
लखैं न निश्चर शरन्हि सँताये । खींचनु मात्र देखि घबड़ाये ३९
शरन्हि भयो नभ अधिक अँधेरा । सहित दिवाकर छायहु हेरा ॥
राम खड़े तहँवां तिन बानन । खींचि चलावत हर्षितआनन ४०

एकहि साथ बान बरषेते । पुनि साथहि बहुहत परसेते ॥
तथा एक सँग गिरे पड़ेते । छाय गई महि तुमुल लड़ेते ४१
मरे गिरे अरु प्राणहु छीना । घायल कटे फटे अँग हीना ॥
जहँ तहँ लखि पड़ैं भयंकरा । निशिचर झुंड हजारन अंका ४२
बांधि पाग शिर उत्तम अंगा । बाहु बिजायठ छवि बहु ढंगा ॥
कटी जांघ बाहू बिलगानी । भूषण टूटि खानि की खानी ४३
कटे तुरंग मुख्य गज लोटे । अरु असंख्य रथ चूर चकोटे ॥
चमर व्यजन अरु छत्र छिटिक्के । नाना बिध ध्वज टूटि पटक्के ४४
ये सब हते राम के बानन । शूल पटा कटि बिछे बितानन ॥
इन सब छिन्न भिन्न रण भूमी । भई भयंकर बिस्तृत भूमी ४५

॥ दोहा ॥

तिन्है निहत लखि रजनिचर, बँचे जु सब घबड़ानु ॥
तहँ अरिपुरजित राम के, सके न सन्मुख जानु ॥ ४६ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० चि० कृ० भा० छ० पंचविंश: सर्ग: २५ ॥

—※:※:※—

छब्बीसवां सर्ग

...र के सेना पति दूषण का ५ हजार फ़ौज लै राम से लड़ना,
सेना समेत उसका मारा जाना, फिर मुखिया २
राक्षसों का पठाना ॥

॥ दोहा ॥

...ब दूषण निज फौज कौ, हती देखि घबड़ानि ॥
...ीम बेग दुर्जयनिह तब, ललकार्‌यो भुजतानि ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

पांच सहस राक्षसन्हि पुकारे। जे कहुं समर भगे नहिंहारे ॥
ते सब शूल पटा तरवारन। अरु पखान द्रुमवर्ष प्रहारन २
छिनु बिछेद बान झहराई। बर्ष्यो चहुंदिश देर न लाई ॥
सो द्रुम और शिला झर भूरी। प्राण हरण महँ है अति पूरी ३
ताहि धर्मधर राम तुरंता। तीक्ष्ण शरन्हि रोक्यो बलवंता ॥
जस श्री महामुनीश सँभारा। नैन मूंदि बर्षा जल धारा ४
रामहु पुनि अति क्रोध बढाये। सब राक्षस बधहित मन लाये ॥
तदनंतर सो क्रोध अबेशा। भौ प्रदीप्त जनु तेज दिनेशा ५
मारि बान सब सैन भगाये। दूषणयुत चहुंदिश घबड़ाये ॥
तब पुनि सेनापति रिसिहाये। दूषण जो रिपु दूषि दुराये ६
सो पुनि बज्र सरिस शर धारे। तिन राघव के बान निवारे ॥
तब रामहु करि क्रोध अपारा। वाके धनु पर शर छुरधारा ७
छोड्यो रण महँ बीर उदारा। चारि तुरग पर चारि प्रचारा ॥
मारि तिन्है तीच्छन शर घाली। अर्द्ध चंद्र सारथि पर डाली ८
कट्यो शीश ता निशिचर केरा। तीन बान उर बेध्यहु फेरा ॥
सो दूषण धनु से होइ छीना। तुरग सारथी प्राण बिहीना ९
पुनि गिरिश्रृंगसरिस गहि पानी। लठ्ठ जाहि लखि तनु पुलकानी ॥
जा मधि कंचन बंद बँधाये। देवसेनमर्दन ज्याहि गाये १०
लोह कील तीच्छन गुथि घोरा। अरि चरबी से पुनि सरबोरा ॥
परसत बज्र समान कठोरा। अरि इंद्रियपुर श्री शिरफोरा ११
महा उरग सम लठ्ठहि ताही। सो पिशाच गहि लडनु उछाही ॥
दूषण दौड्यहु राघव ओरा। क्रूर कर्म जिय चाहि कठोरा १२

॥ दोहा ॥

त्यहि दूषण के दौड़तहि, राघव दो शर मारि ॥
काटयहु भुज आभरण युत, दोनहु एकहि वारि ॥ १३ ॥

॥ चौपाई ॥

कटी बाहु ताकी बड काथा । भूप भई रथा गिरी अमाया ॥
लठ्ठ बिहीन हाथ सो कैसे । गिस्यो इंद्रध्वज आग्यहि जैसे १४
जब कर गिरे दोउ बिलगाई । दूषण भूमि पस्यो महराई ॥
तब मानहुं द्वौ दांत उखाडे । बनगज लोटत टांग पसारे १५
देखि ताहि भूतल महराने । दूषणही रथा निहत सुहाने ॥
साधु साधु रामहि सब बोले । सकल जीव पूज्यो हिय खोले १६
याहि समय बिच क्रोध बढ़ाये । तीन कटक अगुआ गुर्राये ॥
मिलि तीनों राघव प्रति धाये । मृत्यु फांस बँधि जनु घिर्राये १७
महा कपाल १ थूल दृगवारो २ । नाम प्रमाथी ३ अति बल न्यारो ॥
इन मधि महाकपाल निशाटा । शूल उठाइ चलो बड़ ठाटा १८
थूलाक्षहु गहि पटा घुमाई । तथा प्रमाथी परशु चलाई ॥
दौडतहो लखि तिन्है तुरंता । चमकित बानन्हि राम अनंता १९
तीच्छन नोक नये शर घाली । लिहौ अतिथि ज्यों पाय सुकाली ॥
महा कपाल केर शिर काटे । रघुनंदन पुनि औरन्हि डाटे २०
अगिनित बानन की झर लाई । मथ्यो प्रमाथिहि बेग बढ़ाई ॥
थूलाक्षहु के थूल दु नैनन । भस्यो बान बहु करत बिचैनन २१
सो पुनि गिस्यो तुरत मरि भूमी । जनु बहु डालि महाद्रुम झूमी ॥
अरु दूषण के अनुगत बीरन्हि । पांचहजार कुपित छिन धीरन्हि २२

पांच हजारहु शर से मारी । यम पुर पठै दिहो असुरारी ॥
तब दूषण बध सुनि पुनि काना । तासु संग पदचरन्हि महाना २३
महाबली सेना के स्वामिन । क्रोधित खर पठयो द्रुतगामिन ॥
वह दूषण रण महँ गो मारो । सहित पिआदन कादर हारो २४
तुम सब महासेन लै लड़ियो । बहु अकार शस्त्रन्हि से जड़ियो ॥
हे राक्षस गण ! अबसि सँहारो । राम कुमानुष काह ? बिचारो २५

॥ दोहा ॥

अस कहि क्रोधित धाव खर, राम सुलुख खल जीव ॥
संग बिहंगम यज्ञरिपु, श्येनगामि पृथुग्रीव ॥ २६ ॥

॥ चौपाई ॥

दुर्जय कर बीराक्षहु नामा । परुष कालकार्मुक त्यहि ठामा ॥
हेममालि अरु सँग महमाली । सर्पमुखहु रुधिराशन घाली २७
ये बारह बांके बलवाना । सेनाध्यक्ष सैन लै ताना ॥
राम ओर धाये झर्राई । छोड़त शर उत्तम फर्राई २८
तदनंतर शर अनलप्रकाशिन । हेम बज्र भूषित गुण राशिन ॥
बँची तासु सेनहि पुनि मारे । तेजस्वी रघुबर ललकारे २९
ते सब कंचन फल नल बाना । जनु सधूम पावक परिमाना ॥
हन्यो तुरत तिन सब निश्चारिन । मनहुं बज्रविटपनि बडडारिन ३०
सौ सौ निशिचर झुंडहु रामा । कर्णिबान इक इक सो दामा ॥
तथा हजारन तानि हाजारा । मार्यो रणमधि बार न पारा ३१
तिन बानन काटि बर्म अभरना । टूटि फाटि धनु पडे उतरना ॥
शोणित भरे गिरे महि लोटे । जंहां तहां रजनीचर खोटे ३२

छुटे केश रथ पड़े अनंता । ते सब शोणित तर बलवंता ॥
तिन से सकल धरा रहि पूरी । कुशन्हि महाबेदी जनु रूरी ३३
ताछिन मरे निशाचर बृंदन । भयो भयावन बन चित्र गंदन ॥
मानहु भयो नर्क को ठाऊं । रुधिर मांस मिलि कीचडुबाऊं ३४
चौदह सहस निशाचर सैना । भीम कर्म कारिन की पैना ॥
एक राम से गई सँहारी । नर अरु पैदल से अस भारी ३५
तासु सकल सेना कर शेषा । महा रथी खर रह्यो बिशेषा ॥
अरु दूसर त्रिशिरा रिपुघाती । रह्यो निशाचर राम अराती ३६
और सबै रण मधि जे आये । महाबली राक्षस समुदाये ॥
घोर और जग दुसह दुखैया । मार्यो तिन्है लखन के भैया ३७

। मालिनी छन्द ।

खरहु कटक सोई, युद्ध में देखि भारी ।
रघुबर कर जोई, धर्म से भै संहारी ॥
महत रथ सवारा, राम की ओर दौरा ।
तब मनहु सुरेंद्रा, बज्र लै हाथ चौरा ॥ ३८ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० दे० नं० चि० कृ० भा० छं० षड्विंशः सर्गः ॥ २६ ॥

—※:※:※—

सत्ताइसवां सर्ग ।

राममे लड़ने को खरके चलते त्रिशिराका रोकना उसका जाना औ मारा जाना ॥

॥ दोहा ॥

राम सुमुख खर के चलत, निशिचर कटक अधीश ॥
त्रिशिरा नामक कूदि कै, यह बोल्यो नत शीश ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

हे नृप! मोहिंभेजो बल शालिहि। तुम साहसतजि बैठहु खालिहि॥
देखहु राम जोइ महबाहू। रण महँ मरो पडो दुखदाहू २
मैं तुम्हारि कर शपथ जनाऊं। आयुध गहों सांच मन भाऊं॥
जस मैं रामहि मारि गिराऊं। सब राक्षस वध कारिहि पाऊं ३
मैं रण महँ निश्चै यहि मारौं। वा वह मोहिं मारै प्रणधारौं॥
तुम तजि लड़नु उछाह भुआला! दर्शक होहु मुहूरत काला ४
राम मरै जब हर्ष समेता। जैहो तबहिं स्वपुर शुभचेता॥
अथवा मैं जो मरहुं तबाहीं। लड़ो राम सँग जाइ सुबाहीं ५
मृत्यु लोभ दै खरहि प्रसन्ना। त्रिशिरा कीन्ह जबै मतिमन्ना॥
तब सो कह्यो लड़न तुम जाहू। तब सो गयो राममुख चाहू ६
त्रिशिरा रथ चढि हर्षितचेता। चमकित उत्तम तुरग समेता॥
दौडि पड्यो रण रामहु ओरा। तीनशृंग कर ज्यों गिरिघोरा ७
सो त्रिशिरा बर्ष्यो शर धारा। मनहुं महाघन बूंद प्रहारा॥
अरु रूखे मुह सो चिचिआना। जनु जल भीग नगाड बजाना ८
आवत त्रिशिरा निश्चर बीरा। ताहि देखि रघुनायक धीरा॥
धनुष माहिं तब बान चढ़ाये। मारन हेतु चोख चमकाये ९

॥ दोहा ॥

सो अति तुमुल प्रहार भो, राम त्रिशिर दुहु ओर॥
तब देखत जनु बलिन को, गज सिंहहु कर जोर॥ १०॥

एकतीसवां सर्ग ।

खर दूषण आदि राक्षसोंके मारेजाने पर अकंपन दूतका लंकापुरी जाना,
राक्षसों का बध और राम चंद्र का पौरुष रावण से कहना ।
रावण का कोप और सीता हरण के लिये मारीच के पास जाना,
मारीच के समझाने पर फिर लंका को लौट आना ॥

॥ दोहा ॥

तब झट पट जन थान से, जाइ अकंपन दूत ॥
कह्यो बेगि लंकहि प्रबिसि, रावण सन करतूत १

॥ चौपाई ॥

हे राजन ! तुव जनथिति बासी । बहुत निशाचर भये बिनासी ॥
खरहु मर्यो रण सबके भेला । बच्यों काहु बिधि महीं अकेला २
जब अस कह्यो अकंपन बैना । रावण कुपित लाल करि नैना ॥
कह्यो अकंपन से यह आनी । मनहुं तेज से दहि अभिमानी ३
कौन क्रोध से मूरख मेरो ? । जननिवास भयकारिहि हेरो ? ॥
हत्यो जोइ, तिहु लोक मझारी । रहन न पैहै अंग पसारी ४
मोसन रार ठानि सुर राजहु । नहिं लहिसकै नेक सुखसाजहु ॥
अरु कुबेर नहिं छिन सुख पावै । नहिं यम नाहिं विष्णु हरखावे ५
कालहु केर काल मैं भारी । अनलहु को तुरतहि दों जारी ॥
मृत्युहु को मारहुं तुरताई । जो मैं चहौं निजै मन लाई ६
अरु मैं पवन केर बड़ झोंका । मेटि सकौं छिन महँ दै ठोंका ॥
दहों सूर्य पावक निज तेजा । उपजावहुं पै क्रोध कलेजा ७

यहि बिधि कोप दशानन केरा । देखि अकम्पन भय मन हेरा ॥
बांधि अंजुली संशय बाचा । निर्भय बर रावण से जांचा ९

॥ दोहा ॥

निशिचरबर रावणहु त्यहि, तुरत अभय बर दीन ॥
सोउ अकम्पन स्वच्छ स्वर, बोला बचन प्रबीन ॥ ९ ॥
ईश ! सुनो दसरथ सुअन, युबा रूप बर धार ॥
राम नाम बड कन्ध भुज, मोट सुलंब पसार ॥ १० ॥
श्याम जगतयश कांति युत, अतुलबली बिक्रांत ॥
जनस्थान तिन ने हत्यो खर दूषण करि शांत ॥ ११ ॥

॥ सोरठा ॥

रावण निशचर ईश, तबहिं अकंपन बैन सुनि ॥
यह बोल्यो करि रीस, मत मतंग सम सांस लै ॥ १२ ॥

॥ चौपाई ॥

कहो अकंपन ! सो नर रामू । इंद्र सहित धौं ? बनके धामू ॥
मम जन थान माहिं लै देवन । आयो तो नाहिं? बिप्रन सेवन १३
अस रावणके सुनि पुनि बैना । दूत अकंपन चकमक नैना ॥
तासु महामति रघुबर केरा । बल बिक्रम पुनि कह्यो घनेरा १४
राम नाम अति तेज प्रतापी । श्रेष्ठ लडैयन मधि धनु दापी ॥
दिव्य अस्त्रबिद्या महँ पूरो । शूर धर्मरण लडन बरूरो १५
तासु रूप गुण सरिस बलिष्ठा । अरुण नैन दुन्दुभिरव शिष्ठा ॥
छोट भाई लक्ष्मण बर नामा । पूर्ण चन्द्र सम है मुखदामा १६

सो श्रीमान राज वर रामू । त्यहि लखनहि सँग लै मनकामू ॥
तुव जनथान हत्यो सो आई । ज्यों पावक लहि पवन जलाई १७
नहिं कौ देव महात्मा आये । नहिं कछु सम्मति काहु मिलाये ॥
केवल एक राम शर छोरी । कंचन पुच्छ उड़ाइ दरोरी १८
सांप और केहरि है आना । खायहु निशिचर झुंड महाना ॥
जहँ जहँ भगे निशाचर बीरा । है भयभीत पाइ तन पीरा १९
तहँ तहँ भगिहु सक न बँचाये । रामहि थित आगे लखि पाये ॥
राम याहि बिधि दै बहु त्रासा । तुवजनथानहिं अनघ! बिनासा२०

॥ दोहा ॥

दूत अकंपन के वचन, सुनि रावण कह बैन ॥
जनस्थान जैहों हनन, राम लखन बुधिपैन! ॥ २१ ॥

॥ चौपाई ॥

जब रावण बोल्यो अस बानी । तब यह कह्यो अकंपन ज्ञानी ॥
सुनो भूप! जस कहों चरित्रा । राम केर बल पौरुष चित्रा २२
कुपित राम रुकिबो कठिनाई । बल बिक्रम है विपुल बड़ाई ॥
पूरण वेग नदिहु कर धारा । फेरि सकै करि शर भरमारा २३
सो तारा ग्रह नखत बिहीना । नभहि सकैकरि छिनमहँ लीना ॥
यही राम जनु श्रीमति भूमिहिं । डूबत सकै उबारि सुभूमिहि २४
भेदि समुद्र केरि मर्यादा । सकै डुबाइ लोक बिनु बादा ॥
तथा सिंधु कौ बेग तरंगा । पवनहिं रोंक सकै शरसंगा २५
लोक सकल पुनि सकै सँहारी । निज बल से यश जगत पसारी ॥
शक्तिवान पुरुषोत्तम सोई । प्रजा सृष्टि पुनि करनु सँजोई २६

हे दशशीश ! राम को नाहीं । सकिहो जीति तुमहुं बरवाहीं ॥
नहिं राक्षससब नहिंतिहुलोका । जस पापिनसे स्वर्ग[1] बिशोका २७
ताहि देव दानव नहिं कोऊ । मारि सकै मैं जानहुं सोऊ ॥
इहै उपाय तासु बध केरा । सुनु मोसन मन लाइ निबेरा २८
तासु प्यारि जग उत्तम नारी । सीता नाम सुकटि सुकुमारी ॥
नव योवनि सम अंग बिभागी । नारिरत्न रत्नन्हि छबि पागी २९
तासु तुल्य नहिं देव कुमारी । अरु गंधर्ब अप्सरहु भारी ॥
सीमंतिनिहु नाग की कन्या । पुनि मानुषी काह? तियगन्या ३०

॥ दोहा ॥

त्यहि नारिहि तुम काहु बिधि, हरौ मान मथि तासु ।
बिनु सीता के राम कौ, प्राण न रैहै आसु ॥ ३१ ॥
तासु अकंपन के वचन, लग्यो रावणहिं नीक ॥
बीर अकंपन से कह्यो, मन बिचार करि ठीक ॥३२॥

॥ चौपाई ॥

बहुत नीक, भोरहीं सिधैहों । मैं अकेल सारथि संग लै हों ॥
हर्ष भरो जानकिहि लिऐहों । यहि गढ़ लंक पुरिहि पैठैहों ३३
यह कहि खरगति खर नधवाये । रथ सूरज सम चमक बढ़ाये ॥
जासु प्रकाश दशौ दिश छाये । रावण गयो तुरत हरखाये ३४
सो रथ निशिचर पतिको भारी । उड्यो गगन जहं उडुगणचारी ॥
भरि सन्नहट सोह सो कैसे ? घन बिच चंदचलनि हो जैसे ३५
सो रावण दूरे चलि गयऊ । ताड़क सुत आश्रम ढिग भयऊ ॥
मारीचहु से पूजा गह्यऊ । भोजन भक्ष राक्षसी लह्यऊ ३६

१ जैसे पापी लोग स्वर्ग को नहीं जीत सक्ते अर्थात् नहीं पासक्ते ।

त्यहि रावणहि निजै मारीचा । पूजि सु आसन जल दै सींचा ॥
सुंदर अर्थ भरी मृदु बानी । पुनिबोल्यो बहुबिधहितसानी३७
कहो लंकपति! कुसल भलाई? । हैं तो खुश ? राक्षस समुदाई ॥
बिनु जाने मैं बहुत सकाना । जाते तुम आये तुरताना ३८

॥ दोहा ॥

तेज भरे लंकेश से, अस मारीच बिचार ॥
बोल्यो, तब राउ यह कह्यो, बैन बैनबिद सार ॥ ३९ ॥

॥ चौपाई ॥

मरे तात ! मेरे रखवारे । राम कठिनकारी हठि मारे ॥
मम जन थान अटूट लड़ांका । सो सब नाश कियो रणबांका ४०
ता मधि होहु हमार सलाही । राम नारि मैं हरण उछाही ॥
यह रावण के सुनि कटु बचना । मारिचहु बोल्यो करि रचना ४१
अरे निसाट सिंह ! बौरायो । किन सियहरण कुराह बतायो ?
को तोसन सुख लहि अब खोवै ? है अरि गुप्त मित्र बनि रोवै ४२
"सीतहि इहँ हरि ल्यावहु" ऐसा । कह्यो कौन ? मोसन कहुतैसा ॥
को चह उन्नति नाश घनेरी । कुल महिबासि राक्षसन केरी४३
जिन तोही अस दीन उछाहा । सो निःसंशय अरि नतु काहा ?
अति बिषैल अहि मुखसे दंता । तो सन चह उखरावन हंता ४४
कौन तोहि अस कर्म दिखाई ? कुपथ चलाइ दीन्ह भकुआई ॥
सुख से सोवत तोहि भुआला ! शिर महँ ठोकर दीन्ह निराला ४५

—:*:—

नाराच छन्द ।

बिशुद्धबंश जन्म सोइ शुंड दंड जानिये ।
प्रताप जोइ मदहु, दोउ बाहु दंत मानिये ॥
सुयुद्ध मध्य राम को गयंद गंध[1] मानिये ।
लड़ाइ काह? ईश! या समै न डीठ ठानिये ॥ ४६ ॥
वही सुयुद्ध मैं प्रबीन राक्षसों बिदारई ।
लड़ाइ की कड़ाइ संधिबाल गुच्छ धारई ॥
नृसिंह सोवता तुम्हैं जगावनो न सोहई ।
नराच नोक नख, खुली कृपान दंत जोहई ॥ ४७ ॥
कमान ग्राह है जहां भुजा भमंक पंक है ।
तरंग तीर माल, अगम नीर युद्ध डंक है ॥
पताल राम, तासु बक्त्र बड़वानल बंक है ।
न निश्चरेश! तोर तहां कूदिबो निशंक है ॥ ४८ ॥
सुनों जु राक्षसेंद्र! लंकईश! रीस छोड़ि कै ।
पलाहु लंक ह्वै प्रसन्न कहूं हांथ जोड़ि कै ॥
तुहूं अपानि नारिन सँग रमु निते सुजाइ कै ।
उतै रमैं रमापति तिय संग बनहिं धाइ कै ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

त्यहि दशशिर रावणहिं यह, कह मारीच सनेह ॥
लौटयहु लंका पुरिहि सो, पैठयहु उत्तम गेह ॥ ५० ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन चि०कृत भा० छं० एकत्रिंशः सर्गः ॥ ३१

—:※:※:※:—

1 जब हाथी मदसे मतवाला होता है तब उसके मदगंधसे दूसरे हाथी भाग आते हैं।

बत्तीसवां सर्ग ।

खर दूषण आदि राक्षसों को श्रीराम के हाथ से मरे देख सूर्पनखा का
चिघार कर रावण के पास लंका पुरी का जाना
और सूर्पनखा की देखी हुई रावण की बिकट राक्षसी दशा का वर्णन ।

॥ दोहा ॥

सूर्पनखा उत देखि तब, चौदह सहस निशाट ॥
मरे अकेले राम सन, भीम कर्म जिन ठाट ॥ १ ॥
पुनि दूषणयुत खरहु कौ, औ त्रिशिरहि रण मांहिं ॥
देखि मरे चिचिआनि अति, घन ऊपम मलि बांहिं ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

सो पुनि देखि राम कौ काजा । कठिन और सन करनु सुसाजा ॥
अति बिकलाइ गई सो लंका । रावण पुरी जहां निहिशंका ३
सो देख्यो त्यहि बैठ बिमानहि । रावण दीप्त तेज बलवानहि ॥
मंत्रिन सहित सभा मधि छाजा । ज्यों मारुतगण युत सुरराजा ४
रवि प्रकाश सम आसन माहीं । बैठो कंचन रचित सुबाहीं ॥
स्वर्णबेदि पर ज्यों हविखाता । ज्वलितअग्निसम तेज दिखाता ५
देवन अरु गंधर्वन प्रेतन । ऋषिगणसकल महामतिचेतन ॥
सब से अजित समर बर शूरहि । ज्यों मुख फारि काल यम पूरहि ६
देव असुर संग्राम लडैयहि । महा बज्र तन दाग लगैयहि ॥
ऐरावत्त दांतन अग्र भागन । दागबिंदु युत उर रुचि लागन ७
बीसभुजहि औ बर दशशीसहि । दर्शनीय छत्रादि धरीशहि ॥
लक्ष बिशाल बीर वर बंकहि । राजचिन्ह चिन्हित निरशंकहि ८

दमकत कंचन भूषण धारिहि । मणि बैदूर्य जड़ित छबिकारिहि ॥
सुंदर भुजा शुक्ल बर दंतहि । मुख महान तन गिरिसम कंतहि ९
जब देवन से कीन्ह लड़ाई । बिष्णु चक्र से घावहु खाई ॥
और सैकड़न अस्त्र प्रहारन । ताड़ित महा युद्ध ललकारन १०
देव समस्त प्रहारहु त्याग्यो । तबहुं अंग बिच घाव न लाग्यो ॥
जो अक्षुब्ध सागर समुदाई । तिन्है सुखावन हारहु राई ११
पर्वत शिखर उठाइ फिकैयहि । सुर समूह रण बिच मर्हैयहि ॥
सकल धर्म की मूल कटैयहि । परदारा महँ चित्त डटैयहि १२
सकलदिव्य हथिआरचलैयहि । यज्ञ विघ्न करि सदा दलैयहि ॥
भोगवती अहिपुरिहि पधारी । नाग वासुकिहि जीति सुरारी १३
तक्षक की प्यारी सुठि नारी । हरयो हराइ जोइ अघचारी ॥
जो कैलाश शिखर पर जाई । नरबाहनहि[1] जीति खल राई १४
पुष्पक नाम बिमानहु तासू । जो त्यहि हरयो कामगति जासू ॥
बनहु चैत्र रथ देवन केरा । नलिनि ताल नंदन बन भेरा १५
ईन्हैं क्रोध करि जोइ बिनाशे । बहु देवन बन बीर्य प्रकाशे ॥
चंद्र सूर्य जो बड भगमानो । उदय होत जो अरितपदानी[2] १६
तिन्हैं बाहु द्वौ रोपि निवारो । जो बड शैल शिखर सम बारो ॥
दश हजार बरसहु तप कीन्हे । महाघोर बन बास मन दीन्हे १७
प्रथमहि धीर शंभु कहँ अर्पे । जो निज शिरहि काटि सहदर्पे ॥
देव दैत्य गंधर्ब पिशाचन । पक्षिउरग सन नाहिं विनाशन १८
जासु अभय संग्रामहु माहीं । नरहि छोडि की घातक नाहीं ॥
स्तुत श्रुतिमंत्र पुण्य जो कर्मा । यज्ञ बीच द्विजबरन्हि सुधर्मा १९
सोइ यज्ञ हबि थित आगारन । जो बलवान बिनाशनु कारन ॥
यज्ञ पूरि दक्षिणा समय लहि । हरै दुष्ट द्विज हति कुकर्म गहि २०

१ कुबेर को जीत के ।   २ बैरी को दुख देनेवाला ।

अति कर्कश निर्दयमन निठुरहि । प्रजाअमंगलरत मतिचतुरहि ॥
सब जीवन कौ निसै रवैयहि । सकललोकभयभीति दिवैयहि २१

॥ दोहा ॥

क्रूर बलिहि अस भाइ कौ, दीख राक्षसी सोइ ॥
दिव्य वस्तु आभरण युत दिव्य माल गल जोइ २२
आसन बैठो त्यहि समय, मनहुं काल धरि रूप ॥
मुनि पुलस्त्य कुलनंदनहु, भाग्यशालि खल भूप २३
निकट जाइ बोली बचन, सूर्पनखा घबड़ानि ॥
बैरि दहन रावण हुसे, जो मंत्रिन मधि सानि २४

त्रिभंगी छन्द ।

त्यहि नैनबिशालहि, मद भरि लालहि–
निशिचरपालहि दरसाई ।
भय बंश बिनाशन, लोभ प्रकारन–
मोहि रामछबि लखि पाई ॥
जो निर्भय चारिणि, धर्मबिदारिणि–
सूर्पनखा अति बिकलाई ।
दारुण अति बानी, हाल बखानी—
ज्यों कुरूप किय रघुराई ॥ २५ ॥

इति श्रीब्रह्म० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छं० द्वात्रिंशः सर्गः ॥ ३२

—:※:※:※:—

तैंतीसवां सर्ग।

रावण की प्रति सूर्पनखा का खीझ कर नीतिभरे बचनों से निन्दा करना, तथा रामचन्द्र से लड़ने की उत्तेजना का देना।

॥ दोहा ॥

शूर्पनखा तब तेज ह्वै, क्रोध सहित कटु बैन ॥
लोक रुवैया रावणहि मंत्रिन मधि कह पैन ॥१॥

॥ चौपाई ॥

रे नृप! मत्त ! काम के भोगन । इच्छाचार! निरंकुश! योगन ॥
याते उपजि घोर भय तोरी । जाननु योग्य न जानसि थोरी २
जो नृप इंद्रिय भोग रमंता । काम असक्त नारि बस मंता ॥
लोभिहि नाहिं प्रजा बहु मानै । ज्यों मसानअनलहि जग जानै ३
समय पाइ जो नृप निजकाजा । थित ह्वै करै न आपुहि राजा ॥
सो नृप निहिंचैं राज्य समेता । तिन कार्यनि युत नाश उपेता ४
जो राजा बिनु युक्ति अचारा । पराधीन दुरदरसन बारा ॥
ताहि दूर से मनुज घिनाहीं । नदी पंक ज्यों गजहु डेराहीं ५
जो नृप नहिं रक्षै निज देशहि । तासु राज्य रिपु हरै हमेशहि ॥
ते नहिं आपनि बाढ प्रकाशैं । ज्यों सागर गिरि डुबे न भासैं ६
इंद्रिय जित सुर गंधर्बन से । अरु बिगार करि दानवगन से ॥
ह्वै अटपट चारी अरु चापल । कैसे नृप ह्वैहै? तू हतबल! ७
तू तो बाल सुभाव बनाये । बुद्धि हीन है राक्षस राये! ॥
जानन जोगु ताहि नहिं जाने । कैसे नृप ह्वैहै ? अभिमाने ८

जिनके दूत और घन डंका । तथा नीति, हे विजयिन बंका! ॥
नहिं बस महं हैं सकल बिरूपा । जस प्राकृत नर तस ते भूपा ९
जिन दूतन से सुनि सब राजा । लखहिं दूरथित अनरथ साजा ॥
ताते कहैं लोग यह गाई । दीर्घनयन हैं नृप समुदाई १०
तुम्हरे दूत ठीक नहिं मानूं । अरु तुव मंत्री निपट अजानू ॥
जाते स्वजन बिनाश न जानैं । अरु जनथान निहत नहिं कानैं ११
चौदह सहस निशाचर योधा । भीम कर्म कारी रण बोधा ॥
एक राम से गे सब मारे । खरहु सहित दूषण संघारे १२
ऋषिन अभय दीन्ह्यो मनभाई । दंडक बन कहँ क्षेम वनाई ॥
तुव जनथानहिं साफ उजारे । राम कठिन करतूति पसारे १३

॥ दोहा ॥

तू तो लोभी मत्त अरु, पराधीन लंकेश ! ॥
उपज्यो भय निजराज्य मधि, नहिं जानसि टुक लेश ॥ १४ ॥

॥ चौपाई ॥

टेढ मंत्रि जन सन टुक दाता । गर्बित अरु प्रमत्त शठ गाता ॥
ता नृप दुख लखि कोउ न धावें । मंत्रि हितू सब मुहँ बिचकावें १५
बंधुघृणित अभिमानहुलासिहि । आपुहि अपुनमहत्व प्रकासिहि ॥
अतिक्रोधिहि नृपनरहि तुरंता । स्वजनहु दुखपर होहिं हनंता १६
जो नृप बैठि काज नहिं देखै । भय के समय नहीं भय लेखै ॥
तुरत राज्य से जाइ उतारा । तृण सम होइ सु यहि संसारा १७

सूख काठ से होहिं सुकाजा। कैला औ धूलिहु सन साजा ॥
पै जो नृपति राज्य च्युत होई। ताते काज सरै नहिं कोई १८
ज्यों पुरान पट पहिरि चिथारे। अरु माला ज्यों मर्द्दि बिगारे ॥
या बिधि राज्य भ्रष्ट नृप कोऊ। यद्दपि समर्थ निरर्थक सोऊ १९
जौ पै सावधान रह भूपा। अरु सर्बज्ञ जितेंद्रिय रूपा ॥
तथा कृतज्ञ धर्म धर धीरा। सो नृप बहु दिन धरै शरीरा २०
जो नृप आंख मूंदि पै सोवै। नीति नयन से जागत होवै ॥
प्रगट क्रोध अरु देन प्रसादा। सो नृप जन पूजित निरबादा २१
तू तो रावण! निपट कुबुद्धी। इन सब गुणन्हि बिहीन बिरुद्धी ॥
जासु तोर दूतहु अनजाना। निशिचरगण वध भयो महाना २२

॥ सवैया छन्द ॥

घर बैठरहि तू अपमान करै अरि को, नहिं मारन बुद्धि सुधारै।
बिषयी दिनरैन अजान सही, नहिं देशहु कालको तत्व बिचारै ॥
गुणदोषबिन्होरिकी बुद्धि नहीं, बिनु युक्ति सदा सब काम प्रचारै।
तुव राज्य बिपत्ति भरी सिगरी, तुरतै तू बिपत्ति लहैगो अबारै २३

या बिधि सों निज दोषनि को, सुनि रावण सूपनखा जिन्ह गायो।
भूप निशाचर वृन्दनि को, उर अंतर देखि सु बुद्धि बढायो ॥
है अभिमान पराक्रम को, धन धान्य गुमान सबै प्रगटायो।
सो बहु काल बिचार कियो, तब रावण लंकपती मन भायो २३

इति श्रीमद्वा० रा० आ०कां० पं०देवकीनंदन चि० कृत भा०छं० त्रयस्त्रिंशः सर्गः ॥ ३०

—····※※※····—

चौंतीसवां सर्ग ।

सूर्पनखा के नीति भरे कठोर बचन और खर दूषण आदि का बध सुन
रावण का कोप सहित रामचंद्र का ठाटबाट पूछना,
फिर सूर्पनखा के मुख से राम लक्ष्मण का पौरुष,
तथा सीता जी का रूप गुण बखानना,
सीता हरण का प्रलोभन देना ॥

॥ दोहा ॥

सूर्पनखहि तब देखि जो, बोलति बैन कठोर ॥
रावण मंत्रिन बीच त्यहि, पूंछयो कोपि सजोर ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

अरे ! राम को कस बल बैसा ? कसहै रूप? पराक्रम कैसा ?
पुनि दंडक बन महँ क्यहि हेतू । पैठयो? जहँ दुस्तर नर चेतू २
राम संग कहु का हथिआरा ? जाते तिन निशिचरनि सँहारा ॥
खर जाते रण मधि गो मारा । दूषण औ त्रिशिरहु रखवारा ३
हे सुन्दरि ! तू तत्व बखानू ? । तोहि कुरूप कीन्ह किन प्रानू? ॥
जब अस कह्यो निशाचरईशा । तब सुपनखा बिकल भरि रीसा ४
तहँ पुनिरामहि जेहिबिधि देखे । कहन लगी जस चहिय बिशेखे ॥
लंबित भुज द्वौ नयन बिशाला । पहिरे चीर कृष्णमृग छाला ५
काम देव सम रूप अनूपा । दशरथनन्दन राम सु भूपा ॥
इँद्रधनुष सम चमकित चापा । कनक बंद ता मधि कसि दापा ६
फेंकहि ज्वलित बान धै तानी । मनहुं सर्प बिषधर धुरधानी ॥
नहिं खींचत पकडत शरघोरन । नहिं छोड़त बल बंकित ओरन ७

धनु तानत पुनि बान चढाये । मै नहिं युद्ध करत लखि पाये ॥
पै त्यहि सेनहि मरत निहार्यों । बान बृष्टिसे हाय!!! उचार्यों ८

॥ दोहा ॥

इंद्र बरसि जिमि उपल बहु, तुरत अन्न कर नाश ॥
तिमि निशिचर चौदा सहस, बली मरे लहि त्रास ॥ ९ ॥

॥ चौपाई ॥

तीच्छन पैन शरन्हि संहारे । राम अकेल पैदलहि मारे ॥
तीन घड़ी के बीचहु बीचू । दूषण सहित खरहु की मीचू १०
दीन अभय बर ऋषि जन काहू । दंडक बनहि छेम बिन दाहू ११
बची अकेलि काहु बिधि सैंहीं । नाशा कान छीन लखु तैहीं ॥
स्त्री बध पाप शंक मनलाई । राम महामति दीन बचाई १२
तासु भाइ अति तेज प्रतापी । गुण बल तुल्य सबैबिधि थापी ॥
पुनि अनुरक्त भक्त है तासू । लक्ष्मण नाम बली सँग जासू १३
अति क्रोधी दुर्जय बड़ तेजा । बुद्धिमान बल धीर कलेजा ॥
राम केर सो दक्षिण बाहू । जनु नित प्राण बहिश्चर ताहू १४
अरु पुनि राम केरि इक प्यारी । पूरण चंद्र बदनि छबि न्यारी ॥
धर्मपतिनि सुठिनैन बिशाला । निलपतिप्रीतिनिरत सो बाला १५
सुघर जंघ नासा अरु केशा । सुंदर रूप यशस्विनि बेषा ॥
जनु दंडक बन की श्री देवी । अरु लक्ष्मी दूसरि नृपसेवी १६
तापित सोन सरिस रँग अंगा । ऊंच लाल नख शुभ बर ढंगा ॥
सीता नाम युवा बय वारी । पातल कमर बिदेह दुलारी १७
देबिहु नहिं गंधर्व कुमारी । नहिं यक्षी नहिं किन्नरि नारी ॥
जस सियरूप न तस कहुं देखी । मैं पहिले सुधिमाहिं बिशेखी १८

जासु सिया ह्वै रहै भामिनी । ज्यहि पुनि लिपटै हर्षि कामिनी ॥
सोइ सदा जीवै तिहु लोका । इंद्रहु से बड़ देव बिशोका १९

॥ दोहा ॥

सुठिशीला तनु प्रीतिकर, अतुल रूप महि सोइ ॥
तुव लायक वह नारि तू, बरपति तासु न कोइ ॥ २० ॥

॥ चौपाई ॥

ताहि थूल जघनिहि मैं देख्यों । कठिन पयोधर ऊंचहु लेख्यों ॥
वरबदनिहि तुव नारि बनावनु । चह्यों इहां फुसलाइ लिआवनु २१
याते लखन क्रूर सठ मोहीं । कीन बिरूप महाभुज! योहीं ॥
त्यहिबै देहिहि लखि पुनिआजू । जो पूरण शशि आनन भ्राजू २२
मन्मथ को तू बान निशाना । ह्वैहै अवसि आकुलित प्राना ॥
जौ पै ता मधि इच्छहु तोरी । भार्या करनु होइ रस बोरी २३
तौ तुरतहि उत पैर बढ़ाऊ । बिजय हेतु तुम चतुर सुभाऊ ॥
जौ त्वहि रुचै मोरि यह बानी । हे निश्चरपति! सुखकी खानी ॥
तौ निशंक ह्वै करु तुरताई । मोर कहा सुनु रावण भाई ! २४
इन मंत्रिन निकामबुद्धि जानी । करो महाबल ! निज मनमानी ॥
सुठि अंगिनि जाते सिय नारी । होहिं तोरि लंकेश ! पिआरी २५

त्रिभंगी छन्द ।

जन थान निवासिन निशिचर राशिन—
सकल बिनाशिन देखि उतै ।
शर डसित भुजंगन रघुबर ढंगन—
बिकलित जंगन समझि चितै ॥

पुनि खरहु सँहारन, दूषण दारण–
त्रिशिरहु मारण सोचि इतै ।
अब तुमहिं सुजानू, मति अनमानू–
करहु काज निज जानि हितै ॥ ३६ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ०कां० पं०देवकीनंदन चि० कृत भा०छं० चतुस्त्रिंशः सर्गः ॥ ३४

—····※※※····—

पैंतीसवां सर्ग ।

सूर्पनखा की प्रलोभन बात सुन रावण का काम बिवस होना,
सीता हरण की इच्छा मंत्रियों से कह सारथी को ले रथ चढ
अनेक देश देखते फिर मारीच के पास जाना ॥

॥ दोहा ॥

शूर्पनखा के बैन तब, सुनि गद्गद भरि काम ॥
मंत्रिन निजकर्तव्य कहि, हियदृढ तज्यो स्वधाम ॥१॥

॥ चौपाई ॥

सिया हरन उर अंतर रोची । गुण अरु दोष सबै मन सोची ॥
अनुचित उचित सबै निरधारे । बल अरु अबल बिबेक पसारे २
शूर्पनखा अरु दूत अकंपन । कह्यो जाइ सो करिदृढ निजमन ॥
है थिरबुद्धि चल्यो तदनंतर । रथ तुरंग शाला कहँ नृपवर ३
जाइ यानशाला बिच गुप चुप । निश्चर अधिप औरजनसे छुप ॥
सूतहि कह्यो बैन तुरताई । "जोरहु रथ कछु देर न लाई" ४
जब अस कह्यो निशाचरनाथा । छिन महँ द्रुतसारथि बल साथा ॥
रथ नाध्यो उत्तम द्रुत गामी । जाहि कह्यो रावण खल कामी ५

तब इच्छागामी रथ माहीं । कनक रचित पर बैठि सुबाहीं ॥
जा मधि बर खर नधे सुराजे । बदन पिशाच कनक छबिभ्राजे ६
मेघ समान जासु रव घोरा । ता पर अनुज कुबेरहु केरा ॥
चढ़ि निशिचरभूपति श्रीमानू । गयो समुद्र पार बलवानू ७
स्वेत चमर चहुं ओर झुलाये । छत्रहु स्वेत दशानन भाये ॥
चीकन मणि पन्ननि चमकीला । तापित सुवरण भूषण शीला ८
दशकंधर भुज बीस भयंका । देखन योगु सुसाज चमंका ॥
सुरगण बैरि मुनीन्द्र बिनाशी । दश शिर जनु पर्बत की राशी ९
इच्छाचर रथ पर थित होई । राक्षस अधिप सोह अति जोई ॥
भूषण जनु घन दामिनि संगा । छत्र मनहुं नभ घटा कुढंगा १०

॥ दोहा ॥

बिबिध फूल फल बिटप बहु, पूरित देश अनूप ॥
सागर के तट शैल युत, लखत चलो बलिभूप[1] ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

शीतल अरु मंगल जल वारी । फुली कुमुदिनी जहँ चहुंबारी ॥
अरु बिशाल आश्रमथल जहँवां । बेदी रचित परमछवि तहँवां १२
कदली दल से बन जहँ सोहे । नरियर फल संयुत थल जोहे ॥
शाल ताल अरु जहां तमाला । पुष्पित बिटप गुछी जनुमाला १३
अतिशय नियत अहार करैया । जहँ मुनिबृन्द परम ऋषिरैया ॥
जहां नाग खग अरु गंधर्वा । किन्नर बसहिं हजारन गर्वा १४
जीते मदन सिद्ध जहँ राजैं । चारण गण शोभित धुनि गाजैं ॥
ब्रह्मपुत्र ऋषि अरु नख धारी । बालखिल्य मरिचप[2] मखकारी १५

१ बली रावण राजा । २ सूर्य की किरिन पीने वाले ऋषि

दिव्य अभूषण अरु बर माला । जहँ धरि दिव्य रूप बहुबाला ॥
क्रीड़ा रत बिधि जानन वारी । भरीं अपसरा सहसहु नारी १६
जहां देवकन्या बहु राजैं । श्री शोभा संपति युत छाजैं ॥
देव दानवन के जहँ बृन्दा । फिरैं अमृत करि पान अनंदा १७
हंस क्रौंच अरु जल पैराऊ । जहँ सारस प्रसन्न कल गाऊ ॥
मणि पन्ना चिक्कन पाखानो । जहँगभीरनिधिसम झलकानो १८
स्वेत पीत रँग बडे बिशाले । दिव्यमाल्य युत झपकन वाले ॥
ऊंचे स्वर गीतनि झहनाये । चहुंदिश देव बिमान सुहाये १९
करि तप जे सुर लोकहु जीते । जात चले नित मनहिं सप्रीते ॥
गुनि गंधर्ब अपसरन बृन्दा । देख्यो रावण सबहिं अनंदा २०
गुग्गुल आदि गोंद युत मूलन । सहस भांति चंदन द्रुम फूलन ॥
अरु सुंदर बन देखत भालत । नासा तृप्त गंध जहँ पालत २१
अगुरुअधिकजिनबननबिराजैं । अरु उपबन शोभा छवि छाजैं ॥
सुंदर फल तक्कोलन बृच्छा । अरु सुगंधि दायक बड़गुच्छा २२
पुष्प तमाल बिटप घन घेरे । मरिच झाड़ि झौंरे बहुतेरे ॥
अरु मोतिन के ढेर लगाये । सूखे चमकहिं तीरन्हि भाये २३
तथा लगी मूगन की रासी । पर्बत सुघर शिला चहुंपासी ॥
जिनके शृङ्ग कनक के देखे । अरु चमकित चांदिनके लेखे २४
झिरना अधिक मनोरम कारी । चित प्रसन्न छबि अद्भुत न्यारी ॥
धन अरु धान्य भरे ढिग गांऊं । नारि रत्न पूरित सब ठाऊं २५

॥ दोहा ॥

गज तुरंग रथ घने जहँ, लखत नगर चित गाहि ॥
त्यहि रसील सम छितिथलिह, तन मृदु पवन सुहाहि ॥२६॥

लख्यो सिंधु ढिग स्वर्ग सम, देश अनूपहि ताहि ॥
तहँ मेघ सम घन बटहि, घेरि रहे मुनि जाहि ॥ २७॥

॥ चौपाई ॥

चारहु ओर जासु बढि शाखा । सौ योजन जो महि घिरि राखा ॥
जहां कबहुं इक गरुड़ पखेरू । लै गज कच्छप मांस भुखेरू २८
सोइ गरुड़ भक्षण मन लाई । बैठि डाल पर बल बिपुलाई ॥
ता बट की शाखा तुरताई । उत्तम खग को बोझहु पाई २९
अधिक पंख की लहि गरुआई । बल से टूटि गई अरराई ॥
तहँ बैखानस, माष, मुनीशा । बालखिल्य, मरिचप, नतशीशा ३०
ब्रह्मपुत्र अरु धूम्रक नामा । मिलि बैठे मुनिवर त्यहि ठामा ॥
तिन पर दया गरुड तब कीन्हे । शतयोजन शाखहि धरि लीन्हे ३१
फटी शाख बल से सँग लाये । अरु द्वौ गज कच्छपनिहि दबाये ॥
एकहि चंगुल धर्म शुजाना । उडे भखत आमिष बलवाना ३२
ता शाखहि सो शुचि गखराई । गुहक राज्य महँ दीन्ह गिराई ॥
देश नष्ट करि हर्ष बढ़ाये । बटतल बैठे मुनिन्ह बँचाये ३३
सोइ हर्ष लहि पुनि खगनाथा । कहयो दून बिक्रम इक साथा ॥
तबहि अमृत आनन के हेतू । बुद्धिमान मति कीन्ह सुचेतू ३४
जाइ लोह जालहि धै फारी । अरु बर रत्न अगार बिदारी ॥
सुर महेंद्र भवनहु से बीरा । गुप्त अमृत हरिलायहु धीरा ३५

॥ दोहा ॥

त्यहि महर्षिगण युतबटहि, तथा गरुड कृत ठूंठ ॥
नाम सुभद्रहि तहँ लख्यो, धनद अनुज दशमूंड ॥३६॥

॥ चौपाई ॥

तासु नदीपति उदधिहु पारा । लांघि गयो रावण महिभारा ॥
देख्यो आश्रमपदहु इकांता । पुण्य रम्य बन बीच सुशांता ३७
ओढे तहां कृष्ण मृग छाला । अरु शिर जटाजूट विकराला ॥
नियत अहार निशाचरपालहि । मारीचहि देख्यो शुचिचालहि ३८
सो रावण तहवां पुनि गयऊ । विधिवत तासन पूजा लह्यऊ ॥
मारीचहु से निशिचर राजा । सब कामना पिशाचो साजा ३९
ताहि पूजि निज कर मारीचा । भोजन पान ऊंच अरु नीचा ॥
तदनंतर लहि उचित सुबानी । बोल्यो रावण को हित मानी ४०
कहो कुशल तुव लंका माहीं । निशचरनाथ! अहै धौं नाहीं ?
क्यहि लगि इहां दुबारा आये ? तुम रावण! निहिंचैं तुरताये ४१

॥ सोरठा ॥

जब अस कह मारीच, महातेज दशशीश सन ॥
तब यह बोल्यहु नीच, रावण बानी वचनविद ॥ ४२ ॥

इति श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे अरण्यकांडे पं० देवकीनंदनत्रिपाठिकृत
भाषाछंदानुबादे पंचत्रिंशः सर्गः ॥ ३५ ॥

—····※※※····—

छत्तीसवां सर्ग ।

रावण का सीता हरन के लिये मारीच से सोने का मृग बन कर सीता के आगे चरने को कहना, उसे सुन मारीच का डरना ॥

॥ दोहा ॥

सुनो तात मारीच! मम, बचन कहों परमान ॥
मैं दुःखित, मम दुखी कर, आपुहि शरण महान

॥ चौपाई ॥

तुम जानहु इक मम जन थाना । जँह खर नाम भाइ मम प्राना ॥
अरु दूषणहु बाहु बल शाली । शूर्पनखा बहिनी बिकराली २
त्यों त्रिशिरा निशिचर बरबाहू । जीवभखनु महँ अतिपटु वाहू ॥
और वहुत बल धारक शूरा । जो निशान मारहिं भर पूरा ३
बसैं निशाचर मम मति पाई । सेना कोट छावनी डाई ॥
धर्म चारि मुनि गण वन जेते । तिन्हैं सतावनु लगि निजनेते ४
चौदह सहस निशाचर बृंदा । भीम कर्म करि रहे अनंदा ॥
शूर लड़नु उत्साह करैया । खरकौ मन लखि हुकुम दुरैया ५
जनस्थान मधि या छिन तेऊ । बसे रहे बल धारक जेऊ ॥
पुनि ते राम संग रण माहीं । लड़न हेतु उद्यत बर बाहीं ६
बहु बिधि अस्त्र शस्त्र बरसैया । खर आदिक सब बीर लड़ैया ॥
पै रण मधि सो राम रमैया । कीन्ह कोप अचरज दरसैया ७
टुकहु कठोर बैन नहिं भाखी । शरचढ़ाइधनुतानिअभिलाखी ॥
चौदह सहस राक्षसी सैनहि । उग्र तेज भय कारि सुनैनहि ८

मार्यो तिन्हें दीप्र शर साधी । मनुज एक पैदल अपराधी ॥
खरहि हत्यो रणमधि ललकारी । अरु दूषणहि तुरत संहारी ९
त्रिशिरहु मारि अभय करिदीन्हे । दंडकबनहि मुनिन्ह हितचीन्हे ॥
जाहि पिता करि क्रोध निसारो । नारिसहित जनु मरो बिचारो १०
सो त्यहि मम सेनहि संहारे । राम नृपतिकुल को अघभारे ॥
पुनि कुशील कर्कश मति तीखा । मूरख लोभि कुइंद्रिय दीखा ११
धर्म छोड़ि अधरम मति ग्राही । जीवनु अहित करनु हियचाही ॥
जो बिनु बैर बिपिन महँ आई । धर्महीन इक बलहि[1] दिखाई १२
काटि कान अरु नाक बिदारे । मम भगिनिहि कुरूप करिडारे ॥
जन निवास ते तासु सुनारिहि । सियहि देवकन्यासमप्यारिहि १३
हरि लैहों करि बल सुनु प्यारे ! । ता मधि होहु सहाय हमारे ॥
तोर सहाय पाइ हे बीरा ! । जो पै रहहु पास थित धीरा ! १४
तौ मैं रहौं न भाइन आशा । सब देवन को करौं न त्राशा ॥
ताते मोर सहायक होऊ । तू समर्थ राक्षस ! नहिं कोऊ १५
बीर्य युद्ध अरु दर्पहु माहीं । तुव समान को दूसर नाहीं ॥
करनु उपायहु शूर महाना । चढ़ बढ़ माया रचनु सुजाना १६

॥ दोहा ॥

यहि लगि आयों तुव निकट, मैं सुनु निशिचरनाथ ! ॥
करु सहाय जो कहूं त्वहि, कर्म परमगुणगाथ ॥१७॥

॥ चौपाई ॥

तुम सुवर्ण मृग बनो पवित्रा । रजत बिंदु विच बीच बिचित्रा ॥
तासु राम के आश्रम जाई । सिय सन्मुख बिचरहु छहराई १८

[1] धर्म छोड़ केवल बल को दिखा के ।

त्वहि पुनि उत्तममृग लखि सीता। निहिचैं कहिहै बचन बिनीता॥
"पकड़हु याहि" स्वामि सन टेरी। अरु लखनहि कहिहै ढगहेरी १९
तदनंतर जब द्वौ चलि जैहैं। सून कुटी मधि सिय रहि जैहैं॥
सुख से मैं हरिहों बिनु बाधा। शशिउंजेरु ज्यों राहु समाधा[1] २०
तब पुनि नारिबिरह पड़ि रामा। सुखबिहीन ह्वै निपट निकामा॥
मैं कृतकृति[2] ह्वैहों उर अंतर। जीति राम सुखलहों निरंतर २१
तासु राम की सुनी कहानी। रावण मुख मारीच महानी॥
सूखि गयो मुख निसरि न बानी। अतिडरप्यो हिय कंप समानी२२
सूखे ओंठ लगो सो चाटन। पलकरहित दृग चित्त उचाटन॥
भयो दुखी जनु मृतक शरीरा। रावण ओर लख्यो तब बीरा २३

। हरिगीती छन्द ।

मारीच भय बिह्वल बिकल चित, चकित चौंकनि चाह सों।
जो महावन बिच राम कौ बल, बिपुल जानत थाह सों॥
सो जोरि द्वौ कर बैन सतपथ, कह्यो निशिचरनाह सों।
हित शोचि तासु पुनीत अरु निज, परमनीति उछाह सों॥२४॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ०कां० पं०देवकीनंदन चि० कृत भा० छं० षट्‌त्रिंशः सर्गः॥ ३६

—:※:※:※:—

सैंतीसवां सर्ग।

रावण के मुख से अपने को मृग बनना सुन रामके गुण बर्णन करतेर
रावण को सीता हरने के लिये मारीच का रोकना।

॥ दोहा ॥

राक्षसेंद्र के बैन सो, सुनि मारीच सुजान॥
बचन बिसारद तेज बल, रावणही कह ज्ञान॥ १॥

१ जैसे राहु ढांप के हर लेता है। २ अपना काम पूरा करने वाला।

॥ चौपाई ॥

राजन! अति प्रिय बोलनहारे । सदा सुलभ हैं पुरुष अपारे ॥
पै सुपथ्य अप्रिय रस सानो । कहनु सुननु जग दुर्लभ जानो २
नहिं निहिचैं तू रामहिं जानहि । गुणह्निऊंचबलअधिकप्रमानहि॥
तू चापल तुव दूत निकामा । वरुण इंद्र सम हैं उत रामा ३
तात! तजो यह तुव बुधि[1] जोई । निशिचरकुलको अतिशुभहोई॥
जो पै राम नेक रिसिहाहीं । कानिश्चर बिनुजग न कराहीं? ४
का ? तुव जीवन अंत लगाई ? धौं नहिं उपजीं सिय जगआई ॥
का?पुनि सियनिमित्त दुखभारी । तोहि न ह्वैहै ? हे बिबुधारी ! ५
अरु पुनि का?त्वहिपाइ भुआला । निर अंकुश कामी रछपाला ॥
लंका पुरिहु बिनष्ट न ह्वै है ? तो सँग निश्चरकुल न नसैहै ६
तुव समान कामी दुःशीला । किये मंत्र जो पापिन मीला ॥
सो नृप निज औ राज्य बिनाशै । दुर्मति कुटुमसहित नित त्रासै ७
नहिं रामहि तो पिता निसारे । नहिं टुक मर्यादहु से न्यारे ॥
नहिं लोभी नहिं पुनि दुःशीला । नहिं क्षत्रियकुल औगुन मीला ८
नहिं पुनि धर्म गुणन्हि से छीना । कौशल्या सुख बढनु प्रबीना ॥
नहिं टुक कटु जीवन प्रति सोऊ । सर्बभूत हित रत नित जोऊ ९
वंचित लखिनिजपितहि सुजाना । सतबादिहि कैकइ सन माना ॥
"सतबादी करिहों" यह बोल्यो । तब बन ओर धर्मधर डोल्यो १०

॥ दोहा ॥

कैकेई प्रियकाम हित, अरु पितु दशरथ हेतु ॥
दंडकबन पैठे तबै, राज्य भोग तजि नेतु ॥ ११ ॥

[1] सीताहरण की बुद्धि ।

सुनो! तात! नहिं कर्कश रामू। नहिं मूरख नहिं इंद्रिय कामू॥
नहिं कहुं झूठ तासु ब्योहारे। तुमअसकहनु योग्यनहिंप्यारे! १२
राम धर्म मूरति धरि आयो। साधु सत्य बल जग प्रगटायो॥
सो है सकल लोक को राजा। देवन बीच इंद्र छवि छाजा १३
कैसे? तासु नारि वैदेही। जो रक्षित निज तेज सनेही॥
बारं बार हरनु तुम चाहो? रविकरसमजोज्योतिअगाहो १४
शर जहँ लोर अबुझ खर तेजा। इंद्रधनुष पूरित रण रेजा॥
राम अग्नि ज्वलि रह्यो भभाई। तुम नहिं पैठि सकहु हठलाई १५
धनु तानति दुति बदन पसारा। शर किरणन्हि यमरूप अपारा॥
तीच्छन धनुष बान कर लीन्हे। शत्रु सेन नाशन मन दीन्हे १६
राज्य भोग सुख सब तजि बीरा। आपनु जीव बचावहु धीरा!॥
नहिं तुम निकट जाइबे लायक। राम काल सम निश्चरनायक! १७
अतुल तेज है जग भरि जासू। जनकसुता रक्षित ज्यहि पासू॥
राम चाप आश्रय नित गाही। हरनु समर्थ नहीं तुम ताही १८
निहिचैं तासु नृसिंह कामिनी। सिंह सरिस उर केरि भामिनी॥
प्राणहु से अतिशय सो प्यारी। नितअनुगत पतिसम्मतनारी१९
नहिं सो भुलिहै तोर भुलाये। तेजवंत प्रिय सियहु सुहाये॥
सुंदर कठिनि जानकी रानी। दीप्तअनल की शिखा समानी २०
हे निश्चरपति! का यह व्यर्था? करहु जतन तुम बिनुहिसमर्था॥
जौ त्वहि देखहिं रण महँ रामू। सोइ तुव जीवअंत कर ठामू २१
जीवन अरु सुख यह तन पाये। तथा राज्य दुर्लभ जग जाये॥
सो तुम सब मंत्रिन के संगा। सहित बिभीषणादि बर ढंगा २२
करि सम्मति धर्मिन सह पूरी। अरु अपने मन निश्चय भूरी॥
दोष और गुण दोनहु तोले। बल औ अबल मनैं धरि होले २३

करहु काज आपन बल जानी । ठीक राम बल हिय पहिचानी ॥
तुव हित निश्चय करि मैं भाख्यों । छिमाकरहुतुमनहिंछलराख्यों २४

। घनाक्षरी छन्द ।

मैं तो तुम्हैं रण बीच मानूं समरत्थ नाहिं,
सांची कहूं मानों चहै मानों नाहिं मेरी बात ।
कोशल भुआल लाल सन्मुख लड़ाई करि,
काहू बिधि पैहो नहीं पार तुम एकौ घात ॥
औरहू जु कहूं बहु वाहू सुनों चोखी बानी,
मेरी मन लाय नहिं आंयबांय सांय जात ॥
भूल चूक होय कछू ताहू तुम छिमा करि,
निश्चरअधीश! बीशभुज! दशशीश! तात! २५

इति श्रीमद्वा० रा० आ०कां० पं०देवकीनंदन त्रि० कृत भा० छं० सप्तत्रिंश: सर्ग: ॥ ३७

——:※:※:※:——

अरतीसवां सर्ग ।

मारीच के मुख से श्री रामचन्द्र का बल औ पराक्रम रावण को सुनाना, तथा बिश्वामित्र जी ने जिस प्रकार से रामचन्द्र को अपने यज्ञ रक्षा के लिये राजा दशरथ से मांग कर ले आये थे और इसी मारीच को मार के समुद्र की टापू में गिराया था, उन सब इतिहासों का बर्णन ।

॥ दोहा ॥

एक समय मैं प्रबल है, सहस नाग बल धारि ॥
पर्वत समतन लै चल्यों, अटनु धरा यहि भारि ॥१॥

॥ चौपाई ॥

नील मेघ सम पुनि तन कारो । तप्त कनक कुंडल श्रुति वारो ॥
सकल लोक कौ भय दरसावत । शिरकिरीट परिघायुध धावत २
फिरत रह्यों दंडक बन मांहीं । भखत ऋषिनकर मांससुवांहीं ॥
तब तहं बिश्वामित्र मुनीशा । मोसन त्रसित धर्मधरि शीशा ३
आपुहि दशरथ नृप पहं जाई । यह बोल्यो रुचि बैन बनाई ॥
नृप! यह राम चतुर सुत तोरा । पर्बयज्ञ[1] रक्षक सुठि मोरा ४
उपज्यो भूप! मोहिं भय घोरा । बनहिं फिरै मारीच कठोरा ॥
यह सुनि धर्मपाल तब राजा । दशरथ भूमंडल छवि भ्राजा ५
उत्तर दीन्ह भाग्यबर शालिहि । बिश्वामित्रमुनिहिसुठचालिहि ॥
ग्यारह बर्ष बयस मम रामू । अस्त्र सीख नहिं पूरिहु ठामू ६
चहहु जतिक सेना लै जाहू । मोंहि संग हे ऋषिवर नाहू! ॥
चतुरंगिनि सेनहु के संगा । मैं करिहों निशिचर से जंगा ७
हे मुनिश्रेष्ठ! शत्रु जो तेरे । बधिहों तुव इच्छा मन हेरे ॥
जब अस कह्यो तासु मुनि काहीं । तब मुनि फेरि कह्यो नृपपाहीं ८
यदपि आपु देवन के पालक । समरमाहिंलड़िहोअरिघालक! ॥
पै मारीच राम बिनु नाहीं । जैहै मारि बली बरबाहीं ९
हे नृप! हैं तुव कृत बहु कर्मा । लोकबिदित अचरज लहिधर्मा ॥
अरु तुव महा सैन्य है पूरी । इहैं रहै नहिं चहिय बरूरी १०
यदपि बाल पै तेजहु रामा । मारन ताहि समर्थ सुनाभा ॥
याते मैं रामहिं लै जैहों । अरितप! तुव कल्यान मनैहों ११

---

१ बिश्वामित्र जी हर पर्ब में यज्ञ करते थे उसे मारीच नष्ट कर डालता था उसी के रक्षक राम हैं।

॥ दोहा ॥

यह कहि मुनि त्यहि नृप सुतहि, पाइ संगलै धाइ ॥
बिश्वमीत निज आश्रमहि, गये अधिक हरखाइ ॥१२॥

॥ चौपाई ॥

तासु यज्ञ हित दीक्षित[1] संगा । दंडक बन बिच गयो सुढंगा ॥
राम उपस्थित रक्षण हेतू । तानि बिचित्र धनुष शुभ नेतू १३
सुंदर नयन श्याम सुठि बाला । पुरुषचिन्ह नहिं तन त्यहिकाला ॥
एक वस्त्र नख शिखहु रखाये । कनक माल धनु धर बटु भाये १४
दंडक बनहिं परम छबि छाये । अति प्रदीप्त निज तेज बढ़ाये ॥
देखि पड़यो ता छिन रघुराजू । मनहुं बालशशिउदित बिराजू १५
तब मैं मेघ सरिस अति कारो । तप्त कनक कुंडल श्रुति वारो ॥
बली पाइ बर दर्प न थोरा । पहुंचि गयों आश्रम के छोरा १६
तासु लखत मैं पैठत भयऊं । सहसा अस्त्र तानि कर लयऊं ॥
पै सो मोहिं देखि धनु साजन । बिनुडरकिहो बानभरि राजन! १७
मैं तो मोह बिबस नहिं जान्यों । "है बालक" रामहि यह मान्यों ॥
बिश्वमीत की जहँ मख वेदी । ता पर धायों प्रबल रगेदी[2] १८
तदनंतर ता कर छुटि बाना । जो बहु शत्रु दमन खर साना ॥
ताते ताड़ित गयउं बहावा । सौ योजन समुद्र मधि धावा १९
तात! मोहिं नहिं चह्योसुमारन । वीर प्राण राख्यो मम धारन ॥
पै रघुराज बान के वेगा । भयों बिचेत सकलसुधि तेगा २०
तब मैं पड़यों तासु शर मारो । गहिर समुद्र नीर महँ प्यारो ! ॥
बहुतकाल महँ जब सुधि पायों । तब मैं लंकापुरिहि सिधायों २१

१ यज्ञ के लिये व्रत आदि धारण किये विश्वामित्र के साथ । २ बरपट के ।

॥ दोहा ॥

या बिधि मैं तो बचिगयों, मरे सहायक बीर ॥
बाल अशिक्षित राम सन, कठिन कर्म भौ धीर! ॥२२॥
याते मैं बारन करों, जौ हठि करो लड़ाइ ॥
राम संग, लहि बिपद बड़ि, जैहो तुरत नसाइ २३

॥ चौपाई ॥

क्रीड़ा रति बिधि जानन हारन । उछह समाज देखने बारन ॥
उन राक्षसन्हि परम संतापू । व्यर्थहि देहु नाथ! तुम आपू २४
ऊंच अटा अरु घनी कंगूरहि । नाना रत्न लशी छबि पूरहि ॥
लंका पुरिहि बिनष्ट तुरंता । लखिहो सियकारण गुणवंता २५
यद्यपि करैं नहिं नेकहु पापू । पै पवित्र, पापिहु संग थापू ॥
पर पापहु से पावहिं नासा । ज्यों अहि कुंड मीन कौ बासा २६
जे बर चन्दन अंग लगाये । दिव्य आभरण भूखित भाये ॥
लखिहो भूमि राक्षसन्हि लीना । तुम्हरे दोषन्हि दोष विहीना २७
मरे कुटुम्ब औ कुटुम सनेता । दशदिश भगे बिकल मतिचेता ॥
अरु हत शेष शरण बिन पाये । लखिहो तुम निश्चर समुदाये २८
बान जाल से बँधि महरानी । तथा अगिन ज्वाला लिपटानी ॥
जले भवन युत तुम बर लंकहि । लखिहोअबसिस्वर्णपुरबंकहि२९
पर दारा चिंतनु से भारी । नहिं कौ पाप अपर अनुसारी ॥
सो तुव घर असंख्य बर नारी । पड़ींबंदि नृप! मरहिं बिचारी ३०
अबहुं होहु निज नारि रमंता । निज राक्षस कुल रक्षहु कंता! ॥
वृद्धि, मान, औ राज्य, बड़ाई । निज जीवन की करो उपाई ३१

सुन्दर पुत्र कलत्र तुम्हारे । अरु बहु मित्र कुटुम परिवारे ॥
जौ बहु दिन चाहौ इन भोगू । करौ न राम बैर उद्योगू ३२

। खराडछप्पै । (रोला)

मैं हूं सुहृद तुम्हार, तुम्हैं रोकहुं समुझाई ।
पै यदि जिद्द बढ़ाई, हरौगे सियहि भुलाई ॥
तौ तुम ह्वै हो तुरत, दीन बल बंधु समेता ।
जैहो यमपुर पाइ राम शर, ग्रस्त विचेता ॥ ३३ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ०कां० पं०देवकीनंदन चि० कृत भा० छं० अष्टत्रिंश: सर्ग: ॥ ३८

——:※:※:※:——

उन्तालिसवां सर्ग ।

रावण की प्रति फिर मारीच के मुख से दूसरी कथा का कहना, अर्थात्
मारीच एक समय हरिण रूप धर दो राक्षसों के साथ दंडक बन में
घुर फिर मुनियों का मांस खाता रामचंद्र के पास भी गया,
रामचंद्र ने बान मारा उस्से दो संगी राक्षस मर गये,
मारीच बच गया, उस कथा को भी सुनाना ॥

॥ दोहा ॥

(टीका का मत)

(पुनि निज अनुभव सिद्ध जो, रामकथा कछु जान ।
रावण से मारीच सो, कहन लग्यो बुधिमान) ॥

(मूल)

तासन रक्षा लहि बच गयों, काहू बिधि यहि भांति ।
अब जो औरहु हाल कछु, सुनो सुउत्तर रांति ॥१॥

॥ चौपाई ॥

मैं त्यहि भांति भयउं हत चेता । जानिहु राम काज कर हेता ॥
हरिण रूप दो राक्षस संगा । पैठ्यों दंडक वनहिं सुढंगा २
तेज जीभ अरु दांत महाना । पैन सींग अतिशय बलवाना ॥
दंडकबन मधि बिचरन लाग्यों । मांस भखी मृग रूप सुराग्यों ३
अग्निहोत्र अरु तीरथ माहीं । देव थान द्रुम जहां सुहाहीं ॥
अतिशय घोर करत तहँ धावा । तिन तपस्विन मैं भूप! सतावा ४
मारि असंख्य धर्म के चारिन । तपसिन दंडकबन मखकारिन ॥
तिनको रुधिर पियों मैं नीके । अरु सो मांस भख्यों भरि हीके ५
है ऋषिमांसभखी अति क्रूरा । बनचारिन त्रासत भरपूरा ॥
तब ता रुधिर मत्त है भारी । फिरन लग्यों दंडकबन झारी ६
जब मैं दंडक बन दुख कारी । बिचरन लग्यों दोष बिस्तारी ॥
तब पुनि पहुंच्यों रामहु पाहीं । जो थित तापस धर्म सुबाहीं ७
ढिग बैदेहिहु अति भगमानिहु । महारथी लक्ष्मण बरज्ञानिहु ॥
जो तपसी नित नियत अहारी । सब जीवन हित रत ब्रतधारी ८
सो मैं बन थित रामहि जीतन । धायों महाबलिहि चित प्रीतन ॥
तपसी यही एहु मैं जानी । पूरब बैर सुमिरि अभिमानी ९
करिअतिक्रोध सन्मुखहि धायों । पैन सींग मृग रूप बनायों ॥
बिनुहि बिचार बधन के हेतू । सुमिरि तासु शरमारन हेतू १०
तब सो तीन बान बर छोडे । पैन शत्रुशाली मुख मोडे ॥
चाप चढाइ कान तक भारी । गरुड पवनगति सनक पसारी ११
ते सब बान बज्र सम धाये । रुधिर पिअैया भय दरसाये ॥
आये तीनहुं एकहि साथा । झुके नोक जिन मैं बिष गांथा १२

मैं तो राम पराक्रम जानें। अरु चलाक पहिली डर सानें ॥
कूदि बँच्यों तब दूरहि जाई। मरे दोउ राक्षस शर खाई १३

॥ दोहा ॥

राम बान से काहु बिधि, बँचि लै जीव पलाइ ॥
इहँ आयें मैं योगि ह्वै, तप साधहुं मन लाइ ॥१४॥

॥ चौपाई ॥

बृक्षनि बृक्षनि देखहुं प्यारे ! रामहिं कृष्ण अजिन पटवारे ॥
गहे धनुष शर बर संधाना। पाश हस्त जनु काल भयाना १५
मैं तो डरी हजारन रामहिं। रावण! लखों इहों सब ठामहिं ॥
राम भरो यह बन समुदाई। मोंहि दिखात कहों सच भाई! १६
यदपि राम इहँ नहिं पै देखों। निशिचरपति! रामहिं मैं लेखों ॥
सोवहुं तबहुं सपन महँ रामहि। देखि बकौं ज्यों जागत ठामहि १७
डरो राम से याहि विधाना। नाम रकार आदि सुनि काना ॥
रत्न और रथ आदि सुनेते। उपजै भय अबहिं हृदय गुनेते १८
ता प्रभाव जानहुं मैं खासे। लड़नु समर्थ तोरि नहिं तासे ॥
बलि अरु नमुचि मारने वारो। है रघुनंदन बली अपारो १९
रण महँ लड़ो न रामहु संगे। रावण! छिमा करहु शुभ ढंगे ॥
जो अबहिं देखन चहो भुआला! राम कथा तुम कहो न हाला २०
बहुत साधु यहि लोक मझारी। योगी यती धर्म ब्रत धारी ॥
पर अपराध संग के कारन। भये बिनष्ट कुटुम युत चारन २१
सो मैं पर अपराधहु साथा। ह्वै हों नाश निशाचर नाथा! ॥
याते मोहिं छिमहु तुम ताता ! मैं तुव साथ न जाहुं सुहाता २२

राम अहैं बड़ तेज प्रतापी । महाकाय अतिशय बलथापी ॥
तीन लोक के निशिचर भारी । लडैं सबहु तिन्ह डारहिं मारी २३
सूर्पनखा को अर्थ लगाई । जनस्थान बासी खर भाई ॥
अति बलवान प्रथम गौ मारो । राम कठोर कर्म से प्यारो ! ॥
या में कहो तत्व की बानी । काह रामको दोष ? सुज्ञानी ! २४

। हरिगीती छन्द ।

मैं बंधु हित जो बचन भाख्यों, कपट नहिं टुक लाइ कै ।
जौ ताहि तुम रुचि मानि हिय नाहिं, करहु काम सुहाइ कै ॥
तौ बंधु बांधव सहित तुम, रण माहिं मरिहो धाइ कै ।
श्री राम के खरशरनि निहिचैं, कहौं आजु सुनाइ कै ॥२५॥

इति श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे अरण्यकांडे पं० देवकीनंदनत्रिपाठिकृत भाषाछंदानुबादे ऊनचत्वारिंशः सर्गः ॥ ३९ ॥

—०※:※:※०—

चालिसवां सर्ग ।

मारीच के नीति भरे हित बचन सुन रावण का कोप पूर्वक मारीच के बचन का कठोर नीति से उत्तर देना और फिर मृग बन सीता जी के आगे विचरने को भय दिखाकर कहना ।

॥ दोहा ॥

छिमा योग्य मारीच कौ, बैन सु रावण राय ॥
गह्यो न हिय ज्यों मरनु चह, औषधि देइ बहाय ॥१॥
पुनि त्यहि हित अरु पथ्यकर, कहवैयहि दशशीश ॥
काल बिबश कटु बैन कह, मारीचहि करि खीश ॥२॥

॥ चौपाई ॥

हे दुष्कुल ! उजड्ड ! मारीचा ! कसयहकहसिमोहिं सिखनीचा ?
बहुत बढ़ाय व्यर्थ ज्यों बानी । बोवनु बीज ऊसरहु जानी ३
तोर बचन म्वहिं सकैं न रोंकी । राम संग जौ बैरहु फोंकी ॥
रामहु मूरख पाप करैया । अरु बिशेष मानुष कुलरैया ४
जो पुनि छोड़ि राज्य घबड़ावा । मातु पिता तजि कुटुम गँवावा ॥
प्राकृत नारि बचन सुनि काना । एका इक बन कीन्ह पयाना ५
अवशि तासु खर घातिहु केरी । प्राणहु से प्यारी सिय चेरी ॥
हरनु योग्य मोसन सुनु मूढ़ा ! तुव समीप कछु नाहिं अगूढ़ा ६
या बिधि है निश्चित मति मोरी । हृदय बीच मारीच ! बसोरी ॥
नहिं सो पलटि सकै बिधि केहू । इंद्र सहित सुर असुरन्हि सेहू ७
जौ पुंछत्यों मैं गुण अरु दोषा । तौ तू अस कहत्यसि करि रोषा ॥
वा पुंछत्यों उपाय अनुपाया । बिनु निहिंचैं यहि काजहु लाया ८
कछु पूंछै तौ कहनु उचित्ता । बनि मंत्री हित करनु निमित्ता ॥
बांधि अंजुली नृप के आगे । जो निज कुशल चहै अनुरागे ९
तबहुं बचन बोलै अनुकूला । मृदु पूर्वक शुभ हित सम तूला ॥
राजनीति लै कहै सुबानी । बसुधाधिपसन ता रुचि जानी १०
राज प्रश्न खंडन कर बैना । अथवा तासु अहित हित चैना ॥
ता सुनि नृप नहिं पाउ अनंदा । है अपमानित मान लहंदा ११

॥ दोहा ॥

अमित पराक्रम भूप जे, धरैं रूप नित पांच ॥
अग्नि, इंद्र, शशि, यम, बरुण, इनकौ लै ततु सांच ॥१२॥

॥ चौपाई ॥

तेज,[1] तथा बड़बिक्रम, भारो । सौम्य, दंड, चितआनंद, न्यारो ॥
ये गुण धरैं महामतिवारे । नृपगण सदा निशाचरप्यारे! १३
ताते सबहि अवस्था माहीं । मान्य पूज्य नृप निसहि सुबाहीं ॥
तू तो धर्म टुकहु बिनु जाने । केवल मोह मांहि लिपटाने १४
अभ्यागतहि दुष्ट धरि भावा । अस कठोर बोलसि छल छावा ॥
गुण अरु दोष न पूछहुं तोसे । अरु आपनि छय निश्चर! रोसे १५
मैं तो तोसन इतनहिं भाख्यों । हे अमोघबल! नहिं छल राख्यों ॥
यहि मम काज माहिं तुम सोई । करो सहाय एक चित होई १६
सुनों काम जो तुम्हैं बताऊं । मम सहाय कर सोइ लखाऊं ॥
कंचन मृग तुम ह्वै अति नीको । रजत बिंदु अँग चित्र सुठीको १७
तासु राम के आश्रम जाई । सीता सन्मुख चरहु दुराई ॥
बैदेही चित लेहु लुभाई । जैसे चहो जाहु तुरताई १८
तवहि मायामय मृगहि निहारी । कंचन रचित अचंभित नारी ॥
"आनहु याहि" तुरत यह बानी । कहिहै रामहि मैथिलि रानी १९
जब उठि राम चलैं तुव ओरा । दूर जाइ कीह्नो अस शोरा ॥
"हा सीता !! हा लखनदुलारे !!" । इतमहि राम बैन अनुहारे २०
ता सुनि राम ओर भ्रम पूरो । सिय प्रेरित लक्ष्मण रण शूरो ॥
भाइ सनेह हेतु पछु आई । जैहै अवसि देर नहिं लाई २१
गये लखन काकुत्स्थहु केरे । सुख समेत जैहों तहँ हेरे ॥
हरि लैहों सीतहि मन भाई । जैसे इंद्र शचिहि उर लाई २२

[1] तेज, राज्य करने में तेजी । बडबिक्रम, युद्ध बिद्या सिखे हुये बल पौरुष । सौम्य, दयायुक्त चित्त । दंड, दुष्टको दमन करना । चितआनंद, सदा प्रसन्न रहना ।

॥ दोहा ॥

या बिधि करि तुम काज मम, जाहु चले घर बीर ! ॥
देहों आधी राज्य त्वहि, भ्रात ! मारीच ! सुधीर ! ॥२३॥

॥ चौपाई ॥

जाहु सौम्य ! शुभ मारग साधो । बृद्धि हेतु यहि काम अराधो ॥
तुव पीछे जैहों मैं धाई । दंडक बनहि सरथ तुरताई २४
बिनुहि युद्ध सीतहि मैं पाई । रामहि बंचि देर नहिं लाई ॥
लंकहि लौटि सटक्कि मैं जैहों । तुव सह कृतकारज जब ह्वैहों २५
जो मारीच ! करो तुम नाहीं । तौ मैं हतों तोहि छिन माहीं ॥
यह मम कारज बडो जरूरो । करो बेगि बल से भरपूरो ॥
नृप प्रतिकूल रहे जो प्रानी । नहिं सुख लहै काहुबिध मानी२६

। कुंडलिया छन्द ।

संशै है तुव मरनु मैं, राम निकट जो जाउ ॥
पै नहिं मानहु बचन मम, मरो अवसि यहि ठांउ ॥
मरो अवसि यहि ठांउ, करो जो मोसन आना ॥
इन दोनों के बीच, बिचारहु तुम धरि ध्याना ॥
यथा उचित बुधि धारि, परमहित नाहिं बिधंशै ॥
करहु सोइ तुम बीर ! छोड़ि सब जग को संशै ॥२७॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ०कां० पं०देवकीनंदन त्रि० कृत भा०छं० चत्वारिंशः सर्गः ॥ ४०

—:※:※:※:—

एकतालिसवां सर्ग ।

जब रावण ने मारीच को मारने का भय दिखा कर मृग बनने कहा तब
मारीच के मुख से फिर निडर हो नीति पूर्वक रावण के
मंत्रियों की निंदा का करना ।

॥ दोहा ॥

पाइ रजायसु उलटही, रावण से यहि भांति ॥
निडर कह्यो मारीच पुनि, दशशीशहि खरभांति ॥१॥

॥ चौपाई ॥

अरे! कौन यह तोहि सिखायो? वह पापी धौं को उपजायो ॥
पुत्र सहित तुव राज्य बिनासा । मंत्रिन युत हे निशिचर! त्रासा २
कौन पापकारी? बसि साथे । देखि सकै नहिं त्वहि सुखगांथे ॥
कौन तोहि दीन्ह्यो उपदेशा । करि उपाय अस मरनु नरेशा! ३
जानि पडै म्वहिं बैरि तुम्हारे । हैं बल हीन निशाचर! प्यारे! ॥
जे त्वहि चहैं बली अरि हाथे । सब बिधि मरनु जाल से गांथे ४
कौननीचबुधि त्वहिअसज्ञाना । दिहो सिखाय? अरे बलवाना! ॥
जो त्वहि चहै मरत दृग देखन । निज करतूति सेहु नृप! लेखन ५
हे रावण! तुव सचिव बिदाहे[1] । बधन योगु तिन्ह बध्यो न काहे?
जे त्वहि कुपथ चढे नहिं रोके । पै सब तोहि मरनु मग झोंके ६
काम प्रवृत्त होय जौ राजा । त्यहि रोकनु मंत्रिन कर काजा ॥
सज्जन सब बिधि रहैं संभारे । पै तुम रोक्यहु रुकहु न प्यारे! ७
हे बिजयिन महँ श्रेष्ठनिशाचर! होइ जु मंत्री नीति सुनागर ॥
धर्म अर्थ अरु काम बड़ाई । प्रभु प्रसाद से लहैं सुहाई ८

१ भीतरी जले हुये ।

ता बिपरीत चले दशशीशा ! सो सब व्यर्थ होइ भुजबीशा ! ॥
अगुणा काज स्वामी के कीने । अपर जनहुं दुख लहैं प्रबीने ९
राज मूल है धर्म पुनीता । अरु यश हे विजयिनबर! नीता ॥
ताते सबहि अवस्था माहीं । रक्षनु योग्य भूप बर वाहीं १०
हे निश्चर ! धरि तीच्छन भाऊ । राज्य पालि क्यों सकै न राऊ ॥
नहिं निजमतिके बहुप्रतिकूला । नहिं कठोर शाशन दै भूला ११
तीच्छन मंत्र सचिव जे देहीं । ता नृप सहित भोगि निज लेहीं ॥
टेढ भूमि मधि रथ दौड़ाई । मन्द[1] सारथी ज्यों भहराई[2] १२
बहुत साधु जन लोक मझारी । परमधर्म युत अरु व्रतधारी ॥
पर अपराध संग के दोषन । भये नष्ट सह कुटुम सरोसन १३
हे रावण! प्रभु की बरिआई । तीक्ष्ण दंड लहि अति दुखपाई ॥
बढै न कबहुं प्रजा समुदाई । ज्यों बन बाघ मृगन्हि धै खाई १४
अवशि नाश ह्वै हैं दशकंधर । सकल निशाचर पाप पुंजधर ॥
जिन के हो तुम कर्कश राजा । अति दुर्बुद्धि कुइंद्रिय काजा १५

॥ दोहा ॥

यदिप काकतालीय[3] यह, घोर मरनु मम पास ॥
ताहि न शोचहुं शोच पै, तुव ससैन्य द्रुत नाश ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

मोहिं मारि वह राम भुआला । मारिहि तोहिहु तुरत कृपाला ॥
ताते मैं कृत कृत्यहि मानों । अरिकर मरण सुस्वर्ग प्रमानों १७
देखतही राघव के मोहीं । मरो जानु निहिचैं है योहीं ॥
पुनि आपुहु कुल बंधु समेता । जानु मरो हरि सियहि सुचेता! १८

१ अनारी। २ गिर पड़ता है। ३ कौआ ताडके फल परबैठा फल गिरा मर गया।

जौ कदापि तुम मो सँग जैहो। आश्रम से सीतहि हरि लैहो ॥
तौ नहिं तुम अरु मैं नहिं प्यारे ! नहिं लंका नहिं राक्षस झारे १९

। खराडछप्पै । (रोला)

मैं तुव हितू पुरान, याहिते अधिक निवारों ॥
पै नहिं मानहु सोइ, वैन मैं जोइ उचारों ॥
तौ जानहुं गत आयु, मनुज ज्यों यमपुर वारो ॥
नहिं सुहृदन्हिकौ बचन, गहै चहु कोटि पुकारो ॥२०॥

इति श्रीमद्वा०रा० आ०कां० पं०देवकीनंदन चि०कृत भा०छं० एकचत्वारिंश: सर्ग: ४१

—:※:※:※:—

बयालिसवां सर्ग।

रावण के भयावन बचन सुन मारीच का मृग बनने को अंगीकार करना,
उसे सुन रावण का प्रसन्न होना, फिर रथ पर चढ रामाश्रम को जाना,
वहां मृग बनना और फूल चुनती हुई सीता का देखना।

॥ दोहा ॥

रावण से मारीच तब, अस कहि बचन कठोर ॥
पुनि डरि बोल्यो दीन ह्वै, "चलिहौं प्रभु! सँग तोर" ॥१॥

॥ चौपाई ॥

फेरि राम दखिहै म्वहिं सोई । धनु शर असि धारी रिपु जोई ॥
मोरे वध हित शस्त्र तनैया । तौ हम दोउ मरे सुनु भैया ! २
नहिं कौ राम संग बल जोरी । लौटि सकै जीवत मुख मोरी ॥
याते कालदंडहत[1] तो सम[2] । होंहि राम बरु मारि सुगतिमम ३

[1] मरा हुआरावण। [2] तू अवश्य मारेगा तो तेरे समान मारने वाले हों सो अच्छा।

का अरु करनि शक्ति है मोरी ? परमदुष्ट ! तुव संग बहोरी ॥
याते चलहुं तात ! तुव संगा । मंगल होइ तोर सब ढंगा ४
सुनि सो बचन निशाचरनाथा । अतिशय हर्ष कीन्ह इक साथा ॥
तुरत लिपटि अति माधुर बैनन । बोल्यो बचन इहै लहि चैनन ५
इह तुव उचित शूरता प्यारे ! हो मम रुचि बश वर्तन हारे ॥
अबहिं निशाचर मान्यहुं तोही । रह्यो प्रथम मारीचहु ओही ६
यह अकाश गामी रथ चोखा । रत्न बिभूषित परम अनोखा ॥
चढ़हु तुरत मोरे सँग धाई । नधे पिशाचबदन खर भाई ! ७
चहै जौन बिधि उहँ तक जाऊ । करि बैदेहिहि चित्त लुभाऊ ॥
त्यहि मैं पाइ सूनथल माहीं । लै अइहों सीतहि बरबाहीं ८
तब त्यहि कह्यो ताड़कानंदन । "बहुत नीक" रावण सन मंदन ॥
पुनि चढ़ि रथजो मनहु बिमाना । रावण अरु मारीच सुजाना ९
दोनहुं तहँ से गये तुरंता । जहँ मारीच बसत गुणवंता ॥
मारगमधि बहु भांति बिचारत । बनबजार ज्यों प्रथम निहारत १०
गिरि अरु नदी अनेकन देखत । राज्य नगर सुंदर चित लेखत ॥
पहुंचि तुरत दंडक बन पाये । राघव के आस्रम तब आये ११
त्यहि देख्यो रावण लंकेशा । सह मारीच राक्षसी बेशा ॥
उतरि तासु रथ से तुरताये । कंचन भूषित जो छवि छाये १२
धरि मारीच केर द्वौ हाथा । बोल्यो रावण निश्चर नाथा ॥
इहै राम आस्रम म्वहिं भावै । कदली बिटपन्हि झौंरि सुहावै १३
करहु सखे ! सो शीघ्र उपाई । ज्यहि लगि हम आये इहँ धाई ॥
यह सुनि रावण के तब बैना । सो मारीच निशाचर चैना १४
रामचंद्र के आस्रम द्वारे । ह्वै मृग बिचरन लग्यो सँभारे ॥
सो पुनि अद्भुत रूप बनाई । ज्यहि देखत मन जात भुलाई १५

लालकमलमणि थूथुन रंगा । नीलपद्ममणि के श्रुति अंगा १६
कछुक कोटपै अति गल ऊंचा । उदर नीलमणि जड़ित समूचा ॥
महुल रंग मणि पंजर दोऊ । केशर रंग रोम तहँ सोऊ १७
हरित रंग मणि के बर शृङ्गा । स्वेत श्याम मणि रचि मुखढंगा ॥
खुर बैदूर्य हरित मणि सोहे । पातल गोड़ जांग जुटि जोहे ॥
इन्द्र धनुष रंग पूंछ पछारी । ऊपर भाग लसै मणि वारी १८
चमकित वर्ण मनोहर रूपा । नाना रत्न जड़ित झगझूपा[1] ॥
छिन महँ सो राक्षस मारीचा । सुंदर मृग बनिगौ मतिनीचा १९
करन लगो सो बन उजिआरा । रम्य राम आश्रम थल सारा ॥
देखन योगु मनोहर बेषा । करि राक्षस रुचि रूप सुदेशा २०
जनकसुता के लोभन हेतू । नाना धातु बिचित्र समेतू ॥
चोंथत चरत चकित चौचाला । चहुं दिश हरी घास भरि गाला २१
रजत बिंदु सैकड़न चितेरो । है प्रिय आनँद देन घनेरो ॥
झाड़िन के कोमल दल धाई । बिचरन लग्यो इतै उत खाई २२
कदली बाग माहिं पुनि जाई । बन कनेर इत उतहि ढहाई ॥
त्यहिआश्रममहँचलिअतिधीरे । सीतहि तब निरखत दृगभीरे[2] २३
कमल सरिस सो पीठ चितेरा । शोभित भयो महामृग हेरा ॥
रामाश्रम थल के चहुं पासा । सुखसे बिचरन लग्यो खुलासा २४
कबहुं जाइ फिरि लौटि पलावै । या बिधि बिचरत मृगहु सुहावै ॥
कछुक काल द्रुत दौड़ि लुभावै । पुनि धीरे चलि मोद बढ़ावै २५
पुनि करि खेल भूमि पर कूदै । बैठि जाइ पुनि द्वौ दृग मूंदै ॥
आश्रम द्वार आइ बहु रंगी । बन मृग झुंडन मिलै उमंगी २६
मृग झुंडन से पुनि बहराई । भागि जाइ निज रूप दिखाई ॥
सीतहि देखन हिय रुचि लाये । राक्षस शुचि मृग रूप बनाये २७

१ कुप्पेदार । २ आंख भिड़ा के ।

कुतुली काटि इतै उत घूमै । चक्कर भरि लोटै पुनि झूमै ॥
ताहि देखि जे मृग बनचारी । चकित होहिं सब रूप निहारी २८
निकटहि आइ सूंघि चौकन्ने । भगैं दशौ दिश तन्न वितन्ने ॥
पै मारीचहु मृग बधकारी । बधै न सूंघि लेइ मन मारी २९
आपुन भाव छिपावन हेतू । भखै न तिन्है छुइहु छल नेतू ॥
ताहि समय तब जनक दुलारी । निसरीं शुभलोचनि बरनारी ३०
बिननु फूल अतिशय तुरतानी । बिटपन्हि निकट गईं हरखानी ॥
कर्णिकार अरु जहां अशोका । चूत कदम्ब मदद्रुग अवलोका ३१
लगीं चुनन बहु बिध शुचिफूला । इतउतफिरिमुखरुचिअनुकूला ॥
जो बनबास योग्य सिय नाहीं । सो सुरारि मृगको तब ताहीं ३२
मणि मोतिन से अंग बिचित्रा । देख्यो परम सुनारि पवित्रा ॥
रुचिर दांत अरु ओठहु ताही । रजत धातु बहु रोमहु जाही ३३
बिस्मय सहित प्रफुल्लित नैना । प्रीति सहित देख्यो शुभऐना ॥
सो माया मृग देखत ताके । रामप्यारि के चित्त उलांके[1] ३४

॥ सोरठा ॥

लग्यो चरनु करि खेल, जनु बन उज्जल करत सो ॥
त्यहि अपूर्ब लखि केल, बिबिध रत्नमय सुठि मृगहि ॥
अति बिस्मय सिय कीन्ह, जनकनंदिनी ताहि छिन ॥
देखन महँ चित दीन्ह, फूल चुननु तब भूलि गईं ॥३५॥

इति श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे अरण्यकांडे पं० देवकीनंदनत्रिपाठिकृत भाषाछंदानुबादे द्विचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४२ ॥

—०※:※:※०—

१ सीता को देखतेही चित्त के उभाड़ से ।

तैंतालिसवां सर्ग ।

सोने के मृग मारीच को पकडनेके लिये राम लखन को सीताका पुकारना, उसे देख लक्ष्मण का मायामृग पहिचानना, उन्हें सीता का रोकना और खेलनेके लिये मृग पकडनेका अनुराध करना, तथा रामचंद्र का भी मृगाया की नीति कहके लक्ष्मण को सीताजी के निकट रक्षा के लिये रख मृग पकडने जाना ।

॥ दोहा ॥

हेम रजत दुहु बगल युत, रंग सुशोभित देखि ॥
फूल बिनत सो शुभकटिनि, सीता त्यहि मृगलेखि ॥१॥
अति हर्षित सुठि अंगिनी, शुद्ध हेम रँग जासु ॥
गुहरायो निज स्वामिहो, सायुध लखनहि आसु ॥२॥

॥ चौपाई ॥

बार बार तिन को गुहराई । पुनि मृग ओर लखैं मन भाई ॥
"आवहु आवहु इहँ तुरताई । आर्यपुत्र! प्रभु! लै सँग भाई" ३
द्वौ नृसिंह जब गये बुलाये । राम लखन सीता पहँ आये ॥
त्यहि थल महँ इत उतै निहारे । तब देख्यो इक मृग उजिआरे ४
ताहि देखि लक्ष्मण करि शंका । बोल्यो बचन सुमिरि बुधिबंका ॥
मैं तो यहि राक्षस अनुमानों । मृग मारीच सोइ पहिंचानों ५
फिरै शिकार हेतु हरखानों । पापी हरिन बनो छल सानों ॥
बहुत राज ऋषियन इन मारे । पाप रूप धरि राम पिआरे! ६
याहि मायाबिद की यह माया । बिचरि रही बनि कै मृगकाया ॥
पुरुषव्याघ्र! ज्यों सहितप्रकाशा । पुर गंधर्व[1] लखाइ अकाशा ७

---

१ गंधर्बनगर यह कि यथार्थ में कुछ नहीं पर उजिआला माया का नगर ।

हे राघव! यहि भांति विचित्रा। होय न रत्नन्हि मृगहु पवित्रा ॥
जग महँ हे जगती के स्वामी! नहिं संशय यह मायहि ब्रामी ८
यहिविध लखन ककुथकी बानी। रोक्यहु सिया सहित मुसकानी ॥
पुनि बोली सो हर्ष समेता। छलो हस्यो जाको शुभ चेता ९

॥ दोहा ॥

आर्यपुत्र! रमणीय यह, मृग मन हरै हमार ॥
खेलन हित ह्वैहै सबन्हि, आनहु यहि बलधार! ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

यहि हमरे आश्रम पद माहीं। बिचरहिं बहुबिध मृग हरखाहीं ॥
सुंदर दरस झुंड झमकैया। श्वेत कृष्ण पुछ चामर गैया ११
ऋच्छ और हरिणान के झुंडा। बानर किन्नर अद्भुत तुंडा ॥
महाबाहु! बिहरैं बहु भांती। रूप श्रेष्ठ बल लाखन पातीं १२
पै यहि सरिस आन नहिं कोऊ। मैं देख्यों नृप! मृग इहँ जोऊ ॥
गतिबिचित्र अरु सौम्यसुभाऊ। जस यह मृग उत्तम चमकाऊ १३
वर्ण बिचित्र बिबिध वर अंगा। रत्न जड़ित मम अग्र सुढंगा ॥
वनहिंकियेचहुंदिशउजिआरा। चंद्र सरिस अहलाद पसारा १४
अहो रूप अचरज श्री शोभा। अरु बोलनि धुनि संपति ओभा ॥
अद्भुत मृग सब अंग चितेरे। मम हिय हरै मनहुं टुक हेरे १५
जौ जीतहि मृग तुम धरिल्यावो। तौ अति उत्तम काज बनावो ॥
अचरज होय हमैं तुव काजा। उपजैहै बिस्मय इहँ भ्राजा १६
जब पूरन ह्वैहै बन बासा। अरु हम सबको राज्य निवासा ॥
तब अंतःपुर सोहन हेतू। यह मृग ह्वैहै सुखकर चेतू १७

१ मिथ्याचारी।

भरत आर्य पुत्रहि हे स्वामी ! अरुमम सासुन दृग अनुगामी ॥
दिव्य रूप जब यह मृग ह्वैहै । सब कहँ बिस्मय अधिक जनैहै १८
जो नहिं जियत मिलै तुम पाहीं । ग्रहण करत मृग मरिहु जु जाहीं ॥
तबहुं नृसिंह! रुचिर मृगछाला । ह्वै है अति अचरज रघुलाला! १९
प्राण निहत याको मृगचर्मा । कंचनमय मणिचमक सुधर्मा ! ॥
हरित दूब पर सुथर बिछाई । बैठन चहों राउ सुख ध्याई २०
यद्दपि कामना नारिन केरी । यह कठोर अनुचित चितप्रेरी ॥
पै यहि जीव केर तन देखे । मम बिस्मय उपज्यो त्यहिलेखे २१

॥ दोहा ॥

त्यहि कंचन तन रोम अरु, मणि बर शृंग प्रभाव ॥
तरुण सूर्य रँग नखत पथ, बिंदु निरखि झलकाव ॥२२॥
रामहु को मन जाइ उत, बिस्मित भयउ अनूप ॥
सीता के अस बचन सुनि, लखि अद्भुत मृग रूप ॥२३॥
ह्वै लोभित त्यहि रूप से, अरु सिय आयसु पाइ ॥
लखन भाइ से राम पुनि, बैन कह्यो हरखाइ ॥२४॥

॥ चौपाई ॥

देखहुं लखन! सिया रुचि कैसी ? उमगि उठी यह या छिन जैसी ॥
रूप निकाई सन वर देहू । या छिन नहिं संभव मृग येहू २५
नहिं नंदन वन मांझ दिखाई । नहिं पुनि चैत्ररथहु महँ भाई! ॥
कहो धरनि मधि सुनु सौमित्रा ! जो या सम को हरिण पवित्रा २६
छोट वडे तिरछे सब रोमा । रुचिरपांति तिनकी अतिसोमा ॥
मृग शरीर मधि अधिक सुहावैं । कनक बिंदु चित्रित छबिछावैं २७

देखहु जब यह मृग जमुहावै । जली अनल शिख सम झलकावै ॥
मुख से जीभ निसारि दिखावै । जनु घन से बिजुली लपकावै २८
इंद्रनीलमणि सम मुख चमकै । उदर शंखमुक्ता सम दमकै ॥
यह मृग नाम निरूपि न जाई । काको मन नहिं लेइ ? लुभाई २९
तप्त सोनमय चमक समेता । जडे रत्न बहु दिव्य सुचेता ! ॥
देखि रूप अस को जग प्रानी ? जा मन जाय न बिस्मय सानी ३०
मांस हेतु क्षौ धनुधर राजा । क्षौ बिहार हित यह बरकाजा ॥
मारन जाहिं मृगन्हि बन धाई । लक्ष्मण ! मृगया अधि मनलाई ३१
क्षौ ब्यवसाय सहित धन हेतू । ढूंढहिं महाबनहिं चलि लेतू ॥
धातु बिबिध मणि रत्न अमोला । अरु सुबर्ण खोजहिं बँधि गोला ३२
सो पुनि अखिल नरन को सारा । सदा बढ़ावन धन आगारा ॥
जस मन से चिंतित तन माहीं । काम देव बर्द्धनहु लखाहीं ! ३३
ज्यों अर्थी ज्यहि अर्थ लगाई । बिनु बिचार किय जाइ सुधाई ॥
ताहि कहैं अर्थी सब अर्था । लखन ! अर्थशास्त्रज्ञ समर्था ३४

॥ दोहा ॥

यहि मणि कंचन हरिन के, छाल मध्य अधभाग ॥
मो सँग सिया सुमध्यमा, बैठनु हिय अनुराग ॥ ३५॥

। छप्पै छन्द ।

या सम नर्म न चर्म, नाम कदलीमृग केरा ॥
जासु रोम मृदु ऊंच, भुअर शिर श्याम घनेरा ॥
प्रियकी नामक हरिनहु की, नहिं चर्म सुखेरा ॥
कोमल घन बड़ बाल चिक्कने चमक निबेरा ॥

अरु नाम प्रवेणी अजा कर चर्म, तथा मृदु मेष कर ॥
ये नहिं परसे यहि चर्म सम, मो मति निहिचै टेक धर ॥३६॥

॥ चौपाई ॥

यह मृग श्री शोभा युत पूरा । अरु जो दिव्य गगनचर रूरा ॥
ये दोनों मृग दिव्यहि भावें । तारा मृग अरु महि मृग ठावें ३७
हे लक्ष्मण ! वा यदि यह होई । जस मोसन भाख्यहु तुम सोई ॥
यह को बिकट राक्षसी माया । तबहुं बध्य मोसन यह काया ३८
है नर घातक यह मारीचा । क्रूर कर्म कारी बुधि नीचा ॥
प्रथम समय है बन मधि चारी । मुनिपुंगवह्निहु दीन्ह संहारी ३९
उठि उठि के बहु राजन्हि मारे । जे आये नृप करनु शिकारे ॥
परम धनुषधारी गुण वारे । ताते बध्य इहै मृग प्यारे ! ४०
पूर्व काल दंडक बन बासिन । बातापी तपसिन गुण रासिन ॥
मारत पेट माहिं घुसि त्योहीं । फाड़ि स्वगर्भ खच्चरिहिज्योहीं ४१
बहुत काल बीते यहि देशा । आयो मुनि अगस्त शुभ बेषा ॥
जो बातापि छली बलवंता । भयो तासु खल भक्ष तुरंता ४२
करि भोजन जब उठनु सुकाला । राक्षस रूप धरनु हिय शाला ॥
त्यहिलखि हँसे अगस्तसुजाना । बातापिहि कह बचन प्रमाना ४३
हे बातापि ! तोहि बिनु जांचे । गये तेज हति द्विजबर सांचे ॥
जीव लोक महँ तुव बड़ पापा । ताते पच्यहु पेट मधि आपा ४४
तैसहि बँचै न यह मारीचा । लखन ! यथा बातापिहु नीचा ॥
जो मोसम धार्मिकहि सँतावे । सदा जितेंद्रिय जनहि भुलावे ४५
ज्यों अगस्त से द्रुत बातापी । वैसहि इहै मरिहि बड़ पापी ॥
पै तुम इहैं सयुग है भाई ! रहो सियहि रक्षनु मनलाई ४६

राघव ! मुख्य जु काज हमारा । इन सिय रक्षनु मधि श्रमसारा ॥
मैं तो धरिहों मृगहि सुधाई । अथवा मरिहों यहि तुरताई ४७
जबतक मैं मृग लेन सुजाऊं । अरु पुनि तुरत लौटि इहँआऊं ॥
तब तक लखन ! सियहि तुम देखो । मृगछाला चितचाहनि लेखो ४८
उत्तम छाल युक्त मृग येहू । या छिन बँचिहि न यह मम नेहू ॥
पै तुम इहँ प्रियसिया समेता । आश्रम बसि बहु रहो सचेता ४९
जब तक चिन्त्रित मृगहि सँहारूं । एकहि शर बरसे कसिमारूं ॥
पुनि बधि लै मृगछाल पुनीता । ऐहों तुरत लखन ! उपनीता ५०

। हरिणप्लुत छन्द ।

अति प्रबीन बली खग जंगलै, सुमति मान जटायुहि संगलै ॥
गहि सियै रहु लक्ष्मण ! चित्तदै, सबन्हि से मन शंकित सर्वदै ॥५१॥

इति श्रीमद्वा०रा० आ०कां० पं०देवकीनंदन त्रि०कृत भा०छं० त्रिचत्वारिंश: सर्ग: ४३

——:※:※:※:——

चवालिसवां सर्ग ।

मृग रूप मारीच के पीछेर रामचंद्र का दौड़ना, मारीच का दूर भागना, फिर कोप कर रामचंद्र का बान मारना, मारीच का मरना और मरन समय रामका शब्द अनुकरण कर लक्ष्मण औ सीता को पुकारना, राम का और २ मृगों का मांस ले लौटना ।

॥ दोहा ॥

या बिधि भाइहि सिखै त्यहि, तब पुनि रघुवर राम ॥
लीन्ह तेज तरवार बड़ि, कनक मूठि बहु दाम ॥१॥

धनुष त्रिभंगी लीन्ह तब, जो निज भूषणसाज ॥
दो तरकस पुनि कसि चले, गल उन्नत बलिराज ॥२॥

॥ चौपाई ॥

त्यहि नृप इंद्रहि मृग बनराजू । आवत देखि बीर बरसाजू ॥
डरपि भयो तब अंतरध्याना । देखि पड़यो पुनि रूप महाना ३
जहँ जहँ मृग धावत कुतुलाई । तहँ तहँ धरि धनु असि रघुराई ॥
देखहिं ता मृग रूप निकाई । जनु आगे बिजुली चमकाई ४
धरे धनुष कर घन बन माहीं । धावत तकि तकि रामहु जाहीं ॥
कबहुं लोभ दै कर तक आवै । भरि चौकड़ी दूर छटि जावै ५
बान पतन भ्रम भय उपजावै । कूदि मनहुं नभ मैं छबिछावै ॥
कहुं दिखाइ कहुं बनहि मझारी । पैठि जाइ छिपि करि छलभारी ६
फटे मेघ मंडल मधि ज्योंहीं । शरदचंद निशरै छिपि त्योंहीं ॥
छिन महँ देखि पडै लगि तारा । दूर प्रगट होवै बहु बारा ७
दर्शन और छिपनु छल रीती । रामहिं लैगो ठानि अनीती ॥
त्यहि आश्रम के दूरहि खींचा । हरिन रूप सो खल मारीचा ८
अति क्रोधित तब भये ककुत्था । ता सन लोभित दौड़िअस्वस्था॥
तब पुनि थके पाइ घन छाया । बैठे दूब बिछौ मन भाया ९
सो मृग रूप निशाचर घोरा । ता चित भ्रमित कीन्ह मगओरा॥
पुनि बन अन्य मृगन के झुंडन । दूर जाइ लखि पड़यो सतुंडन १०
रामहु पुनि उठि पकड़न हेतू । दौड़े है सुस्थिर निज चेतू ॥
तबहिं तुरत डरि कंपित गाता । छिप्यो फेरि मनहीं अकुलाता ११
तदनंतर फिरि दूर दिखानो । बिटप झौंर से बाहर आनो ॥
देखि राम तब तेज प्रतापी । करि निश्चय मारन त्यहि आपी १२

अतिशय कोप कीन्ह इकबारा । तहँ राघव शर लीन्ह उबारा ॥
सूर्य किरिण सम जासु प्रकाशा । ज्वलित अग्नि रिपुहन दै त्रासा १३
कठिन चाप मधि सो संधानी । खींच्यहु बल करि बली सुतानी ॥
त्यहि हरिनैं तकि पूर निशाना । जनु ज्वलंत पन्नग फहराना १४
छोड़यो तबहि दीप्त भरिज्वाला । ब्रह्म रचित जो अस्त्र कराला ॥
हरिन रूप के तुरत शरीरा । भेदि गयो सो उत्तम तीरा १५
मारीचहु के हृदय मझारी । बज्र सरिस दीन्ह्यो रग फारी ॥
सो पुनि ताड़ प्रमान उंचाई । उछलगिरो अतिशय बिकलाई १६
महा नाद भैरव सो कीन्हे । गिर्‌यो धरनि टुक जीवन लीन्हें ॥
मरण समय मारीच निशाचर । कृत्रिम देह तज्यो त्यहि आतुर १७
सुमिरेहु ताछिन रावण बैना । 'क्यहिविधिलखनहि सियासुनैना॥
पठवहिं इहां अधिक अकुलाई । रावण हरै सून मठ पाई" १८
सो पुनि मरण समय पहिचानी । कीन्ह तबै ध्वनि अतिघबड़ानी॥
राम सरिस रचि कृत्रिम बानी । हासिय!! हालक्ष्मण!!! दुखसानी १९
ता अनुपम शर से गौ बेधी । मर्म फाटि तन भयो अमेधी[1] ॥
तब त्यहि मृगरूपहि सो त्यागी । राक्षस रूप धर्‌यो अनुरागी २०
महाकाय सुंदर धरि लीन्हा । सो मारीच मरत गौ चीन्हा ॥
ताहि देखि महिगिरत भयंकरहि । भीम निशाचर राजहि बंकहि २१
रुधिर भरे सरबोर सुअंगहि । तड़फड़ात महि मधि बहुरंगहि ॥
मनमहँ सियहि ध्यानधरिआने । लखनबचन सुमिरत पछिताने २२
है मारीच केरि यह माया । प्रथमहिं लखन कह्यो दृढ भाया ॥
सो वैसहि अब येहु प्रतच्छा । मोसन हत मारीचहु अच्छा २३
"हासिया! हालक्ष्मण! यह बोला । महानाद करि बदल्योहु चोला ॥
यह राक्षस तो तज्यो शरीरा । पै सुनि सियकसहोहिं? अधीरा २४

१ बुधि बुधि रहित ।

महा बाहु लखनहु त्यहि भांती। कौनि दशा ह्वैहैं? दुखमाती ॥
यह चिंता करि धर्म धुरीना। राम भयो रोमांचित दीना २५
तहां राम को अति डर लाग्यो। कठिन बिषाद उपजि दुख जाग्यो॥
त्यहि राक्षसहि मारि मृगरूपहि। अरु सुनि सो धुनि तासु अनूपहि २६

॥ दोहा ॥

अपर चितेरे मृगनि हति, लै आमिष रघुराज ॥
जनस्थान सन्मुख झपटि, चल्यो तबहि कुलसाज ॥२७॥

इति श्रीमद्वा०रा०आ०कां० पं०देवकीनंदन चि०कृत भा०छं० चतुश्चत्वारिंश: सर्ग: ४४

—:*:*:*:—

पैंतालिसवां सर्ग।

मारीच के राम सरिस कृत्रिम करुणावचन सुन सीता जी का लक्ष्मण को पठाना, राक्षसी माया जताय के लक्ष्मण जी का समझाना, उसे सुन सीता जी का लक्ष्मण पर कठोर कहर कोप, लक्ष्मण का राम की ओर जाना।

॥ दोहा ॥

त्यहि आरत बनधुनिहि तब, स्वामि सरिस सिय मानि ॥
बोलीं लखनहि "जाहु तुम, हैं राघव लो जानि" ॥१॥

॥ चौपाई ॥

मम जीवन नहिं होय ठिकाने। हृदय मोर अतिशय अकुलाने ॥
परम दुखी रोवत पिय केरा। प्रगट सुनाइ पड़्यो म्वहिं टेरा २
बन मधि रोवत भाइहि प्यारे! तुम हो योग्य होन रखवारे ॥
याते तुरत तासु ढिग धावो। भाइहि शरणागतहि बचावो ३

पडे राक्षसनि के बस जोई । मनहुं सिंह कर गोवृष होई ॥
पै यह सुनि लक्ष्मण नहिं डोले । सुमिरि भाइ आयसु बहु मोले ४
त्यहिलखनहितवतहँसियबोलीं । अतिशयखीझि मनोंथितभोलीं॥
हे सौमित्र ! मित्र के रूपा । तुम हो भाइ शत्रु सम चूपा ५
जो तुम यहि औसर महँ जाई । भाइ निकट नहिं होहु सहाई ॥
चहहु लखन! तुम राम बिनाशा । मोहिं मिलनकी करि जिय आशा ६
निहिंचैं मो पर चित्त लुभाई । नहिं राघव ढिग जाहु सुधाई ॥
राम दुःख त्यहि लगै पिआरा । नहिं तुव नेह भाइ महँ डारा ७
ताते मम हित आश बढ़ाई । बैठो बिनु देख्यहि रघुराई ॥
त्यहि रामहि संशय महँ पाई । का अब मोर उचित? मनलाई ८
इहँ रहि का कर्तब्यहु मोरा ? जहँ पुरुखोतम आयहु तोरा ॥
या बिधि कहत जबै बैदेही । आंशु शोक भरि कंपित देही ९
बोल्यो लखन सिया सन बैना । जो हरिनो सम डरी सुनैना ॥
हे सिय ! पन्नग सुर गंधर्बा । देव दनज राक्षस मिलि सर्बा १०
तुव भर्तहि ते सकैं न जीती । हे बैदेहि ! मानु परतीती ॥
सुनो देवि ! सुर नरन मझारी । गंधर्बनि अरु खगनि प्रचारी ११
राक्षस और पिशाचन बीचा । अरु किन्नर मृग मधि कौ नीचा ॥
महा घोर दानव गण माहीं । राघव बल सम कौ है नाहीं १२
जो करि समर राम के संगा । इंद्रहु सम पुनि आउ अभंगा ॥
सोउ राम कहँ सकैं न मारी । तुम अस कहन योगु नहिं नारी १३

॥ दोहा ॥

तजन चहों नहिं तोहि यहि, बन महँ बिन रघुनाथ ॥
रोंकि न सक कौ तासु बल, बलिन्ह बलिहु इकसाथ ॥१४॥

॥ चौपाई ॥

यद्दपि तीन लोकहु मिलि आवें । इन्द्रहु गणयुत पार न पावें ॥
याते हृदय धरे तुव धीरा । तजहु ताप तुम हरि दृगनीरा १५
ऐहैं तुरतहि स्वामि तुम्हारे । उत्तम मृगहि मारि भय हारे ॥
नहिं यह तासु शब्द मैं चीन्हों । नहिं को देव इसारहु दीन्हों १६
है गंधर्व नगर की भांती । ता निशिचर की माया रांती ॥
तुम सिय! अहौ धरोहर[1] भारी । सौंप्यहुमोहिं महामतिप्यारी! १७
हे बरनारि! राम की थाती । नहिं तजिसकौं कबहुं भ्रमभाती ॥
हम कल्यानि! निशिचरनसंगा । कीन्ह बैर इन्ह लहि बहुढंगा १८
जब से खर राक्षस गौ मारो । देवि! तासु जनथान बिगारो ॥
तबसे बिबिध बचनरचि बोलैं । बन महँ जहँ तहँ निश्चर डोलैं १९
वे सब सिय! पर दुःख बिहारी । तुम नहिं चिंतहु मरिहैं क्षारी ॥
यह सुनि लखन केरि सियबानी । क्रोध समेत अरुण दृग तानी २०
बोलीं अति कठोर पुनि बैना । लखनहि जो सच बचनसुऐना ॥
हे अनारि! अघ दया अरंभी । नरघाती कुलनाशक! दंभी २१
मैं जान्यों त्वहि लगै पिआरा । रामचंद्र को दुःख अपारा ॥
देखि राम दुख या छिन याते । मम रक्षनु भाखसि अघमाते २२
सवतिपूत महँ नाहिं विचित्रा । लखन! भयो जो पाप चरित्रा ॥
तुव सम महाक्रूर जन माहीं । जोनितछिपिछलकरतसदाहीं २३
खरा दुष्ट तू चलो अकेला । राम अकेल संग बन मेला ॥
गुप्त भाव धरि मोरुहि हेतू । पठयो भरत तोहि निज नेतू २४
सो न होइ बांछित तुव पूरा । अरु भरतहु क्रूर मानस हूरा ॥
मैं कैसे? इन्दीवर श्यामहिं । कमल समान नैन श्री रामहिं? २५

[1] थाती ।

पाइसुपतिसबबिधिसुखधामहिं। पृथकजनहिचाहोंअघकामहिं?
याते तुव आज्ञयहि सौमित्रे! । तजिहोंप्राणन्हिअवसिपवित्रे २६
मैं तो राम बिना छिन एका। नाहिं जिऔं महिमधियह टेका ॥
याबिधिसियाअधिककटुभाख्यो। रोमपुलककरनहिंकछुराख्यो२७
पुनिलक्ष्मण इन्द्रियजित बोले। जोरि पाणि सिय से हिय खोले ॥
हे सिय! तुम हो पूज्य हमारी। तस उत्तर दै सकों न प्यारी! २८
अनुचित बचन कहो तुम जोई। सिय! तियमहंबिचित्रनहिंकोई॥
नारीजन कर यहै सुभाऊ। देखि पडै यहि जग बिलगाऊ २९
धर्मरहित अरु चंचल पूरी। तीच्छन फूट करनु तिय रूरी ॥
नहिंसहिसकों बचन असवांके। हे सिय जनकसुता! अघआंके ३०
मोरे द्वौ कानन बिच लागै। तप्तबान सम जनु विष पागै ॥
सुनैं विनय मम जो बन देवा। साखी रहैं सुमिरि प्रण ठेवा ३१
जसम्वहिं न्यायबैनकेभाखिहि। कह्यो कठोरबचन तुम माखिहि॥
धिकत्वहिआजुनाशनियरानी। जो मोमहं असशक अनुमानी ३२
नारि हेतु तुम दुष्ट सुभावा। मैं गुरु बचन माहिं थिति पावा॥
पै अब जांहु जहां रघुराई। तुव मंगल हो सुमुखि! सुहाई ३३
हे बिशाल लोचनि! बन देवा। तुव रक्षा सब करहिं सुसेवा ॥
जोअसगुन म्वहिं घोरलखाहीं। ताते डरपहुं निज मन माहीं ॥
दैव करै पुनि राम समेता। देखहुं तोहि आइ शुभचेता ३४

॥ सोरठा ॥

कह्यो लखन अस बैन, त्यहि सुनि रोवति जानकी ॥
बहुत बारि बह नैन, तब प्रतिउत्तर यह दियो ॥३५॥

सुनो लखन ! बिनु राम, डूबि मरों गोदावरिहि ॥
वा गलबांधहुं दाम, गिरों शिखर चढ़ि धाइ वा ॥३६॥
करों तीव्र बिष पान, वा जलि मरों हुताश महँ ॥
पै नहिं पुरुषहु आन, तजि राघव कहँ मैं छुओं ३७॥

॥ दोहा ॥

दृढ़प्रतिज्ञ है लखन से, या विधि सिय युत शोक ॥
रोवति दुख भरि दुहुकरन, हन्यो हृदय बिनु रोक ३८॥

। हरिगीती छन्द ।

त्यहिसियहिनैनबिशालिनिहिलखि, दुखिनिरोवतिझरझरे ।
तब लखन अनमन ह्वै महामति, स्वास हिय मधि मैं भरे ॥
पुनि उठि सियहि मृदु बचन कहि, समझाय हू धीरज धरे ।
पै सियहु निजपति भाइ सन फिरि, कह्यो कछु नहिं उत्तरे ३९

। धोधक छन्द ।

तब सीतहि लक्ष्मण बीरलला । कर जोरि प्रणामहु कीन्ह भला ॥
बहु बार निहारत ताहि चला । द्रुतराम समीप अनंत कला ॥४०॥

इति श्रीमद्वा०रा०आ०कां० पं०देवकीनंदन चि०कृत भा०छं० पंचचत्वारिंशः सर्गः ४५॥

—:※:※:※:—

छिआलिसवां सर्ग ।

श्री राम की ओर लक्ष्मण जी के जाने पर सून कुटी पाय सीता जी के निकट यती भेष रावण का आना, सीता से सत्कार पाना ।

॥ दोहा ॥

जब सिय कह्यो कठोर तब, राम अनुज करि कोप ॥
राम ओर हिय शंक छांड़ि, मिलन चल्यो द्रुत चोप ॥१॥

॥ चौपाई ॥

तब तहँ थित रावण तुरताई । पहुंचि गयो थल सूनहु पाई ॥
बैदेही के सन्मुख धाई । यती रूप अति रुचिर बनाई २
सुंदर गयरुआ बसन लपेटे । शिखा छत्र पनहीं पग मोटे ॥
लिये वाम कर अति बर साजो । दंड कमंडलु अद्भुत भ्राजो ३
यती त्रिदंडी रूप बनाये । बैदेही पहँ अति नियराये ॥
बनमधि त्यहि घेर्यो बल टेका । जो सिय राम लखन बिनु एका ४
ता छिन मनहुं चंद्र रबि हीना । संध्या समय सघन तम भीना ॥
तबत्यहि अबलहि देखत भयऊ । यशिनिराजपुत्रिहिछकिगयऊ ५
जनुताछिनरोहिणिशशिहीना । घिरी राहु दारुण से दीना ॥
त्यहिउग्रहिपापिहिखलकामहि । जनस्थान के द्रुम लखि नामहि६
है भयभीत तनक नहिं डोले । बह्योपवन पुनिनहिं गतिलोले ॥
अरुणनयनत्यहिसियहिनिहारत । शीघ्रधार नदिअन जलबारत ७
तथा मंदगति कीन अरंभा । गोदावरि डरि मानि अचंभा ॥
जब देख्यो अब नहिं द्वौभाई । राम अहित रावण मनलाई ८
भिक्षुक रूप दशानन कीन्हे । अतिनियराय गयो बिनुचीन्हे ॥
जो सिय सोचति पियहि अनूपा । त्यहिढिगभूष्ट साधुबनि रूपा ९
छाइलियो जा जनकदुलारिहि । ज्योंचित्रहिशनिबदनपसारिहि ॥
साधु रूप धरि तुरत अचानक । ढपीकूप जनु तृणनिह भयानक १०

राम पतिनि बैदेहिहि देखी। ठाढ़ भयो यशिनिहि चितलेखी॥
पुनिठाढ़रहि दशशीश निहारा। रामबधू कर रूप अपारा ११

॥ दोहा ॥

ओंठ दांत शुभ रुचिर अति, पूर्ण चन्द्र मुख कांति ॥
पर्णकुटी मधि बैठि सो, शोक आंशु दुख रांति ॥१२॥

॥ चौपाई ॥

सोत्यहिअरुणकमलदलनैनिहि। पीतंबर ओढ़े हत चैनिहि ॥
चितै चेत करि हिय हरखानो। सियहिनिशाचरपतिअकुलानो १३
तकितकिबिंध्यो कामकेबानन। बेद उचारयहु बिप्र बहानन॥
पुनि बोल्यो बहु बात बनाई। पाइ सून मठ निशिचर राई १४
त्यहितिहुलोकमांहिलखिनीकी। कमलहीन लछमी जस ठीकी ॥
भ्राजमान तन सिया सुहाई। रावण ताछिन कीन बड़ाई १५
सोन रूप सम सिय चमकोली। अरु रेशम सारी तन पीली ॥
पुनि कमलनके गल शुभमाला। धरे कमलिनी छबि जनु ताला १६
तू लज्जा लक्ष्मी धरि मूरति ? वा अपसरासुमुखि! जगकीरति?॥
अथवा तू बर नारि! बिभूती ?वा रतिनिजमतिचारिबिछूती?१७
दांत तोर सम चीकन कांती। ज्यों वन कुन्द पांखुरिन पांती ॥
युगलनैनपुनि बिमलबिशाला। लाल कोर पूतलि रँग काला १८
घनी बिशाल बनी अति मोटी। करि कर सम जांघन की जोटी॥
ये दोनों उपजीं सुठि सोही। मिलित परस्पर निजजयजोही १९
उन्नत मुख चिक्कन छबि छाये। मनहुं ताल फल कांति बढ़ाये॥
जिन पर मणिमय हार झुलाये। सुघर पयोधर रुचि मनभाये २०

हे रुचिदंति! चारुमुसुक्यानिनि ! चारुनयनिसुबिलासिनिभामिनि!
हे रामे! तू मो मन हारिनि ! नदीकगारहि ज्यों जलधारिनि २१
अँगुठ छँगुलिमधिगोलगढ़ोरी ! लंब केशि ! घनकुच बरजोरी ! ॥
नहिं देवी कहुं नहिं गन्धर्वा । नहिं यक्षी नहिं किन्नरि गर्वा २२
नहिं अस सुघर रूप की नारी । मैं नहिं प्रथम लख्यों महिप्यारी ! ॥
याते अग्रगण्य तुव रूपा । बय सुकुमारि तिलोक अनूपा २३
अरु इहँ निर्जन बन कर बासा । मथै चित्त मम अचरज भासा ॥
अब सो चलु होवै शुभ तोरा । नहिं तुम बसनु योगु यहिठौरा २४
यहनिवास निशिचरगण केरा । धरैं जु घोर रूप बहुतेरा ॥
तुम तो ऊंच अटा रमणीयन । नगर और उपबन कमनीयन २५
सब बिध सजे सुगंधनि पूरन । तिन मधि बिहरनुयोग जरूरन ॥
बर माला अरु उत्तम गंधा । सुन्दर बसन सुमुखि ! पटबंधा २६
हे कटाक्षलोचनि ! तुव स्वामी । त्वहि लहि धन्य तोर अनुगामी ॥
का तुम हो रुद्रण की रानी ? । पवननारिवा? मृदुमुसकानी! २७
आठ वसुन की वा युव जाया ? म्वहिं लागहु[1] देवता अमाया ॥
इहँ नहिं आइ सकैं गंधर्वा । नहिंकिन्नर अरुनहिं सुरसर्वा २८
यहै निवास राक्षसन केरा । कैसे तुम कीन्हे इहँ फेरा ? ॥
इहँ तौ वानर बहु मृग वाघा । सिंहऔर गजबृक बड़घाघा[2] २९
गैंडा ऋच्छ हरिन भख जंतू । तिन ते कस नहिं डरहु इकंतू ॥
अरु मद भरे भयानक हाथी । धावहिं बेग लिये बहु साथी ३०
कैसे तुम अकेलि बन मांहीं ? । बर आननि ! डरपौ धौं नाहीं ? ॥
को हौ? कौनकेरि ? कहँसेहू ? । दंडकबन आइहु क्यहि नेहू ? ३१
हे कल्याणिनि ! फिरौ अँकेली । घोर निशाचर सन घन मेली ? ॥
याबिधि उत्तम सियहि सयाना । रावण कह्यो यती मतिमाना ३२

१ जान पड़ती हो । २ चालाक ।

॥ दोहा ॥

ब्राह्मण बेषहि रावणहि, लखि आगत निज द्वारि ॥
करि आतिथ सत्कार सब, त्यहि पूज्यहु सिय नारि ॥३३॥

॥ चौपाई ॥

प्रथमहि त्यहि आसन बर लाई । अर्घपाद्य से न्योति मनाई ॥
तब फल जो देखत मन भाये । "लेहु सिद्ध यह" कह्यो सुहाये ३४

। हरिणीप्लुत छन्द ।

अतिथिब्राह्मणबेषहि जानकी । लखि कषाय कमंडलु मानकी ॥
सकिन त्यागित्रिदंडिसुसाजसे । कह्यउन्योतिहुज्योंद्विजराजसे ३५
द्विज! सुआसनपै थित होइये । यह भलो जल लै पग धोइये ॥
बन पदारथ के पकवान ये । तुव निमित्त चखो सुख से लये ३६

। नगस्वरूपिणी छन्द ।

दियो जु न्योति रावणै सिया सु पूर्ण भाखिनी ।
निरक्खि ताहि जो नरेन्द्र राम प्रेम राखिनी ॥
जुरावरी डिठाय चित्त तासु की हराहरी ।
सु सौंपि दीन्ह रावणा निजै बधन्नुता घरी ॥ ३७ ॥
तबै सिया सुजानि, राम लक्ष्मणै परक्खती ।
गये सुबेष धारि, जो शिकारि बाट लक्खती ॥
महाबनै हरो हरो, दिशान मैं निरक्खतीं ।
नहीं कहूं दिखान, दोउ भाइ भौं उभक्कतीं ॥ ३८ ॥

इति श्रीमद्वा०रा०आ०कां० पं०देवकीनंदनवि०कृत भा०छं० षटचत्वारिंश:सर्ग: ४६॥

—:※:※:※:—

सैंतालिसवां सर्ग ।

सीता हरण इच्छुक रावण का सीता जी से कपट कर भेद पूंछना, रावण को यती जान सीताजी का निज बन आने की कथा का कहना ।

॥ दोहा ॥

हरनु चाह रावण जबै, सिय सन पूंछयहु भेद ॥
यती रूप सन निज कथा, कहन लगीं बिनु खेद ॥१॥
है यह ब्राह्मण अतिथि म्बहिं, देइ कहे बिनु शापु ॥
ध्याय मुहूरत एक अस, सिय बोलीं तब आपु ॥२॥

॥ चौपाई ॥

मैं दुहिता मिथिलापति केरी । जनक जासु मति विदित घनेरी ॥
सीता नाम मोर शुभचारी ! राम केरि रानी मैं प्यारी ३
मैं इक्ष्वाकु बंश के गेहा । बारह बर्ष बिताइ सनेहा ॥
भोगि चुकी नरतन के भोगा । सब कामना बढाय सँयोगा ४
तहां तेरहें बर्ष भुआला । कीन्ह मंत्रणा प्रभु शुभकाला ॥
राम केर अभिषेक हुलासी । राज मंत्रि गण लै सुख रासी ५
राज्य तिलक महँ रघुबर केरे । ता मधि साज निरखि बहुतेरे ॥
सासु मोरि कैकइ हरखानी । बर मांग्यो स्वामिहु से रानी ६
सो कैकेइ ससुर कहँ मोरे । धर्मपाश से बांध्यहु जोरे ॥
मांगयहु ममपति को बनबासा । भरत केर अभिषेक हुलासा ७
दुइ बर निज स्वामी से जांचे । जो नृप उत्तम ब्रत के सांचे ॥
नहिं मैं आजु खाउँ नहिं सोऊं । नहिं कछु पान करहुं थित होऊं ८

इहै मोर जानहु तुम मरना । राम तिलक ह्वैहै जौ भरना[1] ॥
यह जब कैकेई अस बोली । कह्यो ससुर मम भूप अमोली ९
मांगनु अपर लेहु भरपूरी । पै नहिं यह मांगहु प्रिय! रूरी ॥
मम पति महातेज बल शाली । बयपचीसमहँ थित त्यहिकाली१०
मोर जन्म अब बर्ष अठारा । गनो जाइ निहचैं यहु बारा ॥
राम नाम जग जाहिर येहू । मम पति शुचि सुशील सतनेहू११
नैन विशाल प्रबल महबाहू । सब जीवन हित रत गुण गाहू ॥
स्वयं काम बस ह्वै महराजा । पिता तासु दशरथ निजकाजा१२
कैकेई के प्यार लगाई । त्यहि रामहिनहिं तिलकदिवाई ॥
पै अभिषेक हेतु पितु पाहीं । गयो राम आपुहि चलि ताहीं १३
तब सो कैकेई मम स्वामिहि । यह बोली द्रुत बैन सुनामिहि ॥
"तोर पिता मोसन जो बोले । सुनुराघव! तो हित कहुं खोले १४
भरतहि देन योग्य यह राजू । होय अकंटक जो जग काजू ॥
तोर उचित बनबास पिआरे! चौदह बर्ष अवधि निरधारे १५
हे ककुत्थ! तुम बन कहँ जाहू । पितहि झूंठ से मोचि सुबाहू"! ॥
"बहुत नीक" रामहु तब माखे । कैकेइहि नहिं कछु भय राखे १६

॥ दोहा ॥

तासु बचन सुनि सो कियो, मम पति दृढ़ ब्रत पूरि ॥
दिहो राज्य नहिं पुनि गह्यो, नृप न झूंठ हो भूरि ॥१७॥

॥ चौपाई ॥

हे ब्राह्मण! यह रामहु केरा । ब्रत धारनु उत्तम जग हेरा ॥
अरु पुनि तासु भाइ सौतेला । लक्ष्मण नाम महाबल मेला १८

1 लिलार में तिलक देना ।

पुरुष व्याघ्र सो शत्रु बिनाशी । भयउ सहाय राम बिनु त्रासी ॥
नाम लखन सुन्दर सो भाई । ब्रह्मचारि दृढ़ ब्रत मन लाई १९
लै धनु हांथ चल्यो पछुआई । मों सँग जब गवन्यो रघुराई ॥
जटाजूट शिर तापस बेषा । अनुज सहित मैं बास हमेशा २०
दंडक बन पैठे ममस्वामी । नित्य धर्म रुचि दृढ़ ब्रत गामी ॥
ते हम तीनों जन है राजू । भये कैकई के कृत काजू २१
हे द्विज श्रेष्ठ ! गहन बन मांहीं । बिचरहिंनिजबलकछु भयनाहीं ॥
एक मुहूरत ठहरहु नीके । मिलिहैं तुम्हैं बस्तु भरि जीके २२
मम स्वामी ऐहैं तुरताई । बन के बहुत पदारथ ल्याई ॥
मृग अरु गोह बराहन मारी । ले तिनकर बहु मांस सँवारी २३
सो पुनितुम गोत्रहु अरु नामा । कुलहु सत्य भाखहु गुणधामा ! ॥
अरु अँकेल दंडकबन चारी । कैसे भये ? कहो ब्रह्मचारी ! २४

॥ दोहा ॥

राम प्रिया सिय अस जबै, कह्यो तबै बलवान ॥
तीव्र बचन उत्तर दियो, रावण अधम प्रधान ॥२५॥

॥ चौपाई ॥

सुनिसिय ! जासन लोकडराहीं । देव असुर नर मिलि घबड़ाहीं ॥
सो मैं रावण नाम महाना । राक्षस गण को ईश प्रधाना २६
त्वहिकंचनबरनिहि पुनिदेखी । पहिरे रेशम बसन बिशेखी ॥
निजदरसनमहँ नहिंरतिमोरी । चहों न उन सँग परसन गोरी ! २७
इत उत से बहु तिय हर लायों । जांचि सु उत्तम नारि बनायों ॥
तिन सब की ऊपर मम रानी । तुव मंगल हो ब्रनहु सयानी २८

पुरीमोरि उत्तम गढ़ लंका । नाम, सिंधु विच बसै निशंका ॥
चहुंदिश है सागर से घेरी । पर्वत के शिर रची घनेरी २९
तहैं सिया ! तुम संग हमारे । बिचरन करिहो बनहि उदारे ॥
नहिं यह बन उजाड़ करबासा । भामिनि! पुनिरखिहोटुकआसा३०
पांच सहस दासी तुव संगा । सब अभरण भूषित बर अंगा ॥
हे सिय ! ते करिहैं तुव सेवा । होहु नारि जो मम धरि ठेवा ३१

॥ दोहा ॥

जब रावण अस कह्यो तब, कोपित जनक दुलारि ॥
निदरि ताहि राक्षसहि पुनि, उत्तर दीन्ह सुनारि ॥३२॥

॥ चौपाई ॥

जो सुमेरु सम अचल महाना । मम पति इन्द्र सरिस बलवाना ॥
सागर सम जो अगम गभीरा । तासु राम अनु ब्रत मैं धीरा ! ३३
सकल सुलक्षण से सम्पन्ना । बट द्रुम सरिस घेर परिछन्ना ॥
जो सतसंध महा भगवानू । तासु राम अनुब्रत म्वहिंजानू ३४
महाबाहु उर बिसद बिशाला । सिंह सरिस विक्रांत सुचाला ॥
पुनि नृसिंह अरु सिंह प्रकाशू । तासु राम अनुब्रत मैं आशू ३५
पूरण शशि आनन श्री रामू । राजपुत्र जित इन्द्रिय कामू ॥
जासु बाहुबल धरा बखाना । तासु राम अनुब्रत मम प्राना ३६
तू है स्याल सिंहिनिहि मोहीं । चहसि दुर्ल्लभहि लाज न तोहीं ॥
तोरि समर्थ हुअनु नहिं मोरी । ज्योंरबि प्रभासमभ्र नहिंतोरी ३७
मंद भाग बहु मरनु सुधारे । देखसि द्रुमन्हि स्वर्ण पतवारे ॥
जोतूराघवकीशुचिनारिहि । राक्षसअधम! चहसिअतिप्यारिहि३८

भूखो सिंह मारि मृग खाता। जो बल बेग जंतु घहराता॥
तासु तथा बिष अहि मुखदंता। चहसिउखारनु लखसि न अंता३९
श्रेष्ठ मंदराचलहि उपारन। चहसि हाथसे, पुनि शिर धारन॥
काल कूट बिष करि बहु पाना। जानुचहसि घरकुशलबिधाना४०
चहसि सुईसे चखु[1] खजुलावन। छूरिहि जीभ चाटि रस पावन॥
राघव की प्रिय नारिहु संगा। चहसि गमनु तू निपट कुढंगा ४१
बांधि कंठमधि शिला महाना। चहसि समुद्र पैरि पुनि जाना॥
सूर्य चन्द्र दोनों ग्रह साथै। खींचनु चहसि पकड़ि दुहुहांथै ४२
जो तू राम केरि प्रिय नारी। चहसि भुलावनु लोभ पसारी॥
सोतूज्वलितआगलखिआंखी। चहसि वस्त्र मधि बांधिहुराखी ४३
जो कल्यान कर्म कर भामिनि। चहसि हरनु राघवकी स्वामिनि॥
सो तू लोह शूल मुख मांझू। दौड़न चहसि प्रात अरु सांझू॥
राम सरिस जो तासु सुनारी। तासँग चहसि गमन तु अनारी ४४

घनाक्षरी छन्द।

जो कुछ श्रृगाल और सिंह बिच अंतर है–
छोटी नदी और समुद्र अंतर जुमानिये।
सिरका सुधा के बीच अंतर जु भाखैं जग–
अंतर तिहारो सोइ राम संग जानिये ॥४५॥
अंतर जु कंचन औ सीस लोह के समीप–
चन्दन और बारि पंक अंतर प्रमानिये।
हाथी औ बिडाल बन मांहिं कछु अंतर जो–
अंतर तिहारो सोइ राम संग जानिये ॥४६॥

१ आंख।

अंतर जु काक औ गरुड़ बिच रहो करै-
जल मुर्ग औ मयूर बीच जो बखानिये ।
हंस और गीध के चरित्र बीच अंतर जो-
अंतर तिहारो सोइ राम संग जानिये ॥४७॥

। धोधक छन्द ।

त्यहि इन्द्र समान प्रभाव भरे । रघुनंदन के शर चाप करे ॥
हरि जांउं तभू न बुढ़ाउं अरे ! घृत मक्खि भखे सम जाहु मरे ४८
कहि बैन इहै सिय सांच खरे । त्यहि दुष्ट निशाचर से उचरे ॥
तन कंपित सो दुख गात दरे । जनु आंधि चले कदली लहरे ४९
त्यहि कंपित सीतहि देखि सरो । स्वइ रावण मृत्यु प्रभाव धरो ॥
अपनो कुल नाम बली निडरो । डर हेतु कुकर्म कह्यो सिगरो ५०

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छं० सप्तचत्वारिंशः सर्गः ४७॥

——:※:※:※:——

अड़तालिसवां सर्ग ।

सीता के कठोर बचन सुन रावण का निज बल प्रताप अपने मुख कहना,
उसे सुन फिर सीता जी का कठोर बचन और दुदकारना ॥

॥ दोहा ॥

या विधि कहतहि सिया के, रावण क्रोधित घोर ॥
भौंह लिलार चढ़ाइ कह, कटमट बैन कठोर ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

हे बरबर्णिनि! सुनु प्रभुताई। मैं कुबेर कर सौतिल भाई॥
रावण नाम शीश दश धारी। तुव हो कुशल, प्रतापहु भारी २
जासु नाम सुनि सुर गंधर्बा। सहित पिशाच उरग गण सर्बा॥
भागहिं सदा डरपि घबड़ाये। जिमि नित प्रजा मौतसुनि पाये ३
जा सँग सौतेला मम भाई। सो कुबेर कछु कारण लाई॥
लड्यो मल्लयुध क्रोध बढाई। हारि गयो रण गयो दबाई ४
मोरे डर से छोड़ि पलानो। ऋधिसिधियुत लंका निजथानो॥
सो नर बाहन बस्यो सुहाई। गिरि कैलास सुघर पर जाई ५
जासु सोइ पुष्पक बर नामी। जो बिमान इच्छा मन गामी॥
बल से रोंकि लिहों कल्यानी! ज्यहिचढ़िगगनफिरोंअभिमानी६
जब मैं क्रोध करों बैदेही! तब मो मुखहि देखि सब केही॥
हृदय मांझ उपजै डर, भागैं। इन्द्र सहित सुर स्वर्गहु त्यागैं ७
जहँ मैं रहूं तहैं भयभीता। बहै पवन मोरे मन नीता॥
तीब्रअंशु रबि,शशि करशीता। भय से उअहिं गगन मम प्रीता ८
बिटपहु नेक न पत्र हलावें। नदी थमैं नहिं नीर बहावें॥
ये सब रहैं डरपि ज्वहिं जहँवां। मैं कहुं जाउँ फिरों वा तहँवा ९
सिंधु पार मम पुरी सुहावै। लंका नाम महा छबि छावै॥
घोर राक्षसनि पूरित ऐसी। अमरावती इन्द्र की जैसी १०
चहुंदिश स्वेत किला सन घेरी। राजित मध्य महा द्युति हेरी॥
बिचबिच कंचन कोट कँगूरे। मणि वैदूर्य द्वार रचि रूरे ११
गज तुरँग रथ से घन घेरी। तुरही नाद बजैं चहु फेरी॥
बहु प्रकार के कामिल वृक्षा। हैं भूषित फुलवारिहु स्वच्छा १२

तहैं बसौ तुम हे सिय प्यारी ! । चलि मोरे सँग राजदुलारी ! ॥
नहिंसुधिलैहो हे मनभावनि! । मनुजबधुनकी प्रीतिअपावनि १३
करिहो भोग अमानुष जबहीं । दिव्य देवकन्यन सँग तबहीं ॥
नहिं लेहो सुधि सुंदरि! फेरी । राम निहत आयुष नर केरी १४
राज्य मांहिं प्रिय पूतहि थापी । दशरथ भूप चतुर ह्वै आपी ॥
तब पुनि जेठ सुतहि बनदीन्हे । मंद बुद्धि बल पौरुष चीन्हे १५
त्यहितपसिहिरामहिहलचेतहि । भ्रष्ट राज्य जाये तप हेतहि ॥
का करिहो लै? नैनबिशाले ! । जगसुखलियतनधरिसुठिबाले!१६
सेवहु राक्षस पतिहि अनन्दे । जो आयहु ढिग बहहु अमन्दे! ॥
त्यहि मन्मथशर घायल जानी । नहिं तुम तजनुयोगु महरानी !१७
हे डरपोकनि ! तू स्वहित्यागी । पछितैहो पीछे दुख पागी ॥
जस उर्वशी पुरूरव राजहि । मारिचरणदुखलह्योअकाजहि१८
राम मोरि अंगुली सम नाहीं । सो नर युद्ध करै कस? बांहीं ॥
तोरि भाग से मैं इहँ आयों । भजहु सुन्दरी तोहि सुनायों १९

॥ दोहा ॥

यह सुनि रावण बैन सिय, क्रोध भरी दृग लाल ॥
क्रूर बचन कह राक्षसहि, राम रहित त्यहि काल ॥२०॥

निशिपाली छन्द ।

रेशठ!कसकुबेरकोभाषसिभाई ?। जोसबदेवन्हिपूजितसोसुरराई॥
तासुनामधरिहोकसिबंशबड़ाई कीन्हचहैअसपापहु,पूरिढिठाई२१
हेरावण!अबसांचहुहैकुलनाशा। राक्षसकोइकसाथहिढंगप्रकाशा॥
होजिनकेतुमयाछितकर्कशराजा दुष्टबुद्धिबश[illegible]नकेहतकाजा२२

इंद्रकेरिप्रियनारिहिजोहरिचाहैशचिहिसुजीवनआशहुफेरिउछाहै
ऐसहिरामपिआरिहिमोहिंगहैयातूटुकमंगलपावसिनाहिंहरैया २३

। हरिगीती छन्द ।

तुम बज्रधर की नारि हरि पुनि, चहहु जीवनु रावना ।
जो शची अनुपम रूप सुन्दरि, तजहु यह मन भावना ॥
तस मो समान सुनारि जन को, धमकि दै डरपावना ।
चहु अमृत पी हूं अमर बैठहु, त्यहुं न बँचहु सुहावना ॥२४॥

इति श्रीमद्वा०रा०आ०कां० पं०देवकीनंदनचि०कृतभा०छं० अष्टचत्वारिंशःसर्गः ४८॥

—०※※※०—

उंचासवां सर्ग ।

सीता जी के धिक्कार वचन सुन फिर रावण का कोप और यती भेष बदल राक्षसी रूप दिखा कर सीता जी को पकड़ रथ पर बैठारना, सीता जी का बिकल बिलाप ।

॥ दोहा ॥

दशकंधर सिय के बचन, सुनि प्रताप बड़धार ॥
पटकि हांथ पर हांथ तब, कीन्ह देह बिस्तार ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

जनकनंदिनी से पुनि सोई । बोल्यो बचन वाक्य विद होई ॥
रे उनमत्तिन ! कान तिहारे । पड्यो न मम बल पौरुष ? वारे २
मैं दुहु भुज सन भूमि उठाई । उड़ौं अकाश मांझ फहराई ॥
पिऔं समुद्र समस्त सुखाई । मृत्युहि रणथित हनौं गिराई ३

गगनमध्य दिनकरहि बिदारों। तीच्छन शरन्हि महीतल फारों ॥
कामरूप से हे मतवारी!। कामरूप म्वहिं देखु पिआरी! ४
जबअस कह्योसोइखलरावण। महाक्रोध करि सियहि डरावन ॥
तब ताके द्वौ दृग भे लाला। पूतलि रंगहु रह्यो न काला ५
तुरतहि साधु रूप सो त्यागी। तीक्ष्ण रूप रावण अनुरागी ॥
जो निज रूप काल सम भारी। धर्यो कुबेर अनुज भयकारी ६
लोचन लालअधिक श्रीमानू। तप्त कनक भूषण परमानू ॥
अधिक क्रोध से भरो रिसानो। नील मेघसम लगत भयानो ७
दशमुख बीस भुजा बड़ बांके। धर्यो निशाचर एक उलांके ॥
यती रूप छिपि रह्यो बनाये। ताहि छोड़ि बड़ काय दिखाये ८
आपन रूप निशाचर नाथा। धर्यो तुरंत एक ही साथा ॥
पै तहँ रह्यो रक्त पट धारी। नारि रतन लखि जनकदुलारी ९
सोत्यहिलंबश्यामसुठिकेशिहि। रबि कर प्रभा समान सु बेसिहि ॥
बसन आभरण से बर सोही। रावण कह्यो जानकि हि जोही १०

॥ दोहा ॥

तीन लोक विख्यात कहँ, जो पति करनु हुलास ॥
तो सुन्दरि! मोसन मिलौ, मैं तुव सम पति पास ॥११॥

॥ चौपाई ॥

म्वहिं भजु तू बहु दिन के हेतू। मैं तुव प्रिय पति हौं चित नेतू ॥
हे भद्रे! मैं नहिं कहुं तोरा। करिहों काज निरादर ओरा १२
त्यागहु मनुज राम सँग भाऊ। मो महँ हिय भरि प्रीति लगाऊ ॥
जो तजि राज्य राम हत भागी। नपी आयु जाको तट[1] लागी १३

१ मरन निकट ही है।

किनकिनगुणन्हि?भयअनुरागिनि । पंडितमानिमूढ़महँभागिनि!
जो लघुनारिबचन सुनिकाना । छोड़ि राज्य कुल सुजन सुथाना१४
बीछी सांप जहां बिचराहीं । त्यहि बन दुर्मति बास कराहीं ॥
यह कहि जनकललौ से बैना । जो प्रिय जोगु बचन प्रिय ऐना १५
दुष्ट सुभाव कूदि तुरताई । राक्षस काम मोहि बिकलाई ॥
रावणसियहिगह्योनियराइहि । ज्यों बुध गगनरोहिणी माइहि १६
कमलनैनि सिय के कच भारा । बाम हाथ से गह्यो प्रचारा ॥
दक्षिण हाथ धर्यो पग दोऊ । लीन उठाइ निशाचर सोऊ १७
ताहि देखि गिरि शृङ्ग समाना । तीक्ष्ण दांत अरु भुजा महाना ॥
मृत्यु सरिस लखि कै सब भागे । बन देवता थान निज त्यागे १८
सो पुनि मायामय द्युतिकारी । हेम रचित बर दिव्य सुधारी ॥
तीक्ष्न रव युत खच्चर नाधा । रावणरथ लखि पर्यो अबाधा१९
तदनंतर त्यहि सियहि सुबंका । कहत कठोर बचन भरि श्रंका ॥
उछलिबिधारि करतबड़शोरा । बैठायहु रथ माहिं सजोरा २०
रावण गहे सिया अति रोई । सोइ यशस्विनि आतुर होई ॥
राम गये बन अधिक दुराई । तिन्है "राम" असकहि गुहराई२१

॥ दोहा ॥

छटपटाति सिय नागपति, नागिनि सम, फुफुआइ ॥
ताहि अकामहि काम वश, महि रथ दीन्ह उड़ाइ ॥२२॥

॥ चौपाई ॥

तब सो सिय रावण रथ माहीं । चली गगन मधि हरि बर बाहीं ॥
बार बार रोई अकुलाई । जस कौ भ्रांत चित्त घबड़ाई २३

हाहा !!! लखन! बाहुबलशाली! । गुरु मनमोद करनु ! बन माली! ॥
हर्‍यो मोहिं निशिचर बहुरूपी । तुम नहिं जानहु हाय सुरूपी २४
जीवन औ सुख धनहु समर्था । छोड्यो लखन धर्म के अर्था ॥
मैं अधर्म से जो हरि जाऊं । ताहि न देखहु तुम यहि ठाऊं २५
अन्याइन को शाशन हारो । नामश्रिदितअरिदम! जगसारो॥
सो कैसे याबिधि खलपापिहि ? शाशहुनहिंरावणअघथापिहि२६
हा!!! द्रुत फल कुन्यायिनपावै । जो कुकर्म करि साधु सँतावै ॥
या मधि कालहु होय सहाये । अन्न पकै ज्यों कालहि पाये २७
हे रावण खल ! यह तू कर्मा । किहौ काल हत चित्त अधर्मा ॥
कुटुम सहित निजमरनु भयाना । पैहे राम हाथ दुख नाना २८
हाय !!! कैकई बंधु समेता । बांछित पूरि भई खल चेता ॥
हरी जाउं मैं धर्म सुनारी । यशी धर्मधर की अति प्यारी २९
जनस्थान से कहहु सुनाई । अरु फूली कनिकन गुहराई ॥
तुरत राम से देहु बताई । रावण सियहि हरे भगि जाई ३०
सारस हंस नाद से पूरिहि । बंदहुं गोदावरिहि अरूरिहि ॥
तुरत राम से देहु बताई । रावण सियहि हरे भगि जाई ३१
बिबिधि बृक्षमधि यावन माहीं । देवि देव जे बसैं सदाहीं ॥
तिन सब को बंदहुं यहि ठावैं । हरनु मोर जो पियहि सुनावैं ३२
जो को और बसैं यहि ठांईं । जीव जंतु बहु बिधि जह तांईं ॥
सब की शरण जाउं मैं अबहीं । मृग पक्षी गण बिनउहुं सबहीं ३३
हरी जाउं मैं पिय की नारी । प्राणहु से अतिशय जो प्यारी ॥
बिबश सिया तुव हरी सुनारी । रावण कर यह कहो प्रचारी ३४
महा बाहु यह गति मम जानी । परलोकहु से बली बखानी ॥
रोपि पराक्रम अनिहैं मोहीं । बैवस्वतहु हरै कहुं जोहीं ३५

॥ दोहा ॥

जब सिय सो करुणा बचन, भरि दुख कीन्ह बिलाप ॥
तबदेख्यो बन बिटप मधि, गीधहि तुरत अलाप ॥३६॥
सो सुंदर कटि ताहि लखि, रावण बश बिकलानि ॥
रोयहु भय बिह्वल उभकि, भरी दुःख की बानि ॥३७॥

। तोमर छन्द ।

स्वहिं लखहु जटायु सनाथ। हरि जाउं मनहुं अनाथ ॥
यहि रजनिचर के हाथ। जो करत अघ इक साथ ३८
नाहिं सकहु यहि तुम रोकि। यह कठिन निशचिर झोंकि ॥
बड़काय अतित प्रकार। दुर्मति लिये हथिआर ॥३९॥
तुम तुरत रामहि जाइ। मम हरण बिधि समुझाय ॥
यह लखन सन सब गाइ। कहुजा जटायु ! सुहाय ॥४०॥

इति श्रीमद्वा०रा०आ०कां० पं०देवकीनंदनचि० कृत भ०छं० एकोनपंचाशःसर्गः ४९॥

—०※✻※०—

पचासवां सर्ग ।

सीता जी का बिलाप सुन जटायु गिद्ध का रावण को नीति सिखा कर सीताजी को छोड़ देनेको कहना और युद्ध के लिये ललकारना ॥

॥ दोहा ॥

तहँ जटायु सोवत रह्यो, सुन्यो रुदन गंभीर ॥
देख्यो तुरतहि रावणै, अरु सो सियहि सुधीर ॥१॥

॥ चौपाई ॥

तदनंतर सो खगवर भारी। पैन चोंच गिरि सम तन धारी॥
बैठ बिटप ऊपर श्री मानू। बोल्यो शुभ बानी खरसानू २
धर्म सनातन थित दशशीशा! सत्य प्रतिज्ञा तुव भुज बीशा! ॥
हे भाई! तुम निंदित धर्मा। करनु योग्य नहिं या छिन कर्मा३
मैं जटाय नामी इक गिद्धा। पक्षिराज बल जगत प्रसिद्धा॥
अरु जो सर्व लोक कर राजा। इन्द्र वरुण सम उत्तम काजा ४
सकल लोक हित रत श्री रामू। दशरथनंदन धर्म सुधामू॥
तासु लोकपति की यह पत्नी। यशिनि धर्म रत पूरण यत्नी ५
सीता नाम सुन्दरी नारी। ज्यहि तुम हरन चहो ब्रत धारी!॥
कैसे नृप हूँ? धर्म सुधारी?। पर दारन्हि परसै बुधि हारी ६
सुनो महाबल! भूपति दारा। है विशेष रक्षणु श्रुति सारा॥
याते लौटि नीच मति छोड़ो। परतिय परसनु से मुख मोड़ो ७
धीर आचरहिं नहिं अस कर्मा। जो पर प्राणिन्ह निंदित धर्मा॥
जस आपनि तस नारि पराई। रक्षणु योगु परस से भाई! ८
अर्थ होइ अथवा हो कामा। शास्त्रहु माहि जासु नहिं नामा॥
नृपहि करत लखि ताहि रुचाने। आचरहिं रावण! धर्म सुमाने ९
राजहि धर्म काम शुभ सोई। द्रव्यन्हि मध्य परम निधि होई॥
याते शुभ धर्महु या पापा। राजा मूल सबन कर थापा १०

॥ दोहा ॥

पाप सुभाऊ चपल मति, कस तुम? निशिचर श्रेष्ठ! ॥
पाइ ऐश्वरज सम बिमल, नभ सम कीरति नेष्ठ ॥११॥

॥ चौपाई ॥

काम सुभाउ जु मनुज अबोधी । वहन सकै त्यहि भावहि शोधी ॥
पालि दुष्ट प्राणि के गेहा । बहु दिन बसै न पुण्य सुनेहा १२
अब तुव राज्य और पुर माहीं । राम महाबल दुक बर बाहीं ॥
कीन्ह न धर्म धरहु अपराधा । तबतुम तासुकरो किमिबाधा १३
यदि कहु शूर्पनखा के हेतू । जनस्थान गत खर कुल ? केतू ॥
मर्यो प्रथम उत्पात मचाये । रामहु ता सँग कु व उठाये १४
याम्यथि कहो यथारथ बानी । काह राम कर दोष ? सुज्ञानी ! ॥
जाते लोक नाथ की रानी । तुमहरिलियेजाहु?अभिमानी! १५
तजहु तुरंत नारि बैदेहिहि । जाते घोर आंख लखि तेहिहि ॥
दहैं न अनल समान पसारो । इंद्र बज्र ज्यों बृत्रहि मारो १६
बिषयल सांप भयानक बांधे । जानसि नाहि धरे पट कांधे ॥
पुनि गल माहि छोड़ि लटकाये । कालफांस नहिं लखसि भुलाये १७
सुनो सौम्य ! सो लादिय भारा । नरहि न जो गरुआइ संहारा ॥
सोइ अन्न खाइय गुणकारी । पचै जोइ बिनु किये बिमारी १८
जाहि किये कछु धर्म न कोई । नहिं सुकीर्ति नहिंयश प्रभु वहोई ॥
पै शरीर को दुख उपजावे । को अस कर्म करन मनभावे १९
साठ हजार बर्ष बय मोरी । हे रावण ! कछु नहिं वह थोरी ॥
पिता पितामहँ की बर राजू । भोग्यहुंरहिकरिसकल सुकाजू २०
मैं अति बृद्ध, युवा बय तोरी । रथी कवचधर धनु शर जोरी ॥
पै त्यहिं कुशल रहत बैदेहिहि । जान न पैहो हरिहु सनेहिहि २१
नाहिं तुम सकहु जुराबरि ठानी । सिया हरनु मम देखत धानी ॥
जिमि कुतर्ककरि हेतु अभासा । चहै सनातन श्रुति कर नासा २२

शूर होउ जौ करौ लड़ाई। एक मुहूरत ठहरि सुहाई ॥
रावण ख्वैहो भूमि मझारी। जिमिखरप्रथमहिंगयोसँहारी २३
क्रम से जासन मरे दुखारी। दानव दैत्य रणहि ललकारी ॥
बिलम नाहिं तोहिंहु रणकारी। मरिहैं राम चीर पट धारी २४
काह करौं मैं? कछु न बिसाई। नृप सुत दूर गये द्वौ भाई ॥
नाहिं तो तुरत नीच तुव नाशा। होत निसंशय तिन के त्रासा २५
मोरे जियत नाहिं तुम याही। शुभ लक्षणिहि सुटेक निबाही ॥
सियहिकमलदलनैनिहिप्यारिहि। हरिसकिहोराघवकीनारिहि२६
तासु महामति कौ प्रियकाजू। अवसि मोर करतव्य सुआजू ॥
जीवत जब तक रहूं सुचेता। राम और दशरथ कर हेता २७
ठहरहु ठहरहु लखिदशशीशा!। एक मुहूरत राक्षस ईशा! ॥
ज्यों न्यरुआसे फलहि गिराऊं। त्यों त्वहि रथसे ललुढ़काऊं २८

॥ दोहा ॥

हे निशिचर मैं प्राण पण, करि बल जो कछु मोर ॥
युद्ध अतिथि सत्कार त्वहि, देहौं या छिन चोर! ॥ (अर्द्ध)

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन त्रि० कृत भा० छं० पंचाशः सर्गः ॥ ५० ॥

——:※:※:※:——

इक्यावनवां सर्ग।

सीता जी को रावण से छीन लेने के लिये जटायु गिद्ध का नखचोंच से रावण को घायल करना, रावण का कोप करना और सीता जी का छोड़ के जटायु को बान से मार कर मरणदशा में कर देना तब जटायु की दशा देख सीता जी का दौड़ कर लिपटा के रोना ॥

॥ दोहा ॥

सुनि जटायु के बैन अस, तापर रावण क्रोधि ॥
कनक कुंडली अरुण दृग, दौरहु खोझि अबोधि ॥१॥

॥ चौपाई ॥

भई तहां तिन की मिलि मारा । ताछिन दोउन रथा ललकारा ॥
मनहुं मेघ मारुत के प्रेरे । भिडे गगन विच देत दरेरे २
ताछिन गीध निशाचर केरो । भयो युद्ध अद्भुत दृग हेरो ॥
जनु सपच्छ दो पर्वत भारी । माल्यवान गिर लहैं प्रचारी ३
तदनंतर भरि नली सुमानन । तीच्छन नोक बिकट खरलानन ॥
रावण महा घोर भर लाये । गिद्ध राज बलवत पर डाये ४
पंखहि रथ जिन को नृप होई । तिन शर जालन्हि गीधहु सोई ॥
सह्यो जटायु एक नहिं लागे । रावण अस्त्र पंख भरि त्यागे ५
त्यहि रावण के सकल सुगातन । तीच्छन नख चंगुल आघातन ॥
कीन्ह घाव बहु तर झपटाई । महा बली उत्तम खगराई ६
तदनंतर दशकंधर कोपी । गह्यो बान दश सायक रोपी ॥
मृत्यु दंड सम अधिक भयाना । शत्रु बधन हिय मैं धरि ध्याना ७
सो रावण तिन बानहि तानी । अति बलवान पूर तकि कानी ॥
तीच्छन घोर शिली मुख मारे । गीधराज कहँ शानित धारे ८
लख्योसियहि रोवति दृगनीरा । रावण के रथ बैठि अधीरा ॥
सो पुनि गीधहु गन्योन बानन । झपट्यो रावणप्रतिभरि आनन ९
तब ता निशचर की शरचापा । मणि मोतिन भूषित छविथापा ॥
दोउ चंगुलन तेज बढ़ाई । पतगोत्तम महि नोच बहाई ०१

॥ दोहा ॥

तब रावण लै आन धनु, क्रोधि हृदय घबड़ाय ॥
लग्यो बान वर्षा करन, शत अरु सहस बढ़ाय ॥११॥

॥ चौपाई ॥

जब खगपति ताछिन रणमाहीं। बानन्हि छाय गयो चहुं पाहीं ॥
तब सो जनु घोंसला मझारी। प्राप्त भयो पक्षिहि अनुहारी। १२
पुनि सो तासु महा शर जाला। दीन्ह उड़ाय पंख दुहु वाला ॥
चंगुल चोट धनुष स्वौ तासू। महा तेज खग काट्यहु आसू १३
औरहु जो शर अगिन ज्वलंता। रावण कौ बड़ चमक अनंता ॥
ताहिहु महा तेज खग राजू। काटि धरा पर दीन्ह विराजू १४
कंचन साज सजे अति भारी। बदन पिशाच नधे खर चारी ॥
तिन अति वेग चाल पगु धारिन। बलीगीध मार्‍यो रण चारिन १५
तीन दंड युत पुनि तहँ भंजे। जो अभिमत गति अनल सुरंजे॥
पावदान मणि चित्रित चक्रा। महारथहि करि बहु बिध वक्रा १६
पूर्ण चंद्र छवि छाजित छत्रा। चामर व्यजन सहित अति चित्रा॥
ताहि वेग से दीन्ह गिराई। लेन हार निशिचरन सहाई १७
तासु सारथिहि चोंचन्हि मारे। पक्षिराज लंचित शिर धारे ॥
महा बली श्री संयुत काया। पुनि करि बेग नहीं कछु माया १८
सो पुनि भग्न धनुष रथ हीना। मरे तुरग सारथिहु विलीना ॥
लिये बगल वैदेहिहि सोई। गिर्‍यो भूमि रावण क्षत होई १९
देखि गिरो महि निशिचर नाथहि। बाहन भग्न अभूषण साथहि ॥
"साधु साधु" गीधहि सब बोले। जीव जंतु पूज्यो हिय खोले २०

॥ दोहा ॥

पक्षि युत्थ स्वामिहि निरखि, थकित बुढ़ाई हेत ॥
उठि झपट्यो पुनि हर्ष से, रावण सिया समेत ॥२१॥

॥ चौपाई ॥

दौड़त शेष खड्ग कर तासू। नष्ट साज औरहु सब जासू ॥
ताहि हर्ष युत रावण राजहि। लिये अंकसीतहिलखिभ्राजहि २२
गीधराज आपहु उठि धाये। दौड़त रावण प्रति घहराये ॥
रोंकि ताहि अति तेज प्रतापी। कह्यो जटायु इहै अरि दापी २३
हे रावण! राघव की नारी। ओछिबुद्धि! यहि हरसि सुरारी!॥
राम 'बज्रपरसी' शर चोटन। बधनहेतु निशिचर सबखोटन २४
ज्यों लै नीर कोउ जन प्यासा। काल बिबस बिष पिऐ हुलासा ॥
त्यों सुमित्र अरु बंधु सुनेता। पियहु मंत्रिबल साज समेता २५
कर्म केर फल जो नहिं जानैं। करैं कुकर्म चतुर निज मानैं ॥
बहुत शीघ्र हो तिन कर नाशा। जस रावण! तुम पैहहु त्रासा २६
तुम तौ बँधे काल के फासन। कहां भागि बचिहो तुम तासन? ॥
जैसे निज बधहित की मीना। मांस भरी बंशी गहि लीना २७
रावण! राम लखन द्वौ नायक। नहिं अपमान सहन के लायक ॥
तुव कृत यह आश्रम अपमाना। जानि न छिमिहैं रघुकुलभाना २८
जस तोसे यह भयो कुकर्मा। निंदित लोक भीरु तुव मर्मा ॥
यह है चोर छलिन को पंथा। नहि बल बीर कर्मसाधि ग्रन्था २९
लड़हु होहु जो तुम बड़शूरा। रावण! ठहरि मुहूरत पूरा ॥
स्वैहो हत ह्वै भूमि मझारी। जस तुव भाइ खरहु तस हारी ३०

मरन काल पुरुषहु नियराई। जो कछु कर्म करै घिकलाई॥
सोइ कर्म अधरम से सानो। तूअचरसिनिज नाशबिधानो ३१
जासु कर्म को फल है पापा। ताहि करै को पुरुष सुथापा? ॥
इंद्रहु होय चहै वलवाना। वा समर्थ हरि ब्रह्म समाना ३२

॥ दोहा ॥

कहि जटायु सुभ बैन अस, त्यहि राक्षस की ओर॥
झपटि पीठ दशशीश के, पड़्यो बली करि जोर॥३३॥

॥ चौपाई ॥

गहित्यहितीच्छननखनबिदारे। चारहु ओर घाव करि डारे॥
ज्यों चढ़िचतुर महावत भारी। बिगड़ोगजहि अंकुशनि फारी३४
जब सब अंग नखन से नोचे। अरु भरि चोंच पीठ महँ खोंचे॥
पुनि शिर के बहु केश उखारे। नख अरु पक्ष मुखायुध धारे ३५
तब सो रावण बहु दुखपाई। गीधराज से चैन न लाई॥
अति रिस भरो ओंठ फरकाये। राक्षसहू निज गात कँपाये ३६
बाम बगल महँ सियहि दबाई। रावण लड़्यो सुबेग बढ़ाई॥
एक लात मार्यो भरि तानी। त्यहि जटायुअँगक्रोधिसुमानी ३७
त्यहि जटायु सहि फेरि तुरंता। हन्यो चोंच खगपति बलवंता॥
तब सो अरिदम गीध महानू। दशौ बामभुज नोच्यहु तानू ३८
यद्यपि बाहु ताके गय टूटी। पै सब तुरत जम्यो अँग फूटी॥
जस बिष जलनि पाइ बहराने। साँप बिंबौरिहु से भहराने ३९
तब पुनि क्रोध भरो दशशीशा। सीतहि छोड़ि बलिन मधि ईशा॥
घूसन औ लातन से मारे। गीधराज कहँ पटकि पछारे ४०

ताछिन एक मुहूरत भारी। भयो युद्ध द्वौ बलिन प्रचारी॥
राक्षसगण मुखिया इत बीरा। उत पक्षिन को प्रभु रण धीरा ४१
गीधराज के लड़त याहि बिधि। राम हेतु जे सौंपि प्राण निधि॥
तासु पक्ष अरु पग द्वौ पंजर। काट्यहु रावण मारि खड्गबर ४२
सो पुनि सहसा पक्ष बिहीना। क्रूर कर्म राक्षस ज्यहि कीना॥
महा गीध महिमाहिं तुरंता। गिरयो कछुकजीवन नहिं अंता ४३
ताहि देखि महिगिरत पड़ोरी। घावन रुधिर बहत सर बोरी॥
दौड़ीं सिया गीध की ओरी। जनु निजबंधु जानि नहिं थोरी ४४

।हरिगीती छन्द।

त्यहि नीलघन सम श्याम रुचितनु, श्वेत उर बलवानही॥
खगराजगीधजटायु कहँ, तहँ बिकल करुणानिधानही॥४५॥
लखि लंकपति रावण गिरयो महिं, बिपुल हर्ष हिये गही॥
जनुज्वलित दावानलबुझी अब,तापतासु न टुक रही॥४६॥
तब तहां खगपति अधिक पीड़ित, भूमि तल लोटत सही॥
ज्यहि बहुत रिसि भरि भीरुरावण, रणहिमर्दहु अँगदही॥
सिय जनकनंदिनि लोकबंदिनि, चन्द्रआननि दुख लही॥
पुनिताहिगहि दुहुकरन रोईं, प्रीतिअतुल न जो कही॥४६॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ०कां० पं०देवकीनंदन त्रि० कृत भा०छं० एकपंचाशःसर्गः॥ ५१॥

——:※:※:※:——

बावनवां सर्ग।

गिद्धराज जटायु को लिपटा कर सीता जी का बिलाप, उसे सुन फिर कूद कर रावण का सीताजी को पकड़ ले रथपर बैठार आकाश को उड़ा देना, उड़ते समय सीताजी के गहना और पुष्प माल आदि का टूटर उड़ना गिरना॥

॥ दोहा ॥

पुनि सो ताराधिप मुखी, गीधपतिहि त्यहि देखि ॥
रावण कर हत व्यथित लख, रोईं अति दुख लेखि ॥१॥

॥ चौपाई ॥

हा!! सुख दुःख निमित्त लगाई । सगुन अगुन बहु परैं दिखाई ॥
स्वप्न श्रीर खग रोदन दर्शन । अवसि दहिन बायें गुण पर्शन २
हे राघव! निहिचैं तुम नाहीं । निज दुख जानहु जो मम पाहीं ॥
पै अस गुन तुव निकट जनाई । डरवत ह्वैहैं मृग खग धाई ३
हाय राम यह चलि खगराई । मम रक्षा हित कृपा बढ़ाई ॥
सोउ भूमि मह पड़्यो घवाई । मम अभाग्य से प्राण गँवाई ४
हे ककुत्थ! अब रक्षहु मोहीं । मैं तिय लखन पुकारहुं तोहीं ॥
अतिशय त्रास पाइ बहु रोऊं । सुनहु निकट ज्यों तुम्हत्यहि होऊं ५
पुनिअतिबिलपतिसियहिनिहारी । भूषण माल जासु बिखरारी ॥
तासु ओर धायो घबड़ाई । रावण राक्षस ईश सुहाई ६
सो सिय लतासरिस लिपटानो । बड़े बड़े पेड़न गहि पानो ॥
"देहुछुड़ाइ" कहति बहु धानी । त्यहि पकड़्यो रक्षस नृप मानी ७
"राम राम" अस रोइ पुकारैं । बिना राम बन माहिं बिचारैं ॥
आपन जीवनु श्रंतक हेतू । गह्यो केश यम सरिस बिनेतू ८
जबसियकर असभो अपमाना । तब चर अचर भयो सब म्लाना ॥
जगत सकल छोड़्यो मरजादा । घोर अन्ध तम छाइ बिमादा ९
नहिं तहँ बहैं पवन सुखदाई । प्रभा हीन दिनकर प्रभुताई ॥
देखि सियहिपर परसितगाता । दिव्य नयन से देव बिधाता १०

कह्यो बचन यह सो चतुरानन । कियो राम सुर काल सँवारन ॥
अरु कछु हर्ष शोक हिय आने । रहे तहां सब ऋषी सयाने ११
देखि सियहिअरि परसित अंगा । दंडक बन बासिन मन चंगा ॥
रावण केर बिनाशहु जाने । कीन्ह प्रमाण बुद्धि अनुमाने १२

॥ दोहा ॥

सो रावण राक्षस अधिप, त्यहि सीतहि गहि फेरि ॥
राम लखन कहि रोवतिहि, गयो गगन रथ प्रेरि ॥१३॥

॥ चौपाई ॥

तप्त कनक भूषण सम अंगिनि । पीतंबर पट पहिरि सुढंगिनि ॥
शोभित भैं नभ राजदुलारी । जनुबिजुली बहुरतन सँवारी १४
तासु पीत पट उडि चहुं पासा । रावण के अँग करैं प्रकाशा ॥
सोउ अधिक सोहत भौ कैसे । ज्वलित अनल को पर्वत जैसे १५
तासु परम कल्यानिनि केरे । लाल रंग सुठि गंध घनेरे ॥
पंकज दल सिय मालन्हि टूटै । रावण पर वर्षहिं बहु छूटै १६
पुनि पट पीत तासु फहराई । कनक प्रकाश गगन महँ धाई ॥
शोभित भयो मनहुं लहिं सांझू । रबिकर घाम अरुण घन मांझू १७
तासु बिमल मुख सुघर सुरंगा । गगन मध्य रावण के अंगा ॥
नहिं बिनु राम सुनेक सुहायो । जसबिनु नालकमलमुरझायो १८
सुघर ललाट केश तक पीना । पद्मगर्भ द्युति दाग बिहीना ॥
मनहुं नीलघन फाड़ि सुहाने । चंद्र उदय नभ माहि दिखाने १९
शुक्ल बिमल अरुप्रभा पसारी । दंत पँक्ति दोनो रतनारी ॥
तिनयुत सियमुख औधरनैना । नहिं नभ सोह निशाचर सैना २०

रोदन सहित आँशु बिनु पोंछे। चंद्र सरिस प्रिय दर्शन ओंछे॥
सुंदर नासा ओंठ सु चारू। हीरा सम चमकनि युत प्यारू २१
राक्षसेन्द्र से अधिक कँपायो। तासु सियामुख शुभग बनायो॥
पै बिनु राम न नेक सुहायो। ज्योंचांदिनिदिनउदितधुंआयो२२
हेम वर्ण सो जनक दुलारी। नील वर्ण रावणहु सुरारी॥
तासँगजनु कटिकिंकिणिसोहीं। श्याम गयंद अंग बर जोहीं २३
सो सिय पीत कमल तन गोरी। हेम रंग रावणहि बहोरी॥
जनुबिजुली घनमह चमकीली। पैठि सुहानि सुभूषण मीली २४
तासु सिया भूषण झनकारन। राक्षसेन्द्र कीन्ह्यो छवि धारन॥
जनु घन बिमल उठ्यो फहराई। घोष सहित बरसनु झहराई २५
तासु अंग बर से लर टूटो। पुष्प वृष्टि चहुंदिश झर छूटो॥
सिया गईहरि जब त्यहिकाला। पड़ींधरनिमधिबिलुलितमाला२६

॥ दोहा ॥

सो पुनि रावण वेग से, चहुंदिशि बरस्यो फूल॥
उड़ि २ पुनि दशकंध पर, लौटि पड़यो चहुं कूल॥२७॥

॥ चौपाई ॥

पुष्प धार वरस्यो चहुं ओरा। धनदअनुजप्रति अति घनघोरा॥
मानहुं बिमल नखत की माला। गिरि सुमेरु पर झरीं बिशाला २८
सिया चरण से टूट्यहु नूपुर। रत्न बिभूषित जहँ तहँ ढुरढुर॥
मनहुं दामिनी मंडल झरझर। गिर्योधरणितलताछिनभरभर२९
सो सिय जनु मूंगा द्रुम लाला। नील अंग निशिचर भूपाला॥
ताहिकीन्हशोभित त्यहिभांती। ज्योंकंचन फूलनिहि गजरांती ३०

जनु उल्का नभ महँ चमकाहीं । सिय निज तेज भरी तहँ जाहीं ॥
त्यहि कुबेर भ्राता हरि लीन्हे । पैठि अकाश जातछवि कीन्हे ३१
अगिन बरण ताके सब गहना । गिरे महीतल का छवि कहना ॥
जहँ तहँ पड़ैं सहित झनकारा । जनु नभ से टूटहिं खर तारा ३२
तासु युगल कुच बिचरे टूटी । हार चंद्र द्युति छवि जग लूटी ॥
जनक लली के या विधि सोहैं । चुई गंग जनु नभ से जोहैं ३३
रथ उत्पात पवन से कांपी । बहु खग संयुत बिटप कलांपी ॥
झुकी पलौंचि सहित जनु डोलैं । "नहिं कछु डरहु सिया!" अस बोलैं ३४
ध्वस्त कमल सब ताल तलैयां । डरीं मीन जलचर सघनैयां ॥
जनु सिय सखियां बिगत उछाहा । सोचहिं जनक ललिहिं लहि दाहा ३५
बहुं दिश कूदि कूदि फहराहीं । मृग अरु सिंह व्याघ्र खग लाहीं ॥
जनु भरि रोष ताहि छिन धाये । सिय छाया संग प्रेम बढ़ाये ३६
जनु झिरनन्हि मुख आंसु बहाये । शृंग ऊँच जनु बांहुं उठाये ॥
सीता हरण देखि समुदाये । जनु पर्वत रोयहिं चिचिआये ३७
देखि सिया कर हरन भयाना । दुखी भयो दिनकर निज माना ॥
अतिशय ध्वस्त प्रभा श्री मानू । पीत बरण मंडल भौ भानू ३८
नहिं कहुं धर्म सत्य नहिं देखो । नाहिं सरलता दया न लेखो ॥
जा छिन राम प्रियहि वैदेहिहि । रावण हरयो जगत पति नेहिहि ३९

॥ दोहा ॥

या विधि तहँ सब जीव गण, रोयहु कुटुम समेत ॥
डरे दीन मुख चक थके, मृग शिशु रोइ अचेत ॥४०॥

। तोमर छन्द ।

लखि दृगन बारहि बार । जनु अजब भय अनुहार ॥
अति भयहु कंपित गात । वन देवता अकुलात ॥४१॥
पुनि सियहि रोवत देखि । बड़ दुःख हियगत लेखि ॥
त्यहि "लखन! हे श्रीराम!" । अस रोवती धुनिधाम ॥४२॥
बहु लखति जनक दुलारि । महि ओर नैन पसारि ॥
पुनि सोइ लट छिटकाइ । गो जासु तिलक नसाइ ॥
ज्यहि सियहि दशमुख नीच । हरि चह्यउ आपनि मीच ४३

गीती छन्द रोला

तदनंतर सिय चारु दंति जो, रहित सदा मुसक्याती ।
सो भै हीन बंधु जनसे जब, तब मैथिलि अकुलाती ॥
देखति राम लखन कहँ झुकि २ पै नहिं कहुं लखि पाती ।
याते मुख मलीन भय पीड़ित, दुख नहिं अंग समाती ॥४४॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन वि० कृत भा० छं० द्विपंचाशः सर्गः ॥ ५२ ॥

——:※:※:※:——

। तिरपन्नवां सर्ग ।

रावण से हरी सीता जी का आकाश के बीच रावण की प्रति
कोप सहित रोय २ निन्दा बचन का कहना ॥

॥ दोहा ॥

त्यहि अकाश मह उठो लखि, मैथिलि जनक किशोरि ॥
दुखित परम व्याकुल भईं, अति भय पाइ बहोरि ॥ १

कोप रुदन से लाल दृग, रोवति सिय कह बैन ॥
हरी निशाचर राज से, जाके भीषण नैन ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

हे रावण ! तू डरै न नेकू ? नीचकर्म या विधि करि टेकू ॥
जो स्वहि जानि बिरहिनीनारी। भयो चुराइ चोर अघचारी ! ३
हे शठ दुष्ट ! तुही दुष्कारी। डरपोकन तिय हरनु बिचारी ॥
मम स्वामिहि दीन्हे कहुं टारी। मायामृग बनाइ छविकारी ४
पुनि जो उठ्यो मोरि रखवारी। सोउ इहैं रण पड़्यो दुखारी ॥
गीधराज यह बहुत पुराना। मोर ससुर कर सखा सुजाना ५
तोर महाबल अब मैं देख्यों। निहिचैं राक्षस अधम सुलेख्यों ॥
जो निज नाम बड़ाइ सुनाये। नहिं लड़ि मोहिं जीति तू पाये ६
अस निंदित करि कर्म मलीना। कसनहिंनेकलजासि? प्रबीना! ॥
हे मतिनीशच ! सून घर पाई। हरे पराइ नारि मन भाई ७
तोहि लोक महँ पुरुष सयाने। कहैं कुकर्मी नहिं कछु आने ॥
अधिक क्रूर औ अधरमचारी। तोहि शूरमानिहि ललकारी ८
तोरि शूरता धिक अरु देही। जो तू कहत रहे तब तेही ॥
कुलकीरति जो बिपुल बखाने। धिक् तुव या बिध चरित भयाने ९
का कर सकै कोउ यहि भांती। जो तू भगो बेग भय रांती ॥
इक छिन ठहरु तबै मैं जानूं। नहिं तू जियत जासि निजथानू १०

॥ दोहा ॥

तिन द्वौ राजकुमार के, पड़ि दृगपथ जो जाहु ॥
नहिं समर्थ छिन एक तुम, जीवनु प्राण उछाहु ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

तू तिनके खर शरन्हि छुआऊ। नहिं नेकहु सहि सकै दुराऊ ॥
ज्यों बन महँ दावानल लागे। जरैं बिहंगम प्राणहु त्यागे ११
हे रावण! आपनु भल चाहो। तो स्वहिं छोडि साधुपथ गाहो ॥
स्वहिं दुख दिये क्रोध युत व्है हैं। भाइसहित मम पति फल दैहैं १३
जौ नहिं तू छोड़सि स्वहिंनीके। तौ तुव नाश करैंगे ठीके ॥
जौ करि यतन हरन स्वहिं चाहो। जोरावरी सुहठहि निबाहो १४
सो तुव यतन नीच निष्कामू। व्है है सकल निरर्थक धामू ॥
नहिं मैं तिन स्वामिहिबिनु देखे। जो सुर सम सब बिधि गुण लेखे ॥
शत्रु हाथ पड़ि नाहिं उछाहौं। प्राण रखनु नहिं बहुंदिनचाहौं ॥
नहिं तुम निहिचैं निजकल्याना। अरुसुपथ्य देखिहो धरिप्राना १६
मरण समय जस नर अज्ञानी। उलटे कर्म करै मन मानी ॥
अरु सब मूरख जनहि न भावे। जो सुपथ्य सो स्वादु न लावे १७
मैं देखहु तुव कंठ मझारी। कालफांस लटकी अति भारी ॥
जो या बिधि भय थानहु पाई। डरसि न नेकु निशाचरराई! १८
देखहु प्रगट कनकमय वृक्षन। जो तुव मरनु समय बर लक्षन ॥
पुनि बैतरणी नदी भयावनि। रुधिर प्रबाह गभीर बहावनि १९
बन द्रुम खड्ग पात पुनि देखो। रावण! सकल कर्म भय लेखो ॥
तापित कंचन कुसुम समाना। मणि पन्ना सम पात बिताना २०
देखिहो शेमल बिटप भयाना। तीच्छन कंटक लोह प्रधाना ॥
तू यहि भांति बैर करि तासन। राम महा मति संग हुलासन २१
नहिंबहुदिनधरि सकहु सुप्राना। निर्घृण! बिष याबिधकरिपाना॥
तू अब बँधो काल के फांसन। छूटि सकै नहिं रावण! नाशन २२

कहां जाइ पैहो कल्याना ? मम पतिसे जो अतिमतिमाना ॥
पलक भांजतहि सोइ अकेला । रणमह बिनुभाइहि करि फ़ेला २३
जो मार्यो निशिचरके बृन्दन । चौदह सहस जुरे मलि मंदन ॥
कैसे सो राघव वर बीरा ? बली कुशलसब अस्त्रन्हि धीरा २४
तोहि न तीच्छनशरन्हिबिदारैं ? प्यारि नारि हारकहि संहारैं ?
यह अरु अपर बैन कटु ऐंठी । कह्यो सिया रावण बस बैठी ॥
भय अरु शोक भरी बिकलानी । कीन्ह बिलाप करुणरस सानी २५

। हरिगीती छन्द ।

तब अधिक दुख भरि बारबहु सिय, कहति बचन भयावनो ॥
पुनि करुण रुदन बिलाप संयुत, भामिनी मन भावनो ॥
बयतरुणि भूपकिशोरि छटफट, करति छुटि छहरावनो ॥
लै गयो हरि पै बेगि तांछिन, गात कंपित रावनो ॥ २६ ॥

इति श्रीमद्वा० रा०आ०का० पं०देवकीनंदन त्रि० कृत भा०छं० त्रिपंचाशः सर्गः ॥ ५३ ॥

—····※०※····—

चौवनवां सर्ग ।

रावण से हरी सीता का आकाश से पर्वत पर बैठे पांच महाकपियों के पास बसन भूषण फेंकना, सीता को ले रावण का लंका पहुंचना, आठ बली राक्षसों को जन स्थान जाने की आज्ञा देना ॥

॥ दोहा ॥

हरी गई बैदेहि जब, लख्यो न कोउ सहाय ॥
पै देख्यो गिरिशृङ्ग थित, पांच महाकपिराय ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

तिनके बिच सो नैन बिशाला । कनक प्रभा रेशम पटजाला ॥
ओढनि और अंग के गहना । वरभामिनि फेंक्यो करि बहना २
फेंकन हेतु इहै मन लाई । देहैं रामहि येहु बताई ॥
तिनके बीच वस्त्र जो गेरे । भूषण सहित ताहि तिन हेरे ३
फेंकन हेतु न रावण जाने । पर तिय हरनु रह्यो भयमाने ॥
पै पिंगाक्ष पांच कपिराई । शुभनैनिहि इकटकी लगाई ४
जो रोवति सिय हिय घबड़ाई । देख्यो बानर गण समुदाई ॥
सो रावण पंपापुर त्यागी । लंका ओर गयो अनुरागी ५
गहि सीतहि जो रोदन ठाने । राक्षसेंद्र तब तुरत पलाने ॥
त्यहि हरि अतिशय हर्षबढाई । रावण आपन मौत बुलाई ६
जनु बिल से सांपिन धरि आने । तीच्छन दंत महा विष साने ॥
बन अरु नदी शैल सर देखत । गगन मध्य धायो शुभ लेखत ७
सो पुनि तुरत सबै तजि आयो । ज्यों शर छूट धनुषसे धायो ॥
पुनि तिमिमकरगेह बर सागर । अखय बरुण आलय रतनागर ८
जो नदियन को शरण पुनीता । त्यहिसिंधुइलांघ्योचलिभीता ॥
सोउ सिंधु डरि रोकि तरंगा । मीन उरग रुकि चालन ढंगा ९
जब सीतहि हरि रावण लायो । सिंधु तबहि चुप भाव दिखायो ॥
भइ अकाशवानी त्यहि काला । चारण गण बोले भरि गाला १०
इहै अंत दशकंधर केरा । यह बोले तब सिद्ध निबेरा ॥
पै सो रावण अंग बिठाई । छटपटाति सीतहि गहिल्याई ११
लंका पुरी पैठि सुख पाई । आपनि मृत्यु रूप प्रगटाई ॥
सो पुनि पहुचि पुरी बर लंकहि । सुंदर पथ बिभक्त बड़ बंकहि १२

चहुं दिश जहँ बहु कोट कँगूरे । निज अंतःपुर पैठयहु पूरे ॥
तहँ ताहि सुंदर बर नैनिहि । शोक मोह संयुत हतचैनिहि १३
राख्यो सियहि दशानन राया । जनु मय असुर रची क्षौ माया ॥
पुनि बोल्यो रावण निज मनसे । रूप भयंक पिशाचिनिजन से १४
"जासे बिनु मम अनुमति धारी । सियहि न लखैं पुरुष औ नारी ॥
मणि मोती अरु कंचन ढेरा । भूषण बसन धरहु चंहुफेरा १५
जो जो चहैं इहां मनलाई । देहु इन्है मम आयसु पाई ॥
जो क्षौ नारि सियहि कटुबानी । कहै कछुक हिय करनु मलानी १६
चहे ज्ञान से चहु अज्ञानन । ता जीवनु नहिं मो प्रियप्रानन"॥
सुनिनिश्चरि सो कह्योसुनीको । राक्षसेंद्र पुनि करि सब ठीको १७
निसरि गयो ता गृह से धावत । "करौंकाह?" यह शोचबढ़ावत॥
तब देख्यो राक्षस बलवानन । आठ मांसभक्षिन बर आनन १८

॥ दोहा ॥

महाबली सो लखि तिन्है, बर लहि भरो घमंड ॥
तिनसे बोल्यो बचन यह, कहि बल वीर्य प्रचंड ॥ १९ ॥

॥ चौपाई ॥

हे बीरो ! लै बहु हथिआरा । अबहिं जाहु इहँ से झटकारा ॥
जनस्थान हति गयउ निवासा । जहां प्रथम खरको रह बासा २०
वहँ जाइ कीजै अब डेरा । शून्य निहत राक्षस बिनु हेरा ॥
पौरुष औ बल बिपुल पसारी । दूरहि से बहु भय बिस्तारी २१
मैं बहु बलिन केरि कटकाई । जनस्थान महँ दिहौं बसाई ॥
पै दूषण सह खरहि सँहारे । युद्ध मध्य राघव शर धारे २२

तब सुनि मोर क्रोध अति बाढ़ो । धीरज छोड़ि अपूरब गाढ़ो ॥
अतिशय बैर उपजु हिय मोरे । राम संग दारुण नहिं थोरे २३
अब सो बैर निसारन चहऊं । महाशत्रु से तुम सन कहऊं ॥
नहिं म्वहिं पडै नींद छिन एका । बिनु रिपु प्राण हते हियटेका २४
त्यहि खरदूषण घालिहि रामहि । अबमैं याछिनमारि निकामहि॥
पैहों जग महँ निज कल्याना । ज्यों निर्द्धन धन पाइ महाना २५
जनस्थान बसि तुम सब बीरा । राम निकट धरि कपट शरीरा ॥
ठीक विचार करै सो काहा ? । यह सब मोहि जनाबहु चाहा २६
सावधान ह्वै जाहु तुरंता । सब निश्चर गण गुणबलवंता ॥
सदा यत्न करियो हरखाई । राघवके वध महँ चित लाई २७
रण मधि मैं जान्यों बहुबारा । बल तुम सब कर परम अपारा ॥
याते जनस्थान बिच प्यारो । तुम्हैं बसावहुं शत्रु सँहारो २८

। कुंडलिया ।

तदनंतर प्रिय बैन सुनि, जा मधि अर्थ गभीर ॥
आठ निशाचर जे तहाँ, रहे भयंकर वीर ॥
रहे भयंकर बीर, हरखि करि तुरत प्रनामा ॥
रावण को शिर नाय, छोड़ि लंकापुरि धामा ॥
जनस्थान की ओर, सबै मिलि चले दिगंतर ॥
बसे जाइ धरि गुप्त रूप, तहँ सो तदनंतर ॥ २९ ॥

रावन पुनि हरिकै सियहि, मन अतिशय हरखान ॥
जनकनंदिनिहि पाइ गहि, मद भरि रह्यो भुलान ॥
मद भरि रह्यो भुलान, बैर यहु ठान्यहु ठाना ॥
राम चंद्र के साथ, सबै विधि संयुत ध्याना ॥

भयो मोह से पूर, रैन दिन सो मन भावन ॥
आँनद हिय न समाय, हाय आपद बस रावन ॥ ३० ॥

इति श्रीमद्वा० रा०आ०का० पं०देवकीनंदन त्रि० कृत भा०छ० चतुःपंचाशः सर्ग. ॥५४॥

—····※०※····—

पचपनवां सर्ग ।

रम्य भवन में बैठी सीता को बरिआई पकड़ के रावणकृत रम्य भवन की शोभा सीता को दिखना और फुसलौनी बातों से बस करने का यत्न करना ॥

॥ दोहा ॥

अष्ट भयंकर राक्षसनिह, दै आयसु दशकंध ॥
बिकल बुद्धि मान्यहु निजै, सुफल मनोरथ अंध ॥

॥ चौपाई ॥

सो चिंतत सीतहि दिन राती । काम बान पीडित अँगमाती ॥
पैठरहु रम्य भवन पुनि जाई । सीतहि देखन मन तुरताई २
पैठि भवन मधि सो दशशीशा । रावण राक्षस मंडल ईशा ॥
देख्यो सियहि राक्षसिन माहीं । अतिशयदुखिनि हर्षहुकनाहीं ३
आँसु भरी मुख दीन मलीना । शोक भार से दबी प्रवीना ॥
मनहुं पवन के प्रबल झँकोरन । डूबति नाव जलधिमहँ जोरन ४
मृगी मनहुं तजि आपन झुंडा । घिरी कूकुरन से बरतुंडा ॥
बैठी सिया शीश लटकाये । तिनके निकट निशाचर आये ५
त्यहिपुनि शोकभरी दुखदीनिहि। राक्षस भूप अबसरस भीनिहि॥
बल से पकड़ि देखावन लागो । देवभवन सम भवन सुहागो ६

जा मधि सघन अटा धौरहरे । नारि हजारन भरि सब ठौरे ॥
बहुविध खग मृग पालित पूरे । रत्न अनेक भरे धनरूरे ७
गजदंतन्हि बर कनक सँवारे । स्फटिकमणिन चांदिनचहुवारे ॥
अरु बैदूर्य बज्र मणि केरे । चित्रन्हि खंभ मनोरम हेरे ८
दिव्य नगाड़े जहँ घन बाजैं । तापित कंचन छप्पर छाजैं ॥
कंचन सीढ़ि बिचित्र बनाऊ । सिय संग चढ्यो निशाचरराऊ ९
रजत रचे गजदंतन्हि चोखे । प्रियदर्शन बहु आल झरोखे ॥
कंचन जाल झूलि लिपटानी । तहँबहु अटन्हिपाँति फहरानी १०
मणिन बिचित्र जडितगचकारी । भूमि समस्त बनी रतनारी ॥
दशकंधर निजगृह यहि भांती । सियहिदिखायहुसकलसुकांती ११
लंवित बर तडाग पुष्करिणी । बहुविधफूलद्रुमन्हिछबिधरिणी ॥
रावणयाविध बिबिधदिखायो । शोक भरी सितहि भरमायो १२

॥ दोहा ॥

उत्तम भवन दिखाइ सब, सियहि कह्यो पुनि बैन ॥
चह्यो लुभावनु पापमति, जनकललिहि हतमैन ॥ १३ ॥

॥ चौपाई ॥

हे सिय! बत्तिस कोटि सुबीरा । हैं हमरे गढ़ महँ रणधीरा ॥
बालक बृद्ध छोड़ि समुदाई । बसैं निशार लंकहि आई १४
तिन सब को प्रभु हों मैं सीते ! भीमकर्म जो करहिं अभीते[1] ॥
मो अकेल कर एक हजारा । हैं टहलू आयसु बरदारा १५
जो यह राज्यातंत्र सब मोरा । सौंपहुं तोहि होइ सो तोरा ॥
अरु मम जीवन तुम आधीना । प्राणहुसे तुम अधिक प्रबीना १६

१ निडर होके।

यहु उत्तम नारिन कर व्याहा । जो मैं कीन्ह सप्रेम उछाहा ॥
तिनकी तुम मलकिन बनि सीता! होहु प्यारि! ममतिय मननीता १७
इह शुभ तोर और हित कहा ? समुझि रुचहु मम बैन उछाहा ॥
भजहु मोंहिं हियतापित जानी । ह्वै प्रसन्न परसहु रसपानी १८
चहुंदिश घिरी सिंधु से भारी । यह सौ योजन लंक हमारी ॥
नहिं यहि जीति सकै को प्रानी । इंद्र सहित देवासुर मानी १९
नहिं देवन नहिं यक्षन माहीं । ऋषि गंधर्बनि मधि को नाहीं ॥
तीन लोक मधि मैं लखि पाऊं । जो ममबल सम कौनिहु ठाऊं २०
राज्य भ्रष्ट सो दीन दुखारी । अरु तपसी पैदल पगु धारी ॥
का करिहो ? लै रामहिं प्यारी ! जो नर अल्पतेज भिखआरी २१
निहिंचैं भजो सिये ! तुम मोहीं । मैं तुव सरिस सुघरपति सोहीं ॥
रहै न भकुइनि ! सदा जवानी । याते मो सँग रमहु सयानी ! २२
मति राघव देखन के हेतू । सुमुखि ! करो चंचल बुद्धि चेतू ॥
कौन शक्ति इहं आवनु तासू ? हे सिय ! नेक मनहुं से आसू[1] २३
नहिं को सकै पास महँ बांधी । पवनहि गगन मध्य युत आंधी ॥
अथवाज्वलितअनलनि धूमहि । उठीशिखा कोगहि मुखचूमहि ?, २४

॥ दोहा ॥

तीन लोक महँ नाहिं त्यहि, मैं देखों शुभबैनि ! ॥
जो रखहि बल से लै सकै, मम कर पड़ी सुचैनि ॥ २५ ॥

॥ चौपाई ॥

यह लंका को राज्य महाना । तुम पालहु भामिनि ! मनमाना ॥
मो सम जन तुव आज्ञा कारी । चर अरु अचर देवतहु भारी २६

१ यथा नहीं ।

भोगि सुजल तनकरि अभिषेका । ह्वै संतुष्ट रमहु तजि टेका ॥
पूर्व जन्म की जो कछु पापा । भोगिचुको सो लहि बनतापा २७
अब तुम सुकृत किहो कछु जोई । लहो तासु फल मम तिय होई ॥
यह सब दिव्य गंध अरु माला । जनकनंदिनी!तुवहितबाला! २८
अरु उत्तम जो भूषण साजू । सेवहु तिन्है संग मम आजू ॥
पुष्पक नाम सुकटिनि ! महानू । मम भ्राता कुबेर कर जानू २९
रविकर सरिस प्रकाश विमानू । रण महँ जीति धर्यो निज थानू ॥
यह बिशाल अरु अतिरमणीया । व्योमयान मनगति कमनीया३०
ता मधि बैठि सिये ! मम साथा । सुख से बिहरहु ह्वै जगनाथा ॥
तुव मुख पंकज सम मल हीना । ह्वै है सुंदर दरशन भीना ३१
या छिन शोक भरो नहिं सोहै । हे सुमुखी ! चंचल दृग जोहै ॥
जब अस कह्यो निशाचर सोई । करि पट ओट नारि वर रोई ३२
चंद्र बदन ता सन सिय मूंदी । मंद मंद झर आंसुन बूंदी ।
जनु पियध्यानमग्न त्यहि काला । चिंता बिकल प्रभा हत बाला ३३
ता सन बचन कह्यो पुनि बीरा । रावण रजनीचर रणधीरा ॥
छोड़हु लाज बिदेह कुमारी ! धर्मलोपतुवपति,तजिप्यारी! ३४
ह्वै है देवि! जु तुव सँग नेहा । सो ऋषिमत,नहिं आसुर,एहा ॥
याते ये दुहु चोकन चरना । शिरनिह धरों मैं ह्वै तुव शरना ३५
ह्वै प्रसन्न तुरतहि वच देहू । तुव बश दास भयों बड़ नेहू ॥
यहसब खर दुखसे मुख बोल्यों । दीनबचन तोसन हियखोल्यो ३६
पै नहिं रावण नेक सुहाये । काहु नारि प्रणम्यो शिर नाये ॥

। सोरठा ।

यहि विधि कहि दशशीश, सिय जनकनंदिनिहि पुनि ॥
कालाधिबश भुजबीश, "मम तिय यह" अस मानि हिय ॥ ३७ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० का० पं० देवकीनंदन त्रि० कृत भा० छं० पंचपंचाशः सर्गः ॥५५॥

छप्पनवां सर्ग ।

रावण से सँताई सीता जी का निर्भय धिक्कारना, रावण का सीता पर कोप और एक बर्ष मिलने का समय देना, राक्षसियों को सौंप अशोक बन में पहुंचाना, वहां सीता जी का दुख से रहना ॥

॥ दोहा ॥

सुनि रावण के बचन अस, बोलीं तृण धरि ओट ॥
शोक कृषिनि निर्भय सिया, ता खल मन भरि चोट ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

रे सठ! दशरथ नृप बड़ नामी । धर्म सेतु जनु अटल सुगामी ॥
सत धारी सब जानन हारे । ता सुत राघव सुपति हमारे २
राम नाम सो धर्म धुरीना । तीनलोक महँ बिदित प्रबीना ॥
नैन बिशाल सुलंबित बाहू । सो पति देव हमार सुनाहू ३
इक्ष्वाकुन के कुल महँ जाये । सिंहकंध अतिदुति छबिछाये ॥
लखन भाइ सँग जो इहँ आई । तोर प्राण हरिहैं रघुराई ४
जौ पै तासु लखत तू मोहीं । कृत्यसि बलकरि जनत्यूं तोहीं ॥
...यसि तबहिंतुरत रणमाहीं । ज्यों खर जनस्थान दुरबाहीं ५
सोउ... राक्षसन्हि गिनाये । रूप भयंकर बल बहुताये ॥
जो तू इ... ंदन के आगे । गरुडनिकटज्योंअहि बिषत्यागे६
सो सब रघु... फसि छूटे । जे शर कंचन भूषण बूटे ॥
तासु धनुष गुण से ... ै हैं । गंग लहरि ज्यों कगर ढहैहैं ७
तव शरीर या बिधि मह... मरसि न बरके प्रबल प्रभावन ॥
यद्यपि असुर सुर से तू रावन ... ौन तासन बँचिहु सुरारी! ८
पै उपजाय बैर अस भारी । जि...

जो कछु शेष जिवन कर तोरा । बली राम सो पूरहिं छोरा ॥
ज्यों बलि छाग यूप[1] शिर डारे । त्यों तुव जीवनु दुर्लभ न्यारे ९
जौ सोइ राम तोहि कहुं देखैं । कुपित आंख दीपितहियलेखैं ॥
निशिचर! अबहिं होसि तू छारा । ज्यों मन्मथ हरके तम द्वारा १०

॥ दोहा ॥

राम जु नभ से शशिहि छिति, गेरहिं वा करु नास ॥
सोखहिं सागर सोइ वा, मोचहिं सियहि हुलास ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि तू छत जीवन श्री नाशी । प्राण निहत गत इंद्रिय राशी ॥
बिधवा भाव धारि यह लंका । तुव कृत ह्वैहै हे नृपबंका ! १२
पाप कर्म यह अधिक बलानू । ह्वैहै उदय न तुव सुखभानू ॥
जो मैं बिनु इच्छा हरि आई । पतिढिगसे तुवकृत बरिआई १३
सो मम स्वामि महा दुति माना । देवर सहित लिये धनु बाना ॥
निर्भय निज बल बीरज धारी । बसै सून्य दंडक बन भारी १४
सो तुव तन धन बल मद सारा । जो कछु और अनीति प्रचारा ॥
सब अंगन से देहि निसारी । शर बर्षण करि रण ललकारी १५
जब जीवन कर निकट बिनाशू । काल बिवश लखि पडै प्रकाशू ॥
तब सो कर्म करै मन मत्ता । मनुज मौत प्रेरित बिनु सत्ता १६
मोहिं सताय तोर सो काला । आयहु राक्षस अधम ! कराला ॥
आपन अरु सब राक्षस गण कौ । आन्यहु मरण गेह तियजनकौ १७
यज्ञ बीच जो बेदि बिराजै । स्रुवा भांड युत बहु छबि छाजै ॥
ब्राह्मण उचरित मंत्रन्हि पूता । त्यहि चँडाल करि सकै न छूता १८

---

[1] बली दान काठ जिसमें बकरे का शिर फँसाय के काटते हैं ।

तैसहि मैं नित धर्मधारि की । धर्मपतिनि दृढव्रता प्राण की ॥
तोर शक्ति नहिं पर्शन मोहीं । जियतअधम! सुनिलाजनतोहीं १९
राजहंस सम खेलत जोई । नित्य कमलबन महँ सुख सोई ॥
सो हंसी कस चितव सुनीके ? तृणथित जलकाकहि टुक हीके २०
यह शरीर जड आपु बिचेता । बांधु मारु वा तू खल नेता! ॥
नहिं यहदेह सकसि मम राखी । जीवनिशाचर! अधम! अभाखी! २१
नहिं हम सकैं तोहि दै अंगा । जग निंदित जो काम कुढंगा ॥
यह कहि बचन बिदेहकुमारी । क्रोधसहित अतिकटु धिधकारी २२
ता छिन सिय रावणहि दुराये । फिरि चुप नहिं कछु बैन सुनाये ॥
पै रावण सुनि सिय के बैना । रोम हर्षकर कठिन सु पैना २३
उत्तर दीन्ह सियहि घबड़ाई । बचन बिबिध भय भूरि दिखाई ॥
सुनो जानकी ! बचन हमारे । एक बर्ष परखहिं निरधारे २४
इतने काल बीच जो मोहीं । मिलहु न चारुहासनी! सोहीं ॥
तौ त्वहि मम रसोइंबरदारा । काटि हैं टुक टुक प्रात अहारा २५

॥ दोहा ॥

या विधि बचन कठोर कहि, बैरि रुलावन हार ॥
रावण तब राक्षसिन्ह से, यह बोल्यो रिस धार ॥ २६ ॥

॥ चौपाई ॥

हे बिरूपि ! भयदर्शन वारी । मांस रक्तभखि ! निशिचर नारी! ॥
तुरतहि याको हियअभिमाना । देहु दुराइ मर्दि बड़ ज्ञाना २७
कहतहि बचन तासु ते घोरा । भय दर्शिनि पिशाचि चहुंओरा ॥
बांधि अंजुली रावण पांहीं । सियहि लगीं समुझावन ताहीं २८

सो पुनि वह रावण भूपाला । बोल्यो तिन राक्षसिन्ह बिहाला ॥
चलि बड बेग चरण चपलाई । जनु बिदारि महि देत धँसाई २९
यहि अशोक बन महँ लै जाऊ । राखहु सीतहि निज मनभाऊ ॥
रक्षा करहु यतन से तहवां । तुम सब सजुग रहो बसि वहँवां ३०
पुनि सीतहि तहँ तर्जि भयंका । फिरि समुझायहु याहि निशंका ॥
तुम सब अपने बस महँ लाओ । ज्यों बनहथिनिहि घै [illegible]ओ ३१

॥ सोरठा ॥

या बिधि आयसु पाइ, रावण कौ सब राक्षसी ॥
तब अशोक बन धाइ, गईं सियहि लै पकडि तहँ ॥ ३२ ॥
जहँ सब कामिल बृच्छ, नाना फल फूलन लशे ॥
सदा मत्त मद स्वच्छ, खग मृग संयुत केलि बन ॥ ३३ ॥
पै सो सिय भरि शोक, जनकलली प्रति अंग महँ ॥
पडि डैनिन के लोक, जनु हरणी बाघिनिन मधि ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

महा शोक से डरीं सिय, गईं राक्षसिन जोरि ॥
चैन न पायो नेक तहँ, मृगी बँधी जनु डोरि ॥ ३५ ॥

। हरिगीती छन्द ।

नहिं लहेउ तहँ सुख चैन मंगल, जनक नंदिनि जान से ।
जहँ बिकटनैनि करालमुखि, तर्जहिं निशाचरि सान से ॥
मन माहिं सुमिरत प्यारपति, अरु लखन देवर तान से ।
ह्वै बिगतचेतन शोक भय लखि, हृदय पीडित प्रान से ॥३६॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० का० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छं० षट्पंचाशः सर्ग. ॥५६॥

—⋯⋯※०※⋯⋯—

सत्तावनवां सर्ग ।

इधर मृग रूप मारीच को मार कर रामचंद्र का लौटना और मृग की पुकार,
तथा अशुभ भावों को निहार रामचंद्र की चिन्ता का बढ़ना,
मार्ग में लक्ष्मण से भेंट, सीता के अमंगल की चर्चा ॥

॥ दोहा ॥

उत मृग रूप निशाचरहि, बहुरूपिहि दौड़ाइ ॥
मारि राम मारीच कहँ, लौटे द्रुत पथ पाइ ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

चले राम तहँ ते तुरताई । सिय देखन हित चाह बढ़ाई ॥
ता पीछे इक अधम शृगाला । रोयहु कटुस्वर बिलुलितगाला २
सो सुनि राम तासु स्वर दारुण । रोम हर्ष कर अशुभ पसारुण ॥
शंका कीन बिबिध मन लाई । सुनि शृगाल स्वर कुसमय पाई ३
यह बोले "मैं असगुन मानों । जो शृगल बोल्यो यहि थानों ॥
बैदेही कर कुशल प्रबीना । होइ जु राक्षस भक्षण हीना ४
जो मारीच मृगा बनि आये । बोल्यो बचन रचन चिल्लाये ॥
सो बिचारे सुनि लक्ष्मण भाई । मोर शब्द धौं जानि सुहाई ५
पुनिसोस्वर सुनिलखनपिआरा । छोंडि तोहि सीतहि रखवारा ॥
तुरतहि ता सिय केर पठवा । मम समीप ऐहै द्रुत धावा ६
निहिचैं मिलि सब निश्चरवृंदा । मरिहैं सीतहि निज रुचि मंदा ॥
यह बनि कनक हरिन अँग रूरे । म्वहिं लायो आश्रम से दूरे ७
दूर लाइ बानन हति गयऊ । तब मारीच निशाचर भयऊ ॥
"हा लक्ष्मण! मैं गयउं सँघारो" । जो यह बोल्यो करुण उचारो ८

॥ चौपाई ॥

याते धौं है कुशल कि नाहीं ? हम दोउन बिनु यहि बन माहीं ॥
जनस्थान भय नाशन हेतू । किहों बैर राक्षसन्हि समेतू ९
असगुन बहुत भयानक देखूं । या छिन नहिं निजमंगल लेखूं ॥
या बिधि चिंतन लगे सुरामा । सुनि शृगाल रव महानिकामा १०
तुरतहि लौटि पडे झपटाई । गयो आश्रमहि धीरज लाई ॥
आपनु दूर गमन मन सोचत । मृगरूपी राक्षस तन मोचत ११
आयहु जनस्थान नियराई । रघुनंदन जिय शंक बढाई ॥
ताहि दीनमन देह मलीनहि । खगमृगमिले अशुभरसभीनहि १२
राम महामति के हैं बामा । बोल्यहु नाद भयंक निकामा ॥
तिन असगुनन्हि भयावन देखी । रघुनंदन भय लह्यो बिशेखी १३
तदनतंर लखनहि सग आवत । देख्यो तेज रहित पगु धवात ॥
तब अति निकट राम के आये । लक्ष्मणहू मन शंक बढ़ाये १४
राम डरे उत लखन डराये । लखन राम दुखते दुख पाये ॥
सो पुनि निंदहु त्यहि बड़भाई । आवत लखनहि लखि घबडाई १५
जो सीतहि तजि चले अकेली । राक्षस भरे बिजन बन मेली ॥
गहि दाहिन भुज लक्ष्मण केरे । रघुनंदन करुणा दृग हेरे १६
बोल्यो शब्द मधुर प्रगटाई । तीच्छन अर्थ आर्तधुनि गाई ॥
अहो लखन तुम किहउ कुकाजू । जो त्यहि सियहि छोड़ि तहँ आजू १७
आयहु इहां सौम्य ! तुरतानो । नहिं कहुं मंगल लखों सुजानो ! ॥
मो मन महँ संशय अति बीरा ! सबबिधि जनकसुता पर पीरा १८
भई नष्ट अथवा गई खाई । निशिचर बन चारिन से भाई ! ॥
मैं बहुअशुभ अबासि लखि पायों । जो प्रगटे या छिन यहि ठायों १९

नहिं हम लखन सिया कल्याना। पाऊहिं पूरण रूप सुजाना! ॥
पुरुष ब्याघ्र! जीवति जो होई। तबहुं जनकजा कुशल न सोई २०
जस मृग झुंड अशुभ दरसावैं। अरु शृगाल भयनाद सुनावैं ॥
अरु बहु खग कुनाद चिल्लाहीं। चहुं दिश लाल रंग नभ माहीं ॥
तासु जनक नृप नंदिनि केरा। बलो! सुमंगल नाहिं निबेरा २१

। रोला छन्द ।

वह राक्षस बनि हरिन रूप, तन सुंदर धास्यो।
मोहिं लुभाइ अति दूर, गयो लै लंक पसास्यो ॥
बड़े परिश्रम सेहु काहु बिधि, गयो सु मास्यो।
मस्यो जबहिं सो तबहिं, भयो राक्षस बपु धास्यो ॥ २२ ॥
ता चरित्र लखि मोर चित्त, भो हर्ष बिहीना।
अरु फरक्यो दृग बाम, दुःख तन महँ गौ भीना ॥
निहिचैं आश्रम माहिं, सिया नहिं लखन प्रबीना!।
गई हरी वा मरीं किधौं, पथ महँ हैं खोना ॥ २३ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० भा० कां० पं० देवकीनंदन त्रि० कृत-भा० छं० सप्तपंचाशः सर्गः ॥५७॥

——:※:※:※:——

। अट्ठावनवां सर्ग ।

मारीच को मारकर लौटते भये राम चन्द्र जी को जब लछमण जी पथमें मिले तब बिव्हल हो सीता जी को बिषय में संदेह करर लछमण जी से पूछतेर आश्रममें आना ॥

॥ दोहा ॥

सो दशरथ सुत लखन कहँ, निपट अकेलहि देखि ॥
पूछयो राम सुधर्म धर, बिनु सिय आगत लेखि ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनो लखन! जब हम बन आये । तब जो मम पीछे पछुआये ॥
सो बैदेहि कहां हैं प्यारी ? ज्यहितजि तुमइहँचले सिधारी २
राज्य भ्रष्ट मैं दीन दुखारी । दंडक बन धावहुं चहुंवारी ॥
अस दुख महँ जो मोरि सहाया । कहँ सो सिय ? सुंदरकटि जाया ३
जा बिन बीर ! न करहुं उछाहा । एक मुहूरत जिअनु उमाहा ॥
सो कहँ मोर प्राण सहकारिनि ? सुरकन्या सम सिया उदारिनि ४
सकल देवतन की इँदराई । अरु पृथिवी भरकी अधिपाई ॥
बिनु ता रविआभा सम सीता । चहौं न एक छिनहु मननीता ५
काधौं जिअति? प्रिया बैदेही । जो मम प्राण समान सनेही ॥
का धौं बीर ! मोर बन चालनु । झूंठ न ह्वैहै तो ? ब्रतपालनु ६
सिय हित जौ इहँ मरनु हमारो । लखन ! होइ गृह गमन तुम्हारो ॥
तो धौं का? कैकइ सुख भूरी । होइ न सो मन वांछित पूरी ? ७
सिद्धार्थिनि सुत युत लहि राजू । ता कैकइ समीप हतकाजू ॥
मृतसुत तपसिन बिनय समेता । कौशल्या धौं बसै न चेता ! ८
जौ तो जिअत मिलै बैदेही । तो आश्रम फिर जाहुं सनेही ! ॥
पै सो सती मरी जौ होई । लखन ! प्राण दैहों मैं खोई ९
जौ आश्रम गत मोसन प्यारी । जनकलली नहिं बैन उचारी ॥
प्रथमहि हसनमुखी सो सीता । तौ मरिहों मैं लखन बिनीता ! १०

॥ दोहा ॥

कहो लखन ! सिय जियत हैं, अथवा नहिं ? समुझाय ॥
वा तुम चूके ? तपसिनिहि, गये निशाचर खाय ? ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

इक सुकुमारि दुजे सो बाला । सुखभागिनि नित तीनहु काला ॥
मम बियोग से जनकदुलारी । शोच प्रगट करि मन दुखभारी १२
अवसि निशाचर सो दुखारी । जब चिल्लायहु बदन पसारी ॥
"लक्ष्मण!" अस ऊंचे स्वर बोला । तुरहिय भय उपज्यो मनडोला १३
जब बैदेहि सुनी सो बानी । मैं जानो मम सरिसहि मानो ॥
डरपि तोहि तब दीन्ह पठाई । स्वहिं देखन आयो द्रुत धाई १४
सब प्रकार तुम दुख उपजाये । सीतहि बनमधि तजि इहँ आये ॥
लेन बैर कर दांव पिशाचनिह । औसर दिहौ अधम नरनासनिह १५
खरबिघात से अति दुख पाये । मनुजभखो निशिचर घबड़ाये ॥
याते ते सब घोर कठोरा । अवसि सियहिमार्यो करिजोरा १६
अहो!! दुःख सागर मैं मग्ना । हे रिपुदमन! सकल सुखभग्ना ॥
अंकहुं या छिन करों जु काहा ? होनहार या बिधि दुखदाहा १७

॥ दोहा ॥

या बिधि सीतहि सुंदरिहि, चित महँ चिंतत राम ॥
जनस्थान आये तुरत, लखन सहित बनधाम ॥ १८ ॥

। हरिगीती छन्द ।

अति दुखित जो लघु भाइ लक्ष्मण, ताहि निंदत धिक दये ।
श्री राम भूख पिआस से हिय, व्यथित अरु तन थक गये ॥
तब लेत सांस उसांस भरभर, सूख मुख ब्याकुल भये ।
पुनि पहुंचि आश्रम ताहि ता छिन, देखि सून सुआलये ॥ १९ ॥

लखि सून आश्रम बीर तहँ, निज थान बैठक खोज्यहू ।
पुनि तासु निजन इकांत बैठक, जाइ अधिक सहेज्यहू ॥
नहिं पाय कहि "यह बास सियको, हाय!! इहँनहिं सोप्रिया" ।
तब व्यथित ह्वै तन राम कंपित, भयो राघव बिनु सिया ॥२०॥

इति श्रीमद्वा० रा०आ०कां० पं०देवकीनंदन चि० कृत भा०छं० अष्टपंचाश: सर्ग, ॥५८॥

—····※०※····—

उंसठवां सर्ग ।

जब आश्रम में अकेली सीता को छोड़कर लक्ष्मण जी रामचन्द्र के निकट आते हुये मार्ग में मिले, तब लक्ष्मण की भूल सुझाय श्री राम कृत लक्ष्मण को धिक्कारना ॥

॥ दोहा ॥

जब आश्रम तजि पंथ मधि, मिले लखन धनुधार ॥
तब रघुनंदन दुख भरे, यह पूछ्यो बिस्तार ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

कह्यो लखन से "तुम हे भाई ! क्यों सीतहि तजि आयहु धाई? ॥
मैं ज्यहिलगि तुम्हरे बिस्वासा । बनमधि तजि दौड्यों मृग पासा २
आवत तोहि लखन! मैं देखो । छोड़ि सियहि जियशंकबिशेखो ॥
मोरे मन महँ बहु बिध पापा । सोच उग्यो मन बिकल कलापा ३
बाम नयन फरकत अब मोरा । अरु भुज बाम हृदय चहुं ओरा ॥
देखि लखन! दूरहि से तोहीं । सीता बिनु मारग महँ योहीं" ४
याबिध सुन्यो लखन जब बानी । ज्यहि शुभलक्षण राम बखानी ॥
अतिशय दुखीभयोत्यहिकाला । दुखित राम सन बोल्यहु लाला ५

नहिं मैं निज अपने मन माने । त्यहि तजि इहँ आयों अकुलाने ॥
कहि कठोर सिय सोइ पठायो । तुव समीप याते चलि धायो ६
आर्य ! आपु जब ऊंच चिघारे । "लक्ष्मण!" अस करुणास्वर धारे ॥
"रक्षा करहु" वचन अस जोई । सो सिय सुन्यो त्रास युत होई ७
सो सुनि आरत स्वर बड़भारी । तुव सनेह सिय भई दुखारी ॥
"जाहु जाहु" तुरतै म्वहिं टेरी । रोय सिया भय बिकल घनेरी ८
जब सिय कह्यो बारबहु 'जाऊ, । तब मैं बोल्यों बचन दृढ़ाऊ ॥
तासु प्रतीत हेतु यह बानी । समुझायों सीतहि बुधि आनी ९

॥ दोहा ॥

"हे सिय! निशिचर नहिं लखों, जो रामहि भय देतु ॥
धरु धीरज भय नाहिं कछु, क्वौ बोल्यो छल हेतु ॥ १० ॥

॥ चौपाई ॥

हे सिय! अस निंदित लघुबानी । कैसे राम उचारहिं ? ज्ञानी ॥
'त्राहित्राहि, अस बचन भयाना । जो देवनहु करैं नित त्राना ११
क्यहि निमित्त? कासे दुख पाई ? या बिधि स्वर रोयहु ममभाई? ॥
जो निश्चर श्रुति कर्कस बैना । 'लखन मोहिं रक्षहु,अस धैना १२
यह बानी क्वौ निश्चर भाख्यो । 'त्राहि, इहै सुंदरि! भय राख्यो ॥
नहिं तुम करनु योगु दुख प्यारी ! ज्यहि भोगैं जग परम कुनारी १३
तजहु गवन लगि हियबिकलाई । थिरचित होहु छोड़ि घबड़ाई ॥
नहिं तिहुलोक माहिं नर कोई । रण महँ राघव सन्मुख जोई १४
भयो नाहिं ह्वैहै नहिं कोऊ । जीति सकै बलवानहु सोऊ ॥
राघव अजित युद्ध के बीचा । इंद्र सहित सुर पावहिं नीचा" १५

॥ दोहा ॥

या विधि सिय सन जब कह्यों, तब मोहितचित सोइ ॥
बोलीं रोवत बचन यह, रवहिं कठोर अति जोइ ॥ १६ ॥

॥ चौपाई ॥

"लखन! तोर हिय भयउ कुभाऊ। मो महँ पाप अधिक उपजाऊ ॥
भाइ मरे रवहिं पावन हेतू। पै नहिं रवहिं पैहे अघचेतू! १७
भाइ भरत कर क्रूर इसारा। राम सँग तू चलो सिधारा ॥
यहि लगि रोवत राम सहाई। होसि नाहिं तू पाप बढ़ाई १८
तू बैरी गुप चुप आचरनी। मोंलगि फिरसि पाछुअनुसरनी॥
रघुनंदन कौ चहसि बिछोहा। ताते जासि न तहँ करि छोहा"१९
जब अस कह्यो जानकी मोहीं। तब मैं भयो अरुण दृग सोहीं ॥
रिस भरि ओंठ फरकने लागे। आश्रम से निसर्यों भय पागे २०

॥ दोहा ॥

अस बानी सुनि लखन से, दुख से ब्याकुल राम ॥
कह्यो "सौम्य! बिनु सिय इहां, आयो किहो कुकाम ॥ २१ ॥

॥ चौपाई ॥

जानत हौ तुम मोहिं समर्था। निशिचर करि न सकैं कहुंब्यर्था ॥
इतनहिं क्रोध सिया के कीन्हे ? बैन सुनत तहँ ते चलि दीन्हे २२
नहिं मैं तुम पर होहुं प्रसन्ना। सियतजि भयो कुमति अवसन्ना ॥
जो क्रोधित तियकी कटुबानी। सुनि आयो इहँ ठानि नदानी २३

सब प्रकार तुम किहउ अनीती। सिया कथन पर कीन्ह प्रतीती ॥
क्रोध बिवश ह्वै आयसु मोरा। जो नहिं किहो पाप यह तोरा २४
वह राक्षस महि गिर्‌यो दुराई। मम शर से पुनि प्राण गँवाई ॥
जो कंचन मृग रूप बनायो। आश्रम से बाहर म्वहिं लायो २५

। हरिणीप्लुत छन्द ।

धनुष तानि चढ़ायहुं बानत्यों। कसि हन्यों तुरतै शिशु खेलज्यों ॥
मृग शरीरहि छोड़ि चिघार्‌यहू। बनि निशाचर भूषण धार्‌यहू २६
जब लग्यो शर तौ करुणा धुनी। मम गिरा सम दूर जु जा सुनी ॥
"लखनहो!" यहबोल्यहु जाहिते। तजि सियै तुम आयहु ताहिते २७

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छं० उनषष्ठितमः सर्गः ॥५९॥

——:※:※:※:——

साठवां सर्ग।

मारीच मृग को मार कर लक्ष्मण को मिले हुये, राम का सीता वियोग की घबड़ाहट से आश्रम में झट पट आना, और सीता जी को न पाय, विक्षिप्त की दशा हो ढूंढना ॥

॥ दोहा ॥

झपटि चलत जब राम कौ, बाम नयनतल भाग ॥
फरक्यो, आपुहि तन कँप्यो, उपज्यो प्रिय अनुराग ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

असगुन अशुभ निमित्तनि देखी। बार बार जिय महँ भय लेखी ॥
"नहिं धौं कुशल होय सियकेरा"। यह बोले तब बचन निवेरा ३

झपटि चले पुनि चाल बढ़ाई। सिय देखनलगि चित अकुताई ॥
सून्य कुटी ताछिन लखि पाई। भयो बिकल मन अति घबड़ाई ३
इत उत फिरि ढूंढत रघुराई। पटकत हाथ देह समुदाई ॥
जहँ तहँ निज आस्रम के पासा। चहुंदिश देखि लेत भरि स्वासा ४
देख्यो पर्णकुटी तब जाई। बिनु सीता सो पड़ी भँभाई ॥
नुची खुंची शोभा से हीना। हिमऋतु महँ ज्यों कुईं मलीना ५
आस्रम ज्यों बिटपन सह रोवत। मलिनफूल खग मृग जनु सोवत ॥
शोभा हीन भूष झगझोरा। जनु बनदेव तज्यो चहुं ओरा ६
कुश मृगचर्म पडे छितराने। आसन औ चटाइ बिथराने ॥
देखि सून त्यहि पर्ण कुटीरहि। बिलप्योबहु मनआनि अधीरहि ७
हाय!!! सियहि हरि लैगौ कोऊ। वा मृत नष्ट भखी गै सोऊ ॥
अथवा डरपि छिपी बन माहीं। वा गिरिगुफा अलख धौं नाहीं ८
की धौं फूल बिनन गइ प्यारी। अथवा फल तोड़न बरनारी ॥
वा कहुं कमल तलैयन जाई। जल ल्यावन पुनि नदी सिधाई ९

॥ दोहा ॥

यत्न सहित ढूंढत बनै, नहिं पायहु तहँ प्यारि ॥
शोक भरे दृग अरुण जनु, पागल सरिस खरारि ॥ १० ॥
वृक्षनि से वृक्षनि गिरिन, नदी नार सो धाव ॥
भूमैं बिलपि दलदल धँसे, शोकसमुद्र धँसाव ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

हे कदंब! कहुं है तुम देखे? मम प्रिय कदमफूल रुचि बेखे ॥
जो तुम जानहु देहु बताई। शुभगमुखी सीतहि तुरताई १२

चोकन बेलपत्र सम देहा । पीतबरन पट पहिरि सनेहा ॥
जौ तुम जानहु बेल गुसाईं ! बिल्वस्तनिहि देहु बतलाईं १३
हे कनेर! पुनि तुमहिं बताओ । त्यहि कनेरप्रिय प्यारिहि गाओ ॥
जनकलली सुंदर तनु गोरी । जियत होइ वा मरी बहोरी १४
यहद्रुमककुभ ककुभउरुप्यारिहि। जानत ह्वैहै सिय सुकुमारिहि ॥
लता पुहुप पल्लव से पूरा । है बनबिटप विरहगुण क्रूरा १५
हे द्रुमबर ! तुम जानत ह्वैहो । तिलक! कहूं प्रियसियहि बतैहो? ॥
तुव समीप भूमरा गुंजारैं । तिलकबिटप बिरहिन दुखटारैं १६
हे अशोक ! तुम शोक मिटैया । प्रियबिरहाकुल जनन्हि सहैया ॥
तुम निजनाम गुणहि प्रगटाई । तुरत देहु म्वहिं प्रियहि दिखाई १७
सुनो ताल! यदि तुम कहुं देखे। पके ताल सम कुचिनि सुबेखे ॥
देहु बताइ सियहि बरनारिहि । जौ मो पर करुणा तुव धारिहि १८
हे जामुन! जौ तुम लखि पाये। जांबूनद सम जा तन भाये ॥
जौ जानहु मम प्यारिहि भाई ! तौ निशंक म्वहिं देहु बताई १९

॥ दोहा ॥

कर्णिकार ! अब तुम कहो ? बहु फूलन द्रुम सोह ॥
कर्णिकारप्रिय सतिहि कहुं, मम प्यारिहि यदि जोह ॥ २० ॥

आम कदम बड़शाल सन, पनस कुरैयन सेहु ॥
दाडिम ढिग जा लखि कह्यो, राम यशी सहमेहु ॥ २१ ॥

॥ चौपाई ॥

बकुल तथा पुन्नागहि जाई । चंदन औ केतकिहि मनाई ॥
पूंछत बन मधि राम सुहाई । जनु उन्मत्त चित्त भरमाई २२

पुनि पूंछेउ हे मृग ! जौ जानहु । मृगशावकनैननिहि पहिचानहु ॥
मृगलालच से मृगहि निहारति । मृगिनसंग धौं सियै सिधारति२३
हे गज ! सो गजउरु अरु नासा । जौ त्वहि देखिपड़ीं कहुं पासा ॥
मैं मानहुं तुम जानहु ताही । बरगयंद ! भाखहु जियचाही २४
हे शार्दूल ! लख्यो कहुं सीतहि ? सो ममप्रिय शशिमुखीसभीतहि॥
भख्यो होइ तौ कहो पुकारी । नहिं मोसन भय तोहि सुधारी २५
हे प्यारी ! तुम कस अब धावो ? निहिचैं देखि पड़ो छिपि जावो ॥
कमलनैनि!निजद्रुमन्हिलुकाई । क्यों नहिं मोसन बोलहु? आई२६
ठहरहु ठहरेहु हे बरअंगिनि ! नहिं तुवकरुणा मोपर संगिनि! ॥
नहिं तुम अतिपरिहासनशीला ।क्योंम्वहिंनिदरो करिबहुलीला२७
पीताम्बर सारी तन धारे ।चीन्हि पड़ी म्वहिं रँगतन सारे ॥
दौड़त पै मैं देख्यों तोहीं । ठहरहु जौ प्रिय चाहउ मोहीं २८
मैं जानों निहिचैं मृदुहासिनि ! जौ न काहु सन भई बिनासिनि ॥
तौ कस म्वहिं पीडितकहँछोडी ? याबिध बिरह देति मुखमोडी २९
याते प्रगट अवसि सो बाला । पडी राक्षन के बड गाला ॥
बांटि अंग सब तिन धरि खाये । मो संग प्रियबियोग पहुचाये ३०
अवसि सुयुक्त ओंठ अरु दंता । सुघर नासिका कुंडलवंता ॥
पूर्णचन्द्रमुख प्रभहत भयऊ । राहु निशाचर से ग्रासि गयऊ ३१
सो सुचि चंदनबर्ण प्रकाशिनि । ग्रीवा उचितहारछबिबासिनि ॥
अति कोमल सिय प्यारिहु केरी । जो रोवति भखि गई दरेरी ३२
अवसि दोउ भुज पटकनि खाई । लहि पल्लव सम कोमलताई ॥
सो भखि गये अंगुलिन कांपत ।सहितहस्तअभरणमहिसांशत३३
मोसन बिछुरि गई सो नारी । निशिचर भक्षण हेतु बिचारी ॥
यदपि बंधु बहु पै तजि तासू । काम न आयहु कोछिन आसू३४

॥ दोहा ॥

हा !!! लक्ष्मण ! महबाहु तुम, कहुं देखहु प्रिय बाम ॥
हा!!! भद्रे ! प्रिय ! कहँ गई? अस कह पुनि पुनि राम ॥ ३५ ॥

॥ चौपाई ॥

यहि बिध राघव करत बिलापा । बन बन धावत लहि बहु तापा ॥
कबहुं फिरैं योगी सम ध्याई । कहुं बलसे दौड़हिं भ्रम छाई ३६
कबहु जनाहिं मनहु मतवाले । प्रिय ढूंढन मन लटपट चाले ॥
सो पुनि बन अरु नदी पहारन । गिरझिरननिखोहनिपगुधोरन ॥
महा बिपिन मधि बेग बढ़ाई । फिरन लगे मन को बिकलाई ३७

। हरिगीती छन्द ।

तब जाय राघव सघन बन मधि, लता द्रुम जहँ बहु तने ।
पुनि पैठि सब थल सियहि हेरहु, बैन टेरहु रससने ॥
नहिं आश छोड़हु मिलनु तासँग, फेरि ढूंढन प्रण ठने ।
प्रियबिरहबस चकचौंधि चितवत, कौनश्रम तहँ तनसने ॥३८॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० का० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छ० षष्ठितमः सर्गः ॥६०॥

—····※०※····—

एकसठवां सर्ग ।

सीता हरजाने पर राम का बनर ढूंढना, बिकलता भरा बिलाप करना ॥

॥ दोहा ॥

दशरथ सुत फिरि आश्रमहि, लौटि देखि सब सून ॥
पर्णकुटी सियरहित पुनि, आसन बान छौन ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

नहिं वैदेहि तहां लखि सूना । पुनि सब थल देख्यो दुख दूना ॥
बोल्यो राम रोय चिचिआई । गहि भुज दोउ रुचिर रघुराई २
हाय!!!लखन!कहँजनकदुलारी ? इहँ से कौन देश गइ प्यारी ॥
हे भाई ! वा को हरि लीनो ? अथवा को धरि भक्षण कीनो ३
हे सिय! जो तुम ओट छिपाई । मोसे हसन चहो अठिलाई ॥
तो अब छोड़ि हँसी तुममोहीं । मिलो दुखिहि मैं टेरों तोहीं ४
हे सिय ! जिन मृगछौननि संगा । खेलत रही हिलनि मन चंगा ॥
वे सब तुव बिरहा हिय ध्यावें । हे शुभगे ! इकटक दृग लावें ५
हे लक्ष्मण! सिय बिरह बिथाई । नहिं हम जीवहिं कोटि उपाई ॥
महा शोक मोतन रह छाई । सिया हरण से उपजित भाई ! ६
निहिचै मोहिं पिता महराजू । लखि हैं परलोकहु महँ आजू ॥
तबकहिहैंम्वहिं"कसप्रणकीन्हे ? तुमहिं जु मैं बनबासहु दीन्हे ७
बर्ष चतुर्दस छोड़ि अधूरे । मम समीप आयहु नहिं पूरे ?" ॥
काम बशी अरु निपट अनारी । झूठबादि म्वहिं कहि ललकारी ८
"धिकत्वहि"यों परलोकमझारी। कहिहैं खुलि मम पितु दै तारी ॥
मैं तहँ बिबश शोक संतापी । दीन मनोरथ भग्न सु पापी ९
म्वहिंइहँछोड़िकरुणारसभीनहि। जसकुटलहितजिकीरतिहीनहि॥
कहां जाहु तुम ? परम सुंदरी ! नाहिंतजो म्वहिं सुकटिमुंदरी १०
तुव बिरहाकुल मैं निज प्राना । तजिहो प्यारि! प्यारनहिंआना॥
याहि भांति बिलपत श्री रामा । सीता दर्शन हित चित कामा ११
नहिं देख्यो कहुं अधिक दुखारी । रघुनंदन बिनु जनक दुलारी ॥
सो चिनु पाइ सियहि घबड़ाने । शोक बिबश सब होश भुलाने १२

॥ दोहा ॥

जनु दल दल महँ कोउ गज, फँस्यो अनाथ समान ॥
तिन राघव सन लखन कह, दै धीरज हित मान ॥ १३ ॥

॥ चौपाई ॥

महा बाहु ! मति करहु बिषादा । मो सँग ठानहु यत्न सुखादा ॥
यहि गिरिबर पर खोजहिं बीरा । जो बहु कंदर सोह गभीरा १४
सिय बनभ्रमण करैं अति प्यारा । बनमहँ मत्त फिरहिं सुधि हारा ॥
सो यहि बन मधि पैठि भुलानी । वाप्रफुल्लतदलनलिनिलुकानी १५
अथवा नदी लेन गई पानी । जहां मीन वेतस[1] सरसानी ॥
अथवा कछु भय पाइ सकानी । कहुं कानन महँ छिपी सयानी १६
ढूंढन योग्य सिया सुकुमारी । तुव अरु मोसन सुनो खलारी! ॥
तासु खोज महँ हे श्री मानू ! तुरतहि हम पैहैं पहिचानू १७
बन समस्त ढूंढन हम जाई । जहँ सो जनक सुता रह भाई! ॥
जौ ककुत्थ! तुममम सिखमानो । तौ मति शोक करो यहि थानो १८
जब अस कह्यो लखन हितभाई । राम सुन्यो तब चित्त लगाई ॥
सहित सुमित्रा नंदन जाई । ढूंढन चहुंदिश श्री रघुराई १९
ते द्वौ बन अरु गिरिन्ह सिधारे । नदी ताल बहु खंधक नारे ॥
सब थल ढूंढि थके निकिआई । सीतहि दशरथसुत मन लाई २०

॥ दोहा ॥

तासु शैल के कंदरन्हि, शिलसंधिन बरबाहिं ॥
सब थल ढूंढे त्यहि सियहि, पै कहुं पायहु नाहिं ॥ २१ ॥

---

१ लता, वा बेंत के पेड़ ।

सकल शैलवर ढूंढि कै, कह्यो लखन से राम ॥
सिया सुंदरिहि नहिं लखों, लखन ! याहि गिरि ठाम ॥ २२ ॥

॥ चौपाई ॥

तब सुनि लखन लह्यो दुख तोपा । बोल्यो बचन शोक हिय थापा ॥
बिचरत दंडक बन बिकलाने । दीप्त तेज भाइहि सन्माने २३
हे बर ज्ञानी ! निहिचैं पैहो । तुम सिय जनक लली सँग भैहो ॥
ज्यों महबाहु बिष्णु भगवाना । बलिहि बांधि यह महीमहाना २४
जब अस कह्यो लखन बलबीरा । सुनि सो रघुनंदन रणधीरा ॥
बोल्यो दीन बचन तुरताई । दुखसे चित्त व्यथित घबड़ाई २५
हाय !!! लखन ! ढूंढे बन झारी । प्रफुलित पंकज ताल तलारी ॥
पर्बतहू यह सुनो सुज्ञानी ! कंदर झिरन गये बहु छानी २६
नहिं मैं लखों सियहि कहुं भाई ! जो प्राणहु से अधिक सुहाई ॥
ऐसहि बिलपत राघव सोई । सीता हरण हेतु कृश होई ॥
अतिशय दीन शोक भरि हेता । एक महूरत भयउ बिचेता २७
सो जब सब अंगन बिकलानो । ज्ञान हीन चित नाहिं ठिकानो ॥
कीन्ह बिषाद सुआतुर दीना । तप्त सांस लै लंघित भीना २८
राम कमललोचन बहु सांसू । बार बार लै लै भरि आंसू ॥
"हा!!!प्यारी!" यहकहि चिल्लाने । तन गद्गद मुख बाफ बहाने २९

॥ सोरठा ॥

समझायो बुधि ठानि, तब तिन प्रिय बंधुहि लखन ॥
बहु प्रकार दुख बानि, बिनयो बिनय सु जोरि कर ॥ ३० ॥

राम निदरि सो बैन, लखन ओंठ पुट से चुये ॥
बिनु प्यारिहि लखि नैन, पुनि पुनि रोयहु तासु हित ॥ ३१ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छं० एकषष्ठितमः सर्गः ॥६१

—:※:※:※:—

बासठवां सर्ग ।

सीता जी को बार२ हेरने पर कुटी में सीता को न पाकर फिर रामचन्द्र जी का प्राकृत जन सरिस बिलाप ॥

॥ दोहा ॥

सियहि लखे बिनु धर्म घर, शोक निहत पुनि चेत ॥
महा बाहु बिलप्यो अधिक, राम कमलदल नेत ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

यदपि सियहि राघव नहिं देखे । पै बसकाम मनहुं ढिग लेखे ॥
बोले बचन दीन दुख गाजी । करत बिलाप कुढंगन साजी २
हे प्रिय! तुम फूलन करि प्यारू । तन अशोकशाखा मधि चारू ॥
जाइ छिपायहु तन सुकुमारी । हू मम शोक बढावनि नारी ३
कदली खंभ सरिस बर जंघा । कदली मध्य छिपाइ उलंघा ॥
पै मैं देवि ! लखीं सो तोरी । नाहिं छिपाइ सको मम ओरी ४
भद्रे ! कर्णिकार बन जाई । बैठी हँसहु मोहिं घबड़ाई ॥
मति परिहास करो तुम ऐसा । जो दुख देहु मोहिं विष जैसा ५
है बिशेष ऋषि आश्रम थानों । नहिं यह हँसो भली मैं मानों ॥
हे प्रिय! जानहुं तोर सुभाऊ । है परिहास प्यार बहलाऊ ६

आवहु तुम बिशाल बरनैनी ! सूनि कुटी यह तुव गुण ऐनी ॥६
जानि पड़ै क्यौं भक्षण कीन्हो । वा सीतहि निशिचर हरि लीन्हो ७
न तु वा सो बिलपत म्वहिं जानी । आवति निकट लखन ! ममरानी ॥
ये सब मृगनिह झुंड छिटकारे । लखन ! आंसु भरि नैन पसारे ८
देहिं बताइ मोहिं सिय देविहि । भख्यो निशाचर गुणगण सेविहि ॥
ह !!! मम सती सुतीय सयानी ! कहां गई ? बररंगि सुजानी ! ९
हाय !!! आज कैकई भवानी । ह्वै है बांछित पूरि सुहानी ॥
मैं सिय ! तुव सह गयों निसारो । जवबिनु तुव जैहों घर द्वारो १०
मम अंतः पुर कस छबि पै है ? तुव बिनु जब म्वहिं सूनादिखैहै ॥
म्वहिं "निर्वीर्य" कहैपुनिलोगू । "निर्दय" कहिहैं बिनुसिय योगू ११
सिया हरन से होय प्रकाशा । मम कादरपन जग उपहासा ॥
पुनि जब बिति जैहै बनबासा । जैहों मिथिलाधिप के पासा १२
पुछिहैं कुशल जबै सिय केरी । कैसे सकब तासु मुख हेरी? ॥
जनक बिदेहराज म्वहिं देखी । बिनसिय अवसि सशंकबिशेखी १३
तासु बिनाश जानि सो भूपा । होइहै महा मोह बस रूपा ॥
(दशरथ तात भयेकृत काजा । सो सुर लोक बास ते राजा) ॥
मैं तो नहिं जैहों यहि हेतू । पालितभरत पुरिहि कुलकेतू ! १४
सुनो भाइ ! सुर लोकहु सूना । बिनु सिय म्वहिं लागै जग ऊना ॥
ता ते मोहिं छोड़ि बन माहीं । जाहु अवध पुर शुभगुण पाहीं १५
मैं तो त्यहि सीता बिनु प्यारे ! जिऔं न काहू बिधि तन धारे ॥
दृढ गहिभरतहि हिय लपटाई । कह्यो बचन मम तुम समझाई १६
"तोहि राम आयसु वह दीन्हे । पालहु धरा नीति मन लीन्हे" ॥
तुम मम मातु कैकई सेहू । लखन ! सुमित्रहु से भरि नेहू १७
अरु कौशल्यहु से जस नीती । कह्यो प्रणाम मोरि हुति प्रीती ॥
दुखिनि यत्न से पालन जोगू । तुम श्रुतिपंथी सन सब भोगू १८

हे अरि नाशन ! सियकर नाशा । अरु यह मोर मरनु वन बासा ॥
मम जननी से करि बिस्तारा । तुम बन हाल कह्यो जा सारा १९

। छप्पै छन्द ।

या विधि बिलपत राम तहां, रघुराज दुलारे ।
बन मधि चहुंदिश घूमि घूमि, अतिदुख तन मारे ॥
ता सुठिकेशिनि सियहि बिना, मन बिकल बिकारे ।
बिरह बिथा उपजाउ अधिक, प्रति अंग बिदारे ॥
त्यहि काल बिकलमुख भयभरे, लखनहु पड़ि अतिशोक महँ ।
पुनि बार बार मन दुखित ह्वै, भयउ सुआतुर तुरत तहँ ॥ २० ॥

इति श्रीमद्वा० रा०आ०कां० पं०देवकीनंदन चि० कृत भा०छं० द्विषष्ठितमः सर्गः ॥६२॥

—:※:※:※:—

तिरसठवां सर्ग ।

सीता को ढूंढने पर भी न पाय रामचन्द्र जी का प्राकृतजन समान बिलाप, उसे सुन लक्ष्मण का दुखी होना औ रामचन्द्र जी को धीरज देना ॥

॥ दोहा ॥

राज पुत्र प्रिय हीन सो, शोक मोह से खीन ॥
भाइहि दुख पहुंचावते, पुनि पुनि अति दुख भीन ॥ १ ॥
राम शोक निधि मग्न सो, लखन शोक बस पास ॥
पुनि बोल्यो दुख उचित बच, रोइ गरम तजि स्वास ॥ २ ॥

। ललितपदा छन्द ।

नाहिं को मोसम जानि पड़ै महि, दूसर अकरम कारी ॥
मोहिं शोक पर शोक मिलै चलि, मन अरु हृदय बिदारी ॥ ३ ॥

पूरब जन्म पाप बहु कीन्हे, धरि रुचि बारहि बारा ॥
तिन को फल यह आजु पड़ो म्वहिं, जो दुखसे दुख भारा ॥ ४ ॥
राज्य नाश अरु पिता मस्यो मम, जननी स्वजन बियोगा ॥
लखन ! मोहिं सब शोक बेग भरि, चिंतित करैं कुभोगा ॥ ५ ॥
येसब मम दुख बन बसि लक्ष्मण !, सियलखि तनहि जुड़ाये ॥
तासु बिरह पुनि उग्यो अचानक, काठ अनल जनु पाये ॥ ६ ॥
सो निहिचैं मम सुंदरि हरि गइ, निशिचर नभ लै भाग्यो ॥
सुठि भाखिनि भयसे बहु रोवत, करतु बिलाप अनुराग्यो ॥ ७ ॥
प्रिय दर्शन लोहित हरि चंदन, जिन महँ सदा लगाये ॥
रुधिर भरे कुच प्रिय के लखिगे, मैं न मस्यों ? अकुताये ॥ ८ ॥
तासु व्यक्त मृदु सुठि बिलाप सुख, केश भार अरुझाने ॥
है राक्षस बस अवसि सोह नहिं, ज्यों शशि राहु दबाने ॥ ९ ॥
बँधो उचित बरहार कंठ मम, सती प्रिया को जोई ॥
तासु अवसि निशिचर सूनेबधि, पिअहु रुधिर रुचिहोई ॥ १० ॥
मम बियोग से निर्जन बन महँ, घेरि अधम घिसिलाये ॥
अवसि टिटिहिरी सम दुख रोवति, शुभ दृगकाहि लँबाये ॥ ११ ॥
मो सँग प्रथम उदार शील सो, याहि शिला पर बैठी ॥
मृदु मुसकाइ लखन! म्वहि टेर्यो, बहुत हास्य धुनि ऐंठी ॥ १२ ॥
यह गोदावरि श्रेष्ठ नदिन महँ, मम प्रिय की नित प्यारी ॥
मैं यह सोचहुं गई अँकेली, धौं नहिं ? तहँ सुकुमारी ॥ १३ ॥
मुख पंकज दृग पंकज प्यारी, गइ धौं पंकज हेतू ? ॥
सोउ ठीक नहिं, बिनु मम संगे, जाइ न कहुं बन नेतू ॥ १४ ॥
बहु बिध पक्षिन युत यह पुष्पित, तरुबर लखि ललचाई ॥
बनहिं गई पै सोउ असंभव, सो अंकेलि डरि जाई ॥ १५ ॥

हे रवि! लोक रचन! रचि जानहु, लोक झूठ सच साखी ॥
मम प्रिय सो कहँ गई ? हरी वा,? कहु सब सोसन भाखी ॥ १६ ॥
सब लोकन में नहिं कछु जो नित, तुव जाननु से बाकी ॥
कहो वायु! कुलपालिनि सो मरि, वा हरिगै ? मनढांकी ॥ १७ ॥

। हरिगीती छन्द ।

यहि भांति शोक सनेह तन मन, उचित पूरित राम कौ ।
लखि लखन करत बिलाप चित्त, बिचेत सुंदर स्याम कौ ॥
तब बचन बोल्योहु धीर नहि तुक, हुग्यो बपु वलधाम कौ ।
थित न्याय मारग समय संयुत, सीख सब जग काम कौ ॥ १८ ॥

। शिखरिणी छन्द ।

तजो भाई! शोकू, भजहु अब धैर्यै बुधि धरो ।
सियै ढूंढन हेतू, करहु अति उत्साह चतुरो ॥
उछाही जो प्रानी, बसहि जग ज्ञानी बर उहै ।
हटै नाहीं काहूं अति कठिन कर्मों यदि रहै ॥ १९ ॥

। सुगीती छन्द ।

अस लखन कह समझाइकै, रघुबंश मणिहि रिझाइकै ।
जो उग्र पौरुष गोइकै, दुख बैन बोलत रोइकै ॥
कीन्ह्यो बिचार न ता घरी, तजि ज्ञान धीरज ना धरी ।
फिर अति बड़ो दुख से दरी, दृग बारि करनु लगे झरी ॥ २० ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० का० पं० देवकीनंदन वि० कृत भा० छं० त्रिषष्ठितमः सर्ग. ॥६३॥

—⋯※०※⋯—

चौंसठवां सर्ग।

सीतहरण से रामचन्द्र का बिक्षिप्तवत् जडपदार्थोंसे पूछना व क्रोध करना आगे चल सीता जी के भूषणादि, रावण के टूटे कवच छत्रादि का पडे देखना और संसार के नाश हेतु बान का चढाना।

॥ दोहा ॥

राम दुखित दुख बैन पुनि, कह्यो लखन से येहु॥
"लखन! तुरत गोदावरी, नदिहि जाइ ततु लेहु ॥ १॥

॥ चौपाई ॥

कमल लेन सिय गइं धौं नाहीं? गोदावरी नदी तट माहीं" ॥
जब अस कह्यो राम सुनि ताही। लखन महाबल हुकुम निबाही २
रम्य नदी गोदावरि ओरा। गये झपटि फुरतील सजोरा॥
सुघर घाट युत नदिहि सरेखी। आइ राम सन कह्यो बिशेखी ३
"नहिं सीतहि सरिता के तीरा। लख्यों न सुन्यों बोल मन धीरा॥
नहिं जानूं क्यहि देश सिधारी। बैदेही दुख नाशिनि प्यारी ४
हे राघव! मैं नहिं त्यहि जानूं। जहँ सुमध्यमा सिया हिरानूं" ॥
लखन बैन सुनि या बिध रूखे। भये दीन मोहित मन दूखे ५
तब पुनि राम निजै घबड़ाये। गोदावरी नदी ढिग धाये॥
सो तहँ राम जाइ गुहराये। "कहां सिये!" यह बचन सुनाये ६
जानहिं जंतु हस्यो लंकेशा। बधनु योग्य, पै रहि चुपबेशा॥
खबरि राम सन कह्यो न कोऊ। गोदावरी नदिहु चुप सोऊ ७
तब जलजंतु नदी कहँ प्रेरे। "कहो राम सन सिय गति टेरे" ॥
पै सो कह्यो न सियगति जोई। पूंछ्यो राम शोक मन होई ८

रावण को वह रूप भयाना । तथा दुष्ट को कर्म गिलाना ॥
सुमिरि डरी सो नदी पुनीता । कह्यो न जा बिधि हरिगै सीता ९

॥ दोहा ॥

ह्वै निरास ता नदिहु से, जो नहिं सियहि बताउ ॥
कह्यो राम पुनि लखन से, सिय देखन मन चाउ ॥ १० ॥

॥ चौपाई ॥

सुनो सौम्य ! गोदावरि रम्या । कछु न कह्योयहसरितअगम्या ॥
पै अब लखन ! जनक नृपपाहीं । काकहबै?मिलि जबघरजाहीं ११
पुनि सियमातु निकट का कहबै ? ता बिनु हम अप्रिय ह्वै रहबै ॥
जो सिय मम बन जीवन मूरा । राज्य छीन बनचर कर पूरा १२
जो सब शोक हरनि वह मोरी । कहां गई सिय ? सो मन छोरी ॥
इक तौ मैं सब कुटुम बिहीना । दुज न लखौं सीतहि दुखभीना १३
जानि रैन म्वहिं पडै महाना । जागत चुकै न, कठिन भयाना ॥
मंदाकिनी अौर जन थानन । ये झिरनन अौ गिरवर कानन १४
सब थल फिरि ढूंढब बहु भांती । चहु मिलिजाइं सिया सुखरांती ॥
सुनो बीर ! ये बन मृग जेते । म्वहिंफिरिफिरि देखैं कछुहेते १५
मनहु कछुक ये भाषण चाहैं । देखि पडैं तन अंग उमाहैं ॥
तिनहिं देखि नरनाहर बीरा । रघुनंदन बोले तजि धीरा १६
"मृगगण!कहँसीता?"यहबानी । तकत रुकी मुख फिचकुर सानी ॥
जब अस कह्यो राम नरनाहा । ते मृग झट पट उठे उछाहा १७
दक्षिण मुख ह्वै सब भे ठाढे । लगे दिखावन नभ दृग काढे ॥
ज्यहिदिशगईं सियाहरि ताही । बार बार कूदे अवगाही १८

गये तासु मारग हूँ भागी । रामहि लखत मृगा अनुरागी ॥
ज्यहि मग औ जा भूमिहि देखे । ते सब मृग इंगित सम लेखे १९
फिरि फिरि सब चिग चरत सिधारे । लखन तिन्है भरि नैन निहारे ॥
तिन के बैन गवन कर अर्था । लखन लख्यो अनुमान समर्था २०

॥ दोहा ॥

कह्यो लखन मतिमान तब, जेठ भाइ सन रोइ ॥
"कहँ सिय" अस तुव पूंछतहि, झपटि उठे मृग जोइ ॥ २१ ॥
ये दरसावहिं भूमि पुनि, अरु दक्षिण मुख फेरि ॥
देव ! अवसि इत चलैं हम, दिश नैऋत मग हेरि ॥ २२ ॥

॥ चौपाई ॥

तासु खबर कहुं मिली जरूरी । अथवा देखि पड़िहि सिय रूरी ॥
"बहुत नीक" असकहि श्रीरामू । चले तुरत दक्षिण दिश धामू २३
लखन सहित राघव श्रीमानू । देखत इत उत महि सब थानू ॥
या बिधि कहत परस्पर बाता । मिलि द्वौ भाइ दुखी सब गाता २४
आगे चलि धरनी मधि देखे । दलित फूल मारग बिनु पेखे ॥
झरी फूल की पांति निहारी । राम महीतल महँ चहुं बारी २५
बोले बीर लखन से बैना । अतिशय दुखी आंसु भरि नैना ॥
"लखो लखन ! मैं जानहुं सोई । ये जो फूल पडे मग खोई २६
जो मैं वन बिच हरख बढ़ाये । सिय के कचन बांधि सुरझाये ॥
जनु रबि सोखि न पवन उड़ाये । धरा यशिनि नहिं धूलि रमाये २७
ये सब करि फूलन रखवारी । कीन्ह्यो मोर प्यार सत धारी ॥
अस कहि महाबाहु रघुराई । पुरुषऋषभ लखनहि समुझाई २८

बोलेहु राम धर्ममतिमानू । झिरनझरित गिरि कहँ दै मानू ॥
हे महिधरननाथ! कहुं देखे ? जो सिय सब अँग सुंदरि लेखे २९
तुव बन मधि कहुं रमै? सुरामा । मोसन बिछुरि सती वरवामा ॥
तहँ करि क्रोध राम पुनि बोले । छोट मृगन्हि ज्यों सिंहहु लोले ३०
हे पर्वत! तुम सियहि दिखावो । कंचनबर्णा अंगिनिहि ल्यावो ॥
नहिं त्वहि कंदर खोह समेतू । करिहों ध्वंस समस्त अचेतू ३१

॥ दोहा ॥

जब अस पर्वत से कह्यो, राम सियहि मन ध्याय ॥
पै सो जड़ देख्यो यदिप, नहिं त्यहि सक्यो दिखाय ॥ ३२ ॥

॥ चौपाई ॥

तब पुनि दशरथ नंदन रामू । ऊंच शिलहि बोले प्रिय कामू ॥
मम शर अनल कठोर प्रहारा । हे गिरि! तू ह्वैहै जलि छारा ३३
चारहु ओर भयावन ह्वैहे । बिनु तृण द्रुम पल्लवहि दिखैहे ॥
सुनो लखन! यह नदी बहाऊ । अबहिं सोखि लैहों दै घाऊ ३४
जौ नहिं सीतहि आजु बतैहै । चंद्रमुखिहि वन माहिं छिपैहै ॥
याबिध राम अधिक रिसिहाने । मनहु आंख से अनल जलाने ३५
ता छिन लख्यो भूमि महँ भारी । उपटे पग निशिचर के चारी ॥
अरु इत उत धावति सिय केरे । डरी, राम आवनु जनु हेरे ३६
राक्षसेंद्र कर से छूटि भागी । तब पग उपटि गये रज पागी ॥
सो चहुंओर चिन्ह लखि पाये । सीता अरु राक्षस के धाये ३७
अरु उत टूट धनुष तूनीरा । रथके साज छिटिक बहु भीरा ॥
संभ्रम हृदय भयो रघुराई । कह्यो प्यार भाई सन धाई ३८

देखहु लखन! सिया अँग त्यागी। कनक बिंदु बिखरे महि रागी ॥
भूषण वसन नुचे छहराने। अरु बहु मालन से छितराने ३९
मनहुं कनक कण गये तपाये। रुधिरबिंदु से चित्रित[1] खँचाये॥
पडे चहूंदिश धरा मझारी। लखो लखन! अतिसंशयकारी ४०
मैं जानहुं लक्ष्मण! बैदेही। बहुरूपिन राक्षस गण सेही॥
काटि कूटि है बिविध बिभागा। भखी गईं धौं नाहिं? सुभागा ४१
तासु सिया के भक्षण हेतू। दो निश्चर जनु झगड़ि बिचेतू॥
कियो युद्ध इहँ लखन पिआरे! महाघोर दुहु दिश ललकारे ४२
अरु मुक्तामणि जड़ित अनूपा। यह रमणीय लखो छबि रूपा॥
पड़ो धरनिमहँ सौम्य! सुनीको। काको? टूट महाधनु ठीको ४३
कहो वत्स! यह सुरगण केरा? अथवा निश्चरगण को गेरा? ॥
उदित तरुण रबि तेज प्रकाशा। मूंगन गुरिया जड़ित सुभाशा ४४
छिन्न भिन्न है भुवि बिथराना। काको? कंचन कवच महाना॥
सौ सलाइ कर छत्र छबीला। दिब्यमाल गुंथि बनो रँगीला ४५
कटो दंड काको? यह बीरा! पड़ो भूमि महँ शुभ पट चीरा॥
अरु कंचनमय साज खुगीरा। ये पिशाचमुख खच्चर धीरा ४६
भीम रूप अरु लंबित काया। काके रण महँ मरे? निदाया॥
फिरयहज्वालितअग्निप्रकाशी। चमकत समरध्वजा अबिनाशी ४७
टूट फूट अरु पड़ो मरोरा। काको युद्धरथहु? झगझोरा॥
अंगुल चारशतहु परिमाना। फलक बिभूषित तेजित बाना ४८
हैं काके ये शरबर टूटे? पडे भयानक फलकहु फूटे॥
ये बर तरकस शरन्हि सु पूरे। पडे ध्वस्त लखु लखन! बरूरे ४९
बागडोरि कर चाबुक येहू। मरो सारथी काकर? नेहू॥
यहपौदल पुनिपुरुषचिन्हारी। प्रगट कोउ राक्षस की सारी ५०

1 चित्रित।

॥ दोहा ॥

लखो लखन ! उन राक्षसन, बहुरूपिन सन मोर ॥
शतगुण बाढ्यो बैर अब, तिन्ह प्राणन्हि को छोर ॥ ५१ ॥

॥ चौपाई ॥

हरी गई वा मरि ? बैदेही । अथवा भक्षित भई सुदेही ॥
धर्महु नहिं रक्ष्यो पुनि सीतहि । गई महावन महँ हरि जीतहि ५२
जब बैदेहि भखी पै गई । वा लक्ष्मण ! हरि परबस भई ॥
जौनहिंकोउ राखि त्यहि लियो । को ईश्वर जग? अब ममप्रियो ५३
जो सब लोक केर कर्त्तारा । अरु है बीर ! दया आगारा ॥
करैं तासु अपमान घनेरे । जीव सकल अज्ञान सु प्रेरे ५४
मोहिंकोमलहिजगहितयुक्तहि । इंद्रियजित करुणाकर उक्तहि ॥
अति निर्बीर्य इहै जिय मानैं । निहिचैं सकल देव अपमानैं ५५
मोहिं पाइ ये सब गुण जेते । भये दोष लखु लखन ! सुचेते ॥
याते अबहिं जीव सब नाशन । अरु राक्षसन्हि हतनु दै त्रासन ५६
चंद्र ज्योति सम तेज समेटी । महा सूर्य सम उदित झपेटी ॥
सकल गुणन्हि मैं देहु छिपाई । करौं प्रकाश तेज समुदाई ५७
नाहिं यक्ष नहिं मुनि गंधर्वा । नहिं पिशाच नहिं राक्षस सर्वा ॥
नहिं किन्नर वा नहिं नरदेहा । लखन ! कभूं सुख पैहहिं नेहा ५८
मम अस्त्रन बानन से पूरो । देखहु तुरत लखन ! नभ भूरो ॥
संधि रहित करिहौं मैं आजू । तीनहु लोक चराचर काजू ५९
रोकि सकल ग्रहगण को चालू । अरु शशि मंडल सकै न हालू ॥
नष्ट होइ अनलहु औ पवनू । रविप्रकाश छिपि तेजहु दमनू ६०

देहुं ढहाइ पहार कँगूरे । सकल जलाशय करहुं सुभूरे ॥
लता गुल्म सब देहुं धँसाई । सोखहुं सिंधुहि धूलि उड़ाई ६१

॥ दोहा ॥

तीन लोक जोरहुं तुरत, काल कर्म के संग ॥
जौ जगईश अनीश स्वहिं, देहिं न सियहि अभंग ॥ ६२ ॥

॥ चौपाई ॥

याहि मुहूरत महँ सुनु भाई ! लखिहैं मम बिक्रम बलताई ॥
नहिं नभ महँ कहुं चलनसुठाऊं । लखन! सकल जीवन बिकलाऊं ६३
अति अकुलाहट बिनु मर्यादा । अबहिं लखन! लखु जगउन्मादा ॥
कसि धनुबान कान तक ताने । रुकै न जीव लोक सन आने ६४
सिया हेतु करिहों मैं धूमी । बिनु पिशाच बिनु राक्षस भूमी ॥
रोष भरे मोरे खर बाना । तिनको बल सब देव महाना ६५
लखिहैं अबहिं बान जब छूटैं । दूर गामि असरख से फूटैं ॥
नहिं को देव दैत्य अब रैहैं । नहिं पिशाच राक्षस बँचि जैहैं ६६
जब तिलोक ह्वैहै सब नाशू । लहि मम क्रोध सरहिं महि त्राशू ॥
देव दैत्य यक्षन मधि कोऊ । अरु ये जग राक्षस दल होऊ ६७
मम बाननके झुण्ड झकोरन । गिरिहैं झुंड सहस चहुं ओरन ॥
बिनु मर्याद सकल इन लोकन । करिहों अबहिं बान के थोकन ६८
मरी हरी वा कतहुं छिपाई । लखन ! न दैहैं जो सुरराई ॥
जस पहिले रहि रूप निकाई । मम प्यारी सीतहि प्रगटाई ॥
तौ मैं नाशहुं जग समुदाई । तीन लोक चर अचरहु भाई ! ॥
जबतक सियहि न देखों जाई । तब तक बानन्हि देहुं जलाई ५९

॥ दोहा ॥

अस कहि क्रोधित अरुण दृग, फरकत अधर खरारि ॥
कसि बल्कल मृग चर्म पट, बांध्यो जटा सँभारि ॥ ७१ ॥
या बिधि क्रोधित सोइ जब, भयहु राम मतिधीर ॥
जनु त्रिपुरासुर बधन कौ, रुद्र धस्यो तनु चीर ॥ ७२ ॥

। तोमर छन्द ।

लै लखन से बर चाप । श्री राम गहि दृढ दाप ॥
शर लीन्ह तेज महान । अति घोर बिष सम सान ॥ ७३ ॥
धरि धनुष महँ श्रीमान । रघुराज रिपुजित तान ॥
युग अंत अनल समान । यह कह्यो कोपि प्रमान ॥ ७४ ॥
जस मरण और बुढ़ापु । पुनि काल ज्यों बिधि आपु ॥
ते लखन! जाहिं न रोंकि । जीवन्हि गहैं भरि भोंकि ॥
तस मोहिं लहि युत क्रोध । को सक न करि टुक रोध ॥ ७५ ॥

। हरिगीती छन्द ।

मम चारु दंतिनि सिय अनिंदिनि, रहीं शुभ गुण रूपिनी ।
जस प्रथम तस जौ देहिं नहिं स्वहिं, आजु प्रगटि प्रदीपिनी ॥
तौ सहित सुर गंधर्ब औ नर, नाग मंडलि भूपिनी ।
पुनि जगत शैल समेत उलटहुं, करहुं सृष्टि अनूपिनी ॥ ७६ ॥

इति श्रीमद्वा० रा०आ०कां० पं०देवकीनंदन चि० कृत भा०छं० चतुःषष्ठितमः सर्गः ॥६४॥

—:※:※:※:—

पैंसठवां सर्ग ।

सीताहरण दुःख से क्रोधित त्रिलोक के नाश में उद्यत रामचन्द्र को देख लक्ष्मणजी का नीति पूर्वक समझना ॥

॥ दोहा ॥

तदनंतर तापित हृदय, कृश सिय हरण सुदाम ॥
लोक नाश महँ उमग मन, प्रलय अनल जनु राम ॥ १ ॥
साजि धनुष देखत दृगन, पुनि पुनि लेत उसांस ॥
जगत जलावनु मन किये, ज्यों हर युग के नास ॥ २ ॥
लख्यों न कहुं अस क्रोधयुत, ताहि समय लखि नैन ॥
बांधि अंजुली लखन पुनि, सूखे मुख कह बैन ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

राघव ! जस मृदु इंद्रिय दमनू । रह्यो प्रथम सबजग हित रमनू ॥
नहिं अस कहूं क्रोध बस होई । तजन योगु शुभ प्रकृतिहु सोई ४
शशिमहँ श्री, रबि माहिंप्रकाशू । गति बश बायु, क्षमा महि बासू ॥
ये सब नित्य नियत इन पाहीं । सबसे सुयश अधिक तुम माहीं ५
एकहि के अपराधहु लाई । कस सब लोक हनहु? तुमभाई ॥
मैं नहिं जानहुं यह रथ काको ? पड़ो टूट करि युद्ध हढ़ाको ५
क्यहि कृत वा लहि कौनहु हेतू । भयो युद्ध सब साज समेतू ॥
खुर टापन्हि से हत यह साजू । रुधिर बिंदु सिंचित पड़ि भ्राजू ७
यह थल जो निवृत्त संग्रामा । हे नृप सुत ! अति घोरसुठामा ॥
एकहि दल कर दलन लखाई । नहिं दोजन कर श्री रघुराई ८

अरूनहिंभूतल लखहु चिन्हारी। महासेन कर पदतल चारी ॥
याते एक व्यक्ति के दोषन। लोकनाश नहिं उचित सरोषन ९
मृदु सुभाउ दें उचितहु दंडा। रहैं शांत जो नृप श्रुति मंडा ॥
तुम तौ नित जीवन के शरणा। तथापरमगति(जगआभरणा)१०
कोअसजग?जोतुव तियनाशा। मानहिं भलो? राम! बिनु त्रासा ॥
सरित और सागर गिरि भारी। देव दैत्य गंधर्बहु धारी ११
तुव अप्रिय नहिं करनु समर्था। ज्यों दीक्षित कर साधु अनर्था ॥
हे राजन! जिनसियहरिलीन्हे। उचित तासु ढूंढन मन दीन्हे १२
मैं द्वितीय कर धनुशर संगा। अरु ऋषि गण सहाय सबढंगा ॥
सब मिलि सागरहू धँसि जैहै। बन पर्बत ढूंढब जहँ पैहैं १३
बिबिध गुहा जो बनी भयंका। प्रफुलित पद्म तलैयन पंका ॥
देव और गंधर्बहु लोका। दै चित ढूंढब तजि सब शोका १४
जब तकनहिं तिलोकमहँ पैहैं। तुव प्रिय नारि हरैयहि, घैहैं ॥
जौ नहिं शांत भाव से दैहैं। तुव पत्नी, चहु इंद्रहु हैहैं ॥
कौशलेंद्र! तब पुनि ता पीछे। कीजै सबन्हि काल मुख बीछे १५

भुजंगप्रयात छन्द

बिनै शील औ शांत लै निति भाऊ।
सुनो भूप! जौ पै सियै नाहिं पाऊ ॥
तबै हेम पानी ढरे बान वारो।
यथा इंद्र को बज्र लैकै प्रहारो ॥ १६ ॥

इति श्रीमद्बा० रा० आ० का० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छ० पंचषष्ठितम:सर्ग. ॥६५॥

—····※०※····—

छाछठवां सर्ग ।

सीता हरण से दुःखित क्रोध भरे रामचन्द्र जी को फिर लक्ष्मण जी का नीति वचन और दृष्टांतों से समझाना, और सीता पहारक को ढूंढने में उत्तेजित करना ॥

॥ दोहा ॥

त्यहि ताछिन तस शोक से, तापित बिलपित देखि ॥
जनु अनाथ बड़ मोह लहि, खीन विचेतन लेखि ॥ १ ॥
तब लक्ष्मण समुझाय कै, एक मुहूरत माहिं ॥
रामहि संबोधन कियो, चांपत चरण सुबांहिं ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनो भाइ ! करि कै तप भारी । अरु बहु कर्म अनोख संवारी ॥
नृप दशरथ गे स्वर्ग पधारी । लह्यो अमृत जस सुरनभ चारी ३
तुव शुभ गुण डोरी से बांधे । अरु तुम्हरो वियोग धै काधे ॥
राजा देव योनि कौ पायो । सुन्यो भरत मुख जो समुदायो ४
हे ककुत्थ ! यदि यह दुख पाई । तुम नहिं सहो राम! रघुराई ! ॥
तो पुनि कस ?प्राकृत लघुचेता । कौन अपर जन सहै ? सहेता ५
समझहु हे नर बर ! मनलाई । कौन जीव ज्यहि बिपदनआई ?
पै ज्यों अनल लगी भभकाई । छिनै माहिं पुनि जाइ बुझाई ६
यह निहिचै है लोक स्वभावा । नहुष कुमार यजातिहु पावा ॥
गयो इंद्र के लोकहु तांई । त्यहि अनीति गेस्यो निज ठांई ७
मुनि महर्षि जो गुरू बशिष्ठा । हमरे पितु को पुरुहित निष्ठा ॥
तासु पुत्र इक सौ पुनि जने । विश्वमीत इक छिन महँ हने ८

पुनि यह जो जगकी सुठिमाता। सकललोकज्यहि नमहिंसुहाता ॥
तासु भूमि कौ कंपन भारी। कौशलेश! होवै लखि बारी ९
जो द्वौ धार्मिक हैं जग नैना। जिनमैं सबजग थित सुख चैना ॥
सो सूरज शशिअति बलशाली। पड़ैं राहु ग्रह मुख गुण माली! १०

॥ दोहा ॥

बड़े जीवजंतुहुं सकल, पुरुष ऋषभ अरु देव ॥
टारि सकैं नहिं दैव गति, प्राण देह जिन सेव ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि इंद्रादि देवतन माहीं। नीति अनीति दुःख सुखपाहीं ॥
सुने जाइं हे नरशार्दूला! नहिं तुमबिथा योगु दुखमूला १२
मरी होइं चहु सिया पिआरी। वा कहुं खोइहु गईं खरारी! ॥
ताते बीर! न शोचन जोगू। जस प्राकृत जगके सब लोगू १३
तुवसम सतत जगत गुणदर्शी। नहिं शोचहिं ह्वै हृदय अमर्षी ॥
अतिशय कठिन कष्टहू पाई। रहैं न राम! खेद दरसाई १४
हे नर श्रेष्ठ! सुबुद्धि लगाई। चिंतहु तत्व बात समुदाई ॥
बुद्धि युक्त जे परम सुजाना। जानहिं शुभअरुअशुभ बिधाना १५
जिन कर्मन कौ नाहिं ठिकाना। उन गुण दोष जाइ नहिं जाना ॥
तिनकीक्रिया कियेबिनु माहीं। वांछितफल प्रभुकबहुं दिखाहीं १६
सुनो बीर! पहिले तुम मोहीं। बहुबिध दीन्ह सिखापन योहीं ॥
याते तुम को कौन सिखावे? जौ बनि ठीक बृहस्पति आवे १७

हे सुजान ! तुव बुद्धि महानू । देवहु सकैं न करि संधानू ॥
पै तुव ज्ञान शोक से सोवै । देहुं जगाइ नींद सो खोवै १८
दैव उचित अरु नर कर्त्तव्या । पुनि आपन पौरुष भवितव्या ॥
हे इक्ष्वाकु ऋषभ ! सब जानी । बैरिहि बधो यत्न बहु ठानी १९
का फल तुमहिं सकल जगनाशे ? पुरुषऋषभ! मिलिहै? कुल त्रासे ॥
याते त्यहि पापिहि सियचोरहि । ढूंढि हतौ सठ अधम सुघोरहि २०

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छं० षट्षष्ठितमः सर्गः ॥६६॥

——:※:※:※:——

। सरसठवां सर्ग ।

लक्ष्मण जी के समझाने पर रामचन्द्रजी का धीरज धरना और सीताजी के खोजमें महाबन का पैठना, आगे चल जटायु गीध का मिलना, उस्से रावण कृत सीता हरण का पता पाना ।

॥ दोहा ॥

जेठ भाइ सुनि लखन की, सुठि बानी बिस्तार ॥
सार गहैया राम त्यहि, गह्यो मानि पुनि सार ॥ १ ॥
सो बाढ़िति निज रोषको, महाबाहु द्रुत रोंकि ॥
राम लखन से कह्यो पुनि, चित्रित धनु महि ठोंकि ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

कहो बत्स ! अब कीजिय काहा । कहां जाहिं वा लखन उमाहा? ॥
कौन उपाय पाइ अब देखैं ? सीतहि यह चिंतहु बुधि लेखैं ३
तिन परिताप शोकपीड़ित मन । बोल्यो लखन राम से करि प्रन ॥
जन स्थान यह बन गंभीरा । तहँ तुम चलि खोजहु रघुबीरा ४

बहुत राक्षसनि से भर पूरा । नाना विटप लता युत रूरा ॥
अरु इहँ दुर्गम गिरि बहु राजैं । कंदर अरु पषाण फटि भ्राजैं ५
बिबिध गुहा है घोर भयाना । नाना मृग खग भरि अकुलाना ॥
तथा किन्नरन के बहु बासा । गंधर्वन के भवन प्रकाशा ६
तिन सब थानन लै स्वहिं संगा । ढूंढन चलहु ठानि बहु ढंगा ॥
तुव सम चतुर बुद्धि सम्पन्ना । जो ज्ञानी नर ऋषभ सुपन्ना ७
ते नहिं दुखैं आपदा पाई । ज्यों गिरि पवन वेगसे भाई! ॥
सुनि अस सार बचन वनमाहीं । बिचरण लगे लखन सँग ताहीं ८
पुनि करि क्रोध राम बड़ घोरा । पैन बान धै धनुष टकोरा ॥
तब पर्वत के शिखर समाना । महा भाग खग पतिहु दिखाना ९
पड़ो भूमि देख्यो दृग तानी । भीगो रुधिर जटायुहु प्रानी ॥
ताहि देखि गिरि शृंगप्रकाशी । राम लखन से कह्यो हुलाशी १०
इहै सियहि खायो मम प्यारिहि । नहि कछु संशय त्यहि सुकुमारी ॥
गीध रूप धरि कानन बीचा । प्रगट फिरै यह राक्षस नीचा ११
सिय बिशाललोचनि कहँ खाई । बैठे सुख से समय गँवाई ॥
मरिहों याहि दीप्त शर तानी । जो बर घोर तीव्र खरसानी १२

॥ दोहा ॥

यह कहि देखन धायहू, पैन बान धनुधार ।
क्रोधित राम समुद्र तक, जनु महि देत भ्कँकारि ॥ १३ ॥
तिन्है दीन लखि दीन ह्वै, रुधिर बमत सहफेन ॥
दशरथ सुत श्री राम से, सो खगपति कह बैन ॥ १४ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनो राम! औषधि की नाईं। ज्यहि तुम बन महँ ढूंढहु साईं! ॥
सो देवी अरु प्राण हमारे। द्वौ हरिगे रावण सन प्यारे! १५
हे राघव! तुव बिनु सो देवी। अरु नहिं लखन रहे गुण सेवी ॥
हरी गईं तब मैं ने देखा। रावण वली हाय यहि लेखा १६
मैं सीता की रक्षण धायों। हे प्रभु रावण पर भहरायों ॥
रावण को रथ छत्र बिनास्यों। तबसोगिस्योभूमि पुनि त्रास्यों १७
इहै तासु धनु पड़ो सुटूटो। अरु यह ताहो कौ शर फूटो ॥
लखो तासु रण महँ रघुराई! बड़ो युद्ध रथ टूट सुहाई १८
पुनि सारथी इहै है जाको। मम पक्षन्हि भूतल हत ताको ॥
जब मैं झपट्यों तब मम पक्षा। खड्गन्हि काट्यो रावण रक्षा १९
पुनि सिय बैदेहिहि लै भाग्यो। तुरत अकाश गयो महि त्याग्यो ॥
अबहिं राक्षस प्रथमहिंहति डारे। मैं नहिं मारनु योग्य तुम्हारे २०
तासु गीध की कथा पिआरी। सिय संबंधिनि जानि खरारी ॥
फेंकि महा धनु चले सुधाई। गीधराज कहँ हृदय लगाई २१
ह्वै तब बिवश गिरे महि दोऊ। राम लखन रोये अरु सोऊ ॥
यदपि राम अति धीरज धारी। तभू दून दुख बैन उचारी २२

॥ दोहा ॥

पड़ो अँकेल सँकेत पथ, कष्टनि लेत उसांसु ॥
देखि राम कह लखन से, दुखित आंख भरि आंसु ॥ २३ ॥

॥ चौपाई ॥

राज्य भ्रष्ट अरु भो बन बासू। सिया खोय गइ खग कर नासू॥
ऐसी मम आपद आ घेरी। भस्म करनि आगहु की फेरी २४
जौ मैं अबहिं जलधि समुदाई। पैरहु, ताप हरनु हित धाई॥
सोउ अवसि मम दारिद लाई। नदियन पति पै जाय सुखाई २५
नहिंमोसन कौ अधिक अभागा। तीनहु लोक चराचर जागा॥
जाको यह दुख जाल महाना। है चहुं दिश मृग बंध समाना २६
गीधराज यह अति बल शाली। मम पितु कर है सखा सुचाली॥
सोउ निहत महि सोवत भयऊ। मोरभाग्य अब उलटिहि गयऊ २७
इत्यादिक बहु कहि तहँ रोये। राघव लखन सहित मन गोये॥
पुनि जटायु को भेंट्यहु दोऊ। पितु सनेह दरसावत सोऊ २८

भुजंगप्रयात छन्द

कटे पक्ष जाके भिगे रक्त सेहू। त्यही गीधराजै गह्यो राम नेहू॥
"कहांजानकी?प्राणप्यारी। सिधारीं?"इहैभाखिभूमैंगिरेसो खरारी

इति श्रीमद्वा० रा० आ० का० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छ० सप्तषष्ठितमः सर्गः ॥६७॥

—····※०※····—

अरसठवां सर्ग।

करुणा भरे बचनों से जटायुको भेंटते हुये रामचन्द्र का सीता हरण वृत्तांत पूछना, गीधराजका संक्षेप से कहना और मरना, जटायुको सत्क्रिया पिता की तुल्य श्री राम के द्वारा होना॥

॥ दोहा ॥

धरा गिरायो गीध कहँ, निशिचर त्यहि लखि राम॥
मित्र भाव सौमित्रि सन, यह बोले त्यहि ठाम ॥१॥

॥ चौपाई ॥

निहिचैं यह खग मम हित लाई। कीन्ह उपाय प्राण पण भाई! ॥
पै राक्षस रण महँ त्यहि मारे। म्वहिंलखि तजै प्राण अबप्यारे! २
अतिशय खेद सहित है धारे। लखन! देह महँ प्राण प्रचारे ॥
तैसहि बोल रहित यहि देखैं। अरु बहु बिकल प्राण से लेखैं ३
हे जटायु! यदि सकहु सुभाखी? बोलहु पुनिकछु भयनहिं राखी ॥
सीता कर पुनि कहो हवाला। अरु आपन बध कारण काला ४
क्यहि निमित्त सीतहि हरिलीन्हे? मैं ने का रावण कौ कीन्हे? ॥
जो अपराध देखि दशशीशा। मम प्यारिहि सो हर्यो बलीशा ५
कहो तासु मुख चंद्र समाना। क्यहिबिधिहर्यो? मनोहरभाना ॥
पुनि सीता का कह्यो? सुबैना। खगपति! ताछिन सोइ सुनैना ६
कस वह बली तासु किमि रूपा? कर्म करै का? राक्षस भूपा ॥
कहां तासु है भवन बसाऊ? पूंछहुं तात! मोहिं बतलाऊ ७

॥ दोहा ॥

त्यहि बिलपत सो धर्म मति, लखि अनाथ समगीध ॥
बिकल बानि से बैन यह, कह्यो राम सम सीध ॥ ८ ॥

॥ चौपाई ॥

त्यहिसीतहि राक्षस हरि लीन्हो। जो रावण दुर्मति मन भीनो ॥
बहु प्रकार माया सो ठानी। जनु दुर्दिन आंधी से सानी ९
जब मैं थक्यों तात! लड़ि तासे। निशिचर काट्यहु पंख हुलासे ॥
सीता जनक ललिहि लै भाग्यो। दक्षिण मुख है देर न लाग्यो १०

या छिन रुकन चहैं मम स्वासा। श्रांखि भवैं सुनु कृपा निवासा! ॥
देखहुं कंचन बरण सुतृच्छा। अरु खससे जिनके कच गुच्छा ११
जा मुहुरत माहीं दशशीशा। लै कर सियहि गयो जगदीशा! ॥
तुरतहि धन को होय बिनाशा। श्ररुधन स्वामिहु पावहि त्रासा १२
"बिंद[1] नाम यह मुहुरत भोगा"। नहिं ककुत्थ! सो जान्यहु योगा ॥
जैसे बड़िशहि लीलिहु मीना। नशै तुरंत प्राण से छीना १३
तुम नहिंकरो अधिकदुख प्यारे। जनक सुता के हेतु सुधारे ॥
बैदेही सँग रमहु तुरंतै। ताहि मारि रण मधि बलवंतै १४
अस कहतहि राघव सन सिद्धा। भयो मोह बश ताछित गिद्धा ॥
मुख से रुधिर बह्यो भहराई। मांस सहित, मौतहु नियराई १५
तबहुं कह्यो "बिश्रवस कुपूता। अरु भाई कुबेर कर भूता" ॥
यहै बोलि जग दुर्लभ प्राना। छोड्यो खगपति गीध महाना १६

॥ सोरठा ॥

राम तहां कर जोरि, "कहो कहो" अस कहत ही ॥
तज्यो देह मन मोरि, गयो प्राण नभ गीधके ॥ १७ ॥
सो शिर भूमि गिराय, चरण युगल फैलाय कै ॥
निज देही उभकाय, पड्यो धरनि महँ तुरतही ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

त्याहि गीधहि दृग अरुण लखि, गिरि सम मृतक महान ॥
राम दीन दुख सहित बहु, कह्यो लखन सन बान ॥ १९ ॥

१ बिन्द नाम लाभ दायक मुहूर्त कब है यह रावण ने नहीं जाना।

॥ चौपाई ॥

लखन! बहुत निशिचर बसने रन। सुख से बस्यो बर्ष बहु ठेरन ॥
यहि दंडक बन महँ खग केरी। देह गलित भइ लखो घनेरी २०
है जो बहु बर्षन कर बूढ़ा। अगिनित काल बिताइ निगूढ़ा ॥
सो यह अब हत महि मधि सोवै। काल अगम गति मतिहि बिगोवै २१
देखहु लखन! गीध यह मोरा। मस्यो जोइ उपकारि न थोरा ॥
सीता शरण भयो पै धाई। मास्यो रावण बलहु बढाई २२
तजि यह महा गीध कुल राजू। जो पितु पिता महा की काजू ॥
मोरे हेतु प्राण तजि दीन्हे। खगपति परम धर्म को चीन्हे २३
सबहि ठौर म्बहिं अव सि दिखाहीं। साधु धर्म चारी जग माहीं ॥
शूर और शरणागत त्राता। त्रिजक योनि महँ लखन सुहाता २४
सुनो सौम्य! म्बहिं नहिं तस शोका। सिया हरण से उपजित लोका ॥
जस जटायु को भयो विनाशा। ममलगि हे अरितप! चहुंपासा २५
जैसे नृप दशरथ श्री मानू। महा यशी मम पिता महानू ॥
वैसहि पूजनीय अरु मानी। यह खगपति जटायु बर ज्ञानी २६
हे सौमित्र! काठ तुम ल्यावो। मैं मिधि पावक देहु जुगावो ॥
गीधराज कर करों सुदाहा। जो मम हेतु मस्यो खग नाहा २७
चिता मध्य बिधि सो धिसु तैहों। त्यहि खग लोक पतिहि मैं ध्यैहों ॥
यको दाह करों मैं भाई। ज्यहि राक्षस मास्यो बरिआई २८

। रोला छन्द ।

जो गति अग्नि होत्र जन की अरु, यज्ञशील जन केरी ॥
रण से नहिं भागनवारे की, क्षिति दानिन की फेरी ॥ २९ ॥

मोसन तुम लै शुभ अनु शाशन, दिव्य लोक महँ जाहू ॥
गीधराज! मति मान बड़ो अब, मृतक क्रिया शुचि लाहू ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

ज्वलित चिता मधि खगपतिहि, अस कहि दीन्ह लिटाय ॥
दाह कियो रघुबंशमणि, ज्यों स्वबंधु, दुखपाय ॥ ३१ ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि सो राम लखन सँग लाई । तुतरहि गये बली बन धाई ॥
थूल देह मृग मारि लिआये । ता खग हित फिर दूब बिछाये ३२
पुनि निसारि मृग तन से मासू । राम महाशय पोस्यहु आसू ॥
खगपति हेतु पिंड तहँ पारे । रम्य हरी दूबहि पर ढारे ३३
जो कछु मृतक प्रेत के हेतू । मंत्र कहैं बुध द्विज कुल केतू ॥
सोय स्वर्ग पहुंचन हितलाई । जप्योराम खगपतिहि सुनाई ३४
गोदावरी नदी तब जाई । नर वर राजकुमर रघुराई ॥
त्यहितिल जल दीन्हे हरखाई । गीधराज हित पुनि द्वौ भाई ३५
सोजलदीन्हशास्त्रविधिशोधी । गीधराज कहँ राघव बोधी ॥
पुनि खगपतिहित दोऊनहाये । अरु दुबार जल दीन्ह सुहाये ३६

। रोला छन्द ।

सो जटायु खगराज, कीन्ह यश पूरित कर्मा ॥
जो जग परम कठोर, मर्यो रण लड़ि सुठि धर्मा ॥
मुनि जन कल्प समान, प्रेत कृत लह्यो सुमर्मा ॥
गयो पुण्य गति पाइ, जहां निज अभिमत शर्मा? ॥ ३१ ॥

उदक क्रिया करि दोउ भाइ, खगपति के हेतू ॥
धीरज बुधि धरि हृदय, गये तहँ ते निज नेतू ॥
पुनि सीता के मिलन लाइ, मन यत्न समेतू ॥
पैठे बनहि सुजान, बिष्णु बासव सम चेतू ॥ ३८ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० का० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छ० अष्टषष्ठितमः सर्ग. ॥६८॥

—⁂○⁂—

। उनहत्तरवां सर्ग ।

जटायु की क्रिया करके राम लखन का पश्चिम दक्खिन कोन क्रौंचारण्य में जाना क्रौंचारण्य के पूर्व घोर बन में जाना, वहां अयो मुखी नाम राक्षसीके नाक कान का काटना, फिर घन बन में पैठ कबंध के भुज बंध में पड़ना ॥

॥ दोहा ॥

त्यहि जटायु कौ उदक दै, तब गवने रघुराज ॥
बन मधि ढूंढत सियहि पुनि, पश्चिम दिश चलि भ्राज ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

त्यहिपश्चिमदिशदक्खिनकोना । चले धारि धनुशर असि लोना ॥
जहँ जन पौदल नाहिं दिखाई । त्यहि पथ पगन चले द्वौ भाई २
जो पथ गुल्म लतन अरुझानो । अरु बहु विध बृक्षन लिपटानो ॥
चहुंदिश ओर गमन कठिनाई । सघन भयानक आंख लखाई ३
अतिशय बेग गौन पुनि ठानो । गहि दक्षिण दिश कौ संधानो ॥
बड़ो भीम सो बिपिन महाना । लांघि गये दोनों बलवाना ४

ताते पर जन थानहु त्यागे । तीन कोश राघव के आगे ॥
क्रौंचारण्य नाम बन माहीं । पैठे महाबली द्वौ ताहीं ५
जनु बहु मेघ बटुरि अँधिआरो । चुहुल पखेरुन हर्षित न्यारो ॥
बहुबिध रंग बिरंगनि फूला । मृग पक्षिण से भरो अकूला ६
सिय देखन की चाह बढ़ाये । त्यहि बन महँ द्वौ ढूंढन धाये ॥
जहँ तहँ ठहरि ठहरि दृग फेरैं । सिया हरण मन दुःख घनेरैं ७
तब तहँते द्वौ पूरब ओरी । तीन कोश गे भाइन जोरी ॥
क्रौंचारण्य लांघि समुदाई । हिले मतंगाश्रम मधि जाई ८
देख्यो सो वन घोर भयाना । भरे भीम मृग खगहु महाना ॥
बहु प्रकार के बिटपनि पूरो । सब घन पादप छाय वरूरो ९
देख्योत्यहि थलगिरिकी खोहा । दशरथ नंदन कंदर सोहा ॥
जो पताल सम अति गंभीरा । सदा अँधेर छाय रह सीरा १०
त्यहि कंदर के पासहि जाई । देख्यो द्वौ नर नाहर धाई ॥
महाघोर वपु निश्चरि ऐका । खड़ी श्राइमुहँ बिनुहि बिबेका ११
लघु चेतनन्हि डरावनु वारी । घृणित रौद्र दर्शन खल नारी ॥
तीच्छन दांत उदर की लंबी । दृग कराल खर खाल निलंबी १२
बड़े भीम जंतुन धरि खाती । खुले केश तन बिकट लखाती ॥
ताहि तहां देख्यो द्वौ भाई । राम लखन बन महँ रघुराई १३
तिन बीरन के लग चलिआई । अग्र राम के जहँ लघु भाई ॥
"आवहु रमण करै" यह बोली । गह्यासि लखनको करतठिठोली १४
कह्यसि बचनसो लखनहि येहू । झपटि लपटि कै तासु सुदेहू ॥
मैंतो अयोमुखी धरि नामा । मिल्यूं तोहिनिधितूमम भामा १५
चलो नाथ! दुर्गम गिरि जाहीं । अरु नदियन के कूलन माहीं ॥
यह चिर आयु बीर! सुख सेहू । मो सँग रमण करो भरि नेहू १६

॥ दोहा ॥

लखन तासु अस बैन सुनि, कोपित खड्ग उठाइ ॥
कान नाक कुच काट्यहू, रिपु सूदन तुरताइ ॥ १७ ॥

॥ चौपाई ॥

कान नाक जब कटि गे तासू । तब सो चिचिआनी करि त्रासू ॥
जहँ से आई तहँ सिधारी । घोर दर्शिनी राक्षस नारी १८
पुनि जब सो वह डाइनि भागी । तब घन वन पैठे अनुरागी ॥
दुष्टदलन बल युत द्वौ भाई । बेग बढाइ बिलंब न लाई १९
फेरि लखन बल तेज प्रतापी । सत्यवान शुचि शील कलापी ॥
बोल्यो तहां जोरि युग पानी । तेप्र तेज भाई सन बानी २०
नाथ ! बाम दृढ भुज फरकाना । अरुमम बिकलसरिसमन प्राना ॥
पुनि बहु देखि पडै स्वहिं भारी । जनु अनिष्ट लक्षण दुखकारी २१
ताते सावधान सजि रहो । आर्य ! बचन मम हियमें गहो ॥
निहिंचै स्वहिंअसगुन असकहैं । तुरतै भै उपजै प्रभु यहैं २२
यह उलू नामक खग बोलै । कंठबाल दारुणहु किलोलै ॥
युद्ध होय पै बिजय हमारो । जनु यह बोलि दिखावै न्यारो २३

॥ दोहा ॥

चकित चितय उत्पात अस, सिय ढूंढत द्वौ भाइ ॥
बन महँ भयो महान रव, जनु आंधी घहराइ ॥ २४ ॥

॥ चौपाई ॥

सोइ सघन बन पवन प्रचारन । जनु अति छाइ रह्यो भरमारन ॥
पुनि ता वन महँ शब्द महाना । पूरि रह्यो घन गर्ज समाना २५
तासु शब्द महँ कान लगाई । राम अनुज सह खड्ग उठाई ॥
देख्यो खडे महा भय कायो । राक्षस बिपुल बक्ष सौंहायो २६
पहुंचे तुरत दोउ नियराई । त्यहि राक्षस के सन्मुख जाई ॥
बड़ो लंब बिनु शिर अरु ग्रीवा । है कबंध मुख उदरहि ठीवा २७
तीच्छन रोम पैन जनु कांटे । ऊंच महा गिरि सम अँग सांटे ॥
नील मेघ सम श्याम प्रकाशा । काल रूप घन गर्जनि त्रासा २८
अग्नि शिखा समजलत लखाता । मध्य ललाट लपकि भभ काता ॥
भारी पलक चमक रंग पीला । अतिशय लंब चौडई शीला २९
एकहि नयन भयावन घोरा । उर मधि देखि पडै मद घोरा ॥
निकसे दांत बडे भय कारी । लीलन चहै मनो मुख भारी ३०
बडे भयानक सिंहनि खाता । खग मृग रिच्छनि धरे चबाता ॥
अरु दोनों भुज लंब पसारा । योजन भर निज कौ बिस्तारा ३१
तिन हाथन से पकड़ि अनेका । पक्षी रीछ मृगन्हि धरि टेका ॥
खींचि लेइ अरु फेंकहि फेरी । मृगन्हि झुंड बहु जंतुन्हि हेरी ३२
ज्यहि मारग द्वौ भाइहु जाते । ताहि रोंकि ठाढो अघमाते ॥
तदनंतर दूरहि ते ताही । एक कोश से लखित कुदाही ३३
बडो भयानक दारुण भीमा । रुंड, मुंड बिनु, भुजा असीमा ॥
जनु कबंध ठाढो धड़ खाली । अतिशय घोर दर्श भय शाली ३४
सो पुनि महाबाहु फैलाई । अति लंबित भुज दिहेउ बढाई ॥
गह्यो एकही साथ मिलाई । राम लखन कहँ बलसु दबाई ३५

गहे खड्ग दृढ धनुष चढाये । तीच्छन तेज महा भुज भाये ॥
दोनहु भाइ विवश मैं भयऊ । जबखींच्यो तबबल दबिगयऊ३६
ताछिन धीरज वश से सूरा । रघुनंदन दुख लह्यो न भूरा ॥
पै तहँ लखन अनाश्रय जाने । बाल भाउ से कछु दुख माने ३७

॥ दोहा ॥

डरे लखन जब कह्यो अस, रामहि राम पिआर ॥
"लखो वीर! मोहिं बेग तुम, राक्षस बस निरधार ॥ ३८ ॥

॥ चौपाई ॥

मोहिं अकेलहि सौंपि सुजाना ! आपु छुटाइ जाहु बलवाना ॥
दैकै मोहिं जीवबलि याही । भागहु सुखसे बैन निबाही ३९
तुम बैदेहि सँग मिलि जैहो । तुरतहि यह मति मोरि सुहैहो ॥
पुनि ककुत्थ! महि राज्यहु पाई । पिता पितामह कौ सुखदाई ४०
हे राघव ! तहँ ह्वै तुम राजा । सुमिरयो मोहिं सदा, तुव काजा ॥
जब लक्ष्मण यह कह्यो सुदीना । तासन बोले राम प्रबीना ४१
"नहिं कछु वृथा डरहु बलवीरा ! तुम सम नहिं कंपै रण धीरा" ॥
यहि अंतर महँ पुनि सो क्रूरा । राम लखन भाइन से भूरा ४२
बोल्यो अति गंभीर तिन पाहीं । दानव वर कबंध बरबाहीं ॥
"को तुम द्वौ वृषकंधर जोड़ी ? महाखड्ग धनु धर अरि मोड़ी ४३
ऐसे घोर देश महँ आये । दैव योग से मोहिं दिखाये ॥
कहो ताहि ज्यहि काज लगाई । इहँ आये द्वौ किमि धौं? भाई ४४
या थल माहिं मिले अगुआई । जो भूखो इहँ रहल बलाई ॥
तुम तौ धरे खड्ग धनु बाना । जनु द्वौ वृषधर तीख बिखाना ४५

मोहिं मिले तुरतै तुम प्यारे । अब हैं दुर्लभ जिअनु तुम्हारे ॥
तासु कबंध केर सो वैना । सुनि दुर्मति के फरक्यो नैना ४६
बोल्यो लक्ष्मण से तब रामू । सूखे मुख रूखे बच स्यामू ॥
कष्टहु से अति कष्ट कठोरा । आय सत्यबिक्रम ! म्बहिं घेरा ४७
जीवन अंत करन दुख आयो । बिनु त्यहि प्यारिहिपाइ सँतायो ॥
कालबलीजग अधिक महाना । सबजीवनमधि लखन सुजाना! ४८
लखो नृसिंह तुम्हैं अरु मोहीं । दै दुख मोह्यो काल बरोही ॥
नहिं है दैव केर कछु भारा । सबजीवनमधिलखन पिआरा! ४९
शूरहु औ बलवान बडोई । सिखे अस्त्र रण आंगन जोई ॥
सोउ काल महँ पड़ि दुखपावें । ज्यों बालू कर पुल ढहि जावें ५०

। छप्पै छन्द ।

अस भाखत रघुनाथ, सत्य बिक्रम दृढ़ जाको ।
महा यशी गुण गाथ, भूप दशरथ सुत बांको ॥
है प्रताप जग माहिं, बिदित बिज्ञान बलाको? ।
सोइ लखन कहँ देखि, (नयन युग भृकुटि उलांको) ॥
है ऊंच पराक्रम जासु जग, (अरुबिबेक सागर हृदय) ॥
सोनिजमतिथिर कीन्ह्योतबै, समुझि आपुही (ह्वैसदय) ॥ ५१ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० का० पं० देवकीनंदनाचि० कृत भा०छ० एकोनसप्ततितमः सर्गः ६९

—····※0※····—

। सत्तरवां सर्ग ।

कबंध के भुज बंध में पड़े राम लक्ष्मण का साहस, कबंध के भुजों का काटना, कटे भुज कबंध का दोनो की चिन्हारी पूछना, लक्ष्मणजी का बताना, उसे सुन कबंध का शापस्मरण कर प्रसन्न होना ।

॥ दोहा ॥

तिन द्वौ भाइन तहां थित, राम लक्ष्मणहि बंध ॥
बाहु पाश महँ पडे लखि, बोल्यो वचन कबंध ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

क्षत्रिय ऋषभ! मोहिं तुमदेखी । खड़ो छुधारत भय किनु लेखी? ॥
मम भोजन हित दैव मिलायो । याते अब द्वौ प्राण गवांयो २
सो सुनि लखन भयावन बैना । निहिचैं जानि मरण की धैना ॥
तब बोले आरत ह्वै बानी । निज बल करन सुनिश्चयमानी ३
सुनो राम ! तुमही अरु मोहीं । तुरतहि प्रथम गह्यो खल योहीं ॥
ताते दोनहुं काढि कृपाना । याके भुज काटहिं बड ताना ४
यह राक्षस अतिकाय भयाना । अरु केवल भुज से बलवाना ॥
सकललोककौपुनिअतिजीती । हम दोउन मारनु पर प्रीती ५
चेष्टा रहित नरन को घाता । है निंदित जग, शास्त्रहु गाता ॥
ज्यों भूपति के यज्ञनि माहीं । राघव! पकडि वधे पशु जाहीं ६
यह सुनि तिन दोउनकी बैना । कोप कियो राक्षस बल पैना ॥
तब पसारि मुख महा भयंका । भखन चह्यो दोउन निहिशंका ७
तब द्वौ देश काल के ज्ञानी । काढि खड्ग राघव खर सानी ॥
हर्ष सहित काट्यो भुज दोऊ । तासु कांध से देरन कोऊ ८

थित दाहिन सो दाहिन बाहू । कीन शक्ति बिन खड्ग प्रबाहू ॥
काट्यो राम देर नहिं लाये । बीर लखन तब बाम ढहाये ९
सोपुनि बाहु कटो महि लोट्यो । अतिचिघारसों रुधिरचकोट्यो ॥
नभ अरु भूमि दिशा घहराये । ज्यों घन गर्जित शोर मचाये १०

॥ दोहा ॥

कटे भुजन कौ देखि सो, भरे रुधिर अँगपीर ॥
पूंछ्यो दानव दुखित ह्वै, "कोतुम ? द्वौ बलबीर ! ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

जब अस पूंछ्यहु सो अघचारी । तब शुभ लक्ष्मण लखन पुकारी ॥
तासु कबंध निकट असभाख्यो । रामचिन्होरिछिपाइ न राख्यो १२
ये इक्ष्वाकु बंश जग ख्याता । राम नाम दशरथ के ताता ॥
तासु छोट भाई म्वहिं जानों । लक्ष्मण नाम सुनो बलवानों! १३
सवतिल मातु राज्य लै लीन्हे । रामहि बनबासी कर दीन्हे ॥
मो संग विचरत हैं वन भारी । अरु नारी युत ह्वै ब्रत धारी १४
इनके देव सुभावहु लाई । निर्जन बन बिचरत समुदाई ॥
राक्षस रावण हर्यो सुनारी । त्यहि ढूंढत इहँ मिले सुरारी! १५
तुम हो कौन? अर्थ का लाई ? वन महँ रुंड सरूप बनाई ॥
दीप्त वदन छाती महँ छाजे । लंगड सम चेष्टा बल राजे १६

॥ सोरठा ॥

यह लक्ष्मण के बैन, सुनि कबंध उत्तर मिलन ॥
पुनि बोल्यो सुख चैन, सुमिरि इंद्र के बचन शुभ ॥ १७ ॥

शुभ आगमन तुम्हार, मैं देखों वड़ि भाग से ॥
अरु अति भाग हमार, जो काट्यो भुज कांध से ॥ १८ ॥
जो मम रूप कुरूप, ज्यहि अनीति से भयो यह ॥
सो मोसन नरभूप!, सुनो कहूं तुमसे सही ॥ १९ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० श्रा० कां० पं० देवकीनंदन त्रि० कृत भा० छं० सप्ततितमः सर्गः ॥ ७० ॥

——:※:※:※:——

। एकहत्तरवां सर्ग ।

राम लक्ष्मण के निकट कबंध की निज चिन्हारी का देना, अपने शाप का वृत्तांत कहना, और सीता हरण जानने वाले किसी बहुदर्शी का आश्रम बताने की प्रतिज्ञा करना ॥

॥ दोहा ॥

सुनो राम! महबाहु तुम, जो पहिले बल मोर ॥
रूप पराक्रम थाह बिनु, बिदित तिलोकनि छोर ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

जैसे रबि शशि कर तन भ्राजा । अरु ज्यों इंद्र देह छबि छाजा ॥
मैं सो रूप धरे यहि लोकहि । अतिशय त्राशदीन बपुझोंकहि २
बनबासी ऋषियन कैा रामू! इत उत फिर्यों सताइ सुठामू ॥
तब पुनि थूलशिरा बर नामी । मोसन कुपित भयो मुनि स्वामी ३
त्यहि मम रूप सेहु दुख पाई । सो ढूंढत बन वस्तु निकाई ॥
मोहिं देखि यह कह्यो रिसाई । तिन मुख घोर शाप कढि आई ४
"हे जड़ अधम! तोर यह रूपा । हो निंदित अति क्रूर अनूपा" ॥
मैं जांच्यों त्यहि जो अतिक्रोधी । "ह्वैहै शाप अंत?" यह बोधी ५

म्वहिं शापित पर दया बढाई। बोल्यो बचन हर्षि मुनि राई ॥
"जब तुव भुजा काटि श्रीरामू। देहिं जलाइ बिजन बन धामू ६
तुम तब पैहो निज शुभ रूपा। ठीक ठीक जस अबहिं अनूपा ॥
तब घनयुत दनु राक्षस पूता। भयों लखन! म्वहिं जानु प्रभूता ७
पुनि मैं यह कबंध तन धार्यो। इंद्र शाप से जब रण हार्यो ॥
मैं दानव ह्वै तप करि घोरा। किहों प्रसन्न बिधिहि लहिजोरा ८
बड़ी आयु म्वहिं दीन्ह्यो सोई। तव फूल्यों मैं गर्बित होई ॥
पुनि शोच्यों मैं आयु सुभारी। पायों का करिहै? त्रिपुरारी ९

॥ दोहा ॥

इहै गर्व बुधि ठानिकै, किहो इंद्र सन रार ॥
तासु बाहु से छुट्यो तब, महाबज्र शतधार ॥ १० ॥

॥ चौपाई ॥

लग्यो बज्र मम शिर अरु हड्डी। पैठि गये तन माहिं सबड्डी[1] ॥
सो पुनि तिनसेहू कर जोरे। सोउ न मार्यो प्राण निहोरे ११
पुनिभाख्यो म्वहिं यह बरदाना। होहु ब्रह्म बर सांच प्रमाना ॥
मैं पुनि कह्यों भग्न मुख शीशा। बिनु खाये कस बचों? सुरेशा! १२
तुव बज्री सन गयों सु मारो। बहुदिन कैसे जिओं? पिआरो! ॥
जब मैं कह्यों इंद्र सन येहू। योजन लंबित भुज बड़ देहू १३
अरु पुनि मुख दै कोखिमझारी। तीच्छन दांत बनायहु भारी ॥
सो मैं लंबित भुज फैलाई। पकड़हुं बनचर बनहि सुहाई १४
सिंह ब्याघ्र अरु गज मृग झुंडा। चहुंदिश से लै भखौं सुरुंडा ॥
पुनि सो इंद्र कह्यो म्वहिं बाता। जब मिलि रामचन्द्र सहभ्राता १५

1 सब के सब।

तोर बाहु कटिहै रण माहीं । तव सुर पुर जैहे, विच नाहीं" ॥
सुनो तात! यह तन लै क्रूरा । यहि बन बसौं भूप! गुण रूरा! १६
जो जो लखहुं जीव अरु जंतू । तासु ग्रहण म्वहिं रुचै इकंतू ॥
अवसि कबहुं पड़िहैं मम हाथा । मन महँ धस्यों आइ रघुनाथा १७
रह्यों बुद्धि मैं यह अगुआई । देह नाश महँ भ्रम फैलाई ॥
सो तुम राम! मिले रघुराई ! तुव मंगल हो मम सुखदाई १८
नहिं मोहिं सकै आन क्वौ मारी । जस ऋषि कह्यो तत्व अनुसारी ॥
हे नर ऋषभ! मैंहुं तुम संगा । करिहौं मति मंत्रणा सुढंगा १९
अरु तुव हित उपदेशहु दैहों । जब द्वौ भाइन कर दहि जैहों ॥
अस बोल्यो सो दानव राई । सुन्यो धर्मधर राम सुहाई २०
तब बोल्यो यह बचन गभीरा । देखत लखन खडे जो बीरा ॥
मम सीता यशखानि सुनारी । रावण से हरि गई पिआरी २१
जनस्थान से जब दुरि आये । भाइ सहित सुख से तुरताये ॥
नाम मात्र रावण को जानू । नहिं राक्षसी रूप पहिचानू २२
अरु निवास वा तासु प्रभाऊ । हम नहिं जानहिं कछु गुणगाऊ ॥
हम हैं शोक सँताय अनाथा । या बिधि धावहिं ढूंढन(साथा)२३
तुम्हैं उचित करुणा करि प्यारो! करन सरिस उपकार हमारो ॥
सूख लकड़ियां बन से आनी । गजन्हि ढहायो जिन्है, पुरानी २४
तुम्हैं जलैहैं हम अब नीके । बीर! खोदि गड्हा तुव ठीके ॥
पै तुम कहो दया करि सोई । सियहि हस्यो जिन जहँ वह होई २५
अति हित करो मोर उपकारू। जौ तुम जानहु खोज सुचारू ॥
जब अस कह्यो राम शुभबानी । तब दानव सो हिय सुख मानी २६
बोल्यो बचन चातुरी ठानी । श्रीरामहि बक्ता बर जानी ॥
हे राघव! मम दिव्य न ज्ञाना । नहिं जानूं मैं सिय क्वहि थाना २७

त्यहि कहिहै जो ताहि बतैहों । जब जलि निज स्वरूप मैं पैहों ॥
जो त्यहि राक्षस को बहु जाने । तापर त्यहि कहिहों हरखाने २८
हे प्रभु ! जले बिना नहिं मोरी । शक्ति ठीक जाननु की थोरी ॥
महा बली राक्षसहि पियारे ! जो सीतहि हरि लै मगु धारे २९
शाप दोष से हे रघुराया ? मोर ज्ञान भो भ्रष्ट निकाया ॥
अपनी करनी से मैं पायों । जग निंदित कुरूप दरसायों ३०
पै इत जब तक अस्त न होवैं । सूर्य थकित बाहन नहिं सोवैं ॥
तबहितलुकम्बहिंबिलमैंफेंकी । राम! जलावहु बिधिवत ठेंकी ३१
तुम सन दग्ध गर्त मधि होई । न्याय सहित राघव! अघ खोई ॥
सुनु महवीर ! बतैहों वाही । जो जन जानु राक्षसहि ताही ३२
तासन न्याय सहित बर्ताऊ । कीजिय जाइ मित्रता राऊ ! ॥
सो तुम्हारि वह करिहि सहाया । हे फुरतील ! बीर बलकाया ! ३३

॥ दोहा ॥

बच्यो न कछु तिहुलोक महँ, तो जाननु से राम ! ॥
सकल लोक महँ फिर्यो सो, लहि कछु कारण काम ॥ ३४॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० का० पं० देवकीनंदनर्चि० कृत भा०छं० एकसप्ततितमःसर्गः ॥७१॥

—····※०※····—

बहत्तरवां सर्ग ।

राम के हाथ से जले कबंध का निज देह धरना और राजनीति शिक्षा के सहित सुग्रीव से मित्रता करने का उपदेश देना ।

॥ सोरठा ॥

जब अस कह्यो कबंध, तिन द्वौ बीरन नृपन से ॥
तब गिरि गर्तनि बंध, धरि ढकेलि पावक दह्यो ॥ २ ॥

पुनि लक्ष्मण लै आग, चहुंदिश दावानलहु से ॥
करि अतिशय अनुराग, चिता जलायो ओर सब ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि कबंध कौ सोइ शरीरा । मनहुं महाघृत पिंड गभीरा ॥
भरो मेद से चुरत पचाये । मंद मंद त्यहि अनल जलाये ३
सो पुनि तुरत चिताको फारी । उठ्यो निधूम अनल ज्यों भारी ॥
बिमल बसन पहिरे तन सोहा । माला दिब्य बली गल जोहा ४
तबहिं चिता से बेग बढ़ाई । कांतिमान पट रुचिर सजाई ॥
ऊपर उठ्यो अधिक हरखाई । सब अंगन भूषण छबि छाई ५
पुनि चमकित चढ़ि बैठ बिमाना । हंस युक्त जो जस कौ थाना ॥
महातेज आपनु लहि ज्योती । दशो दिशन मैं जग मग होती ६
सो कबंध पुनि गगन मझारी । जाइ राम सन कह्यो उचारी ॥
"सुनो राम! मम तत्व सुबानी । जा बिधि मिलिहैं सिया सयानी ७

। छप्पै छन्द ।

सुनों राम! षट युक्ति, लोक महँ हैं बिख्याता ।
(संधि१) तथा (बिग्रह२) अरु तीसर (यान३) सुहाता ॥
(आसन४) (द्वैधीभाव५) (समाश्रय६) ये शुभ बाता ।
जिन से सकल पदारथ, जानहिं नृप कुशलाता ॥
पै जो कुदशा से हो घिरो, जाको फल अतिशय अधम ।
सो कुदशा को फल सेइ नित, तासु भाग भोगनु धरम ८

॥ चौपाई ॥

सो तुम राम! दशा के भोगी । लखन सहित स्त्रीहीन कुयोगी ॥
जा कुदशा कृत यह दुख पाये । तुम "दाराहर" नाम धराये ९
याते अवसि करनु तुव योगू । छठीं नीति मित्रता सँयोगू ॥
बिनु ता किये सिद्धि नहिं देखूं । हे सुहृदांबर! शोचिहु लेखूं १०
सुनो राम! मैं कहूं सोइ अब । कपि सुग्रीव नाम है गुण सब ॥
सोउ भाइ सन गयो निसारी । बालि इन्द्र सुत जो रिसकारी ११
ऋष्यमूक इक गिरिवर नामी । पंपा तक शोभित शुभ ठामी ॥
तहाँ बसै सो बीर सुजाना । चारि महाकपि सह बलवाना १२
बानरेंद्र अति बीर्यनिधाना । तेज प्रताप अमित द्युति माना ॥
सत्य संध अरु बिनय सुधारी । धृति मतिधर भारी बुधिचारी १३
कुशल सबै बिधि चतुर सुतेजा । महा पराक्रम बलहु सहेजा ॥
राज्य हेतु सो गयो निसारो । भाइ महात्मा सन सुनु प्यारो ! १४
सो तुव मित्रहु औार सहाया । सीता खोजनु हित रघुराया ! ॥
ह्वै है निहिचैं राम सुजाना ! । मतिमन शोक करो बलवाना! १५
होनहार जो होइहि सोई । नहिं करि सकै आन इहँ कोई ॥
हे इक्ष्वाकुबंश ! नरनाहर ! कालचाल करिसक को? बाहर १६
तुरतहि जाहु इहां से बीरा ! त्यहि सुग्रीव निकट रणधीरा! ॥
तासन तुरतहि करो मिताई । इहँ से अबहिं जाइ रघुराई ! १७
अग्नि जलाय मित्रता हेतू । करिये साखि परस्पर चेतू ॥
नहिं तुमसे अपमानित योगू । बानर पति सुग्रीवहु लोगू १८
इच्छा रूप धारि बलवाना । परम कृतज्ञ सहाय सुजाना ॥
अबहिं शकैाकरितुमद्वौ स्याने । तासु मनोमत कार्य बिधाने १९

सिद्ध होय चहु सिद्ध न होई । करिहै तुव कारज कपि सोई ॥
वह है ऋच्छ बीर्य कपिसूनू । पंपा मधि घूमै भय ऊनू २०
सो पुनि भास्कर औरस पुत्रा । बालि सुं कीन्ह बैर अति चित्रा ॥
तुरतहि धरिआयुध करिसाखी । ऋष्यमूककपिगृह चलिभाखी २१
करो राम सत सपथ धराई । बनचारी सन सुखद मिताई ॥
सोई कपि कुंजर सब थाना । भली भांति जानै गुणवाना २२
औ नरमांसभखिन के देशन । जाइ चातुरी करि बहु देषन ॥
छिपो न वासन है थल कोई । राघव! जग महँ जो कछु होई २३
जहँ तक तपैं परमतप वारी । सहसकिरिण रवि प्रभा पसारी ॥
नदी सहित बहु अगम पहारा । अरु कंदरा शिखर बन सारा २४
ढूंढि कपिन को लै बहु संगा । तुव नारीहि जनिहै करि ढंगा ॥
अरु बानर कायाबर शालिन । राम! पठैहै सो द्रुतचालिन २५
त्यहि सीतहि ढूंढन दिशचारो । ज्यहि तुव विरहशोच दुखभारो ॥
पुनि सीता सुंदरी पिआरिहि । रावण गृह जा ढुंढिहै नारिहि २६

। हरिगीती छन्द ।

चहु गई होइं सुमेरुशृंगनि, सिय अनिंदित भामिनी ।
चहु पैठि अगम पतालतल पुनि, बैठि होइं सुनामिनी ॥
सो सकल कूदनहार को पति, (चमकि ज्यों द्युति दामिनी) ।
हति बलीनिशिचरवृंद, सीतहि, लाइ सौंपिहि स्वामिनी ॥२७॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन चि० कृत भा० छं० द्विसप्ततितमः सर्गः ॥ ७२ ॥

—:※:※:※:—

। तिहत्तरवां सर्ग ।

आपन निज दिव्य रूप धरे कबंध का रामचन्द्र को सुगम पंथ दिखाना। और पंपा तडागक की शोभा कह कर सेवरी के स्थान को तथा मतंगाश्रम को बताना। अंतमें निज स्थानको चला जाना॥

॥ दोहा ॥

सीता खोजन सरल विधि, रामहि पुनि दरसाय ॥
वाक्य रचन कौ अर्थविद, कह कबंध समुझाय॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

लखो राम! यह अभय सुपंथा। जहँ ये प्रफुलित द्रुम रसगंथा ॥
पश्चिम दिश की ओर प्रकाशैं। सघन मनोरम करत सुबासैं २
जामुन औ अमरूद कटहरू। बट पाकर तेंदुक (फल गहरू) ॥
पीपल कर्निकार द्रुम अंबा। अरु बहुभांति बिटप अवलंबा ३
धव अरु नागकेसरी बृच्छा। तिलक नक्तमाला द्रुम स्वच्छा ॥
नील अशोक कदम चहुं ओरी। अरु पुष्पित करवीर मरोरी ४
अनलकाठ द्रुम मुख्य अशोका। चंदन रक्त, मदार बिलोका ॥
तिन महँ चढि वा भूमिहु ठाढे। पकडि डाल फल गेरि सुबाढे ५
अमृत समान फलन कौ खाई। जाइय तहां त्यागि रघुराई! ॥
ताहि ककुत्स्थ! लांघि जब जैहो। बन पुष्पित बिटपनि से पैहो ६
पुनि नंदनबन सम तहँ दूजो। जनु उत्तर कुरु जंगल पूजो ॥
जहँ सब काल फलैं सब नीके। बिटप मधुर रस बहैं सुठीके ७
सब ऋतु तहाँ पढैं नित देखो। जस बनचैत्ररथहि त्यहि लेखो ॥
फल भारन से झुके झमंके। तहां बिटप शाखा बहु बंके ८

सोहैं तहँ चहुं दिश बहु रंगे । मेघ सरिस गिरिबरहु सुढंगे ॥
पुनि तिनमैं चढ़ि वा महि ठाढे । तोड़ि मधुर फल हियसुख बाढे ९
तहँ ते तुम्हैं अमृत सम मीठे । देहैं लाइ लखन शुभ डीठे ॥
फिरत दोउ बर शैलन पाहीं । गिरिसे गिरि बनसे बन माहीं १०

॥ दोहा ॥

पंपा नाम तडाग तट, तब जाइय द्वौ बीर ॥
बिनु कंकड बिनु कीच जो, बिनु शिवालु सम तीर ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

राम! तासु मधि निर्मल बालू । कमल दलनि शोभित तिहुकालू ॥
तहँ पुनि हंस और मंडूका । सारस कुरच राम ! करि कूका १२
मृदु स्वर से गुंजै समुदाई । पंपा जलचर हर्ष बढाई ॥
नहिं डरपैं मनुजन्हि तहँ देखी । बधहु न जान्यो प्रथम बिशेखी १३
घृतपिंडी सम तिन खगथूलन । खाइय जाइ ताल के कूलन ॥
रोहू मछलिन कौ तहँ झुंडा । राम ! मीन नल अरु चकतुंडा १४
पंपा मधि वानन से मारी । राम ! तहां बर मछलिन प्यारी ॥
बिनु त्वच पंख मोट बहुकांटन । नाथि शूल महँ भूंजिसुठाटन १५
तुम महँ भक्ति भाव हिय राखे । देहै लखन सु आदर भाखे ॥
प्रतिदिनतिनमछलिनकोखाते । पंपा मधि जे फूलनि माते १६
कमल सुगंध मिलो सो बारी । सुख शीतल अरोग तन कारी ॥
ताहि लाइ पुनि बिनुहिंकलेशा । रजत फटिक सम निर्मल बेषा १७
कमल पात महँ भरि भरि लैहैं । लखन तुम्हैं तहँ बैठि पिऐहैं ॥
बडे मोट बानर बन चारिन । गिरगुहशयनकिये बलधारिन १८

सांझ समय विचरत त्वहि रामू ! दरसैहै लक्ष्मण त्यहि ठामू ॥
जो जल पिअन लोभ से धाये । बृष सम नांदत बेग बढाये १९
थूल काय पंपा जल पीते । दखिहो तुम नरउत्तम ! प्रीते ॥
पुनि संध्या मधि बिचरत प्यारे ! फूले द्रुम दल तासु किनारे २०
मंगल जल पंपा कौ देखी । तजिहो शोक सँदेह बिशेखी ॥
पुनि फूलनि से चित्रित चारू । नक्तमाल तहँ तिलक पहारू २१
स्वेत कमल फूले रघुराई ! रक्त पद्म राजित सघनाई ॥
तिन सब फूल द्रुमन्हि कौ नाहीं । रोपन वार मनुज बन माहीं २२
नहिं पुनि वे कबहूं मुरझाहीं । अरुनहिं कबहुं सुखाइ सिराहीं ॥
तहँ मतंग मुनि के बहु चेला । राम! बसैं ऋषि तापस मेला २३
जे सब गुरु निमित्त बन वस्तू । लिये बोझ गरुआन समस्तू ॥
तिन सब के तन से तुरताई । गिर्यो पसीन बूंद महि धाई २४
सोइ बूंद है फूलनि बृच्छा । मुनियन के तप से रहि स्वच्छा ॥
स्वेद बिंदु से उपजनि हेतू । नहिं राघव ! नाशहिं रँग नेतू २५
तेसब ऋषि जीवित नहिं ताहीं । पै तिनकी दासी इक आंहीं ॥
अजहुं तपस्विनि शबरी तहँवां । हैककुत्स्थ! चिरजीविनि जहँवां २६

॥ दोहा ॥

सर्ब भूत पूजित तुम्हैं, देवोपम श्री राम ! ॥
लखि शबरी नित धर्म थित, तब जैहैं सुर धाम ॥ २७ ॥

॥ चौपाई ॥

तदनंतर पम्पा तट जाई । तासु तीर पश्चिम दिश धाई ॥
आश्रम थान अतुल द्वौ भाई । लखिहौ अति रक्षित समुदाई २८

त्यहिआश्रम महँ गज मतवाले । पैठि सकैं नहिं पुनि तिहु काले ॥
ऋषि मतंगकी निपुन विधाना । त्यहिकाननमहँ भयनहिं आना २९
याते सो "मतंग बन" बाजै । रघुनन्दन! जग जाहिर छाजै ॥
त्यहि नंदनबन सम महँ धीरा ! देवविपिनजनु अधिकगभीरा ३०
बहु बिध जहां पखेरु कलोलैं । रमिहैा राम! तहैं चित लोलैं ॥
ऋष्यमूक पर्वत द्रुम धारी । पंपा निकट पुष्प बर चारी ३१
बडे कष्ट से चढनु सु योगू । नाग शिशुन से भरो सँयोगू ॥
त्यहि उदार ब्रह्मा हरखाई । पूर्व काल महँ रच्यो बनाई ३२
सुनो राम! तहँ जौ नर होई । शैल शिखर पर नींदरि सोई ॥
सपन माहिं जो कछु धन पावे । सो जागे पर सांचहि भावे ३३
जो तापर पापी दुख्यारी । चढै नेकहू पांव पसारी ॥
तहँ ताको सोवत हरि जाहीं । पकडि निशाचर तुरतै खाहीं ३४
तहँते पुनिशिशुगजनि चिकारा । सुनो जाइ अतिशय उच्चारा ॥
जो पंपा मधि खेलहिं रामू ! बसैं मतंगाश्रम जे धामू ३५
भीगे रुधिर धार से भारी । बडे बाघ तहँ हतहिं प्रचारी ॥
घूमहिं तहँ इक ओर भयाना । मेघ बर्ण बेगहु बलवाना ३६
ते तहँ पी निर्मल शुभ बारी । इत उत धावें जन भय कारी ॥
सो जलअतिसुखपरसन नीको । सब सुगंध युत आनंद जी को ३७
तहँ ह्वै निबृत करैं अवगाहा । पुनि बन पैठहिं बनचर नाहा ॥
ऋच्छ बाघ छबिछाय महाना । कोमल तन मणि नील समाना ३८
नरन देखि मृग अजित भगाने । देखि शोक तजिहैा सुख माने ॥
सुनो राम! ता तट गिरि जोई । तासु गुहा सोहै बडि होई ३९
मूंदी शिला तासु सुख भारी । ता मधि पैठब अति दुख कारी ॥
तासु गुहा के पूरब द्वारा । शीतल जल इक कुंड पसारा ४०

बहु अकार फल मूलनि राजै । गिरि अनेक से चहुंदिश भ्राजै ॥
तहँ बसै सो धर्म धुरीना । बानर युत सुग्रीव प्रबीना ४१
कबहुं सोइ पर्वत के ऊपर । शिखर माहिं बैठै चढि भूँधर ॥
या बिधि सो कबंध समुझाई । राम लखन द्वौ भाइन भाई ४२
पहिरि माल रबि वर्ण प्रकाशी । गगन मध्य सोह्यो बलराशी ॥
त्यहि महभागहि गगन मझारी । थितलखिरामलखनबनचारी ४३
चलत मार्ग पुनि ता सन बोले । "जाहु तुमहुं" यह बैन सुलोले ॥
सो कबंध पुनि तिन्है उचारे । "जाहु कार्यसिद्धयर्थ पिआरे!" ४४
सुंदर प्रीति युक्त लै आयसु । गयो कबंधगगनचढि ध्यायसु ४५

। खराडछप्पै । (रोला)

सो कबंध निज रूप पाइ, शोभित अति भयऊ ।
परम प्रकाशित कांति युक्त, सब तन छबि लयऊ ॥
रामहि पथ दरसाइ, कछुक चलि लखि पुनि ठयऊ ।
"मो पर राखयहु प्रीति" इहै भाखत चलि गयऊ ॥ ४६ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ० कां० पं० देवकीनंदन त्रि० कृत भा० छं० त्रिसप्ततितमः सर्गः ॥ ७३ ॥

—:※:※:※:—

। चौहत्तरवां सर्ग ।

श्री रामचन्द्र का शवरी के आश्रम को जाना, शवरी से अतिथि सत्कार पाना और शवरी का स्वर्ग सिधारना ॥

॥ दोहा ॥

नर बर सुत द्वौ भाइ पुनि, पश्चिम दिश महि लीन्ह ॥
पंपा बन मग ताहि सो, ज्यहि कबंध कहि दीन्ह ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि ते दोउ लखन अरु रामू । गिरि अनेक चित्रित सबठामू ॥
मधुअरु पुष्प फलन द्रुम देखत । गये मिलन सुग्रीवहि लेखत २
करि निवास ता पर्वत पीठे । दोनों रघुनंदन मन ढीठे ॥
पंपो के पश्चिम तट जाई । ठहरे राम लखन द्वौ भाई ३
पम्पा पुष्करिणी के तीरा । पश्चिम पहुंचि भाइ द्वौ धीरा ॥
देख्यो तब तहँ अति रमणीया । शबरी सदन परम कमनीया ४
पुनिद्वौ पहुंचि सु आश्रम माहीं । जो बहु द्रुमनि घिरो घनछाहीं ॥
देखत सुंदरता रघुराई । शबरी निकट गये हरखाई ५
तिन दोउन लखि सो वय वृद्धा । उठि कर जोरि खडी भै सिद्धा ॥
रामचन्द्र के गहे सुचरना । पुनिलक्ष्मण बुधिबर पगधरना ६
अर्घ पाद्य आचमनहुं जोई । दियोसकल विधिवत मुद होई ॥
त्यहि तब राम कह्यो सुखपाई । धर्म माहिं थित जो श्रम लाई ७
कहहु? बिघ्न तुव भे किनु नाशी ? बढ्योकिनाहिं? परमतपराशी ॥
अरु तुव कोप नियत धौं नाहां ? श्रीअहार तपधनिनि! सदाहीं ८
नियम तुम्हार ठीक तौ होवै ? अरुमन तुव सुखसे किनुसोवै? ॥
गुरु सेवा तुव सफल सदाई ? चारु भाषिणी! कहो बुझाई ९

॥ दोहा ॥

सिद्ध सराहित[1] तापसिनि, तासन पूंछ्यो राम ॥
बूढी शबरी कह्यो तब, थित सन्मुख त्यहि ठाम ॥ १० ॥

१ जिस को सिद्ध लोग सराहते हैं ऐसी तपसिनी ।

॥ चौपाई ॥

पायों अवहिं सिद्धि तप केरी । तुव दर्शन से मैं बहु ढेरी ॥
आजुहि मोर सफल भौ जन्मा । पूजित भयो सकल गुरु धर्मा ११
आजुहि मोर सफल तप सारा । मिलिहैं स्वर्ग अवसि तुव द्वारा ॥
सुनो राम ! तुम हो बरदेवा । पुरुष ऋषभ! करतहि तुवसेवा १२
तुम्हरे शुभ दृग पडतहि प्यारे ! मैं पवित्र भई राज दुलारे! ॥
जैहों अक्षय लोक हरखाई । तुव प्रसाद अरिंदम! मैं पाई १३
जब तुम चित्रकूट मधि आये । तब इत चढि बिमान सुर धाये ॥
अतुल प्रभा नभ माहिं दिखाये । तिन सेवा मैं कीन्ह सुहाये १४
जे धर्मज्ञ महा ऋषि राये । करि करुणा ते मोहिं बताये ॥
"ऐहैं रामचन्द्र मग येहू । तुव पुण्याश्रम महँ करि नेहू १५
सो तुव आदर करिबे योगू । लखन समेत अतिथि के भोगू ॥
ताहि देखि बर लोक सिधाई । जैहो अखयथान तुम पाई" १६
महाभाग जब स्वहिं असभाखे । तबमैं पुरुष ऋषभ! अभिलाखे ॥
धर्यौं बटोरि बस्तु बन केरी । त्रिबिधप्रकार नाथ! शुचिहेरी १७
तुव निमित्त हे नरहरि बीरा ! उपजैं जे पंपा के तीरा ॥
यह शबरी जब कह्यो बखानी । सो सुनि राम धर्म धर ज्ञानी १८
त्याहिशबरिहिपबित्रनितजानी । कह राघव सुनु ज्ञानसयानी! ॥
हम कबंध मुख तत्व प्रभावा । तुव गुरु जन कर सुने बढावा १९
जो कछु सुने चहैं सो देखन । जौ मानहु प्रतच्छ दृग पेखन ॥
यह सुनि बचन तापसिनि सोई । राघव मुख से निसरखहु जोई २०
शबरी तुरत दिखायहु धाई । तिन दोउन सो बन सघनाई ॥
कह देखो घन नील समाना । मृग पक्षिण से पूरित थाना २१

जो "मतंग बन" अस बिख्याता। हे रघुनंदन! अधिक सुहाता ॥
यहिमहान द्युति मधि गुरुमेरे। ते प्रसिद्ध आत्मो रस बोरे ॥
जिन को तनगायत्रिन पूजित[1]। करैं होम मंत्रनिसे[2] कूजित २२
जहँ मम गुरु पूजित श्रुति भेदी। "प्रत्यक् स्थली" नामयह बेदी ॥
ता मधि करैं पुष्प उपहारे। बृद्ध कँपित कर श्रम सहकारे २३
तिन के तप प्रभाव से प्यारे! देखो अजहुं सुराज दुलारे! ॥
सुठि बेदी सब दिशन्हि प्रकाशै। अतुलप्रभा श्रिययुत चहुंपासै २४
ते सब शिथिल किये उपबासा। जाइ सकैं नहिं दूर प्रबासा ॥
याते लखो सप्त जे सागर। आवहिंतिन्हटेरित रतनागर २५
न्हाइ धोइ ते बृक्षन माहीं। दीन्ह फुलाइ बल्कनि ताहीं ॥
अबहूं तक सूखे नहिं तेहू। अचरज राघव! तपबल येहू २६
देव कार्य के करतहि जेऊ। ये सब कुसुम निवेद्यहु सेऊ ॥
मृदु कुवलय फूलन सहकारे। नहिं मलीन ते टुकहु निहारे २७
यह समस्त बन तुम्हैं दिखायों। सुनन योग्य जो ताहु सुनायों ॥
अब मैं तुम सन आपसु मांगूं। यह मलीन तन कहो तु त्यागूं २८
मैंहूं चहूं जान तिन पाहीं। जहां गये ऋषि बर सब वाहीं ॥
जिनमुनियनको यहआश्रमबर। मैं तिन की दासी पगकिंकर २९

॥ दोहा ॥

बचन धर्म युत सुन तबै, लखन सहित रघुराय ॥
अतुल हर्ष अचरज लह्यो, यह बोले सुख पाय ॥ ३० ॥

---

१ लक्षान लक्ष गायत्री के जपसे पवित्र किया हुआ शरीर। २ जिस समय जैसा बेदमंत्र उच्चारण करना चाहिये उस समय वैसाही पढ़ २ होम करतेथे।

। धोधक छन्द ।

पुनि तासन राम कह्यो जबहीं । शबरी ब्रत संशित ठानि वहीं ॥
हम पूजित हैं तुम से सुजनी ! तुम जाहु सुखी जस चाहघनी ३१
इमि भाखि जटाबर धारिनिजू । तन चीर सुकृष्ण मृगाजिनजू ॥
रघुराज सु आयसु पाइ सती । द्रुत होमि हुताशन देह ब्रती ३२
जनु पावक तेज प्रकाशवती । सुर लोक गई सुइ भाग्यवती ॥
छवि दिब्य अभूषण सोहि भले । अनु लेपन दिब्य सुमाल गले ३३
पुनि अंबर दिब्य तहां जु धरी । प्रिय दर्शन रूप भई सुघरी ॥
थल ताहि प्रकाश बिराज घनी । जनु दामिन चांदनिसी जु तनी ३४

॥ दोहा ॥

जहँ ते सुकृत महान जन बिहरहिं ऋषि वर ज्ञानि ॥
ताहि पुण्य थल गई सो, शबरी योग निधानि ॥ ३५ ॥

इति श्रीमद्वा० रा० आ०का० पं० देवकीनंदनाचि० कृत भा०छं० चतुःसप्ततितमः सर्ग. ॥७४॥

—····※०※····—

पचहत्तरवां सर्ग ।

श्री रामचन्द्र जी का मतंग कुंड नहाय पूजा तर्पन कर मन प्रसन्न होना, मित्र मिलन का हर्ष चित में आना, वहां से पंपा के निकट जाय अपूर्ब शोभा का देखना, और अरण्यकांड का समाप्त होना ॥

॥ दोहा ॥

जब शबरी गइ स्वर्ग को, निज तप तेज प्रकाशि ॥
राम लखन भाई सहित, चिंतन लगे हुलाशि ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

राम धर्म धर मनहिं बिचारी । ऋषिन्ह प्रभाव महातम भारी ॥
निजहितकारिचित्तथिरभाइहि। बोले सोइ लखन सतगाहिहि २
सुनो सौम्य! हम आश्रम देखे । सिद्धन कर बहु अचरज लेखे ॥
पोषित सम मृग ब्याघ्रनि पूरो। बहुबिध पक्षिन सेबित रूरो ३
सप्त सिंधु कर तीर्थ सुहाये । लखन! जाहितिन मुनिनबनाये॥
तहँ बिधिवत हम आजु नहाये । अरु पितरन को तृप्त कराये ४
अशुभ हमार नष्ट भौ सारा । अब कल्यान समय पग धारा ॥
ताते यह मम मन हरखानो । याछिनअधिकलखनबलवानो! ५
अब मम हृदय कहत नरनाहर ! मित्र मिलन ह्वै है शुभ गुणघर! ॥
याते आवहु चलैं सु तहँवां । प्रिय दर्शनि पंपा सो जहँवां ६
ऋष्यमूक जहँ गिरिवर राजै । नहिं अति दूर प्रगट छवि छाजै ॥
जहां बसै सत धर्म धुरीना । रबि सुत सो सुग्रीव प्रबीना ७
नितहिं बालि भयसेलहित्रासा। चार बानरन्हि सह करु बासा ॥
मैं तुरताहुं सु देखन ताही । बानर पति सुग्रीवहु काही ८
तासु अधीन मोर है काजा । सीता कर खोजन चित भ्राजा ॥
जब अस कह्यो बीर श्रीरामा। लखनहु यह बोले गुण धामा ९
चलैं तुरंत तहां हरखाई । मोरहु मन अतिशय तुरताई ॥
तदनंतर त्यहि आश्रम सेहू । निसरि चले राघव भरि नेहू १०
आइ गये तब पंपा तीरा । लखन सँग प्रभु राम सुबीरा ॥
देखत चहुंदिश बन फुलवारी। भरे सघन द्रुम अति छबिकारी ११
कोइल मैना अर्जुन पाखी । शुक मयूर घन बंश सुभाखी ॥
ये अरु अपर अनेकन जीऊ । नाद करैं तहँ मधु रस पीऊ १२

॥ दोहा ॥

विबिध वृक्ष अरु बिविध सर, देखतही सो राम ॥
तापित तन प्रिय मिलन हित, गये महाहृद ठाम ॥ १३ ॥

॥ चौपाई ॥

सो पुनि राम पहुंचि तट ताके। सुजल धरनि दूरहिते आंके ॥
"मुनि मतंग सर" नामहु जाको। नदी कुंड ह्वायो चित छाको १४
पुनि पंपहि धाये तुरताई। द्वौ राघव मन उहैं लगाई ॥
पै सो राम शोक तन ब्यापी। दशरथनंदन तिय सुधि थापी १५
रम्य नलिनि तट पहुंच्यो जाई। जो प्रफुल्ल कमलन से छाई ॥
तिलक अशोक पुहुप पुन्नागा। बकुल चंप बिटपहु चहुंभागा १६
रम्य सघन उपवन से सोही। बारि मनोहर लहरन्हि जोही ॥
फटिक समान नीर झलकानी। कोमल बालु बिछी सम तानी १७
मच्छ कच्छ से जो भर पूरी। तीर बिटप लहि शोभित रूरी ॥
लता लपेटि रहीं द्रुम झाडी। मनहुं सखीगणपहिरि सुसाडी १८
किन्नर उरग औार गंधर्बन। यक्ष राक्षसनि सेवित सर्बन ॥
इत उत बिबिध लता द्रुम देखे। शीतल नीर मनों निधि पेखे १९
पद्म सुगंधित छाइ ललाई। स्वेत कुमुद मंडलनि सु छाई ॥
कुईं फलनि से नील सरूपा। जनु वहु रंग गज झूल अनूपा २०
रक्तकमल युत कमलिनि[1] राजै। स्वेत कमल युतगंधहु भ्राजै ॥
प्रफुलित आम बौर बनवारी। कूक मयूरनि कूजित न्यारी २१

१ प्ररूपा का बिशेषण।

॥ दोहा ॥

सो पुनि त्यहि पंपहि निरखि, राम लखन के सँग ॥
तेजस्वी दशरथ तनय, रोये प्राकृत ढंग ॥ २२ ॥

॥ चौपाई ॥

निरखि तिलक द्रुम औरअनारू। बट और लोध्र बृच्छ भरमारू ॥
प्रफुलिततहँ कनेर झुकिडारन। अरु पुन्नाग सुमन के भारन २३
मधु मालती कुंद झुकि झांरे। बन भंडीर लीचु बहु ठौरे ॥
सप्त पत्र अरु बिटप अशोकन। केतकि लता माधवी झोंकन २४
अन्यविविध बृच्छनकी पांतिन। पंपहि लख्योसुतियकी कांतिन ॥
ताके तट कबंध ज्यहि कह्यऊ। धातु सुमंडित पर्बत रह्यऊ २५
„ऋष्यमूक” असनाम सुख्यता। चित्रित पुष्प पादपन्हि भाता ॥
बानर एक „ऋच्छ रज” नामी। ता महमति को सुत सतगामी २६
तहां बसै अतिशय बलवाना। जो „सुग्रीव” नाम जग जाना ॥
„त्यहि सुग्रीव निकट तुमजाहू। लखन! कपींद्रहिमिलैाउछाहू” २७
यह पुनि बोले बचन सु हेरी। राम! सत्य बल लखनहि टेरी ॥
„कैसे मैं बिनु सिय सुनु भाई! राखि सको जीवन? मनलाई २८

। हरिगीती छन्द ।

अस लखन से कहि राम बानी, सिया सुधि बुधि धँसि गई।
जो जानकी बिनु नारि दूसरि, हेरु मति रति बसिगई ॥
तब कमल दल कल रम्य पंपा, निकट बन पैठे सही।
जस रम्य सुखद मतंग आश्रम शोक भरि हिय दुख दही ॥ २९ ॥

तहँ जाइ क्रम सन वन बिलोकत सकल शोभा सुठि बनी।
पुनि लख्यहु पंपा सरहि सुंदर, दरस अनुपम छबि घनी ॥
अनगिनत नाना भांति खग मृग, भरे जहँ तहँ धावहीं ।
वहँ राम लखनहि सँग लै कर, जाइ पैठयहु ठावहीं ॥ ३० ॥

इति श्री मद्वाल्मीकीय रामायणे आरण्यकांडे पं० देवकीनंदन त्रिपाठिकृत भाषा छंदानुबादे पंचसप्ततितमः सर्गः ॥७५॥

अरण्यकांडसमाप्तः

॥ दोहा ॥

अगहन शुक्ला शंभु तिथि, भौम बार हे संत ॥
उनइस सै पंचास सम, बिपिन कांड भो अंत ॥ १ ॥

। घनाक्षरी छन्द ।

संवत उनैस सै चौवन भाद्र शुक्ल पूनों,
पाय कै पूरन कियो पोथी स्वच्छ छापि कै।
बालमीकि रामायण भाषा अनुबाद करि,
सुरस अरण्यकांड छंद बंध नापि कै ॥
गोत्र शुभ शांडिल त्रिपाठी हथियापलाश,
लवग्राम वासी श्री प्रयाग स्थिति थापि कै।
मुंशी श्यामलालजू की सम्मति सहाय पाय,
देवकीनंदन बिप्र बानी को अलापि कै ॥ २ ॥

इति

——::*0*::——

विज्ञापन।

——……※※:※※:※※……——

श्री बाल्मीकीय रामायण का अरण्य काण्ड छपगया, जिसका दाम १॥) रु० और डाक महसूल ≈) है, और सिवाय काण्ड के इस पुस्तक का अंक मासिक ३२ सफे अलावः टाइटल पेज के निकला करता है। आठवें अंक में बाल काण्ड और २३ वें अंक में अयोध्या काण्ड समाप्त हुआ है। वार्षिक मूल्य डाक महसूल सहित २॥) रु० है। आरण्य कांड ३२ वें अंक में समाप्त हुआ, अब किष्किंधा कांड छप रहाहै। सातो कांड बाल्मीकीय रामायण भाषा छन्दों में बहुत जल्द छप कर पूरा हो जायगा, जिस का दाम डाक महसूल सहित प्रति पुस्तक १२) रुपये से कम न होगा, एक बार १२) रुपये देकर पुस्तक मोल लेने में साधारण लोगों को कष्ट होता है इस बिचारसे सभा ने ग्राहकों के लिये यह सुभीता कर दिया है कि हर एक कांड जैसे जैसे छपता जायगा अलग२ उसी समय से ग्राहकों को मिला भी जायगा, जिस में किसी को पुस्तक के मोल लेनेमें कष्ट न हो और जैसे हरएक कांड तैय्यार होता जायगा वैसे बिज्ञापन भी ग्राहकों के पास पहुंचा करेगा॥

और भी कई पुस्तकें भाषाकी छप गई हैं औरों के छापने का भी बिचार है

नाम पुस्तक जो सभा में छपकर तैय्यार हैं—

महिम्न मूल मय टीका शिखरिणी छन्द में, दाम डाक महसूल सहित ‑)॥

सूर्य पुराण चित्र सहित दाम)॥।

मूल रामायण ‑)॥।

जिन ग्राहकों को लेना हो नीचे लिखे पते पर मंगा सक्ते हैं॥

श्याम लाल

मेनेजर साहित्य सहायनी सभा रानी मंडी—

या विद्याधर्मवर्द्धक यंत्रालय प्रयाग